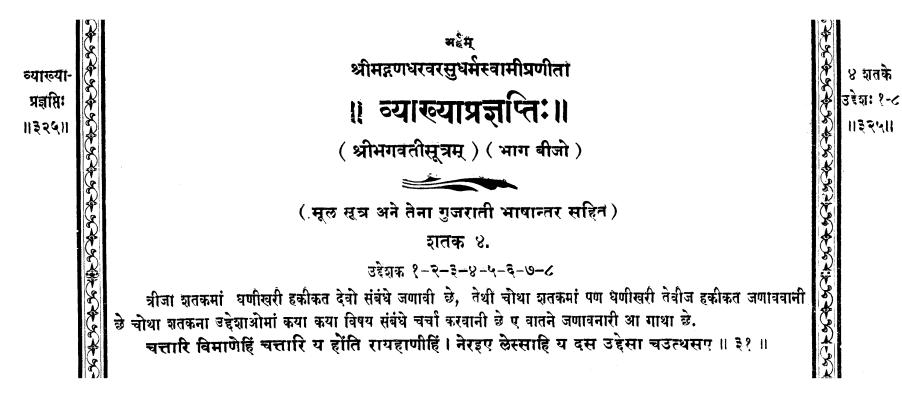


For Private and Personal Use Only

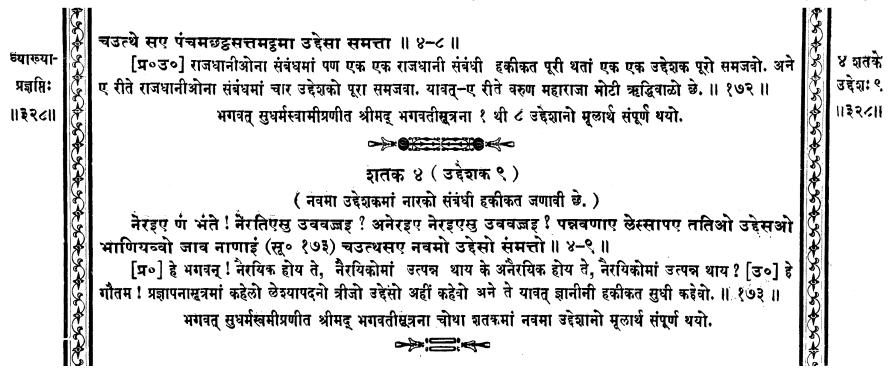
Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra



च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३२६॥	गाथार्थ:-चार उद्देशकमां विमान संबंधी हकीकत छे. बीजा चार उद्देशकमां राजधानी संबंधी हकीकत छे अने एक उद्देशक नैरयिको संबंधे छे तथा एक उद्देशक लेक्या संबंधे छे:-ए रीते आ शतकमां दश उद्देशओ छे. रायगिहे नगरे जाव एव वयासी-ईसाणस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो कति लोगपाला पण्णत्ता ?, गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, तंजहा-सोमे जमे वेसमणे वरुणे । एएसि णं भंते ! लोगपाला पण्णत्ता ?, गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, तंजहा-सोमे जमे वेसमणे वरुणे । एएसि णं भंते ! लेगपालाणं कति विमाणा पण्णत्ता?, गोयमा ! चत्तारि विमाणा पण्णत्ता, तंजहा-सुमणे सब्बओभद्दे वग्ग् सुवग्ग् । कहि णं भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो सुमणो नामं महाविमाणे पण्णत्ते ?, राजग्रह नगरमां-आ प्रमाणे बोल्या के:-हे भगवन् ! देवेंद्र, देवराज ईशानने केटला लोकपाल कक्षा छे ? [उ०] हे गौतम ! तेने चार लोकपालाओ कक्षा छे ते आ प्रमाणे:-सोम, यम, वैश्रमण अने वरुण. [प्र॰] हे भगवन् ! ए लोकपालोने केटलां विमानो कह्यां छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने चार विमानो कह्यां छे. ते आ प्रमाणे:-सुमन, सर्वतोभद्र, वल्ग्. अने सुवल्ग्. [प्र॰] हे भगवन् ! देवेंद्र, देवराज ईशानना सोम महाराजातुं सुमन नामतुं महाविमान क्यां कछुं छे. गोयमा ! जंबुदीवे २ मंदरस्स पव्चयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्त्रभाए पुढवीए जाब ईसाणे णामं कप्ते पण्णत्ते, तत्थ णं जाव पंच बर्डेसया पण्णत्ता, तंजहा-अंकबर्डेसए फलिहबर्डिसए रयणवर्डेसए जायरूववर्डिसए मज्झे य तत्थ ईसाणवर्डेसए, तस्स णं ईसाणवर्डेसयस्स महाविमाणस्स पुरच्छिमेणं तिरियमसंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं बीतिवतित्ता एत्थ णं ईसाणरस ३ सोमस्स २ सुमणे नामं महाविमाणे पण्णत्ते अद्वतेरसजोयण जहा सक्षस्स वत्त-	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~
	वीतिवतित्ता एत्थ ण ईसाणस्स ३ सामस्स २ सुमण नाम महाविमाण पण्णत्त अद्धतरसजायण जहां संबेरस वत्त-	Ť

For Private and Personal Use Only

		· , · · · ·	J
च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३२७॥ ४२००००००००००००००००००००००००००००००००००००	व्वया ततियसए तहा ईसाणस्सवि जाव अचणिया संमत्ता । चउण्हवि लोगपालाणं विमाणे २ उद्देसओ, चउसु विमाणेसु चत्तारि उद्देसा अपरिसेसा, नवरं ठितीए नाणत्तं- 'आदिदुय तिभाग्रणा पलिया १ धणयस्स होंति दो चेव । दो सतिभागा वरुणे पलियमहावचदेवाणं ॥ ३२ ॥ (सू० १७१) चउत्थे सए पढमविइयतइयचउत्था जदेसा समत्ता ॥ ४-४ ॥ [उ०] हे गौतम ! जंबूद्वीप नामना द्वीपमां मंदर पर्वतनी उत्तरे आ रत्नप्रभा प्रथिवी यावत्-ईश्चान नामे कल्प कशो ले. तेमां यावत-पांच अवतंसको कशा छे. ते आ प्रमाणेः-अंकावतंसक, स्फटिकावतंसक, रत्नावतंसक अने जातरूपावतंसक, ए चारे अवतंसकोनी वच्चे ईशानावतंसक छे. ते ईशानावतंसक नामना महाविमाननी पूर्वे तिरछं असंख्येय इजार योजन सूक्या पछी-अहीं देवेंद्र, देवराज ईशानना सोम महाराजानुं सुमन नामन्नुं महाविमान कश्चुं छे. तेनो आयाम अने निष्कंभ साडावारलाख योजन छे, इत्यादि वधी वक्तब्यता त्रीजा शतकमां कहेली शकनी वक्तव्यना पेठे अहीं ईशानना संबंधमां पण कहेवी. अने यावत्-आखी अर्चनिका सुधी कहेवी. ए रीते चारे लोकपालोना प्रत्येक विमाननी इकीकत पूरी थाय त्यां एक उद्देशक जाणवो. चारे विमाननी इकीकत पूरीःथतां पूरा चारे उद्देशक समजवा. विशेष ए के, स्थिति आवरदार्मा भेद समजवो. आदिना बेनो-सोमनी अने यमनी आवरदा त्रण भाग डणा पल्योपम जेटली छे, वैश्रमणनी आवरदा त्रण भाग सहित वे पल्योपमनी छे. तथा अपायरूप देवोनी आवरदा एक पल्योपमनी छे. ॥ १७१ ॥ रायहाणिस्युवि चत्तारि उद्देसा भाणियव्या जाव एवमहिड्ढीए जाव चरुणे महाराया ॥ (स० १७२) ॥	उरेश: 112: 112: 112: 112: 112: 112: 112: 11	: १-८



व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३२९॥	उद्देशक १० (दशमा उद्देशक १० (दशमा उद्देशकमां पण लेक्या संबंधी इक्रीकत कही छे) से नृणं भंते ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारुवत्ताए तावण्णत्ताए एवं चउत्थो उद्देसओ पन्नवणाए चेव लेस्मापदे नेयञ्चो जाव-परिणामवण्णरसगंधसुद्धअपसत्थसंकिलिट्टुएहा। गतिपरिणामपदेसोगाहवग्गणा- ठाणमप्पबहुं ॥ ३३ ॥ सेवं भंते ! २त्ति ॥ (सू० १७४) चउत्थसए दसमो उद्देसो संमत्तो ॥ ४-१० ॥ चउत्थं सयं संमत्तं ॥ ४ ॥ [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेक्ष्या नीललेक्ष्यानो संबोग पामी ते रूपे अने ते वर्णे परिणमे ? [उ०] हे गौतम ! प्रज्ञापनासत्रमां कहेलो लेक्ष्यापदनो चोथो उद्देशक अर्ही कहेवो अने ते यावत्-परिणाम' इत्यादि द्वार गाथा सुधी कहेवो. परिणाम, वर्ग. रस, गंध, ग्रुद्ध, अप्रशस्त, संक्ष्टिंट, उष्ण, गति, परिणाम, प्रदेश, अत्रगाहना, वर्गणा, व्यान, अने अल्पबहुत्व; ए वधुं लेक्ष्याओ संबंधे कहेवुं. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे; एम कही यावत् विहरे छे. ॥ १७४ ॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीस्त्रना चोथा शतकमां दशमा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.	के के के के के के के के के के के के के क
		* ~~

ड्याख्या≁ प्रज्ञप्तिः ॥३३०॥	CARAARARARARARARARARARAR	रातक ५ (उद्देशक १) चंपरवि १ अनिल २ गंठिय ३ सदे ४ छउमायु ५-६ एयण ७ णियंठे ८ । रायगिहं ९ चंपाचंदिमा १० य दस पंचमं मिसए ॥ ३४ ॥ (चोथा शतकना छेवटना भागमां लेक्ष्याओ संबंधी विचारो जणाच्या छे, माटे हवे लेक्ष्यावाळा जीवो संबंधी जणावता एवा पांचमा शतकनो आरंभ थाय छे.) हवे प्रभम उद्देशकमां सूर्य संबंधी प्रश्नोत्तरो छे, ए प्रश्नो चंपा नगरीमां पूछाया हता. वीजा उद्देशकमां वायु संबंधी सवालोनो निर्णय छे. त्रीजा उद्देशकमां जालग्रंथिकाना उदाहरण उपरथी जणाती हकीकतनो निर्णय छे. चोथा उद्देशकमां शब्द विषे पूछाएला प्रश्नो अने उत्तरोनो निर्णय छे. पांचमा उद्देशमां छबस्थो संबंधी हकीकत छे. छट्ठा उद्देशमां आयुष्यनुं ओछापर्णु के वधारेपर्णु, ए संबंधी हकीकत छे. सातमा उद्देशकमां पुद्गलोना कंपन संबंधी विचार कयों छे. आठमा उद्देशकमां निर्भथीपुत्र नामना साधुए पदार्थो संबंधे विचार कयों छे. नवमा उद्देशकमां राजग्रह नगर संबंधी विचार कयों छे. आठमा उद्देशकमां चंद्र संबंधी आलोचना छे-ते आलोचना चंपा नगरीमां थइ हती. ए प्रमाणे आ पांचमा शतकमां दस उद्देशक छे. तेणं काल्ठेणं २ चंपानामं नगरी होत्था, बन्नओ, तीसे णं चंपाए नगरीए पुण्णभद्दे नामे चेइए होत्था वण्णओ, सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया। तेणं काल्रेणं २ समणस्स भगवओ महावीरस्स	****	५ शतके उद्देशः१ ॥३३०॥	
			(0		

प्रज्ञप्तिः 🏹 ग्गच्छ पडीणउदीणमागच्छति, पडीणउदीणं उग्गच्छ उदीचिपादीणमागच्छति ?, हता ! गायमा ! जमुदाब 🖒 उद्दे अन्तर्भ 🕼 णं दीवे सरिया उदीचिपाईणमगाच्छ जाव उदीचिपाईणमागच्छति ॥ (स० १७५) ॥	1133811
---	---------

 मंदरस्स पच्वयस्स उत्तरदाहिणेणं राती भवति १, इंता गोयमा ! जदा णं जंबु॰ मंदरपुरच्छिमेणं दिवसे जाव प्रती भवति । जदा णं भंते ! जंबुदीवे २ दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं उत्तरड्ढेवि र प्रती भवति । जदा णं भंते ! जंबुदीवे २ दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं उत्तरड्ढेवि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं जंबुदीवे २ मंदरस्स पुरच्छिमपचित्यिमेणं जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राती भवति ?, इंता गोयमा ? जदा गेयमा ! जदा णं जंबुदीवे २ मंदरस्स पुरच्छिमपचत्थिमेणं जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राती भवति ?, इंता गोयमा ! जदा गं जंबुदीवे २ मंदरस्स पुरच्छिमपचत्यिमेणं जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राती भवति ?, इंता गोयमा ! जदा गं जंबुद्धीवे २ मंदरस्स पुरच्छिमपचत्यिमेणं जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राती भवति ?, इंता गोयमा ! जदा गं जंबुद्धीवे २ मंदरस्स पुरच्छिमपचत्यिमेणं जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राती भवति ?, इंता गोयमा ! जदा गं जंबुद्धीवे २ मंदरस्स पुरच्छिमपचत्यिमेणं जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राती भवति ?, इंता गोयमा ! जदा गं जंबुद्धीवे २ मंदरस्स पुरच्छिमपचत्यिमेणं जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राती भवति ?, इंता गोयमा ! जदा गं जंबुद्धीवे २ मंदरस्स पुरच्छिमपचत्यिमेणं जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राती भवति ?, इंता गोयमा ! जदा गं जंबुद्धीवे २ मंदरस्य पुरच्छिमेणं प्रति सिवस होय छे त्यारे उत्तरियमें दक्षिणार्धमां प्रविणार्धमां दक्षिणार्धमां दक्षिणार्धमां दक्षिणार्धमां प्रवाले हिवस होय छे त्यारे जंबूद्धीपमां मंदर पर्वतनी पूर्व दिवस होय छे त्यारे वंबूद्धीपमां मंदर पर्वतनी पूर्व दिवस होय छे त्यारे वंबूद्धीपमां मंदर पर्वतनी पूर्व दिवस होय छे. [प्र०] हे मगवन्-रात्री होय छे. [प्र०] हे मगवन ! ज्यारे जंबूद्धीपमां दक्षिणार्धमां वधारे मो देश पर्धि मेटो अहार मुहूर्तनी दिवस होय छे त्यारे जंब्द्धीपमां मंदर पर्वतनी पूर्व विवस होय छे त्यारे उत्तरार्धमां गण वधारे मं वधारे मोटो अहार मुहूर्तनी दिवस होय छे अने ज्यारे उत्तरार्धमां सी वधारे मं व्यते त्य मुद्धी प्रव देवि व होय छे. [प्र०] हे मगतवन ! ज्यारे जंबूद्धीपमां दक्षिणार्धमां वधारे मेटो अहार मुहूर्तनी दिवस होय छे त्यारे जंक्द्द्धीप छे व्यारे जंक्द्द्धी त्या होय छे अने ज्यारे वचारे त्यावत्त्त्य होय छे. 	1:8
---	-----

č		
	है जिदा ण जेबु० मंदरस्स पुरचिछमेण उक्कोसए अहारस जाव तदा ण जंबुदीवे २ दिवसे भवति 🥻	
च्याख्या-	जया णे पचत्थिमेणं उक्कोसएं अहारसमुहुत्ते दिवसे० पचत्थिमैणवि उक्को० अंद्वारसमुहुत्ते भवति तदा 🧍	५ शतके
प्रज्ञप्तिः	🖞 णं भंते ! जंबुदीवे २ उत्तर० दुवालसमुहुत्ता जाव राती भवति ?, इंता गोयमा ! जाव भवति । जया णं 🏌	उदेशः १
1133311	र भंते ! जंबु० दाहिणड्ढे अहारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं उत्तरे अहारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति 💃	
	जदा णं उत्तरे अहारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं जंबु० मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपचत्थिमेणं 🥀	॥३३३॥
	र्भ सातिरेगा दुवाल्स मुहुत्ता राती भवति?, इंता गोयमा! जदा णं जंबु० जाव राती भवति। जदा णं भंते!	
	र जंबुदीवे २ पुरच्छिमेणं अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं पचत्थिमेणं अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे 🖇	
	🕅 भवति जदा गां प्रजन्भिर्ग अटारमप्रदर्भगांतरे दिवसे भवति तदा गां जव० २ मंदरस्म प्रवयस्म डाहिणेणं 🧗	
	साइरेगा द्वाल्समहत्ता राती भवति ?. हंता गोयमां ! जाव भवति ॥	
Ş	[प्र॰] हे भगवन् ! ज्यारे जंबूढीपमां मंदर पर्वतनी पूर्वे मीटामां मीटो अढार मुहूर्तनो दिवस होय छे त्यारे जंबूढीपमां पश्चिमे पण मोटामां मोटो अढार मुहूर्तनो दिवस होय छे अने ज्यारे पश्चिमे मीटामां मीटो अढार मुहूर्तनो दिवस होय छे त्यारे हे भगवन् ! जंबूढीपमां उत्तरार्धमां नानामां नानी बार मुहूर्तनी रात्री होय छे ? [उ॰] हे गौतम ! ढा, एज रीते यावत्-होय छे. [प्र॰] हे भगवन् ! ज्यारे जंबूढीपमां दक्षिणार्धमां अढार मुहूर्तनी रात्री होय छे? [उ॰] हे गौतम ! ढा, एज रीते यावत्-होय छे. [प्र॰] हे र्तानन्तर दिवस होय छे अने ज्यारे उत्तरार्धमां अढार मुहूर्त करतां कांइक ऊणो-मुहूर्तानन्तर-दिवस होय छे त्यारे उत्तरार्धमां अढार मुहूर् र्तानन्तर दिवस होय छे अने ज्यारे उत्तरार्धमां अढार मुहूर्तानन्तर दिवस होय छे त्यारे जंबूढीपमां मंदर पर्वतनी पूर्व पश्चिमे बार	
	🖗 पण मोटामां मोटो अढार महर्तनो दिवस होय छे अने ज्यारे पश्चिमे मीटामां मीटी अढार महर्तनो दिवस होय छे त्यारे हे भगवन् !	
	्र जंबदीपमां उत्तरार्धमां नानामां नानी बार महर्तनी रात्री होय छे? उि०ी हे गौतम ! हा. एज रीते यावत-होय छे. मि०ी हे	
	े भगवन ! ज्यारे जंबदीपमां दक्षिणार्धमां अदार महत्ते करतां कांइक ऊणो-महर्तानन्तर-दिवस होय छे त्यारे उत्तरार्धमां अदार महत	
	तीनन्तर दिवस होय छे अने ज्यारे उत्तरार्धमां अढार मुहूर्तानन्तर दिवस होय छे त्यारे जंबुद्वीपमां मंदर पर्वतनी पूर्व पश्चिमे बार	≰
	אוזיער וקינו פרו שיור שווי שווי שווי שוויער וקינו פרו שינור יצמריה עלי וועוו גן הישימו על	

प्रज्ञप्तिः 🦉 अने ज्यारे पश्चिमे अढार ग्रहूर्तानम्तर दिवस होय छे त्यारे जंबूद्रीपमां मंदर पर्वतनी उत्तर दक्षिणे वार ग्रहूर्त करतां कांइक वधारे 💃 उ	५ शतके उद्देशः१ ॥३३४॥
--	-----------------------------

प्रज्ञप्तिः 🌾 ज्यारे सोळ मुहूर्तनो दिवस होय त्यारे चौद मुहूर्तनी रात्री होय. ज्यारे सोळ मुहूर्त करतां कांइक ओछो दिवस होय त्यारे चौद 🌾	५ शतके उदेशः१ ॥३३५॥
---	---------------------------

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३३६॥	पडिवज्जइ, जया णं उत्तरड्ढेवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छि- मपचत्थिमेणं अणंतरपुरक्खडसमयंसि वासाणं प० स० प० १, इंता गोयमा ! जया णं जंबू० २ दाहिणड्ढे वासाणं प० स० पडिवज्जइ तह चेव जाव पडिवज्जइ । जया णं भंते ! जंबु० मंदरस्स० पुरच्छिमेणं वासाणं पढमे स० पडिवज्जइ, तया णं पचत्थिमेणवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, जया णं पचत्थिमेणवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं जाव मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं अणंतरपच्छाकडसमयंसि वासाणं स० पडिवन्ने भवति ?, हंता गोयमा ! जया णं जंबू० मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं, एवं चेव उचारेयव्वं जाव पडिवन्ने भवति ?, हंता गोयमा ! जया णं जंबू० मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं, एवं चेव उचारेयव्वं जाव पडिवन्ने भवति ? हंता गोयमा ! जया णं जंबू० मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं, एवं चेव उचारेयव्वं समय होय अने ज्यारे इत्तिर्धमां वर्षा (चोमासा) नी मोसमनो प्रथम समय होय त्यारे उत्तरार्धमां पण वर्षानो प्रथम समय होय अने ज्यारे उत्तरार्धमां पण वरसादनो प्रथम समय होय त्यारे जंबूद्वीपमां मंदर पर्वतनी पूर्व पश्चिमे वर्षानो प्रथम समय समय अनंतर पुर्स्छत समयमां होय अर्थात् जे समये दक्षिणार्धमां वरसादनी श्रह्यात थाय छे तेज समय पछी तुरतज बीजा समये	्र
	समय होय अने ज्यारे उत्तरार्धमां पण वरसादनो प्रथम समय होय त्यारे जंबुद्वीपमां मंदर पर्वतनी पूर्व पश्चिमे वर्षानो प्रथम समय समय अनंतर पुरस्कृत समयमां होय अर्थात् जे समये दक्षिणार्धमां वरसादनी श्रुष्आत थाय छे तेज समय पछी तुरतज बीजा समये मंदर पर्वतनी पूर्व पश्चिमे वरसादनी शुरुआत थाय ? [उ०] हे गौतम ! हा एज रीते थाय-छे ज्यारे जंबूद्वीपमां दक्षिणार्धमां चोमा-	

•याख्यां

प्रज्ञप्तिः

113301

थयाना प्रथम समय पहेलां एक समये त्यां (मंदर पर्वतनीं) उत्तरे दक्षिगे वर्षा अरु थाय ? [उ०] हे गौतम ! हा, एज रीते थाय ज्यारे जंबूढीपमां मंदर पर्षतनी पूर्वे वरसादनी शरुआत थाँथ ते पहेलां एक समये अहीं (उत्तर दक्षिणे) वरसादनी शरुआत थाय, ५ शतके उरेशः१ ए प्रमाणे यावत्-बधुं कहेवुं. एवं जहां समएणं अभिलावो भणिओ बासाणं तहा आवलियाएवि २ भाणियव्वो, आणापाणु-1133011 णवि ३ थोवेणवि ४ लवेणवि ५ मुहुत्तेणवि ६ अहोरत्तेणवि ७ पक्खेणवि ८ मासेणवि ९ उऊणावि १० एएसिं सब्वेसिं जहा समयस्म अभिलावो तहा भाणियव्वो । जया णं भंते! जंबु॰ दाहिणड्दे हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जति जहेव चासाणं अभिलावो तहेव हेमंताणबि २० गिम्हाणबि ३० भाणियव्वो जाव उऊ, एवं एए तिज्ञिवि, एएसिं तीसं आलावगा भाणियव्वा । जया णं भंते ! जंबु॰ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे पढम अयणे पडिवज्जइ तया ण उत्तरड्ढेवि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जहा समण्णं अभिलावो तहेव अयणेणवि भाणियव्वो जाव अणंतरपच्छाकडेममयंसि पढमे अयणे पडिवन्ने भवति. जेम वरसादना प्रथम समय माटे कहुं तेम वरसादनी शरुआतनी प्रथम आवलिका माटे पण जाणवुं अने ए प्रमाणे खानपान, स्तोक, लव, मुहूर्त, अहोरात्र, पक्ष, मास, ऋतु, ए बधां संबंधे पण समयनी पेठे जाणवुं. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे जंबूद्वीपमां दक्षिणार्धमां हेमंत ऋतुनो प्रथम समय होय त्यारे उत्तरार्धमां पण हेमंतनो प्रथम समय होय अने ज्यारे उत्तरार्धमां पण तेम होय त्यारे जंबूद्वीपमां मंदर पर्वतनी पूर्व पश्चिमे हेमंतनो (प्रथम समय अनंतर पुरस्कुत समये होय ?) इत्यादि पूछवुं. [उ०] हे गौतम !

ध्र्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३३८॥	The server she so she	ए संबंधेनो बधो खुलासो वर्षानी पेठेज जाणवो अने एज प्रकारे प्रीष्म ऋतुनो पण खुलासो समजवो. तथा हेमंत अने प्रीष्मना प्रथम समयनी पेठे तेनी प्रथम आवलिका वगेरे यावत ऋतु-मुधी पण समजवुं-ए प्रमाणे एक सरखुं ए त्रणे ऋतुओ विषे जाणवुं, ए बधाना मळीन त्रीश आलापक कहेवा. [प्र॰] हे भगवन् ! ज्यारे जंबूढीपमां मंदर पर्वतना दक्षिणार्धमां प्रथम अयन होय छे त्यारे उत्तरार्धमां पण प्रथप अयन होय छे ? [उ॰] हे गौतम ! जेम समय संबंधे कह्युं, तेम अयन संबंधे पण समजवुं यावत्-तेनो प्रथम समय, अनंतर, पश्चात्कृत समये होय छे-इत्यादि जाणवुं. जहा अयणेणं अभिलाचो तहा संवच्छरेणवि भाणियव्वो, जुएणवि वाससएणवि वाससहस्सेणवि वाससयसह- रसेणवि युव्वंगेणवि पुठ्वेणवि तुडिंपगेणवि तुडिएणवि, एवं पुठ्वे २ तुडिए २ अडडे २ अववे २ हुहूए २ उप्पछे २ पउमे २ नलिणे २ अच्छणिउरे २ अउए २ णउए २ पउए २ चुलिया २ सीसपहेलिया २ पलिओवमणवि साग- रोवमेणवि भाणियव्वो । जया णं भंते ! जंबुद्दीवे २ दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ तया णं उत्तरङ्ढेवि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, जया णं उत्तरड्ढेवि पडिवज्जइ तदा णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छि- मपचत्थिमेणवि, णेवत्थि ओसप्पिणी नेवत्थि उत्सद्दि पडिवज्जइ तदा णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छि- मपचत्थिमेणवि, णेवत्थि ओसप्पिणी नेवत्थि उत्सप्ति अध्याति, अवट्रिए णं तत्थ काछे पन्नत्ते ? समणाउसो !, हंता गोयमा ! तं चेव उचारेयव्वं जाव समणाउसो !, जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एवं उत्सप्तिणीएबि भाणियव्वो ॥ (सूत्रं १७७) ॥	× X	५ इतके उद्देशः१ ॥३३८॥	
	Ť	जेम अयन संबंधे कहुं तेम संवत्सर, युग, वर्षश्चन, वर्षसहस्र, वर्षशतसहस्र, पूर्वांग, पूर्व, त्रुटितांग, त्रुटित, अटटांग, अटट,	Č.		

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३३९॥	अवबांग, अवब, हहूकांग, हहूक, उत्पत्नांग, उत्पत्न, पद्मांग, पद्म, नलिनांग, नलिन, अर्थन्पुरांग, अर्थन्पुर, अयुतांग. अयुत, नयुतांग नयुत, प्रयुतांग, प्रयुत, चूलिकांग, चूलिका, शीर्षप्रहेलिकांग, शीर्षप्रहेलिका, पल्योपम अने सागरोपम ए वधां संबंधे पण समनचं [म0] हे भगवन् ! ज्यारे जंब्द्रीपमां दक्षिणार्धमां प्रथम अवसपिणी होय छे त्यारे उत्तरार्धमां पण प्रथम अवसपिणी होय छे अन ज्यारे जरार्धमां पण तेम होय छे त्यारे जंब्द्रीपमां मंदर पर्वतनी पूर्ध पश्चिमे अवसपिणी नथी, तेम उत्सपिणी नथी. पण हे दीर्थ जीविन् ! अमण ! त्यां अवस्थित काळ कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, एज रीते छे-पूर्वनी पेठे बधुं यावत्-हे दीर्थजीविश्रमण इत्यादि. जेम उवसपिणी संबंधे कह्युं तेम उत्सपिणी विषे पण समजवुं. ॥ १७७ ॥ लवणेणं भंते ! समुद्दे स्टूरिया उदीचिपाईणमुग्गच्छ जचेव जंबूदीवस्म वत्तव्वया भणिया संचेव मच्या अप रिसेसिया लवणसमुद्दस्सवि भाणियव्वा, नवरं अभिलावो इमो णेयव्वो-जया णं भंते ! लवणे सजुद्दे दाहिणड्दे दिवसे भवति तं चेव जाव तदा णं लवणे समुद्दे पुरच्छिमपचत्थिमेणं राई भवति, एएणं अभिलावेणं नेयव्व जदा णं भंते ! त्ववणसमुद्दे दाहिणड्दे पढमा ओसप्टिपणी पडिवज्जइ तदा णं ठत्तरड्देवि पढमा ओसप्टिपर्ण पडिवज्जइ, जदा णं उत्तरड्दे पढमा ओसप्टिपणी पडिवज्जइ तदा णं लवणसमुद्दे पुरच्छिमपचत्थिमेणं नेवस्थि ओसप्टिपणी २ समणाउसो !?, हता गोयना ! जाव समणाउसो ! ॥ धायईसंडस्पचि भाणियव्वा, नवरं इमेणं अभि		• ग्रतके उद्दे गः १ ।३३९॥
7	पादीणमुग्गच्छ जहेव जंबुदीवस्स वत्तव्वया भणिया सचेव धायइसंडस्सवि भाणियव्वा, नवरं इमेणं अभि लावेणं सब्वे आलावगा भाणियव्वा । जया णं भंते ! धायइसंडे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवति तदा णं उत्त	- 2	

र्भ पूर्वे पश्चिमे अवसर्पिणी नथी होती, उत्सर्पिणी नथी होती, षण हे दीर्घजीबि श्रमण ! त्यां अवस्थित (फेरफार विनानो) काळ कह्यो क्रि छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, तेज रीते छे अने ते यावत्-हे श्रमणायुष्मन् ! इत्यादि. [प्र०] हे भगवन् ! घातकीखंड द्वीपमां स्वर्यो क्रि ईग्रान खुणामां उगीने, इत्यादि पूछवुं. [उ०] हे गौतम ! जे वक्तव्यता जंबुद्वीप संबंधे कही छे तेज वक्तव्यता बधी घातकीखंड	१९ २ भतके उद्देशः १ ॥३४०॥ १३४०॥
---	---

प्रइतिः 🕻 जाव मवात, एव एएण आमलावण नयव्व जाब जया ण भत ! दााहणड्द पदमा आस० तया ण उत्तरड्द 🗚	५ शतके उद्देशः१ ॥३४१॥
---	-----------------------------

 अभ्यंतर पुष्करार्धमां स्यों ईग्रान ख्णामां उगीने इत्यादि पूछवुं. [उ०] हे गौतम ! घातकीखंडनी वक्तव्यतानी पेठे अभ्यंतर पुष्करार्धमां प्रघति किरुयता पण कहेवी. विशेष ए के, घातकी खंडने बदले अभ्यंतर पुष्करार्धनो पाठ कहेवो अने यावत्-'अभ्यंतर पुष्करार्धमां मंदरोनी पूर्व पश्चिमे अवसार्पणी नथी होती, जस्सार्पणी नथी होती, पण हे दीर्घजीवि श्रमण ! त्यां अवस्थित काळ होय छे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे एम कही यावत्-विचरे छे. ॥ १७८ ॥ भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे एम कही यावत्-विचरे छे. ॥ १७८ ॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसत्रना पांचमा शतकमां प्रथम उद्देशनो स्रूरार्थ संपूर्ण ययो. अभ्यंतर पुष्करमां दिग्राओनं उद्देशीने दिवस विगेरेनो विभाग जणाव्यो छे अने हवे आ बीजा उद्देशकमां पण दिग्राओने उद्देन्य उद्देशक २. प्रथम उद्देशकमां दिग्राओनं उद्देशीने दिवस विगेरेनो विभाग जणाव्यो छे अने हवे आ बीजा उद्देशकमां पण दिग्राओने उद्देन्य रायगिहे नगरे जाव एवं वदासी-अत्थि णं भंते ! ईसिं पुरेवाता पत्थावार्ण मंदावारा महावारा वायंति?, हंता आत्थि । एवं पचलियमेणं वाहिणेणं उत्तरेणं उत्तरपुरच्छिमेणं पुरच्छिमदाहिणेणं दाहिणपचत्थिमेणं पच्छिमउत्तरेणं ॥ जया णं भंते ! पुरच्छिमेणं इसिं पुरेवाया पत्थावाया मंदावार महावा॰ वायंति तया णं पचत्थियमेणं दुसिं पुरेवाया, जया णं पचल्यिमेणं इसिं पुरेवाया तया णं पुरच्छिमेणवि १, हंता गोयमा ! जया णं पुरच्छिन्य हरिंस पुरेवाया, जया णं पचल्यिमेणं इसिं पुरेवाया तया णं पुरच्छिमेणवि १, हंता गोयमा ! जया णं पुरच्छिन्य 	५ शतके [.] उद्देशः२ ॥३४२॥
---	--

 मेणं तया णं पचत्थिमेणवि ईसिं, जया णं पचत्थिमेणवि ईसिं तया णं पुरच्छिमेणवि ईसिं, एवं दिसासु विदि- सासु ॥ अत्थि णं अंते ! दीविचया ईसिं ?, इंता अत्थि । अत्थि णं भंते ! सासुद्या ईसिं ?, इंता अत्यि । [म॰] राजयह नगरमां यांवत्-आ प्रमाणे बोक्या के-हे भगवन् । ईपत्पुरोवात-थोडा त्रेहवाठा-थोडी मीनाशवाळा-थोडा [म॰] राजयह नगरमां यांवत्-आ प्रमाणे बोक्या के-हे भगवन् । ईपतुरोवात-थोडा त्रेहवाठा-थोडी मीनाशवाळा-थोडा [घ॰] राजयह नगरमां यांवत्-आ प्रमाणे बोक्या के-हे भगवन् । ईपतुरोवात-योडा त्रेहवाठा-थोडी मीनाशवाळा-थोडा [घ॰] राजयह नगरमां यांवत्-आ प्रमाणे बोक्या के-हे भगवन् । ईपतुरोवात, वायु-मंद वायुओ अने महावायुओ वाय छे ? [उ॰] हे गौतम ! हा, ते वायुओ वाय छे. [प॰] हे भगवन् ! पूर्वमां ईपत्पुरोवात, पथ्यवात, मदवात अने महावात छे ? [उ॰] हे गौतम ! हा, छे. ए प्रमाणे पश्चिममां दक्षिणमां, उत्तरमां, ईशान ख्णामां, अत्रि ख्णामां, नैन्छत ख्णामां अने वायव्य ख्णामां पण तेम समजर्चु. [प॰] हे भगवन् ! इवर्गोवात वाय छे त्यारे प्र्वमां व्या के स्वात वाय छे त्यारे पश्चिममां पण ईपत्पुरोवात वगेरे वाय छे ? अने ज्यारे पश्चिममां ईपत्पुरोवात वाय छे त्यारे प्र्वमां वण ते वायुओ वाय छे ? [उ॰] हे गौतम ! ज्वरे पश्चिममां पण वे ईपत्पुरोवात बगेरे वाय छे त्यारे ते वधा पश्चिममां पण वाय छे अने ज्यारे पश्चिममां ईपत्पुरोवात वगेरे वाय छे त्यारे पूर्वमां पण ते द्वीपमां होय छे ? [उ॰] हे गौतम ! हा, होय छे. [घ॰] हे भगवन् ! ईपत्पुरोवात वगेरे वायुओ नग्रद्रमां होय छे ? [उ॰] हे गौतम ! हा, होय छे. जया णं भंते ! दीविच्चया ईसिं तथा णं सा सामुद्यावि ईसिं जया णं सामुद्दया ईसिं लया णं दीविच्चयावि ईसिं ?, णो इणट्ठे समठे ! से केणट्रेणं भंते ! एवं वुचति-ज्या णं दीविच्चया इंसिं णो णं तथा सामुद्र्या ईसिं ?, 	ग्रः२
---	-------

प्रज्ञप्तिः 🕻	जया णं सामुद्दया ईसिं णो णं तथा दीविचया ईसिं ?, गोयमा ! तेसिं णं वायाणं अन्नमन्नस्स विवचासेणं ठवणे समुदे वेलं नातिकमंइ, से तेणढेणं जाव वाया वायंति ॥ अत्थि णं भंते ! ईसिं पुरेवाया पत्थावाया मंदा- वाया महावायावायंति ?, हंता अत्थि । कया णं भंते ! ईसिं जाव वायंति ?, गोयमा ! जया णं वाउयाए अहारियं रीयंति तया णं ईसिं जाव वायं वायंति । अत्थि णं भंते ! ईसिं० ?, हंता अत्थि, कया णं भंते ! ईसिं पुरेवाया पत्था० ?, गोयमा ! जया णं वाउयाए उत्तरकिरियं रियइ तया णं ईसिं जाव वायंति । अत्थि णं भंते ! ईसिं० ?, हंता अत्थि, कया णं भंते ! ईसिं पुरेवाया पत्था० ?, गोयमा ! जया णं वाउकुमारा वाउ- कुमारीओ वा अप्पणो वा परस्स वा नदुभयस्स वा अद्वाए वाउकायं उदीरेंति तया णं ईसिं पुरेवाया जाव वायंति ॥ वाउकाए णं भंते ! वाउकायं चेव आणमंति पाण० जहा खंदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा, अणेगसयसहस्स० पुढे उदाति वा, ससरीरी निक्खमति ॥ (सूत्रं १७९) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! ज्या देषिना ईपत्पुरोवात वगेरे वायुओ वाता होय त्यारे समुद्रना पा ईपत्पुरोवात वगेरे वायुओ वाता होव ? अने ज्यारे समुद्रना ते बधा वायुओ वाता होय त्यारे द्वीपना पण ते वधा वायुओ वाता होय ? [उ०] हे गौतम ! ए वात ठीक नथी. [प्र०] हे भगवन् ! तेचुं शुं कारण के, 'ज्यारे द्वीपना ईपतपुरोवातादि वाता होय त्यारे समुद्रना ईपत्पुरोवात हेप ? [उ०] हे गौतम ! ए वात ठीक नथी. [प्र०] हे भगवन् ! तेचुं शुं कारण के, 'ज्यारे द्वीपना ईपतपुरोवातादि वाता होय ? [उ०] हे गौतम ! ए वात वाया होय ! अने ज्यारे समुद्रना ईपत्पुरोवातादि बाता होय त्यारे द्वीपना ईपतपुरोवातादि व वाता होय ? [उ०] हे गौतम ! ते वायुओ अन्योअन्य व्यत्तालव्हे (एक बीजा साथे नहि, पण नोल्ता नोला) संचरे छे-ज्यारे द्वीपना ईपत्पुरोवातादि वाता होय	54343434343436 = 0	्यतके देशः२ ३४४॥
Sec.	वायुओ अन्योअन्य व्यत्यास्तवडे (एक बीजा साथे नहि, पण नोखा नोखा) संचरे छे-ज्यारे द्वीपना ईषत्पुरोवातादि वाता होय	e the	

व्याख्या- प्रहासिः ॥३४५॥ भ्यारे समुद्रना न बांय अने ज्यारे समुद्रना ईपरपुरोवातादि वाता होय त्यारे द्वीपना न बाय ए रीते ए वायुओ परस्पर विपर्ययवे वाय छे अने ते प्रकारे ते वायुओ लवणसमुद्रनी बेळाने उछंघता नथी ते कारणथी यावत-पूर्व प्रमाणे ' वायुओ वाय छे ' ए रीते क्युं छे. [प्र०] हे मगवन् ! ईपरपुरोवात, पथ्यवात, मंदवात अने महावात छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, छे. [प्र०] हे मगवन् ! इपरपुरोवात वगेरे वायुओ क्यारे वाय छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्यारे वायुकाय पोताना स्तभावपूर्वक गति करे छे त्यारे ईपरपुरोवात वगेरे वायुओ वाय छे. [प्र०] हे मगवन् ! ईपरपुरोवात वगेरे वायुओ छे ? [उ० हे गौतम ! हा, छे. [प्र०] हे भगवन् ! ईपरपुरोवात वगेरे वायुओ वाय छे. [प्र०] हे भगवन् ! ईपरपुरोवात वगेरे वायुओ छे ? [उ० हे गौतम ! हा, छे. [प्र०] हे भगवन् ! ईपरपुरोवात वगेरे वायुओ क्यारे वाय छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्यारे वायुओ छे ? [उ० हे गौतम ! हा, छे. [प्र०] हे भगवन् ! ईपरपुरोवात वगेरे वायुओ क्यारे वाय छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्यारे वायुओ छे ? [उ० हे गौतम ! हा, छे. [प्र०] हे भगवन् ! वगेरे वायुओ वगारे वायुओ वाय छे. [प्र०] हे भगवन् ! ईपरपुरोवात वगेरे वायुओ छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, छे. [प्र०] हे भगवन् ! ईपरपुरोवात वगेरे वायुओ वाय छे. [प्र०] हे भगवन् ! ईपरपुरोवात वगेरे वायुओ छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, छे. [प्र०] हे भगवन् ! ईपरपुरोवात वगेरे वायुओ वयारे हाथ छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्यारे वायुओ छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, छे. [प्र०] हे भगवन् ! ईपरपुरोवात वगेरे वायुओ क्यारे वाय छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्यारे वायुओ छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, छे. [प्र०] हे भगवन् ! ईपरपुरोवात वगेरे वायुका वयारे वायुओ वया छे. [प्र०] हे गौतम ! ज्यारे वायुक्का व्यक्त्यात्य योताने, वीजाने के बन्नेन माटे वायुकायने ज्वीरे छे ईपरपुरोवात वगेरे वायुओ वाय छे. [प्र०] हे भगवन् ! छुं वायुकायनेज आसमां छे छे अने निःश्वासमां सूके छे ? [उ०] हे गौतम ! ए संवंघे वधुं स्कंदक उद्देकमां कछा प्रमाव जालपक कहेवा. ॥ १६९ ॥ अह भंते ! ओदणे कुम्मासे सुरा एए णं किंसरीराति वत्तच्वं सिया ?, गोयमा ! ओदणे कुम्मासे सुराए य जे घणे दब्वे एए णं पुच्वभावपन्नवणं पडुच वणस्सइजीवसरीरा, तओ पच्छा सत्थातीया सत्थपरिणामिआ अगणिज्झामिया अगणिज्झासिया अगणित्र वापक्रगणि पडुच वणस्सइजीवसरीरा, तओ पच्छा सत्यातीता सतराराति सत्तव्व सिया, सुराए	गतके ग्रः २ ४५॥
---	-----------------------

 भ्याख्या- प्रकृपिः प्रित् प्रित् प्रविः प्रित् प्रित् प्रित् प्रित् प्रित्	:२
---	----

 ब्वं सिया ?, गोयमा ! अट्ठी चंमे रोमे सिंगे खुरे नहे एए णं तसपाणजीवसरीरा, अठिज्झामे चम्मज्झामे रोम- जझामें सिंग॰ खुर॰ णहज्झामे एए णं पुञ्वभावपण्ण वणं पडुच तसपाणजीवसरीरा, तओ पच्छा सत्थातीया जाव अगणिजीव॰त्ति वत्तव्वं सिया । अह भंते! इंगाले छारिए भुसे गोमए एस णं किंसरीराति वत्तव्वं सिया ?, गोयमा ! इंगाले छारिए मुसे गोमए एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच एगिंदियजीवसरीरप्तति वत्तव्वं सिया ?, गोयमा ! इंगाले छारिए मुसे गोमए एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच एगिंदियजीवसरीरप्तति वत्तव्वं सिया ?, गोयमा ! इंगाले छारिए मुसे गोमए एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच एगिंदियजीवसरीरप्तति वत्तव्वं सिया ?, गोयमा ! इंगाले छारिए मुसे गोमए एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच एगिंदियजीवसरीरप्तति वत्तव्वं सिया ॥ (सूचं १८०) ॥ [म॰] हे भगवन् ! हाइइं, आगथी विक्रत-वगडेल थएल हाइइं, चामइं, आगथी विक्रत थएल चामइं, रुंगडां, आगथी विक्रत थएल रुंगडां, खरी, आगथी विक्रत-वगडेल थएल हाइइं, चामइं, आगथी विक्रत थएल चामइं, रुंगडां, आगथी विक्रत थएल रुंगडां, खरी, आगथी विक्रत थएल खरी, नस, अने कठेल नस; ए वधां कया जीवना शरीरो कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! हाइइं, चामइं, रुंगडां, खरी अने नस, ए वधां व्रत जीवनां शरीरो कहेवाय अने बहेल हाइडं, बठेल चामइं, वठेल रंगडां, बठेल खरी अने बठेल नस, ए बधां पूर्व भाव प्रझापनानी अपेक्षाए त्रस जीवनां शरीरो कहेवाय अने पछी-यह्त हारा संघटित थया पछी-यावत्-अग्निगा जीवनां शरीरो कहेवाय. [प०] हे भगवन् ! अंगारो, राख, धुंसो अने छाणुं, ए वधां कया जीवनां शरीरो कहेवाय ?[उ॰] हे गौतम ! अंगारो, राख, धुंसो अने छाणुं, ए वधां पूर्व भाव प्रझापनानी अपेक्षाए एकेंद्रिय जीवनां शरीरो कहेवाय अने यावत्-यथासंभव पंचेंद्रिय जीवनां शरीरो पण कहेवाय. तथा शसहारा संघटित थया पछी यावत्- अग्निना ज्वरीरो कहेवाय. 	:2
--	----

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३४८॥	लवणे णं भंते ! समुदे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं पन्नत्ते ?, एवं नेयव्वं जाव लोगद्विती लोगाणुभावे, सेवं भंते ! २ त्ति भगवं जाव विहरइ ॥ (सूत्रं १८१) ॥ पत्रमदाते द्वितीयः ॥ ५-२ ॥ [प०] हे भगवन् ! लवणसमुद्रनो चकवाल विष्कंभ केटलो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे-पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं ए प्रमाणे यावत्-लोकस्थिति, लोकानुभाव, हे भगवन् ! ने ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे एम कही यावत्-विहरे छे. भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवत्तीसत्रना पांचमा शतकमां बीजा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो. अगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवत्तीसत्रना पांचमा शतकमां बीजा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो. उद्देशक ३. आगळना प्रकरणमां वायुकाय संवर्धे चिंतन कर्यु छे अने हवे वनस्पतिकाय विगेरेना शरीर संवर्धा चिंतन करतां जणावे छे केः- अण्णउत्थिया ण भंते ! एवमातिक्खंति भा० प० एवं प० से जहानामए जालगंठिया सिया आणुपुव्वि- गहिया अणंतरगढिया परंपरगढिया अन्नमन्नगढिया अन्नमन्नगुरुघत्ताए अन्नमन्नभारियत्ताए अन्नमन्नगुरुयसं- भारियत्ताए अण्णमण्णघडत्ताए जाव चिट्ठंति, एवामेव बहूणं जीवाणं बहूसु आजातिसयसहस्सेसु बहूइं आउयसहस्साइं आणुपुच्विगढियाइं जाव चिट्ठंति, एवानेव यहूणं जीवाणं बहूस्र आजातिसयसहस्सेसु यहूइं	रिक् ५ शतके उद्देशः ३ ॥३४८॥
) आउपसहस्साई आणुपुव्विगढिंपाई जाव चिट्ठंति, एगेऽविय णें जीवे एगेणें समएणे दो आउयाई पडिसंवे- दियति, तंजहा-इह्रभवियाउर्यं च परभबिधाउयं च, जं समयं इह्रभवियाउयं पडिसंवेदेइ तं समयं परभ-	29429

वियाउयं पडिसंबेदेइ जाव से कहमेयं भंते ! एवं ?, गोयमा ! जन्नं ते अझउत्थिया तं चेव जाव परभविया- उयं च, जे ते एवमाहंसु तं मिच्छा. अहं पुण गोयमा ! एवमातिक्खामि जाव परूवेमि अन्नमन्नघडत्ताए उयं च, जे ते एवमाहंसु तं मिच्छा. अहं पुण गोयमा ! एवमातिक्खामि जाव परूवेमि अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठंति, एवामेव एगमेगस्स जीवस्स बहूहिं आजातिसहस्सेहिं बहुई आउयसहस्साईं आणुपुन्विगढि- याइं जाव चिट्ठंति, एगेऽविय णं जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पडिसंवेदेइ, तंजहा-इहभवियाउयं वा परभवियाउयं वा, जं समयं इहभवियाउयं पडिसंवेदेह नो तं समयं पर० पडिसंवेदेह, परभावियाउयस्स परभवियाउयं वा, जं समयं इहभवियाउयं पडिसंवेदेह नो तं समयं पर० पडिसंवेदेह, परभावियाउयस्स पडिसंवेयणाए नो इहभवियाउयं पडिसंवेदेति, एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं प०, तंजहा- इहभ० वा परभ० वा ॥ (सुत्रं १८२) ॥ [प्र०] हे भगवत् ! अन्यतीर्थिको एम कहे छे, भाषे छे, जणावे छे अने प्ररूपे छे के, जेम कोइ एक जाठ होय, ते जाठमां जाळ जेम विसारपणे, परस्पर मारपो, परस्पर विस्तार तथा भारपणे अने परस्पर समुदायपणे रहे छे अर्थात् जाळ तो एक छे पण तेमां जेम अनेक गांठो परस्पर वल्यी रहेली छे तेम कमे करीने अनेक जन्मो साथे संबंघ धरावनारां एवां घणां आउखांत्रो घणा जीवो उपर परस्पर कमे करीने ग्रंथाएलां छे–यावत्–रहे छे अने तेम होवाथी तेमांने एक जीव पण एक समये वे आयुष्यने अनु- भवे छे. ते आ प्रमाणे:-एकज जीव आ भत्तुं आयुण्य अनुभवे छे तेम तेज जीव पर भवन्तुं पण आयुध्य अनुमवे छे जे समये आ	तः ₹
---	-------------

▶षाख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३५०॥	मकोडानी पेठे परस्पर ऋमे करीने गुंथाएलां होय छे अने एम होवाथी एक जीव एक समये एक आयुष्यने अनुभवे छे. ते आ रीतेः-जे जीव आ भवनुं आयुष्य अनुभव तो के अथवा तो परभवनुं आयुष्य अनुभवे छे पण जे समये आ भवनुं आयुष्य अनुभवे छे ते समये परभवनुं आयुष्य अनुभवतो नथी अने जे समये परभवनुं आयुष्य अनुभवे छे ते समये आ भवनुं आयुष्य अनुभव ते म्थी- जा भवना आयुष्यने वेदवाथी परभवनुं आयुष्य वेदातुं (वेदतो) नथी अने परभवना आयुष्यने वेदवाथी आ भवनुं आयुष्य वेदातुं (वेदतो) नथी ए प्रमाणे एक जीव एक समये एक आयुष्यने अनुभवे छे ते आ प्रमाणेः-आ भवनुं आयुष्य अनुभवे छे के परभवनुं आयुष्य अनुभवे छे. ॥ १८२ ॥ जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जितए से णं भंते ! किं साउए संकमइ निराउए संकमइ ? गोयमा ! साउए संकमइ, नो निराज्ए सकमइ । से णं भंते ! आउए कहिं कडे कहिं समाइण्णे ?, गोयमा !	५ शतक उद्देशः३ ॥३५०॥
	🖞 पुरिमे भवे कडे, पुरिमे भवे समाइण्णे, एवं जाव वेमाणियाणं दंडओ। से नूणं भंते! जे जंभविए जोणिं 🧗	
Š	उववज्रित्तए से तमाउयं पकरेइ, तंजहा-नेरइयाउयं वा जाव देवाउयं वा ?, हंता गोयमा ! जे जंभविएं 🎗	an an an an an Eile ann an Air

व्याख्या- प्रक्राप्तिः प्रक्राप्तिः प्रक्राप्तिः ॥३५१॥ (तिरिक्खजोणियाउयं पकरेमाणे पंचविहं पकरेइ, तंजहा-एगिंदियतिरिक्खजोणियाउयं भाणियव्वो, मणुस्साउयं दुविहं, देवाउयं चडव्विहं, सेवं भंते! सेवं भंते!॥ (सूत्रं तृतीयोदेशकः ॥ ५-३ ॥ [प्र॰] हे मगवन्! जे जीव नरके जवाने योग्य होय. हे भगवन्! ग्रुं ते जीव, अहींथी आयुष्य सति [उ॰] हे गौतम! नरके जवाने योग्य जीव अहींथी आयुष्य सहित थइने नरके जाय, पण आयुष्य दिन भगवन्! ते जीवे, ते आयुष्य क्यां बांध्युं अने ते आयुष्य संबंधी आचरणो क्यां आचर्यां ? [उ॰] हे गौतम पूर्व भवमां बांध्युं अने ते आयुष्य संबंधी आचरणो पण पूर्व भवमां आचर्यां. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिको छ पूर्व भवमां बांध्युं अने ते आयुष्य संबंधी आचरणो पण पूर्व भवमां आचर्यां. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिको छ पूर्व भवमां बांध्युं अने ते आयुष्य संबंधी आचरणो पण पूर्व भवमां आचर्यां. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिको छ प्रजवाने योग्य जीव नरक योनिनुं आयुष्य बांधे यावत्-देवयोनिमां डपजवाने योग्य जीव देवयोनिनुं हे गौतम ! हा, तेम करे अर्थात् जे जीव, जे योनिमां डपजवाने योग्य होय, ते जीव, ते योनि संबंधी आयुष्य जीव नरकनुं आयुष्य बांधे. जो नरकनुं आयुष्य बांधे तो ते, सात प्रकारना नरकमांथी कोइ एक प्रकार	
--	--

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३५२॥	बांधे—रत्नप्रभाष्ट्यिवी-नरकलुं आयुष्य के यावत्-अप!सप्तमपृथिवी-सातमी नरक-तुं आयुष्य बांधे. जो ते, तिर्यंचतुं आयुष्य बांधे तो पांच प्रकारना तिर्यंचमांथी कोइ एक तिर्यंच संबंधी आयुष्य बांधे-एकेंद्रिय तिर्यचतुं आयुष्य इत्यादि-ए संबंधी बधो विस्तार- मेद-विशेष-अहीं कहेवो. जो ते, मनुष्यनुं आयुष्य बांधे तो ते वे प्रकारना मनुष्योमांथी कोइ प्रकारना मनुष्यनुं आयुष्य बांधे अने जो ते, देवनुं आयुष्य बांधे तो-चार प्रकारना देवोमांथी कोइ एक प्रकारना देवोनुं आयुष्य बांधे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे हे, हे भगवन् ! ए प्रमाणे छे एम कही यावत्-विहरे छे. ॥ १८३ ॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीस्त्रना पांचमा शतकमां त्रीजा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो. ा भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीस्त्रना पांचमा शतकमां त्रीजा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो. उद्देशक ४. (आयुष्यतुं प्रकरण चालतुं होवाथी आ प्रकरणमां पण आयुष्य संबंधी बीजी वात कहेवाने सारु आ सूत्र कहे छे के) छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से आउडिज्जमाणइं सद्दाईं सुणेइ, तंजहा—संखसद्दाणि वा सिंगस० संखियस० खरसुहिस० पोयास० परिपिरियास० पणवस० पणहस० भंभास० होरंभस० भेरिसद्दाणि वा झछरिस० दुंदु- हिस० तयाणि वा वित्याणि घणाणि वा झुसिराणि वा !, हंता गोयमा ! छउमत्थे णं मणूसे आउडिज्ज- माणाई सद्दाई सुणेइ, तंजहा-संखसद्दाणि वा जाव झुसिराणि वा । ताइं भंते ? किं पुटाइं सुणेह अगुउडिज्ज-	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~
	सुणेइ ?, गोयमा ! पुटाई सुणेइ, नो अपुटाई सुणेइ, जाव नियमा छदिसिं सुणेइ । छउमत्थे णं मणुस्से किं	3

व्याख्या-

प्रज्ञप्तिः

।।३५३॥

1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	आरगयाई सदाई सुणेइ पारगयाई सदाई सुणेइ?. गोयमा! आरगयाई सदाई सुणेइ, नो पारगयाई सदाई सुणेइ । [प्र0] हे भगवन् ! छबस्थ मनुष्य, वगाडवामां आवता शब्दोने सांभळे छे, ते आ प्रमाणे:-ते मनुष्य, शंखना शब्दोने, रणशिंगाना शब्दोने, शंखलीना शब्दोने, काहलीना शब्दोने, मोटी काहलीना शब्दोने, डुकरना चामडाथी मढेल मोढावाळा-एक जातना-वाजाना शब्दोने, ढोलना शब्दोने, ढोलकीना शब्दोने, ढका-डाक-डाकला-ना शब्दोने, होरंभना शब्दोने, मोटी ढकाना शब्दोने, झालरना शब्दोने, ढुंदुभिना शब्दोने, तत-तांतवाळा-(वीणा बगेरे)-वाजाना शब्दोने, होरंभना शब्दोने, मोटी ढकाना शब्दोने, झालरना शब्दोने, ढुंदुभिना शब्दोने, तत-तांतवाळा-(वीणा बगेरे)-वाजाना शब्दोने, वितत-ढोल-वाजाना शब्दोने नकर वाजाना शब्दोने अने पोलां वाजाना शब्दोने सांभळे छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, छबस्थ मनुष्य, वगाडवामां आवता शब्दोने सांभळे छे. अने ते पण पूर्वे कह्या एटलां बधां वाजांओना-शंखथी यावत-पोलां वाजांओना शब्दनं पण सांभळे छे. [प्र0] हे भग- वन् ! शुं ते शब्दो कान साथे अथडाया पछी संभताय छे के अथडाया विना संभळाय छे ? [उ०] हे गौतम ! ते शब्दो वातम ! ते शब्दो कान साथे अथडाया पछी संभत्राय छे, पण अथडाया विना नथी संभलाता. अने ते यावत्-अथडाया पछी छए दिशामांथी संभलाय छे. [प्र0] हे भगवन् ! शुं छश्वस्थ मनुष्य, ओरे रहेला शब्दोने सांभळे छे के परे-रहेलाइंट्रियोना विषयथी दूर रहेल-शब्दोने सांभळे	স্টু বা	्यतके देशः४ ३५३॥
Stort of the State	नकर वाजाना शब्दोने अने पोलां वाजाना शब्दोने सांभळे छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, छबस्थ मनुष्य, वगाडवामां आवता शब्दोने सांभळे छे. अने ते पण पूर्वे कह्या एटलां बधां वाजांओना-शंखथी यावत्-पोलां वाजांओना शब्दन पण सांभळे छे. [प्र०] हे भग- वन् ! शुं ते शब्दो कान साथे अथडाया पछी संभळाय छे के अथडाया विना संभळाय छे ? [उ०] हे गौतम ! ते शब्दो कान साथे अथडाया पछी संभळाय छे, पण अथडाया विना नथी संभळाता. अने ते यावत्-अथडाया पछी छए दिशामांथी संभळाय छे. [प्र०] हे भगवन् ! शुं छबस्थ मनुष्य, ओरे रहेला शब्दोने सांभळे छे के परे-रहेलाइंद्रियोना विषयथी दूर रहेल-शब्दोने सांभळे छे ? [उ०] हे गौतम ! छबस्थ मनुष्य, ओरे रहेला शब्दोने सांभळे छे के परे-रहेलाइंद्रियोना विषयथी दूर रहेल-शब्दोने सांभळे छे ? [उ०] हे गौतम ! छबस्थ मनुष्य, ओरे रहेला शब्दोने सांभळे छे, पण परे रहेला शब्दोने सांभळतो नथी. जहा णं भंते ! छउमत्थे मणुस्से आरगयाइं सदाइं सुणेइ नो पारगयाइं सदाइं सुणेइ तहा णं भंते ! केवली मणुस्से किं आरगयाइं सदाइं सुणेइ पारगयाइं सदाइं सुणेइ ?, गोयमा ! केवली णं आरगयं वा	ふしょう ちょう ちょう ちょう	

ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३५४॥	and an	[प्र0] हे भगवन ! जेम छबस्य मनुष्य ओरे रहेला शब्दोने सांभळे छे अने परे रहेला शब्दोने सांभळतो नथी तेम शुं केवळी मनुष्य ओरे रहेला शब्दोने सांभळे छे अने परे रहेला शब्दोने नथी सांभळतो ? [उ0] हे गौतम ! केवळी तो ओरे रहेला अने परे रहेला आदि अने अंत विनाना शब्दने म्सर्व प्रकारना शब्दने जाणे छे अने जूए छे. [प्र0] हे भगवन ! ' ओरे रहेला अने परे रहेला आदि अने अंत विनाना शब्दने म्सर्व प्रकारना शब्दने जाणे छे अने जूए छे. [प्र0] हे भगवन ! ' ओरे रहेला अने परे रहेला आदि अने अंत विनाना शब्दने म्सर्व प्रकारना शब्दने जाणे छे अने जूए छे. [प्र0] हे भगवन ! ' ओरे रहेला अने परे रहेला शब्दने पण यावत्-(नेज प्रमाणे कहेबुं) केवळी जाणे छे अने जूए छे' ते उं शुं कारण ? [उ0] हे गौतम ! केवळी जीव पूर्व दिशानी मित वस्तुने पण जाणे छे अने अमित वस्तुने पण जाणे छे, ए प्रमाणे दक्षिण दिशानी, पश्चिम दिशानी, उत्तर दिशानी, उर्ध्व दिशानी अने अधो दिशानी पण मित वस्तुने तथा अमित वस्तुने केवळी जाणे छे अने जूए छे. केवळी बधुं जाणे छे अने बधुं जूए छे. केवळी बधी तरफ जाणे छे अने जूए छे. केवळी सर्व काळे सर्व पदार्थो–भावो–ने जाणे छे अने जूए छे, केवळीने अनंत नानी अने अनंत दर्शन छे अने केवळीन जान अने दर्शन कोइ जातना पडदा (आवरण) वाळं नथी माटे ते कारणधी' यावत-	CARAGE A CARACTE	५ शतके उद्देशः४ ॥३५४॥	
-----------------------------------	--------------------------------------	---	------------------	-----------------------------	--

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३५५॥	् ए अर्थ समर्थ नथी-छग्नस्थ मनुष्यनी पेठे यावत्-केवळी न हसे अने उतावळो पण न थाय. [प्र०] हे भगवन् ! छग्नस्थ मनुष्यनी पेठे यावत्-केवळी हसे नही अने उतावळो थाय नहीं तेनुं छुं कारण ? [उ०] हे गौतम ! दरेक जीवो चारित्रमोहनीय कर्मना उदयथी हसे	そうてきょう ちょう やうちょう しょうちょう	ग्रतके शः४ ५५॥
	यावत्-केवळी हसे नही अने उतावळो थाय नहीं तेनुं छुं कारण १ [उ०] हे गौतम ! दरेक जीवो चारित्रमोहनीय कर्मना उदयथी हसे		

 इसता नथी तेम उतावला पण थता नथी. [प्र0] हे मगवच् ! हसतो अने उतावळो थतो जीव केटलां प्रकारनां कमोंने बांधे? [30] हे गौतम ! तेवा प्रकारनो जीव सात प्रकारना कमोंने बांधे के आठ प्रकारनां कमोंने बांधे. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिक सुधी समजवुं. तथा ज्यारे घणा जीवोने आश्रीने उपलो प्रश्न पूछाय त्यारे तेमां कर्मना बंध संबंधी त्रण भांगा आवे. पण तेमां जीव अने एकें दियो न छेवा. [प्र0] हे भगवच् ! छवस्थ मनुष्य निरा ले-उंघे अने उभो उभो उंघे? [30] हे गौतम ! हा, ते उंघे अने उभो उभो ार्थ स्वर्ण पण उंघे. जेम आगळ हसवा वगेरे विषे केवळी अने छवस्थ संबंधे प्रश्नोत्तरो जणाव्या हता. तेम निदा संबंधे पण ने बके संबंधे प्रश्नोत्तरे वर्ष जे ज्यो ज्यो जाणवा. विशेष ए के, छद्यस्थ मनुष्य दर्शनावरणीय कर्मना उदयथी निदा ले छे अने उभो उभो उंघे छे अने ते दर्शनावरणीय कर्मना उदयथी निदा ले छे अने उभो उभो उंघे छे अने ते दर्शनावरणीय कर्मनी उदय केवळिने नथी माटे ते, छद्यस्थ मनुष्य दर्शनावरणीय कर्मना उदयथी निदा हेता. तथा ज्यारे घणा जीवोने उपले प्रश्न त्रि संबंधे प्रश्नोत्तरे वर्ध कर्मने उदय केवळिने नथी माटे ते, छद्यस्थनी पेठे निदा छेतो नथी. (इत्यादि बीजुं बधुं तेज प्रमाणे जाणवुं.) [प्र0] हे भगवच् ! तिदा लेतो के उभो उभो उंघतो जीव केटली कर्मग्रहतिनो बंध करे (बांधे) [30] हे गौतम ! ते जीव सात कर्मग्रहतिनो बंध करे के आठ कर्मग्रहतिनो बंध करे (बांधे). ए प्रमाणे यावत्-वैमानिक सुधी जाणवुं. तथा ज्यारे घणा जीवोने उपलो प्रश्न प्रतारे कर्म ते के प्रते ! हरिणेगमेसी सक्कदूए इत्थीगबभं संहरणमाणे कि गब्भाओ गब्भं साहरह ? गब्भाओ गब्भ ते में कर्मना वंध संबंधी त्रण भांगा आवे, पण तेमां जीव अने एकेंद्रिय न लेवा. ॥ १८५ ॥ हरी र्ण भंते ! हरिणेगमेसी सक्कदूए इत्थीगबभं संहरणमाणे कि गब्भाओ गब्भ साहरह ? गाब्भाओ गब्भ कर्म कर्मना कर्म साहरह ? जोणीओ जाब केट क्रे एक्कंद्रिय न लेवा. ॥ १८५ ॥ हरी र्ण भंते ! हरिणेगमेसी सक्कदूए इत्थीगबभं सोहरह ?, गोयमा ! तो गब्भाओ गब्भ साहर ? त्राबभाओ गब्भ स्वर्भ क्या वर्भ संहर ? जोणीओ जारिं साहरह ?, गोणीओ जाब्भ स्वर्भ र अव्ववाबाहे क्ये क्या लब्भ सं सं स्वर्थ त्रा क्र साहरह ? जोणीओ जारिं साहरह ? जोणीओ गब्भ साहर ? जोर्ग साहर : स्वर्भ त्या त्या स्वर्ध त्रण ते ! हरिणेगमेसी सक्कत्त स्वर्ध त्र तो गब्द त्या त्या स्वर्य त्र स्वर्य त्या त्या त्	
---	--

	•	•	Ū
च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३५७॥	वा साहरित्तए वा नीहरित्तए वा ?, इंता पशुं, नो चेव णं तस्स गब्भस्स किंचिवि आवाहं वा विवाहं वा उप्पाएज़ा, छविच्छेदं पुण करेज़ा, एसुहुमं च णं साहरिज़ वा नीहरिज़ वा ॥ (सूत्रं १८६) [प्र•] हे भगवन ! इंद्रनी संबंधी शकनो द्त हरिनैगमेपी नामनो देव ज्यारे स्त्रीना गर्भनुं संधरण करे छे त्यारे शुं एक गर्भाशयमांथी गर्भने लहने बीजा गर्भाशयमां मूके छे गर्भथी लइने योनिद्वारा बीजी (स्त्री) ना ज्दरमां मूके छे ? के योनिद्वारा गर्भने बहार काहीने बीजा गर्भाशयमां मूके छे ? के योनिद्वारा गर्भने पेटमांथी काहीने पाछो तेज रीते (योनिद्वाराज बीजीना) पेटमां मूके छे ? [उ०] हे गौतम ! ते देव, एक गर्भाशयमांथी गर्भने लडने बीजा गर्भाशयमां मूकतो नथी, गर्भथी लडने योनि वाटे गर्भने बीजीमा पेटमां मूकतो नथी, तेम योनिवाटे गर्भने षहार काहीने पाछो योनिवाटे (गर्भने) पेटमां मूकतो नथी, पर्भथी लडने योनि वाटे गर्भने बीजीमा पेटमां मूकतो नथी, तेम योनिवाटे गर्भने षहार काहीने पाछो योनिवाटे (गर्भने) पेटमां मूकतो नथी. पण पोताना हाथ बडे गर्भने अंडी अडीने अने ते गर्भने पीडा म याय तेवी रीते योनिद्वारा बहार काहीने चीजा गर्भाशयमां मूके छे. [प्र0] हे भगवन ! शकनो द्रत हरिनैगमेपी देव स्त्रीना गर्भने नखनी टोच वाटे या तो रुवाडाना छिद्र वाटे अंदर मूकवा के बहार काढवा समर्थ छे ? [उ0] हे गौतम ! हा, ते तेम करवाने समर्थ छे उपरांत ते देव गर्भने काइपण औछी के वधारे पीडा बाद देतो नथी तथा ते गर्भना शरीरनो छेद-शरीरनी कापक्तप-करे छे अने पछी तेने घणो सूक्ष्म करीने अंदर मूके छे के बहार काढे छे. ॥ १८६ ॥ तेणं काछेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अइमुत्ते णामं क्रुमारसमणे पगति भइए जाव बिणीए, तए णं से अइमुत्ते कुमारसमणे अण्णया कयाइ महायुट्टिकायंसि निवयमाणांसि कत्त्व्याडिग्न	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	्यतके देशः४ ३५७॥

			J
व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३५८॥	हरयहरणमायाए बहिया संपट्टिए विहाराए, तए णं से अइमुत्ते कुमारसमणे वाहयं वहमाणं पासइ २ महि- याए पार्लि बंधइ णाविया मे २ नाविओविव णावमयं पडिग्गहगं उदगंसि कट्टु पव्वाहमाणे २ अभिरमइ, तं च थेरा अददर्खु, जेणेव समणे भगवं० तेणेव उवागच्छंति २ एवं वदासी-एवं खऌ देवाणुप्पियाणं अंतेवासी अतिमुत्ते णामं कुमारसमणे से णं भंते ! अत्तिमुत्ते कुमारसमणे कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिहिति जाव अंतं करोहिति ?, अज्ञो समणे भगवं महावीरे ते थेरे एवं वयासी- ते काले, ते समये अमण भगवंत महावीरना शिष्य अतिमुक्तक नामना कुमारश्रमण, जेओ रूभावे मोला अने यावत्-विनय- ते काले, ते समये अमण भगवंत महावीरना शिष्य अतिमुक्तक नामना कुमारश्रमण, जेओ रूभावे मोला अने यावत्-विनय- वाळा हता. ते अतिमुक्तक कुमारश्रमण अन्य कोइ दिवसे भारे वरसाद वरसतो हतो त्यारे पोतानी काखमां पांचुं अने रजोहरण लहने बहार (वडी शंकाना निवारण माटे) चाल्या. त्यारपछी बहार जतां ते अतिमुक्तक कुमारश्रमणे वेता पाणीत्रुं एक नानुं खाबोचियुं जोयुं-तेने जोया-पछी ते खाबोचिया फरती एक माटीनी पाळ वांधी अने 'आ मारी नावछे आ मारी नाव छे' ए प्रमाणे नाविकनी पेठे पोताना पात्र नावरूप करी-पाणीमां नाखी ते कुमारश्रमण प्रवाहे छे-पाणीमां तरावे छे-ए रीते ते, रमत रमे छे. हवे ए प्रकारना बनावने व्यविरोए जोयो अने जोया पछी तेओए जे तरफ श्रीमहावीरस्वामी छे ने तरफ आवीने आ प्रमाणे कहु के:- एवं खऌ अज्ञो ! मम अंतेवासी अइम्रुत्ते णामं कुमारसमणे पगतिभद्दए जाव विणीए से णं अइम्रुत्ते कुमा- रस्तमणे इमेणं चेव भवग्गहणेणां सिज्झिहिति जाव अंतं करेहिति, तं मा णं अज्ञो ! तुब्भे अतिमुक्तं कुमारसमणं मणं हील्लेह निंदह खिंसह गरहह अवमन्नह, तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! अतिमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए	******************	९ शतके उद्देशः४ ।।३५८॥

प्रज्ञांतेः 🙀 महावीरं वंदति नमंसंति अइमुत्तं कुमारस मणं अगिलाए संगिण्हंतित्ति जाव वैयावडियं करेति ॥(सूत्रं १८७)॥ 🐔	उद्देशः४ ॥३५९॥
--	-------------------

प्रबंधिः के मणसा चेव इमं एतास्वं वागरणं वागरेति-एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम सत्त अंतेवासीसयाइं मिज्झि- प्र	शतके (शः४ १६०॥
--	----------------------

•

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३६१॥	जाव समुप्पज्जित्था, एवं खलु दो देवा महिड्ढिया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया तं नो खलु अहं ते देवे जाणामि कयराओ कप्पाओ वा सग्गाओ वा विमाणाओ वा करस वा अत्थस्स अद्वाए इहं हव्वमागया ?, तं गच्छामि णं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि जाव पज्जुवासामि इमाइ च णं एयारूवाइ वागरंणाइं पुच्छिस्सामित्तिकट्टु एवं संपेहेति २ उट्ठाए उट्ठेति २ जेणेव समणे भगवं महा॰ जाव पज्जुवासति, गोयमादि समणे भगवं म॰ भगवं गोयमं एवं वदासी-से णूणं तव गोयमा ! झाणंतरियाए बहमाणरस इमेयारूवे अज्झंत्थिए जाव जेणेव मम अंतिए तेणेव हव्वमागए, से णूणं गोयमा ! आत्थे सम- त्थे ?, हंता अत्थि, तां गच्छाहि णं गोयमा ! एए चेव देवा इमाई एयारूवाइं वागरणाईं वागरेहिंति, ते काले, ते समये अमण भगवंत महावीरना मोटा शिष्य इंद्रभूति नामना अनगार यावत्-श्रीमहावीरनी पासे उभडक बेसीने यावत्-विदरे-रहे छे. पछी ध्यानांतरिकामां-ध्याननी समाप्तिमां वर्तता अर्थात् पूरेपूरुं ध्यान ध्याई रह्या पछी ते भगवान् गौतम	いい いっかい ちょうちょう ちょうちょう ちょうちょう うちょうかい ひょうちょう ひょうしょう しょう しょう しょう しょう しょう しょう しょう しょう しょ	शतके शः४ ३६१॥
-----------------------------------	--	--	---------------------

घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३६२॥	तें ध्याननी समाप्ति करी लीधी त्यारे तारा मनमां आ प्रकारनो संकल्प थयो हतो के 'हुं देवो संबंधी हकीकत जाणवा माटे अमण 💃	५ शतके उद्देशः४ ॥३६२॥
:	रेति -एव खलु देवाणु॰ मम सत्त अतेवासीसयाई जाव अतं करेहिति, तए ण अम्हे समणेणं भगवया महा-	

प्रज्ञप्तिः 🦿 नमसामा २ जाव पज्जुवासामा तिकटु मगव गातम वदात नमसात २ जामव दिसि पाउँ तामव दिरि कि उद्देश	शतके शः४ ६३॥
---	--------------------

 भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं जाव एवं वदासी-देवा णं भंते ! संजयाति वत्तव्वं सिया ?, गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे, अञ्भक्खाणमेयं, देवा णं भंते ! असंजताति वत्तव्वं सिया ?, गोयमा ! णो तिणट्ठे०, णिट्टुर्क यणमेयं, देवा णं भंते ! संजयासंजयाति वत्तव्वं सिया ?, गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे, असब्भूयमेयं देवाणं, यणमेयं, देवा णं भंते ! संजयासंजयाति वत्तव्वं सिया ?, गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे, असब्भूयमेयं देवाणं, से किं खाति णं भंते ! देवाति वत्तव्वं सिया ?, गोयमा ! देवा णं नोसंजयाति वत्तव्वं सिया ॥ (स्त्रं १८९) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! 'एम कही भगवान् गौतमे अमण भगवंत महावीरे यावत्–आ प्रमाणे कछुं के हे भगवन् ! देवो संयत कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! ना-ए अर्थ समर्थ नथी-देवोने संयत कहेवा ए छोटुं छे. [प्र०] हे मगवन् ! देवो असंयत कहे- वाय ? [उ०] हे गौतम ! ना-ए अर्थ समर्थ नथी-देवोने संयत कहेवा ए अछतुं छतुं करवा जेवुं छे-छोटुं छे. [प्र०] हे भगवन् ! त्यारे हवे देवोने केवा कहेवा ? [उ०] हे गौतम ! ना-ए अर्थ समर्थ नथी-देवोने संयता कहेवा ए अछतुं छतुं करवा जेवुं छे-छोटुं छे. [प्र०] हे भगवन् ! त्यारे हवे देवोने केवा कहेवा ? [उ०] हे गौतम ! ना-ए अर्थ समर्थ नथी-देवोने संयताहंपत कहेवा ए अछतुं छतुं करवा जेवुं छे-छोटुं छे. [प्र०] हे भगवन् ! त्यारे हवे देवोने केवा कहेवा ? [उ०] हे गौतम ! देवोने नोसंयत कहेवा ॥ १८८ ॥ देवा णं भंते ! कयराए भासाए भासंति ?. कयरा वा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ?. गोयमा ! देवा णं अद्यमागहाए भासाए भासंति, सावि य णं अद्यमागहा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ?. गोयमा ! देवा णं भाषा छे ? [उ०] हे गौतम ! देवो अर्धमागधी भाषमां बोले छे अने त्यां बोत्राती भाषाओमां पण नेज भाषा-अर्धमागधी भाषा छे ? [उ०] हे गौतम ! देवो अर्धमागधी भाषमां बोले छे अने त्यां बोत्राती भाषाओमां पण नेज भाषा-अर्धमागधी भाषा दिशिष्टरूप छे. ॥ १९० ॥ 	ग ?, गोयमा ! णो तिणहे०, णिट्रहुरव- तिणहे समहे, असब्भूयमेयं देवाणं, उदेशःश्व ग्याति वत्तव्वं सिया ॥ (सूत्रं १८९) ॥ -आ प्रमाणे कछुं के, हे भगवन् ! देवो संयत जे हे . [प्र०] हे भगवन् ! देवो असंयत कहे- चिन छे. [प्र०] हे भगवन् ! देवो असंयत कहे- कहेवा ए अछतुं छतुं करवा जेवुं छे-स्वोटुं छे. कहेवा ॥ १८९ ॥ णी विसिस्सति !, गोयमा ! देवा णं माणी विसिस्सति ॥ (सूत्रं १९०)॥ योग करे छे ते भाषाओमां विशिष्टरूप कइ
--	--

 केवली णं भंते ! अंतकरं वा अंतिमसरीरियं वा जाणति पासइ ?, हंता ! गोयमा ! जाणति पासति । जहा णं भंते ! केवली अंतकरं वा अंतिमसरीरियं वा जाणति पासति तहा णं छउमत्थेऽवि अंतकरं वा अंति- जहा णं भंते ! केवली अंतकरं वा अंतिमसरीरियं वा जाणति पासति तहा णं छउमत्थेऽवि अंतकरं वा अंति- गसरीरियं वा जाणति पासति ?, गोथमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे, सोचा जाणति पासति, पमाणतो वा, से किं तं सोचा णं ?, केवलिस्स वा केवलिसावयस्स वा केवलिमावियाए वा केवलिउवासगस्स वा केवलिउवासियाए वा तप्पक्त्वियरस्स वा तप्पक्त्वियस्स वा तप्पक्त्वियस्य सावियाए वा तप्पक्तियउवासगस्स वा तप्प- वा तप्पक्त्वियउवासियाए वा से तं सोचा ॥ (सू० १९१) ॥ [भ०] हे भगवन् ! केवली मनुष्य, अंतकरने वा चरमधरीरवाळाने जाणे, जूए ? [उ०] हा, गौतम ! जाणे अने जूए. [भ०] हे भगवन् ! जे प्रकारे केवली मनुष्य, अंतकरने वा चरमधरीरवाळाने जाणे, जूए ? [उ०] हा, गौतम ! जाणे अने जूए. [भ०] हे भगवन् ! जे प्रकारे केवली मनुष्य, अंतकरने वा चरमधरीरवाळाने जाणे, जूए ? [उ०] हा, गौतम ! जाणे अने जूए. [भ०] हे भगवन् ! जे प्रकारे केवली मनुष्य, अंतकरने वा चरमधरीरवाळाने जाणे, जूए ? [उ०] हा, गौतम ! जाणे अने जूए. [भ०] हे भगवन् ! जे प्रकारे केवली मनुष्य, अंतकरने वा चरमधरीरवाळाने जाणे, जूए ? [उ०] हा, गौतम ! जाणे अने जूए. [भ०] तकरने वा चरमदेहिने जाणे अने जूए. [भ०] ' सांभळीने ' ते छुं ? [उ०] सांभळीने अथवा प्रमाणथी छडास्थ मनुष्य पण अंत- करने वा चरमदेहिने जाणे अने जूए. [भ०] ' सांभळीने ' ते छुं ? [उ०] सांभळीने एटले केवली पाक्षिक-स्वयंवुद्ध-पासेथी, स्वयंवुद्धना आवक पासेथी, स्वयंवुद्धर्नी आविका पासेथी, केवलिनी डपासिका पासेथी, केवलिना पाक्षिक-स्वयंवुद्ध-पासेथी, ए ' सांगळीने ' बब्दनो अर्थ थयो. ॥ १९१ ॥ से किं तं पमाणे ?, २ पमाणे चउडिवहे पण्णत्ते, तंजहा-पच्चक्खे अणुमाणे ओवम्मे आगमे, जहा अणुओ- रावर्य के तं पमाणे ?, २ पमाणे चउडिवहे पण्णत्ते, तंजहा-पच्चक्खे अणुमाणे ओवम्मे आगमे, जहा अणुओ- 	:8
--	----

प्रज्ञाप्तिः 🖉 प्रकारे ' अनुयोगद्वार ' मूत्रमां प्रमाण संबंधे लख्युं छे ते प्रकारे जाणवुं, यावत्—' त्यारबाद नो आत्मागम, नो अनन्तरागम, 🐇	५ शतके उद्देशः४ ।।३६६॥
---	------------------------------

प्रज्ञप्तिः प्रज्ञपिः ॥३६७॥ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १		२ गतक उद्देशः ४ ।।३६७॥ ४
--	--	-----------------------------------

प्रमाण अनन्तर डरपन्न थयेला, परंपराए उत्पन्न थएला, पर्याप्तर तेमां जेओ पर्याप्तो छे तेओ जाणे छे अने अपर्याप्तो नथी जाणता.] ए प्रमाण अनन्तर उत्पन्न थयेला, परंपराए उत्पन्न थएला, पर्याप्तरूपे उत्पन्न थपेला, उपयोगवाला, अनुप- युक्त-उपयोग विनाना, ए प्रकारना वमानिक देवो छे, तेमां जे उपयोगवाला सावधानतावाला छे तेओ जाणे छे, माटे ते हेतुथी तेज-केटलाक जाणे छे, अने केटलाक नथी जाणता. ॥ १९४ ॥ पभू णं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धिं आलावं वा संलावं वा करेत्तए ?, हंता पभू, से केणट्ठेणं जाव पभू णं अगुत्तरोववाइया देवा जाव करेत्तए ?, गोयमा ! जण्णं अणु- त्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा वागरणं वा कारणं वा पुच्छंति तए णं इहगए केवली अट्ठं वा जाव वागरणं वा वागरेति से तेणट्ठेणं । जन्नं, भंते ! इहगए चेव केवली अट्ठं वा जाव वागरेति तण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जा॰ पा॰ ?, हंता ! जाणंति पासंति, से केणट्ठेणं जाव पासंति ?, गोयमा ! तेसिणं देवाणं अणंताओ मणोद ववगणाओ लढाओ पत्ताओ अभिससमन्नागयाओ भवंति, से तेणट्ठेणं जण्णं इहगए केवली जाव पा॰ ॥ (सू॰ १९५) ॥ [प्र॰] हे भगवन् ! अनुत्तर विमानमां उत्पन्न थयेला देवो त्यांज रहा छ्ता, आंहे रहेला केवली साथे आलाप, संलाप करवाने समर्थ छे ? [उ॰] हा, समर्थ छे. [प्र॰] ने कथा हेतुथी यावत्-अनुत्तरविमानना देवो यावत्-करवा समर्थ छे ? [उ॰] हे गौतम !	- - - - - - - - - - - - - -
ू समर्थ छे ? [उ०] हा, समर्थ छे. [प्र०] ते कपा हेतुथी यावत्-अनुत्तरविमानना देवो यावत्-करवा समर्थ छे ? [उ०] हे गौतम ! त्यांज-पोताने स्थानके रहेलाज अनुत्तर विमानना देवो जे अर्थने, हेतुने, प्रश्नने, कारणने वा व्याकरणने पूछे छे तेनो-ते अर्थनो,	× ×

 इतुनो यावत्-व्याकरणनो उत्तर अहिं रहेलो केवली आपे छे, ते हेतुथी. [प्र०] हे भगवन ! अहिं रहेलो केवली अर्थनो यावत्- ज्रहा कि उत्तर आपे ते उत्तरने त्यां रहेलाज अनुत्तर विमानना देवो जाणे, जूए ? [उ०] हा, जाणे, जूए. [प्र०] ते कया हेतुथी यावत्- जूए ? [उ०] हे गौतम ! ते देवोने अनंती मनोद्रव्यवर्भणाओ रूष्य छे, प्राप्त छे, विशेषे ज्ञात होय छे ते हेतुथी आहिं रहेलो केवली जूए ? [उ०] हे गौतम ! ते देवोने अनंती मनोद्रव्यवर्भणाओ रूष्य छे, प्राप्त छे, विशेषे ज्ञात होय छे ते हेतुथी आहिं रहेलो केवली जुए ? [उ०] हे गौतम ! ते देवोने अनंती मनोद्रव्यवर्भणाओ रूष्य छे, प्राप्त छे, विशेषे ज्ञात होय छे ते हेतुथी आहिं रहेलो केवली जे कहे छे तेने तेओ (जाणे छे) यावत्-जूए छे. ॥ १९५ ॥ अणुत्तरोववाइया णं भंते ! देवा किं उदिन्नमोहा उवसंतमोहा खीणमोहा ?, गोयमा ! नो उदिन्नमोहा, उवसंतमोहा, णो खीणमोहा ॥ (सू० १९६) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! अनुत्तरविमानना देवो छुं उदीर्ण मोहवाळा छे, उपश्चांत मोहवाळा छे के क्षीणमोहवाळा छे ? [उ०] हे गौतम ! उदीर्णमोहवाळा नथी, क्षीणमोहवाळा नथी पण उपश्चांतमोहवाळा छे. ॥ १९६ ॥ केवली णं भंते ! आयाणेहिं जा० पा० ?, गोयमा ! णो तिणट्ठे स०, से केणहेणं जाव केवली णं आयाणेहिं न जाणइ न पासइ ?, गोयमा ! केवली णं पुरच्छिमेणं मियंपि जाणह अमियंपि जा० जाव निव्चुडे दंमणे केवलिरस से तेण० ॥ (सूत्रं १९७) ॥ [प्र०] हे भगवन ! केवली मनुष्प आदानो-इन्ट्रियोवडे जाणे, जूए ? [उ०] हे गौतम ! ते अर्थ समर्थ नथी. [प्र०] ते कया हेतुथी यावत्-केवली इन्द्रियोवडे जाणतो नथी, जोतो नथी ? [उ०] हे गौतम ! ते अर्थ समर्थ नथी. [प्र०] ते कया हेतुथी यावत्-केवली इन्द्रियोवडे जाणतो नथी, जोतो नथी ? [उ०] हे गौतम ! केवली पूर्व दिशामां मित पण जाणे छे, अमित पण जाणे छे याबत्-केवलिन्दु दर्शन, आवरण रहित छे, माटे ते हेतुथी ते इन्द्रियोवडे जाणतो के जोतो नथी. ॥ १९७ ॥ 	5 11	९ शतके हेशः४ ।३६९।।
---	------	---------------------------

व्याख्या- प्रबासिः प्रबासिः प्रबासिः ॥३७०॥ भोयमा ! णो ति०, से केणट्रेणं भंते ! जाव केवली णं असिंस समयंसि जेसु आगासपदेसेसु हत्यं वा जाव चिट्ठति पभूणं भंते ! केवली सेयकालंसिवि तेसु चेव आगासपर्देसेसु हत्यं वा जाव कोगाहित्ता णं चिट्ठित्तए ?, गोयमा ! णो ति०, से केणट्रेणं भंते ! जाव केवली णं असिंस समयंसि जेसु आगासपदेसेसु हत्यं वा जाव चिट्ठति णो णं पभू केवली सेयकालंसिवि तेसु चेव आगासपएसेसु हत्यं वा जाव चिट्ठत्तिए ?, गो०! केवलिस्स णं वीरियसजोगसदव्वयाए चलाइं उवकरणाईं भवति, चलोवगरणद्वयाए य णं केवली असिंस समयंसि जेसु आगासपदेसेसु हत्यं वा जाव चिट्ठति णो णं पभू केवली सेयकालंसिवि तेसु चेव जाव चिट्ठित्तए, से तेणह्रेणं जाव बुच्चह-केवली णं असिंस समयंसि जाव चिट्ठित्तए ॥ (सूत्रं १९८) ॥ [भ०] हे भगवन् ! केवली, आ समयमां जे आकाध्र प्रदेशोमां हाथने, पगने, बाहुने अने ऊरुने अवगाही रहे, अने जे सम- यमां रहे ते पछीना-भविष्यकाळना-समयमां तेज आकाध्रप्रदेशोमां हाथने यावत्-अवगाही रहेवा केवळी समर्थ छे ? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ समर्थ नथी. [भ०] हे भगवन् ! ते कया हेतुथी, यावत्-केवली आ समयमां जे आकाध्रप्रदेशोमां यावत्-रहे छे पछीना भविष्यकाळना-समयमां एज आकाध्रप्रदेशोमां केवली हाधने यावत्-अवगाही रहेवा समर्थ नथी ? [उ०] हे गौतम ! केवलिने वीर्यप्रधान योगवाछं जीव द्रव्य होवाथी तेना हस्त बगेरे उपकरणो-अंगो-चल होय छे अने हस्त बगेरे अंगो चल होवाथी चालु समयमां जे आकाश प्रदेशोमां हाथने यावत्-अवगाही रहेवा समर्थ नथी? [उ०] हे गौतम ! केवलिने वीर्यप्रधान योगवाछं जीव द्रव्य होवाथी तेना हस्त वगेरे उपकरणो-अंगो-चल होय छे अने हस्त बगेरे अंगो चल होवाथी चालु समयमां जे आकाश प्रदेशोमां हाथने यावत्-अवगाही रहे छे, एज आकाश प्रदेशोमां चाल्य-रहेवासमर्थनथी.॥१९८८॥	શ:૪
---	-----

व्याख्या- प्रज्ञासिः प्रज्ञासिः ॥३७१॥ (प्रज्ञा पंत्रं ! चोदसपुन्वी घडाओ घडसहस्सं पडाओ पडसहस्सं कडाओ २ रहाओ२ छत्ताओ छत्तसहस्सं दंडाओ दंडसहस्सं अभिनिञ्वहेत्ता उवदंसेत्तए ?, हंता पभ्र, से केणट्रेणं पभ्र चोदसपुठ्वी जाव उवदंसेत्तए ?, गोयमा ! चउद्दसपुठ्विस्स णं अणंताइं दव्वाइं उकरियाभेएणं भिज्जमाणाइं लद्धाइं पत्ताइं अभिसमझागयाह भवंति, से तेणट्ठेणं जाव उवदंसित्तए । सेवं भंते ! सेवं भंते ! (सूत्रं १९९) ॥ पश्चमহाते चतुर्थ उद्देशः ॥ ५-४ ॥ [प्र॰] हे भगवन् ! चौदपूर्वने जाणनार-श्रुत केवली मनुष्य, एक घडामांथी हजार घडाने, एक पटमांथी हजार पटने, एक सादरीमांथी हजार सादरीओने, एक रयमांथी हजार रयने, एक छत्रमांथी हजार छत्रने अने एक दंडमांथी त्जार दंडने करी देखाडवा समर्थ छे ? [उ॰] हा, समर्थ छे. [प्र॰] ते केवीरीते, चौदपूर्वी यावत्-देखाडवा समर्थ छे ? [उ०] हे गौतम ! चौद- पूर्वीए, उत्करिका भेदवडे भेदातां अनंत द्रव्यो ग्रहण योग्य कर्या छे, ग्रह्या छे अने ते द्रव्योभं घटादिरूपे परिणमाववा पण आरं- भ्या छे, माटे ते हेतुथी यावत्-देखाडवा समर्थ छे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे. एम कही यावत्- यिहरे छे. ॥ १९९ ॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतसित्रना पांचमा शतकमां चोथा उद्देग्रानो म्हार्थ संपूर्ण थयो.	8
--	---

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥ ३७२॥	Streeter to the to the the the the the the the	उद्देशक ५. आगळना उद्देशकमां चौदपूर्वीनी महानुभवता कही छे, अने ए महानुभावपणाथी ते चौद पूर्वी छबस्थ हीय तो पण सिद थशे एवी आशंका थाय माटे ते आशंकनो परिहार करवा पंचम उद्देशक छे. छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तीयमंणंत सासयं समयं केवल्ठेणं संजमेणं जहा पढमए चउत्शुंदेसे आलावगा तहा नेयव्वा जाव अलमत्शुत्ति वत्तव्वं सिया ॥ (सूत्रं २००) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! छबस्थ मनुष्य, वीती गएला शाक्ष्वता अनंत काळमां मात्र संयमवडे (सिद्ध थयो ?) [उ०] जेम प्रथम शतकमां चतुर्थ उद्देशकमां आलापक कहा छे तेम अहिं पण ते आलापक कहेवा यावत् 'अलमस्तु' एम कहेवाय' त्यांसुधी. ॥२००॥ अन्नउत्त्थिया णं भंते ! एवमातिकखति जाव परूचेंति सन्व्वे पाणा सन्वे भूया सन्वे जीवा सन्वे सत्ता एर्चभूयं वेदणं वेदेंति से कहमेयं भंते ! एवं ?, गोयमा ! जण्णे तं अन्नउत्त्थिया एवमातिक्खति जाव वेदेंति जे ते एवमाहंसु, मिच्छा ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! जण्णे तं अन्नउत्त्थिया एवमातिक्खति जाव वेदेंति जे ते एवमाहंसु, मिच्छा ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमातिक्खामि जावप रूवेमि अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूयं वेदणं वेदेंति, अत्थे गहया पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा तहा वेदर्या के प्रान्नमा तहा वेदणं वेदेंति, से केणट्रेणं० अत्रथेगतिया०? तं चेव उचारेयव्वं, गोयमा ! जे पाणाभूया जीवाणं सत्ता जहा कडा कम्मा तहा वेदणं वेदति तेणं पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूयं वेदणं वेदेंति, जे णं पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा ने तहा	Jo the start of the start of the start of the start of	५ शतके उद्देशः५ ।।३७२।।	I
------------------------------------	--	---	--	-------------------------------	---

व्याख्या- प्रवासि प्रवं भ्यं वेदणं वेदंति ते णं पाणा भ्या जीवा सत्ता अनेवंभ्यं वेदणं वेदंति, से तेणडेणं तहेव। नेरइया णं भंते ! किं एवं भ्यं वेदणं वेदंति अनेवंभ्यं वेदणं वेदंति ?, गोयमा ! नेरइया णं एवंभ्यं वेदणं वेदेंति अनेवंभ्यंपि वेदणं वेदंति, से केणडेणं तं चेव ?, गोयमा ! जे णं नेरइया जहा कडा कम्मा तहा वेदणं वेदेंति ते णं नेरइया एवंभ्यं वेदणं वेदंति, जे णं नेरतिया जहा कडा कम्मा णो तहा वेदणं वेदेंति ते णं नेरइया अनेवंभ्यं वेदणं वेदेंति, से तेणडेणं॰, एवं जाव वेमाणिया,संसारमंडलं नेयव्वं ॥ (सूर्व्र २०१) ॥ [प्र॰] हे भगवन् ! अन्यतीधिको एम कहे छे यावत् प्ररूपे छे के, सर्व प्राण, सर्व धृत, सर्व जीव अने सर्व तत्त्वो एवंभ्त- जेम कर्म बांध्युं छे ते प्रमाणे-वेदनाने अनुभवे छे, हे भगवन् ! ते एम केवी रीते छे ? [उ॰] हे गौतम ! ते अन्यतीधिको जे ए प्रमाणे कहे छे यावत्-वेद छे, जे तेओ ए प्रमाणे कहे छे ते एम कोवी रीते छे ? [उ॰] हे गौतम ! ते अन्यतीधिको जे ए प्रमाणे कहे छे यावत्-वेद छे, जे तेओ ए प्रमाणे कहे छे ते एम कोवी रीते छे ? [उ॰] हे गौतम ! ते अन्यतीधिको जे ए प्रमाणे कहे छे यावत्-वेदे छे, जे तोओ ए प्रमाणे कहे छे ते एम कोवी रोता कर्म प्रमाणे वेदनाने अनुमचे छे अने केटलाक प्राणो, स्तो, जीवो अने सत्त्वो अनेवंभूत जेम कर्म बांध्युं छे तेथी जूदी वेदनाने अनुभवे छे. [प्र॰] ते कया हेतुथी केटलाक॰ इत्यादि तेज कहेदुं ? [उ॰] हे गौतम ! जे प्राणो, स्तो, जीवी अने सत्त्वो करेलां कर्मों प्रमाणे वेदना अनुभवे छे ते प्राणो, स्तो, जीवो अने सत्त्वो एवंभूत वेदनाने अनुभवे छे अने जे प्राणो, स्तो, जीवी अने सत्त्वो करेलां कर्मों प्रमाणे वेदना नथी अनुभवता ते प्राणो, स्ततो, जीवी अने सत्त्वो अनेवंभूत वेदनाने अनुभवे छे, ते हेतुथी तेमज कखुं छे. [प्र॰] हे भगवन् ! नैरयिको छे एवंस्त वेदनाने अने तत्त्वो प्रवंस्त वेदनाने अनुभवे छे थे त्राणो, स्तो, जीवी येत्र कख्ये ते हाणो, स्तो, जीवी तेमज कखुं छे. [प्र॰] हे भगवन् ! नैरयिको छे एवंस्त वेदनाने से छे के अनेवंभूत वेदनानो अनुभवे छे ? [उ॰] हे गौतम ! तेओ एवंभूत वेदनाने पण अने अनेवंभूत वेदनाने अनुभवे छे. [प्र॰]	
---	--

ष्ट्याख्या- प्रज्ञुप्तिः ।। ३७४॥	ते कया हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! जे नैरयिको करेलां कर्म प्रमाणे वेदना वेदे छे तेओ एवंभूत वेदना वेदे छे अने जे नैरयिको करेलां कर्म प्रमाणे वेदना नथी वेदता तेओ अनेवंभूत वेदनाने वेदे छे ते हेतुथी एम कह्युं छे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिक सुधीना संसारमंडल विषे समजवानुं छे. ॥ २०१ ॥ जंबुद्दीवे णं भंते ! भारहे वासे इमीसे ओस० कइ ऊल्लगरा होत्था ?, गोयमा ! सत्त, एवं तित्थयरा तित्थयरमायरो पियरो० पढमा सिस्सिणीओ० चक्कवद्दीमायरो इत्थिरयणं बलदेवा वास्रदेवा वास्रदेवमायरो पियरो, एएसिं पडिसन् जहा समवाए परिवाडी तहा णेयव्वा, सेवं भंते २ जाव विहरइ ॥ (सूत्रं २०२) ॥ पंचमसए पंचमुद्देसओ सम्मत्तो ॥ ५-५ ॥ [प०] हे भगवन ! जंबूद्वीपमां आ भारत वर्षमां आ अवसार्पणीना काल्रमां केटला इलकरो थया. [उ०] हे गौतम ! सात इलकरे थया, ए प्रमाणे तीर्थकरोनी माताओ, पिताओ, पहेली चेलीओ, चकवर्तीनी माताओ, स्त्रीरत्न, बलदेवो, वास्रदेवो, वास्रदे देवनी माताओ, पिताओ, एओना प्रतिश्वत्रुओ प्रतिवास्रदेवो वगेरे जे प्रमाणे ' समवाय ' स्त्रमां नामनी परिपाटीमां छे ते प्रमाणे जाणवुं. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, एम कही यावत् विहरे छे. ॥ २०२ ॥	रिक ५ शतके उद्देशः५ ॥३७४॥
	प्रमा माराजा, पर्याजा, र्यापा प्रारासपुर्णा प्रारासपुरा गर्मस कर्पा स्वयाप स्वयाप स्वयाप स्वयाप स्वयाप स्वयाप जाणवुं. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, एम कही यावत् विहरे छे. ॥ २०२ ॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीम्वत्रना पांचमा शतकमां पांचमा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो. १ विमलवाहन, चक्षुमान्, यशोमान्, अभिंचंद्र, प्रसेनजित्, मरुदेव अने नाभि. ए साते कुलकरोने (एक एकने एक) एम सात स्त्रीओ हती. तेनां नाम—चंद्रयशा, चंद्रकांता, मुरूपा, प्रतिरूपा, चक्षुकांता, श्रीकांता अने मरुदेवी.	***

घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३७५॥	 महार वहार वे समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणि क्रेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता, एवं खलु जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरेन्ति । कहण्णं भंते ! जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति?, गोयमा ! तिहिं ठागेहिं-नो पाणे अतिवाइत्ता नो सुसं वहत्ता तहारूवं समणं वा माहणं वा फासुएसणि क्रेणं अस- णपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता, एवं खलु जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥ कहन्नं भंते ! जीवा असु- णपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता, एवं खलु जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥ कहन्नं भंते ! जीवा असु- भू भदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?, गोयमा ! पाणे अइवाइत्ता सुसं वइत्ता तहारूवं समणं वा माहणं वा हीलिता निंदित्ता खिसित्ता गरहित्ता अवमन्नित्ता अन्नयरेणं अमणुन्नेणं अपीतिकारेणं असणपाणखाइमसा- इमेणं पडिलाभेत्ता, एवं खलु जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥ कहन्नं भंते ! जीवा सुभदीहाउय- ताए कम्मं पकरेंति ?, गोयमा ! नो पाणे अइवाइत्ता नो मुसं वइत्ता तहारूवं समणं वा माहणं वा ताए कम्मं पकरेंति ?, गोयमा ! नो पाणे अइवाइत्ता नो मुसं वहत्ता तहारूवं समणं वा माहणं वा वंदित्ता ताए कम्मं पकरेंति ?, गोयमा ! नो पाणे अइवाइत्ता नो मुसं वहत्ता तहारूवं समणं वा माहणं वा वंदित्ता काए कम्मं पकरेति ?, गोयमा ! नो पाणे अइवाइत्ता नो मुसं वहत्ता तहारूवं समणं वा माहणं वा वंदित्ता 	क ग्रतके उद्देशः ६ ॥३७५॥
	्थै नमंसित्ता जाव पज्जुवासित्त। अन्नयरेणं मणुन्नेणं पीइकारएण असणपाणख।इमसाइमण पाडलाभत्ता, एव के खलु जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥ (सूत्रं २०३) ४	54254.

For Private and Personal Use Only

५ शतके

उद्देशः५

ાર૭૬॥

		www.kobainat.org	.ya Omm
	AL OF	[प्र०] हे भगवन् ! जीवो थोडा जीववानुं कारणभूत कर्म केवी रीते बांधे छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण स्थानोवडे जीवो थोडा	the of the
ब्याख्या-	Z	जीववाउं कारणभूत कर्म बांधे छे, ते जेमके, प्राणोने मारीने, खोडुं बोलीने अने तथारूप अमण वा ब्राह्मणने अप्रायुक, अनेषणीय	S.
प्रज्ञप्तिः	S	खान, पान, खादिम तथा स्वादिम पदार्थोवर्ड प्रतिलाभीने पूर्वोक्त कर्म बांधे छे, अर्थात ए त्रण हेतुथी जीवो थोडा जीववानुं कारण-	Č
।।३७६॥		भूत कर्म बांधे छे. [प्र॰] हे भगवन ! जीवो लांबाकाळ सुधी जीववानुं कारणभुत कर्म केवी रीते बांधे छे ? [उ०] हे गौतम !	Å.
	\mathfrak{L}	त्रण स्थानोवडे जीवो लांबा काळ सुधी जीववानुं कारणधुत कर्म बांधे छे, ते जेमके, प्राणोने नहि मारीने. खोटुं नहि बोलीने अने	S.
	S	तथारूप अमण वा ब्राह्मणने प्रासुक, एषणीय खान, पान, खादिम तथा स्वादिम पदार्थोवडे प्रतिलाभीने; ए प्रमाणे त्रण हेतुथी	Č,
	*	जीवो लांबा काळ सुधी जीववानुं कारणभुत कर्म बांधे छे. [प्र०] हे भगवन् ! जीवो अग्रुभ रीते लांबाकाळ सुधी जीववानुं कारण-	\$
	\$	स्रुत कर्म केवी रीने बांधे छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवोने मारीने, खोदुं बोलीने, अने तथारूप श्रमणनी वा ब्राह्मणनी हीलना	ð l
	yar yar yar	करीने, निंदा करीने, लोक समक्ष फजेती करीने, देनी सामे गर्हा करीने तेनुं अपमान करीने तथा एवा कोइ एक अप्रीतिना कारण-	Š.
	A C	रूप अमनोज्ञ−खराब अञ्चनादिवडे प्रतिलाभीने जीवो नकी ए प्रमाणे यावत्−करे छे. [प्र०] हे भगवन् ! जीवो ञुभ प्रकारे लांबा	K
	R	काळ सुधी जीववानुं कारणभ्रुत कर्म केवी रीते बांधे छे ? [उ०] हे गौतम ! प्राणोने नहि मारीने, खोडुं नहि बोलीने अने तथारूप	5
	S	अमणने वा ब्राह्मणने वांदीने यावत्-तेने पर्युपासीने तथा एवा कोइ एक कारणथी-मनोज्ञ, प्रीतिकारक अञन, पान, खादिम अने	S.
	y y y y y	स्वादिम ए चार जातना आहारवडे प्रतिलाभीने; ए प्रमाणे जीवो यावत्-लांबुं सारुं दीर्घायुष्य बांधे छे. ॥ २०३ ॥	Č.
	X	गाहावइस्स णं भंते ! विक्रिणमाणस्स केइ भंडं अवहरेज्जा ? तस्स णं भंते ! तं भंडं अणुगवेसमाणस्स))
			a : (=

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३७७॥ भेकतिए कतिए कतिरिय काव f भेडाअ भेडाअ भेडाअ भेडाअ भेडाअ भेडाअ भेडाअ भेडाअ भेडाअ भेडाअ भेडाअ भेडाअ	माया॰ अपच०, मिच्छादसणाकारया सिय केजेइ सिय ना केजेइ ॥ अह से मेड जानरामागर ते, तओ से पच्छा सटवाओ ताओ पयणुई भवंति ॥ गाहावतिस्स णं भंते ! तं भंड विकिणमाणस्स भू ^{उद्दे}	शतके देशः६ ३७७॥
--	---	-----------------------

व्याख्या- प्रवासिः प्रवासिः प्रवासिः ॥३७८॥ अने अप्रत्याख्यानिकी किया लागे अने मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी किया कदाच लागे अने कदाच न लागे अने हवे गवेषण करतां ज्यारे ते चोराएछं करियाणुं पाछुं मळी आवे त्यारपछी ते बधी कियाओ प्रतन्ज थइ जाय छे. [प्रo] हे भगवन् ! करियाणाने वेचता ग्रहस्थनुं मांड-करियाणुं, करियाणुं खरीद करनारे खरीषुं-तेने माटे सत्यंकार-खात्री-बानुं आणुं पण हजु ते करियाणुं अन्नुपनीत छे-लड़ जवायुं मधी अर्थात् ते वेचनारने त्यां छे, तो ते वेचनार गृहपतिने ते करियाणाथी शुं आरंभिकी यावत् मिथ्या- दर्शनप्रत्ययिकी किया लागे ?, अनं ते खरीदनारने तो करियाणाथी शुं आरंभिकी यावत्-मिध्यादर्शनप्रत्ययिकी किया लागे ? [उ०] हे गौतम ! ते ग्रहपतिने ते मांड-करियाणाथी आरंभिकी यावत्-अप्रत्याख्यानिकी किया लागे, अने मिध्यादर्शनप्रत्ययिकी किया कदाच लागे अने कदाच न लागे अने खरीद करनारने ते वधी कियाओ प्रतन्ज होय छे. [प्रo] हे भगवन् ! मांडने वेचता गृहपतिने त्यांथी यावत् ते मांड उपनीत कर्धु-खरीद करनारने ते वधी कियाओ प्रतन्ज होय छे. [प्रo] हे गौतम ! ते भांडथी ते खरीद करनारने हेठळनी मोटा प्रमाणवाळी-चारे कियाओ लागे अने मिध्यादर्शनप्रत्ययिकी किया लागे अने मिथ्यादर्ध न होय तो मिध्यादर्शनप्रत्यविकी क्रिया न लागे ए प्रमाणे मिध्यादर्शन जत्याचि मजनावडे गृहस्थने माहाचतित्सस णं भंते ! भंड जाव घणे य से अणुवणीए सिया ? एवंपि जहा भंडे उवणीए तहा नेयच्वं, चडत्थो आलावगो, धणे से उवणीए सिया जहा पढमो आलावगो भंडे य से अणुवणीए सिया तहा नेयच्वो,	Ę
---	---

	in the solutions	/ tornar ya onin	randoougurouri o
घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३७९॥	पढमचउत्थाणं एको गमो, वितियतइयाणं एको गमो ॥ अगणिकाए णं भंते ! अहुणोज्जलिते समाणे महाकम तराए चेव महाकिरियतराए चेव महासवतराए चेव महावेदणतराए चेव भवति, अहे णं समए वोकसिज्जमाणे २ चरिमकालसमयंसि इंगालभूए मुम्मुरभूते छारियभूए तओ पच्छा अप्पकम्मतराए चे अप्पकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव अप्पवेदणतराए चेव भवति ?, हंता गोयमा ! अगणिकाए अणुज्जलिए समाणे तं चेव ॥ (सूत्रं २०४) ॥ [प्र0] हे भगवन् ! गृहपति-घरधणि-ने मांड यावत्-धन न मळ्युं होय (तो केम ?) [उ0] ए रीते पण जेम उपर्न सोंपेल मांड-संबंधे कह्युं छे तेम समजवुं-चोथो आलापक समजवो. ' जो धन उपनीत होय तो ' जेम अन्नुपनीत भांड ति प्रथम आलापक कह्यो छे तेम समजवुं-चोथो आलापक समजवो. ' जो धन उपनीत होय तो ' जेम अन्नुपनीत भांड ति प्रथम आलापक कह्यो छे तेम समजवुं-प्रथम अने चतुर्थ आलापकनो समान गम समजवो अने बीजा जने त्रीजा आलापकनो सम गम समजवो. [प्र0] हे भगवन् ! हमणा जगवेलो अग्नियाय, महाकर्मवाळो, महाक्रियावाळो, महाअश्ववाळो, महावेदनावाळ होय छे, हवे ते अग्नि समये समये-क्षणे क्षणे-ओछो थतो होय, बुझातो होय अने छेक्षणे अंगरूप थयो, मर्सुर थयो त्यारबाद ते अग्नि अल्पकर्मवाळो, अल्पक्रियावाळो अल्पआश्रयवाळो अने अग्रिकाय ? [उ0] हा, गौतम ! हम जगवेलो अग्निकाय॰ तेज कहेवुं. ॥ २०४ ॥ पुरिसे णं भंते ! धणुं परामुसइ धणुं परामुसित्ता उसुं परामुसइ २ ठाणं ठाइ ठाणं ठिचा आयतकण्णाययं उ करोति आययकन्नाययं उसुं करेत्ता उड्ढं वेहासं उत्तु उच्चिहड़ २ ततो णं से उसुं उड्ढं वेह।सं उव्व्विहिए समा	भ व णंति वे न ते, ए णा सं	५

 	/ toniar ya onin i	anaooagaroan a
जाइं तत्थ पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणइ वत्तेति लेस्सेति संघाएइ संघट्टेति परितावेइ किलामें ठाणाओ ठाणं संकामेइ जीवियाओ ववरोवेइ तए णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?, गोयमा ! जावं च णं पुरिसे धणुं परामुसइरजाव उव्विहइ तावं च णं सं पुरिसे कातियाए जाव पाणातिवायकिरियाए पंचहिं किरिपुट याहिं पुढ़े, जेसिंपि य णं जीवाणं सरीरेहिं धणू निव्वत्तिए तेऽवि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरिपुट एवं धणुपुढ़े पंचहिं किरियाहिं, जीवा पंचहिं, ण्हारू पंचहिं, उस्तू पंचहिं, सरे पत्तणे फले ण्हारू पंचहिं किरिया एवं धणुपुढ़े पंचहिं किरियाहिं, जीवा पंचहिं, ण्हारू पंचहिं, उस्तू पंचहिं, सरे पत्तणे फले ण्हारू पंचहिं, (सूत्रं२०० [प्र0] हे भगवन् ! पुरुष धनुष्यने ग्रहण करे, ग्रहण करी बाणने ग्रहण करे, तेनुं ग्रहण करी खान प्रत्ये वेसे-धनुष्यथी बाण फेंकती वेठानुं आसन करे-तेम बेसी फेकना प्रसारेला बाणने कान सुधी आयत करे-खेंचे, खेंची उंचे आकाश प्रत्ये बाणने कें त्यारवाद ते आकाश प्रत्ये फेंकाएछं बाण, त्यां आकाशमां जे प्राणोने, भूतोने, जीवोने, सच्चोने, सामा आवता हणे, तेओन्नं करे संकीची नाखे, तेओने लिष्ट करे, तेओने संहत करे, तेओने थोडो स्पर्ध करे, तेओने चारे कोरथी पीडा पमाडे. तेओने कल करे, तेओने एक स्थानथी बीजे स्थान लड़ जाय अने तेओने जीवित्रे ये च्रुत करे तो हे भगवन् ! ते पुरुष केटली कियानोलो छे [उ०] हे गौतम ! यावत्-ते प्रुरुष धनुष्यने ग्रहण करे छे यावत् तेने फेंके छे, यावत् ते पुरुष कायिकी कियाने यावत्-प्राणार्थ पातिकी क्रियाने अर्थात् पांचे कियाने फरसे छे. अने जे जीवोना शरीरोदारा धनुष्य बन्धुं छे ते जीवो पण यावत् पांच कियाने, क्र प्रत्र, फल अने ष्हारु पांच कियाने फरसे छे. ॥ २०५ ॥	रे गा हि भे ते के रि ते ? ते ते	५ शतके उद्देशः६ ॥३८०॥

For Private and Personal Use Only

1		
ष्याख्या- प्रज्ञप्तिः	👔 पणिइ जीव जीवियाओं ववरविई तीव चे ण से पुरिस कीतीकीरए 🦾 गयिमा। जीव 🗉 ण से उसे अप्पणी 🕎	-
সঙ্গাধ্য	🐒 गुरुयाए जाव ववरोवेइ तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुढे, जेसिंपि य णं जीवाणं सरी-	र उद्देशः ६
1136811		1136811
	े सरे पत्तणे फले ण्हारू पंचहिं, जेवि य से जीवा अहे पचोवयमाणस्स उवग्गहे चिटंति तेवि य णं जीवा	
		2
	A कातियाएँ जाव पंचाह किरियाहि पुंडा ॥ (सूत्र २०५) ॥	¥.
	अ [प्र॰] अने हवे ज्यारे पोतानी गुरुता वडे, पोताना भारेपणावडे, पोतानी गुरुकता अने संभारतावडे ते बाण खभावथी नीचे	2
	🐐 पडतुं होय त्यारे त्यां (मार्गमां आवतां) प्राणोने यावत्–जीवितथी च्युत करे त्यारे ते पुरुष केटली क्रियावाळो होय १ [उ०] हे	¥ I
	पडतुं होय त्यारे त्यां (मार्गमां आवतां) प्राणोने यावत्-जीवितथी च्युत करे त्यारे ते पुरुष केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! यावत् ते बाण पोतानी गुरुतावडे यावत् जीवोने जीवितथी च्युत करे यावत् ते पुरुष कायिकी यावत् चार क्रियाने फरसे हे छे अने जे जीवोना शरीरथी धनुष्य बनेछं छे ते जीवो पण चार क्रियाने, धनुष्यनी पीठ चार क्रियाने, दोरी चार कियाने, ण्हारु चार क्रियाने, बाण पांच क्रियाने, शर, पत्रण, फल अने ण्हारु पांच क्रियाने अने नीचे पडता बाणना अवग्रहमां जे जीवो आवे छे	
	र्द छे अने जे जीवोना शरीरथी धनुष्य बनेछं छे ते जीवो पण चार क्रियाने, धनुष्यनी पीठ चार क्रियाने, दोरी चार क्रियाने, ण्हारु	
	चार क्रियाने, बाण पांच क्रियाने, शर, पत्रण, फल अने ण्हारु पांच क्रियाने अने नीचे पडता बाणना अवग्रहमां जे जीवो आवे छे	
	की ते जीवो पण कायिकी यावत् पांच कियाने फरसे छे. ॥ २०६ ॥	
	र्तु ते जीवो पण कायिकी यावत् पांच कियाने फरसे छे. ॥ २०६ ॥ अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमातिक्खंति जाव परूवेंति से जहानामए-जुवतिं जुवाणे हत्थेणं हत्थे नेण्हेज्जा क चक्कस्स वा नाभी अरगा उत्तासिया एवामेव जाव चत्तारि पंच जोयणसयाइं बहुसमाइन्ने मणुयलोए मणुस्सेहिं,	r l
	🖌 चक्रम्म वा नाभी अरगा उत्तासिया एवामेव जाव चत्तारि पंच जोयणमयाई बहसमाइच्चे मणयलोए मणस्मेहि	
		2
-		

 भ्याख्या- म्रजीक्षं में कहमेयं भंते ! एवं ?, गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया जाव मणुस्सेहिं जे ते एवमाहंसु मिच्छा०, अहं पुण गोयमा ! एवमातिकखामि जाव एवामेव चत्तारि पंच जोयणसयाइं बहुसमाइण्णे निरयऌोए नेरइएहिं (सूत्रं २०७) [म॰] हे भगवन ! अन्यतीर्थिको ए प्रमाणे कहे छे यावत् प्ररूपे छे के, जेम कोइ युवतिने युवान हाथमां हाथ प्रहीने, (उमेल) होय अथवा जेम आराओधी मीडाएली चक्रनी नाभी होय ए प्रमाणेज यावत् चारसें पांचसें योजन सुधी मनुष्यलोक, मनुष्योथी सीचोसीच भरेलो छे, हे भगवन ! ते ए प्रमाणे केम होइ शके ? [उ०] हे गौतम ! ते अत्यतीर्थिको जे यावत् मनुष्योथी, जे तेओ ए प्रमाणे कहे छे ते खोई छे, हे गौतम ! हुं वली आ प्रमाणे कहुं छुं के, एज प्रमाणे यावत् चारसो पांचसो योजन सुधी निरय- लोक, नैरयिकोधी सोचोसीच भरेलो छे. ॥ २०० ॥ नेरहया णं भंते ! किं एगत्तं पभू विउठिवत्तए पहुत्तं पभू विउठिवत्तए?, जहा जीवाभिगमे आलावगो नहा नेयव्वो जाब दुरहिपासे ॥ (सूत्र २०८) ॥ [प०] हे भगवन ! श्रं नैरयिको एकपणुं विक्वर्ववा समर्थ छे ? के बहुपणु विक्वर्ववा समर्थ छे ? [उ०] जेम जीवाभिगमसत्रमां आलापक छे ते आलापक यावत् ' दुरहियास ' शब्द सुधी आहं जाणवो. ॥ २०८ ॥ आहाकम्मं अणवक्रेत्ति माण पहारेत्ता भवति, से णं तत्स ठाणस्स अणालोइयपडिकाते कालं करेइ, नत्थि कोयगढं ठविययं रइयं कंता रभत्तं दुब्तिसर्याडियपडिकते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा, एएणं गमेणं नेयव्वं- तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्ते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा, एएणं गमेण नेयव्वं- कीयगढं ठविययं रइयं कंता रभत्तं दुब्तिभत्र चहरियाभत्तं वहलियाभत्तं गिलाणभत्तं सेज्वायरपिंडं रायपिंड। आहाकम्मं 	Ę
---	---

 अणवज्रेत्ति बहुजणमञ्झे भासित्ता सयमेव परिशुंजित्ता भवति से णं तस्स टाणस्स जाव अस्थि तस्स आरा- रुणा, एयंपि तह चेव जाव रायपिंडं । आहाकम्मं अणवज्रेत्ति सयं अन्नमन्नस्स अणुप्पदावेत्ता भवति से णं तस्स० एयं तह चेव जाव रायपिंडं । आहाकम्मं णं अणवज्रेत्ति बहुजणमञ्झे पन्नवतित्ता भवति से णं तस्स जाव अस्थि आराहणा जाव रायपिंडं । (२०९)।। - 'आधाकर्म अन्वय-निष्पाप छे 'ए प्रमाणे जे, मनमां समजती होय ते जो आधाकर्म स्थानविषयक आलोचन अने प्रतिक्रमण कर्या विना काल करे तो ते तेने आराधना नथी अने जो ते स्थानविषयक आलोचन अने प्रतिक्रमण करी फाल करे तो तेने आराधना छे. ए मा प्रमाणे क्रीतकृत-साधु माटे मुल्य आपीने आणेलुं भोजन ? स्थापित-साधु माटे गाखी मेलेलुं भोजन, राचित-साधु माटे लाखवा वगेरे रूपे करेले लाढवानो भूको वगेरे, कांतारभक्त-जंगलमां साधुना निर्वाह माटे तैयार करेलो आहार, दुर्भिक्षभक-दुकाळ वखते साधुना निर्वाह माटे तैयार करेलो आहार दुर्दिन होय वरसाद आवतो होय त्यारे साधु माटे तैयार करेलो आहार, दुर्भिक्षभक-दुकाळ वखते साधुना निर्वाह माटे तैयार करेलो आहार दुर्दिन होय वरसाद आवतो होय त्या सावार ते विषे यावत् आहार ते वार्यलिकाभक्त, ग्लान माटे रांधेलो आहार, शय्यातरापिंट, राजपिंट, प्रच धी जातना आहार माटे जाणवुं. [प्र०] 'आधाकर्म तेने आराधना छे ? [उ०] ए पण तेज प्रमाणे जाणवुं यावत्-राजपिंट. [प्र०] 'आधाकर्म अनवद्य छे' ए प्रमाणे कही परस्पर देव- रावनार होय तेने आराधना हो ? [उ०] ए पण तेज प्रमाणे जाणवु. यावत् राजपिंड. (प्र०) 'आधाकर्म निष्पाप छे' ए प्रमाणे यणा माणसोन जे जणावनार होय, तेने यावत् आराधना छे ? [उ०] यावत् राजपिंड (पेठे जाणी लेवुं.) ॥ २०९ ॥ 	i
---	---

		/ torial ya on	in nanaoouguroun o
च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥ ३८४॥	भू मेवरगहणाह सिजझात जाव अत करात ५, गायमा ५ अत्थगातए तणव भवरगहणण सिजझात अत्थ दे दोचेणं भवरगहणेणं सिज्झति तचं पुण भवरगहणं णातिकमति ॥ (सूत्रं २१०) ॥	मतिए बे पा- बे भव के भव फ्रेंकि के के के के के फ़र्ज़ाति, के के के के के एज़ी कहे, के पछी	५ शतके उद्देशः६ ॥३८४॥

ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३८५॥	उद्देशक ७. छट्ठा उद्देशकना छेळ्ळा सत्रमां कर्मधुद्रलनी निर्जरा कही छे अने ए निर्जरा चलनरूप छे माटे हवे सातमा उद्देशकमां प्रसाणुपोग्गल्छे णं भंते ! एयति वेयति जाव तं तं भावं परिणमति ?. गोयमा ! सिय एयति वेयति जाव परिणमति, सिय णो एयति जाव णो परिणमति । दुपदेसिए णं भंते ! खंधे एयति जाव परिणमइ?. गोयमा ! सिय एयति जाव परिणमति, सिय णो एयति जाव णो परिणमति, सिय देसे एयति, देसे नो एयति । तिष्पएसिए णं भंते ! खंधे एयति ० ?. गोयमा ! सिय एयति, सिय नो एयति, सिय देसे एयति, देसे नो एयति । तिष्पएसिए णं भंते ! खंधे एयति ० ?. गोयमा ! सिय एयति, सिय नो एयति, सिय देसे एयति, देसे नो एयति । त्यति, सिय देसे एयति नो देसा एयंति, सिय देसा एयंति, सिय देसे एयति, सिय देसे एयति, सिय देसे एयति गो देसे एयति, सिय देसे एयति नो देसा एयति, सिय देसा एयंति, सिय देसे एयति, सिय देसे एयति जो देसे एयति, एयति, सिय देसे एयति नो देसे एयति, सिय ने एयति, सिय देसे एयति जो देसे एयति, जिरा वउप्पदेसिओ तहा पंचपदेसिओ तहा जाव अणंतग्देसिओ ॥ (सूत्रं २१२) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! परमाणु धुद्गल कंपे, विशेष कंपे यावत् ते ते भावे परिणमे ? [उ०] हे गौतम ! कदाच कंपे, विशेष कंपे यावत् परिणमे अने कदाच न कंपे यावत् न परिणमे. [प्र०] हे भगवन् ! वे प्रदेशनो स्कंघ कंपे यावत्-परिणमे ? [उ०] हे	र	शतके इशः७ ३८५॥
		2	

व्याख्या- प्रज्ञाप्तिः ॥ ३८६॥ २८६॥ २ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३	पेन्द्रे गये अदर्शवाळी स्कथ केपे [30] इंगातमें कदाच केपेन्ट्र कदाच न कपेन्ट्र कदाच एक माग पंप पा पा प्रमुद्धि पेन्द्रे. कदाच एक भाग कंपे, बहु देशो न कंपेन्४ कदाच बहु भागो कंपे, एक भाग न कंपेन्ध्र [प्र०] हे भग- 💢 उद्दे	शतके (शः७ ८६॥
--	--	---------------------

ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३८८॥	तिपदेसिए णं भंते ! खंघे पुच्छा, गोयमा ! अणद्धे समडझे सपदेसे, नो सअद्धे णो अमज्झे णो अपदेसे, जहा दुपदेसिओ तहा जे समा ते भाणियव्वा, जे विसमा ते जहा तिपएसिओ तहा भाणियव्वा। संखेजजपदेसिए णं भंते ! खंघे किं सअड्ढेद् ? पुच्छा, गोयमा ! सिय सअद्धे अमज्झे सपदेसे सिय अणड्ढे समज्झे सपदेसे, जहा संखेजजपदेसिओ तहा असंखेज्जपदेसिओवि, अणंतपदेसिओऽवि॥ (सूत्रं २१४) ॥ हे भगवन ! श्रुं परमाणु पुद्गल, सार्ध-अर्ध सहित छे, मध्य सहित छे अने प्रदेश सहित छे के अर्ध रहित छे, मध्यरहित छे अने प्रदेश रहित छे ? [उ०] हे गौतम ! परमाणु पुद्गल अनर्ध छे, अमध्य छे अने अप्रदेश छे वे पण सार्ध नथी, समध्य नथी सप्रदेश नथी. [प०] हे भगवन ! वे प्रदेशवाळो स्कंध, शुं सार्ध समध्य अने सप्रदेश छे के अनर्ध, अमध्य अने अप्रदेश छे ? [उ०] हे गौतम ! ते वे प्रदेशवाळो स्कंध, सार्थ छे, अने मध्य रहित छे पण अनर्थ नथी, समध्य जने अप्रदेश च ? [उ०] हे गौतम ! ते वे प्रदेशवाळो स्कंध, सार्थ छे, अप्रे पहित छे पण अनर्थ नथी, समध्य जने अप्रदेश च ? [प०] हे भगवन् ! त्रे प्रदेशवाळो स्कंध, सार्थ छे अने मध्य रहित छे पण अनर्थ नथी, समध्य नथी अने अप्रदेश नथी. [प०] हे भगवन् ! त्रण प्रदेशवाळो स्कंध (ए विषे) ए प्रमाणे प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम ! ते त्रण प्रदेशवाळो स्कंध अनर्ध छे, समध्य छे अने सप्रदेश छे पण सार्ध नथी, अमध्य नथी अने अप्रदेश नथी. जेम, वे प्रदेशवाळा स्कंधने माटे सार्धादि विभाग दर्शाच्यो छे, तेम जेओ सम स्कंधो छे एटले समसंख्यावाळा-बेकी संख्यावाळा (पांच प्रदेशवाळा, सात प्रदेशवाळा इत्यादि) स्कंधो छे, तेने माटे जाणी लेवुं अने जेओ विषम स्कंधो छे— एकी संख्यावाळा (पांच प्रदेशवाळा, सात प्रदेशवाळा इत्यादि) स्कंधो	
	दशाव्या छ, तम जआ सम स्कंधा छ एटल समसल्यावाळा-बका सल्यावाळा (चार प्रदशवाळा, आठ प्रदशवाळा इत्यादि) स्कंधा है, तेने माटे जाणी लेवुं अने जेओ विषम स्कंधो छे— एकी संख्यावाळा (पांच प्रदेशवाळा, सात प्रदेशवाळा इत्यादि) स्कंधो है, तेने माटे, जेम त्रण प्रदेशवाळा स्कंध संबंधे कह्युं तेम जाणवुं. [प्र0] हे भगवन् ! संख्येयप्रदेशवाळो स्कंध शुं सार्ध छे ? है, दित्त्यादि प्रश्न करवो.) [उ0] हे गौतम ! कदाच सार्ध होय, अमध्य होय-अने सप्रदेश होय; कदाच अनर्ध होय, समध्य	

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ध्याख्या- प्रज्ञतिः ॥३८९॥	होग अने सप्रदेश होग. जेम संख्येय प्रदेशवाळो स्कंध कहा तेम असंख्येय प्रदेशवाळो स्कंध अने अनंत प्रदेशवाळो स्कं पण जाणी छेवोः ॥ ११४ ॥ परमाणुपोग्गले णं भंते ! परमाणुपोग्गलं फुसमाणे किं देसेणं देसं फुसइ १ देसेणं देसे फुसइ देसेणं सच्वे फुसइ ३ देसेहिं देसं फुसति ४ देसेहिं देसे फुसइ ५ देसेहिं सव्व फुसइ ६ सव्वेणं देसं फुस ति ७ सव्वेणं देसे फुसह गो देसेहिं देसं फुसति ४ देसेहिं देसे फुसह ५ देसेहिं सव्व फुसइ ६ सव्वेणं देसं फुस ति ७ सव्वेणं देसे फुसह गो देसेहिं देसं फुसति ४ देसेहिं देसे फुसह ५ देसेहिं सव्व फुसइ ६ सव्वेणं देसं फु ति ७ सव्वेणं देसे फुसह गो देसेहिं देसं फुसति ४ देसेहिं देसे फुसह ५ देसेहिं स्वव्य फुसइ १ व्येलेणं देसं फु फुसति गो दैसेणं सव्वं फुसह गो देसेहिं देसं फुसति नो देसेहिं देसे फुसह नो देसेहिं सव्वं फुसति ग सव्वेणं देसं फुसह गो सव्वेणं देसे फुसति, सव्वेणं सव्वं फुसह, एवं परमाणुग्गले दुपदेसियं फुसमाणे सत्त मणवमेहिं फुसति.परमाणुपोग्गले तिपएसियं फुसमाणे णिप्पच्छिमएहिं तिहिं फु०,जहा परमाणुपोग्गले तिप एसिपं फुसाविओ एवं फुसावेयव्वो जाव अणंतपएसिओ ॥ [म0] हे भगवन ! परमाणुपुद्गलने स्पर्श करतो परमाणु पुद्गल, ग्रं एक भागवडे एक भागनी स्पर्श करे १, एक भागव भगों भागोको स्पर्श करे २, एक भागवडे सर्वनो स्पर्श करे ३, घणा भागोहारा एक देशने स्पर्श ४, घणा देशोदारा घणा देशे	२ २ गतम २ इदेशः७ ८ ८ ४ ।।३८९॥ से ४४४ ते ४४४ ते २ ४४ ते २ ४४
	र्भ स्पर्श ५, धणा देशोद्वारा सबेने स्पर्श ६, सबेवर्ड एक भागने स्पर्श ७, सबेवर्ड घणा भागाने स्पर्श ८, के सबेवर्ड सबेने स्पर्श ९ (हु [उ०] हे गौतम ! १ एक देशथी एक देशने न स्पर्शे, २ एक देशथी घणा देशोने न स्पर्शे, ३ एक देशथी सर्वने न स्पर्शे, हु घणा देशोथी एकने न स्पर्शे, ५ घणा देशोथी घणा देशोने न स्पर्शे, ६ घणा देशोथी सर्वने न स्पर्शे, ७ सर्वथी एक देशने	· 8 - 8 - 8 - 8 - 8 - 8 - 8 - 8 -

ष्याख्या- प्रज्ञप्तिः प्रज्ञप्तिः प्रज्ञप्तिः प्रज्ञप्तिः प्रक्षिः ॥३९०॥ स्पर्धे, ८ सर्वथी घणा देशोनं न स्पर्शे, ९ पण सर्वथी सर्वने स्पर्शे. ए प्रमाणे वे प्रदेशवाळा स्कंधने स्पर्शतो परमाणुपुद्रल सातमा प्रज्ञप्तिः भगोने स्पर्शे अने ९ सर्वथी सर्वने स्पर्शे. जे प्रकारे त्रण प्रदेशवाळा स्कंधने स्पर्शे. वळी, त्रण प्रदेशवाळा स्कंधने स्पर श्रेतो परमाणु-पुद्रल छेल्ला त्रण-७ ना, ८ मा अने नवमा विकल्पवडे स्पर्शे एटठे ७ सर्वथी एवा देशने स्पर्शे, ८ सर्वथी घणा भगोने स्पर्शे अने ९ सर्वथी सर्वने स्पर्शे. जे प्रकारे त्रण प्रदेशवाळा स्कंधने परमाणुपुद्राल्जने स्पर्श कराव्यो ते प्रकारे चार प्रदेश- अत्तो परमाणु-पुद्रल छेल्ला त्रण-७ ना, ८ मा अने नवमा विकल्पवडे स्पर्शे एटठे ७ सर्वथी एवा देशने स्पर्शे, ८ सर्वथी घणा भागोने स्पर्शे अने ९ सर्वथी सर्वने स्पर्शे. जे प्रकारे त्रण प्रदेशवाळा स्कंधने परमाणुपुद्रालजने स्पर्श कराववो. दुपएसिए णं भंते ! खंधे परमाणुपोग्गलं फुस्तमाणे पुच्छा, ततियनचमेहिं फुस्तति. दुपदेसियं फुस्तमाणो पढमतदयसत्तमणवमेहिं फुसह, दुपदेसिओ तिपदेसियं फुस्तमाणो आदिछिएहि य पच्छिछएहि य तिहिं फुसति, मज्झमएहिं तिहिं विपडिसेहेयव्वं, दुपदेसिओ जहा तिपर्यसियं फुस्तावितो एवं फुस्तावेया ग्रेत स्पर्शे जुप्प- सियं । तिपएसिए णं भंते ! खंधे परमाणुपोग्गलं फुस्तमाणे पुच्छा, ततिपर्शसओ तिपसिर्ध फुस्तमाणो सब्वे- युत्व ठाणेस्य फुस्ताति, जहा तिपएसिओ तिपदेसियं फुस्तावितो एवंतिपछेह्रणवर्माहिं फुस्तति, तिपरसियं फुस्तामाणो सब्वे- स्त्वं । तिपएसिए णं भंते ! खंधे परमाणुपोग्गलं फुस्तावितो एवंतिपदेसिओ जाव अणंतपएसिएणं संजोए- युवि ठाणेस्य फुस्ताति, जहा तिपएसिओ तिपदेसियं फुस्तावितो । (सूत्रं २१४) ॥ [प्र॰] हे भगवच् ! परमाणुपुद्रालने स्पर्धतो वे प्रदेशवाळो स्कंघ केवी रीते स्पर्शे ? ए प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम ! त्रीजा अने नवमा विकल्पवडे स्पर्थे. एवी रीते वे प्रदेशवाळा स्कंघने स्पर्शतो दिप्रशिक्तंघ प्रथम, त्रीय, समम अने नवमा विकल्पवडे	9
--	---

घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३९१॥	E Contraction	प्रदेशवाडा यावत्-अनंत-प्रदेशवाळा स्कंधनी स्पर्शना कराववी. [प्र०] हे भगवन् ! परमाणुपुद्गलने स्पर्श करतो त्रण प्रदेशवाळो स्कंध केवी रीते स्पर्शे? ए प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम! त्रीजा छट्ठा अने नवमा विकल्पवडे स्पर्शे, द्विप्रदेशिकने स्पर्श करतो त्रिप्रदे शिकस्कंध, प्रथम तृतीय, चतुर्थ, षष्ठ, सप्तम अने नवमा विकल्पवडे स्पर्शे; त्रिप्रदेशिकने स्पर्श करतो त्रिप्रदेशिक स्कंध सर्व स्थानोमां स्पर्शे एटले नवे विकल्पवडे स्पर्शे. जेम त्रिप्रदेशिकने त्रिप्रदेशिकनो स्पर्श करावे विप्रदेशिकने चार प्रदेशिक, पांच प्रदे शिक यावत्-अनंत प्रदेशिक सुधीना बधा स्कंधो साथे संयोजवो अने जेम त्रिप्रदेशिक स्कंध परत्वे कर्छ्या तेम यावत्-अनंतप्रदेशिक	1139,911
	a a a a a	समयं उक्कोसेणं असंखेज़ं कालं, एवं जाव असंखेज़पदेसोगाढे। एगगुणकालए णं भंते! पोग्गले कालओ केर्वचिरं 🖗 होइ १, गोणमा ! जह० एगं समयं उ० असंखेज़ं कालं, एवं जाव अणंतगुणकालए, एवं वन्नगंधरसफासँ ैं जावं 🦮	

पूर्गल माटे पण जाणवुं. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गल एकगणुं काल्ठं, काळ्थी क्यां सुधी रहे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी एक समय सुधी अने वधारेमां वधारे असंख्येय काळ सुधी रहे, ए प्रमाणे यावत् अनंत गुण काळा पुद्गल माटे जाणवुं, -ए प्रमाणे वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श यावत् अनंतगुण रूक्ष माटे पुद्गल माटे जाणवुं, ए प्रमाणे सक्ष्मपरिणत पुद्गल माटे अने बादरपरिणत पुद्गल माटे जाणवुं. [प्र०] हे भगवन् ! झब्दपरिणत पुद्गल, काळथी क्यां सुधी रहे ? [उ०] हे गौतम ! ओछामां ओछुं एक समय सुधी अने वधारेमां वधारे आवलिकाना असंख्येय भाग सुधी रहे अज्ञब्दषरिणत पुद्गल, जेम एकगुण काळुं पुद्गल कह्युं, तेम समजवुं.

ब्याख्या-

प्रज्ञप्तिः

11३९३॥

	^o		0
	परमाणुपोग्गलस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उको- सेणं असंखेर्क्ष कालं । दुप्पएसियस्स णं भंते ! खंधस्स अंतरं कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, एवं जाव अणंतपएसिओ । एगपएसोगाढस्स णं भंते ! पोग्गलस्स सेयस्स अं- तरं कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेर्क्ष कालं, एवं जाव असंखेज्जपए- सोगाढे । एगपएसोगाढस्स णं भंते ! पोग्गलस्स निरेयस्स अंतरं कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइ भागं. एवं जाव असंखेज्जपएसोगाढे । वन्नगंधरसफासुहुमपरिणय- बायरपरिणयाणं एतेसिं जं चेव संचिट्टणा तं चेव अंतरंपि भाणियव्वं ! सद्दपरिणयस्स णं भंते ! पोग्गलस्स अंतर कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्ज कालं । असद्दपरिणयस्स अंतर कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्ज कालं । असद्दपरिणयस्स णं भंते ! पोग्गलस्स अंतरं कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवल्यिगए असं-	at and who whe are to the to the so	५ शतके उद्देशः७ ॥३९३॥
がまやややまと	खेज्जइभागं ॥ (सुच्चं २१६) ॥ [प्र॰] हे भगवन् ! परमाणुपुद्गलने काळथी केटलं लांबुं अंतर होय एटले के जे पुद्गल, परमाणु रूपे छे ते परमाणुपणुं त्यजी स्कंधादिरूप परिणमे अने पालुं तेने परमाणुपणुं प्राप्त करतां काळथी केटलुं लांबुं अंतर होय ? [उ०] हे गौतम ! ओछामां ओछुं एक समय अंतर अने वधारेमां वधारे असंख्येय काळ सुधीनुं अंतर छे. अर्थात् परमाणुरूप पुद्गलने परमाणुपणुं छोडी फरी वार परमाणुपणुं प्राप्त करतां ओछामां ओछो एक समय अने वधारेमां वधारे असंख्येय काळ लागे छे. [प्र०] हे भगवन् ! द्विप्रदे-	R	

For Private and Personal Use Only

ष्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥ ३९४॥	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	प्रमाणे यावत् अनंतप्रदेशिकस्कंध सुधी जाणी लेवुं. [प्र०] हे भगवन् ! एक प्रदेशमां स्थित सकंप पुद्गलने काळथी केटलुं लार्चु अंतर होय एटले एक प्रदेशमां स्थित पुद्गल पोतानुं कंपन पडतुं मेले तो तेने फरीथी कंपन करतां केटलो काळ लागे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्क्रुप्टथी असंख्यकाळ सुधीनुं अंतर होय अर्थात् ते पुद्रगल ज्यारे पोताना कंपथी अटके अने फरीथी कंपवुं शरु करे तेटलामां ओछामां ओछो एक समय अने वधारेमां वधारे असंख्य काळ लागे, ए प्रमाणे यावत् असंख्य- प्रदेशस्थित स्कंधो माटे पण समजी लेवुं. [प्र०]हेभगवन् ! एक प्रदेशमां स्थितनिष्कंप पुद्गलने काळथी केटलुं लांबुं अंतर होय अर्थात् एक निष्कंप पुद्गल पोतानी निष्कंपता छोडी दे अने तेने फरीथी निःकंपता प्राप्त करवामां केटलो काळ लागे ? [उ०] हे गौतम !	x & x & x & x & x & x & x & x & x & x &	५ शतके उद्देशः७ ॥३९४॥	
	Ř	पुर्रगलने पोतानो अग्रब्दपरिणतपणानो खभाव मूकी पाछुं तेज खभावमां आवतां ओछामां ओछुं एक समय अने वधारेमां वधारे	S A	×	

प्रइप्तिः 🕺 जाव विसेमाहिया वा ?, गोयमा ! सब्बत्थोवे खेत्तद्वाणाउए ओगाहणद्वाणाउए असंखेज्जगुणै दब्बद्वाणाउए 🥇 उ	र शतके उद्देशः७ ।३९५॥
---	-----------------------------

च्याख्या-	12924-924	नैरयिको आरंभवाळा छे अने परिग्रहवाळा छे पण अनारंभी अने अपरिग्रही नथी. [प्र०] हे भगवन् ! तेओ, क्या हेतुथी परिग्रह- वाळा छे अने यावत् अपरिग्रही नथी ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिको पृथिवीकायनो यावत् त्रसकायनो समारंम करे छे, तेओए श्ररीरो		५ _् शतके
प्रज्ञप्तिः	X	परिग्रहीत कर्यां छे, कमें। परिग्रहीत कर्यां छे अने तेओए सचित, अचित अने निश्र द्रन्यो परिग्रहीत कर्यां छे माटे ते हेतुथी	S	उद्देशः७
ારઙદ્દા	Ŕ	हे गौतम ! 'तेओ परिग्रही छे' इत्यादि तेज कहेवुं.	×	।।३९६॥
	Ž	असुरकुमारा णं भंते! किं सारंभा ४ १, पुच्छा, गोयमा ! असुरकुमारा सारंभा सपरिग्गहा,नो अणारंभा	r N	
	G	अप० । से केणहेणं०?, गोयमा ! असुरकुमारा णं पुढविकायं समारंभंति जावतसकायं समारंभंति सरीरा	Č,	
	¥	परिग्गहिया भवंति कम्मा परिग्गहिया भवंति भवणा परि० भवंति देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ	×	
	y and	तिरिक्खजोणियातिरिक्खजोणिणीओ परिग्गहियाओ भवंति, आसणसय णभंडमत्तोवगरणा परिग्गहिया	z	- 1
	S	भवंति, सचित्ताचित्तमीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति,से तेणद्वेणं तहेव एवं जाव थणियकुमारा ।	Ç.	
	¥	एगिंदिया जहा नेरइया ।	¥	
	Σ	[प्र॰] हे भगवन् ! असुरकुमारो आरंभवाळा छे ? इत्यादि प्रश्न करवो. [उ॰] हे गौतम ! असुरकुमारो आरंभवाळा छे, परि-	S)	
	S	ग्रहवाळा छे पण अनारंभी के अपरिग्रही नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ते ञा हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! असुरकुमारो प्रथिवीकायनो	Ç,	
	* SAL SAL	समारंभ करे छे यावत् त्रसकायनो वध करे छे, तेओए शरीरो परिग्रहीत कर्यां छे, कर्मो परिग्रहीत कर्यां छे, देवो, देवीओ, मनु-	×	
	Ŕ	षीओ, तिर्यंचो, तिर्यंचिणीओ परिग्रहीत करी छे, आसन,	S)	• 1
			X	

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः प्रज्ञप्तिः ॥३९७॥ अने मिश्र द्रव्यो परिगृहीत कर्यां छे माटे ते हेतुथी तेओने परिग्रहवाळा कह्या छे ए प्रमाणे यागत्-स्तनितक्रमारो माटे पण जाणत्रं. बेहंदिया णं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा तं चेव जाव सरीरा परिग्गहिया भवंति, बाहिरिया भंडमत्तोवगरणा परि॰ भवंति, सचित्ताचित्त॰ जाव भवंति, एवं जाव चउर्रियिया, पचेंदियतिरिक्ख- जोणिया णं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा तं चेव जाव सरीरा परिग्गहिया भवंति, बाहिरिया भंडमत्तोवगरणा परि॰ भवंति, सचित्ताचित्त॰ जाव भवंति, एवं जाव चउर्रियिया, पचेंदियतिरिक्ख- जोणिया णं भंते ! तं चेव जाव कम्मा परि॰ भवन्ति, टंका क्रूडा सेला सिहरी पब्भारा परिग्ग- हिया भवंति,जलथलविलगुहालेणा परिग्गहिया भवंति,उज्झरनिज्झरचिछलपछल्विपणा परिग्गहिया भवंति, अगडतडागदहनदीओ वाबिपुक्खरिणीदीहिया ग्रंजालिया सरा सरपंतियाओ सरसरपंतियाओ विल्पत्तीया- को परिग्गहियाओ भवंति, आराम्रज्जाणा काणणा वणाइं वणसंडाइं वणराईओ परिग्गहियाओ भवंति, देव- उल्लसभापवाधूभाखातियपरिखाओ परिग्गहिया अंवति,पागारद्वालगचरियदारगोपुरा परिग्गहिया भवंति, पासादघरसरणलेणआवणा परिग्गहिता भवंति,सिंघाडगतिगचउक्कचबरचउम्मुहमहापहा परिग्गहिया भवंति, या भवंति,भवणा परिग्गहिया भवंति,देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिओ तिरिक्खजोणिणीओ आसणसयणत्वभभडसचित्ताचित्तमीसयाई दव्वाइं परिग्गहियाईं भवंति, से तेणट्ठेणं॰, (जहा) तिरिक्खजो- णिया तहा मणुरसाणवि भाणियव्वा, वाणमंतरजोतिसवेमाणिया जहा भवणवासी तहा नेयव्वा (सू॰ २१८)	[:9
--	-----

घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३९९॥		भांड, तथा सचित, अचित अने मिश्र द्रव्यो परिगृहीत कर्या छे, माटेते हेतुथी तेओ आरंमी अनं परिग्रही छे. जेम तिर्यंचयोनिना जीनो कह्या तेम मनुष्यो पण कहेवा, तथा वाणमंतरो, ज्योतिषिओ अने वैमानिको, जेम भवनवासी देवो कह्या तेम जाणवा. ॥२१८॥ पंच हेऊ पण्णत्ता, तंजहा-हेउं जाणइ हेउं पासइ हेउं वुज्झंड हेउं अभिसमागच्छति हेउं छउमत्थमरणं मरह ॥ पंचेव हेऊ पं०. तंजहा-हेउं जाणह जाव हेउणा छउमत्थमरणं मरह ॥ पंच हेऊ पण्णत्ता, तंजहा- हेउं न जाणइ जाव हेउं अन्नाणमरणं मरइ ॥ पंच हेऊ पन्नत्ता, तंजहा-हेउणा ण जाणति जाव हेउणा मरणं मरति ॥ पंच अहेऊ पण्णत्ता, तंजहा-अहेउं जाणह जाव अहेउं केवलिमरणं मरह ॥ पंच अहेऊ पण्णना, तंजहा-अहेउणा जाणइ जाव अहेउणा कवलिमरणं मरह ॥ पंच अहेऊ पण्णत्ता, तंजहा- अहेउं ज्ञाव अहेउं छउमत्थमरणं मरह ॥ पंच हेऊ पन्नत्ता, तंजहा-अहेउं केवलिमरणं मरह ॥ पंच अहेउ पण्णना, तंजहा-अहेउणा जाणइ जाव अहेउणा केवलिमरणं मरह ॥ पंच अहेऊ पण्णत्ता, तंजहा-अहेउं न जाणह जाव अहेउं छउमत्थमरणं मरह ॥ पंच अहेऊ पण्णत्ता, तंजहा-अहेउणा न जाणह जाव अहेउं छउमत्थमरणं मरह । सेवं भंते २ त्ति ॥ (सूत्रं २१९) ॥ पश्चमद्यते सप्तमोदेगकः ॥ ५-७ ॥ पांच हेतुओ कह्या छे, ते जेम के, हेतुने जाणे छे, हेतुने खुए छे, हेतुने सारी रीते प्राप्त करे छे. पांच हेतुओ कह्या छे, ते जेम के, हेतुने न जाणे, यावत् हेतवाळुं अज्ञानमरण करे. पांच हेतुओ कह्या छे, ते जेम के, हेतुए न जाणे यावत् हेतुए अज्ञानमरण करे. पांच अहेतुओ कह्या छे, ते जेमके, अहेतुने जाणे छे यावत् अहेतवाळुं केवलीमरण करे छे. पांच अहेतुओ	みょうしょう そうそう ちょう ちょう ちょうちょう	५ शतके उद्देशः७ ॥३९९॥
-	XXXX	इतुए अज्ञानमरण कर. पांच अध्तुआ कथा छ, त जनक, अध्तुण जाण छ यावत् अहतवाळु कवलामरण कर छ. पांच अद्दतुआ कह्या छे, ते जेमके, अद्देतुए जाणे यावत् अद्देतुए केवलिमरण करे. पांच अद्देतु कह्या छे, ते जेमके, अद्देतुने न जाणे यावत् अद्देतु-	***	

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४००॥	खमरण करे. पांच अहेतु कह्या छे, ते जेमके, अहेतु ए न जाणे, यावत् अहेतुए छ्व्रस्थमरण करे. हे भगवन् ! ते ए 5, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे एम कही अमण भगवंत गौतम विचरे छे. ॥ २१९ ॥ भगवत् सुधर्मस्वामींप्रणीत श्रीमद् भगवतीम्त्रना पांचमा शतकमां सातमा उद्देशानो म्ऌार्थ संपूर्ण थयो. अगवत् सुधर्मस्वामींप्रणीत श्रीमद् भगवतीम्त्रना पांचमा शतकमां सातमा उद्देशानो म्ऌार्थ संपूर्ण थयो.	* *	९ शतके उद्देशः८ ।४००॥
र्भ तेप ९ गारे पग १ तिभइए ४ नारयपुः ४ अमज्झ	उद्देशक ८. मा उद्देशक ८. मा उद्देशकमां स्थितिनी अपेक्षाए एद्गलो निरुप्या छे हवे आठमा उद्देशकमां पुद्गलोज प्रदेशनी अपेक्षाए निरुपाय छे. गं कालेणं २ जाव परिसा पडिगया, तेणं कालेणं २ समणस्स ३ जाव अंतेवासी नारयपुत्ते नामं अण- ातिभद्दए जाव विहरति, तेणं कालेणं २ समणस्स ३ जाव अंतेवासी नियंठिपुत्त णामं अण॰ पग- जाव विहरति, तए णं से नियंठीपुत्ते अण॰ जेणामेव नारयपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ २ तं अण॰ एवं वयासी-सव्वा पोग्गला ते अज्जो ! किं सअड्ढा समज्झा सपएसा उदाहु अणड्ढा ा अपएसा १, अज्जोत्ति नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं एवं वयासी-सव्वपोग्गला मे अज्जो ! समज्झा सपदेसा, नो अणड्ढा अमज्झा अप्पएसा, तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अ॰	krear a star a star a star a st	

भ्याख्या- प्रज्ञाप्तिः प्रज्ञाप्तिः प्रज्ञाप्तिः ॥४०१॥ भक्षो ! सव्वपोग्गला सअङ्हा समज्झा सपएसा तद्देव चेव, कालादेसेणं तं चेव, भावादेसेणं अज्जो ! तं चेव, नए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं एवं वदासी-दव्वादेसेणवि से अज्जो ! सव्वपोग्गला सअ इहा समझ्झा सपदेसा, नो अणङ्हा अमज्झा अपदेसाा, खेत्ताएसेणवि सव्वे पोग्गला सअङ्हा तह चेव, कालादेसेणवि, तं चेव भावादेसेणवि ! ते काले, ते समये यावत्-सभा पाछी वळी. ते काले, ते समये अमण भगवंत महावीरना शिष्य नारदपुत्र नामे अनगार, जेशो प्रकृतिभद्र थइ यावत् विहरे छे, ते काले, ते समये अमण भगवंत महावीरना शिष्य नारदपुत्र नामे अनगार, जेशो प्रकृतिभद्र थइ यावत् विहरे छे, ते काले, ते समये अमण भगवंत महावीरना शिष्य नारदपुत्र नामे अनगार, जेशो प्रकृतिभद्र थइ यावत् विहरे छे, ते काले, ते समये अमण भगवंत महावीरना शिष्य नारदपुत्र नामे अनगार, जेशो प्रकृतिभद्र थइ यावत् विहरे छे, ते काले, ते समये अमण भगवंत महावीरना शिष्य नारदपुत्र नामे अनगार, जेशो प्रकृतिभद्र थइ यावत् विहरे छे, ते काले, ते समये अमण भगवंत महावीरना शिष्य ज्ञात्रीने तेमणे-निर्ग्रन्थीपुत्र नारदपुत्र अनगारने आ प्रमाणे कषु:[प्र०] हे भगवन् ! तमारा मते मर्व पुद्र्वालो छे अने त्यां आवीने तेमणे-निर्ग्रन्थीपुत्रे तारदपुत्र अनगारते आ प्रमाणे कषु :[प्र०] हे भगवन् ! तमारा मते मर्व पुद्र्वालो छे अने त्यां आवीने तेमणे-निर्ग्रन्थीपुत्र नारदपुत्र अनगर्ध, अमध्य अने अप्रदेश छे ! [उ०] हे आर्य ! एम कही नारदपुत्र अनगारो निर्ग्रथीपुत्र अनगारने एम कखु के, मारा मत प्रमाणे मारा घारवा प्रमाणे वधां पुद्र्यलो सर्वर्ध. समध्य अने सप्रदेश छे पा अनर्व, अमध्य के अग्रदेश नथी. [प्र०] लारपछी ते निर्ग्रथीपुत्र अनगार एम चोल्या के, हे आर्य ! र्यु द्रव्यादेशवडे सर्व पुद्र्यलो सर्अर्ध, समध्य अने अग्रदेश छे अने अनर्ध, अमध्य अन अप्रदेश नथी ? के दे आर्य ! क्षेत्रादेशवर्वडे सर्व पुद्र्यलो अर्थरिहत वगेरे तथेव पूर्व प्रमाणे छे ? के नेज प्रमाणे कालादेशथी अने अप्रदेश नथी ? के दे आर्य ! क्षेत्रादेशवर्व सर्व पुद्र्यलो अर्थरिहत वगेरे तथेव पूर्व प्रमाणे छे? के नेज प्रमाणे कालादेशथी	
--	--

घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४०२॥	the state of the s	छे ? के तेज प्रमाणे भावादेशथी छे ? [उ०] त्यारे ते नारदपुत्र अनगारे निर्श्वधीपुत्र अनगारने एम कह्युं के, हे आर्थ ! मारा मतमां द्रव्यादेशथी पण सर्व पुद्गलो सअर्ध, समध्य अने सप्रदेश छे पण अनर्ध, अमध्य के अग्रदेश नथी, ए प्रमाणे, क्षेत्रादेशथी पण छे, कालादेशथी पण छे अने भावादेशथी पण छे. तए णं से नियंठीपुत्ते अण० नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी-जति णं हे अज्जो ! दव्वादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, एवं ते परमाणुपोग्गलेवि सअड्ढे समज्झे सप- एसे, णो अणड्ढे अमज्झे अपएसे, जति णं अज्जो ! खेत्तादेसेणवि सव्वपोग्गला सअ० ३ जाव एवं ते एगप- एसोगाढेवि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपपसे, जति णं अज्जो ! कालादेसेणं सव्वपोग्गला सअ० ३ जाव एवं ते एगप- एसोगाढेवि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपपसे, जति णं अज्जो ! कालादेसेणं सव्वपोग्गला सअ० ३ जाव एवं ते एगप- एसोगाढेवि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपपसे, जति णं अज्जो ! कालादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा० सम- ज्झा सपएसा, एवं ते एगसमयठितीएवि पोग्गले ३ तं चेव, जति णं अज्जो ! भावादेसेणं सव्वपोग्गला सअ ड्ढा० समज्झा मपएसा ३, एवं ते एगगुणकालएवि पोग्गले सअ० ३, तं चेव, अह ते एवं न भवति तो जं वयसि दव्वादेसेणवि सव्वपोग्गला सअ० ३, नो अणड्ढा अमज्झा अपदेसा, एवं खेत्तादेसेणवि, काला०, भावादेसेणवि तन्नं मिच्छा, तए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियंठीपुत्तं अ० एवं वयासी ने खल्द वयं देवा० एयमइं जाणामो पासामो, जति णं देवा० ! नो गिलायंति परिकहित्तए तं इच्छामि णं देवा० ! अंतिए एय- मइं सोचा निसम्म जाणित्तए, त्यारे ते निर्श्वीपुत्र अनगारे नारदपुत्र अनगारने एम कह्युं के, हे आर्य ! जो द्रव्यादेश्यी सर्व पुद्गले सअर्थ, समध्य अने	ちょうちゅうちゅうちゅうちゅうちょうちょうちょうちょう	५ शतके उद्देशः८ ॥४०२॥
-----------------------------------	--	--	-----------------------------	-----------------------------

 भ्याख्या- प्रज्ञातिः प्रज्ञातिः प्रज्ञातिः प्रज्ञातिः प्रज्ञातिः प्रज्ञातिः प्रज्ञातिः प्रज्ञातिः प्रज्ञाति वे प्रयाप्त प्रमाप्त स्वाप्त्रे, अमध्य अने अप्रदेश न्यादि श्रे श्राप्त्रे, समध्य अने सप्रदेश छे तो तारा मतमां एम होवाधी एकप्रदेशावगाढ पुद्गल, पण सअर्ध, समध्य अने सप्रदेश होवुं जोइए, वळी हे आर्य ! जो कालादेशयी पण सर्व पुद्गले सअर्ध, समध्य अने सप्रदेश छे तो तारा मतमां ए प्रमाणे होवाथी एक समयनी स्थितिवाळां पुद्रगलो पण सअर्ध इत्यादि तेज ते मकारना होवा जोइए, वळी हे आर्य ! जो सावादेशयी पण सर्व पुद्रगले सअर्ध, समध्य अने सप्रदेश छे तो तारा मतमां एम होवाथी एकप्रण कारळ पुद्रगल पण सअर्ध इत्यादि तेज प्रकारतुं होवुं जोइए, हवे जो तारा मतमां एम न होय तो तुं जे कहे छे के, ''द्रव्यादेशवर्ड पण बधां पुद्राले सार्ध समध्य अने सप्रदेश छे पण अनर्ध, अमध्य अने अप्रदेश नथी, ए प्रमाणे क्षेत्रादेशवर्ड, कालादेशवर्ड पग बधां पुद्राले सार्ध समध्य अने सप्रदेश छे पण अनर्ध, अमध्य अने अप्रदेश नथी, ए प्रमाणे क्षेत्रादेशवर्ड, कालादेशवर्ड पण बधां पुद्राले सार्ध समध्य अने सप्रदेश छे पण अनर्ध, अमध्य अने अप्रदेश नथी, ए प्रमाणे क्षेत्रदेशवर्ड, कालादेशवर्ड पण बधां पुद्राले सार्ध समध्य अने सप्रदेश छे पण अनर्ध, अमध्य अने अप्रदेश विर्यात्र अनगार पति एम कह्युं के, देवानुप्रिय ! ए अर्थने अमे जाणता जथी, जोता नथी; हे देवानुप्रिय ! जो तमे ते अर्थने कहेतां गलानि न पामो तो हुं आप देवानुप्रियनी पासे ए अर्थने सांगळी, अवधारी जाणवा इच्छुं छुं. तरए णं से नियंठीपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी-दटवादेसेणावि मे अज्ञो सच्वे पोग्गला सप- देसावि अपदेसावि अणंता, खेत्तादेसेणवि एवं चेव, कालादेसेणवि भावदेसेणावि एवं चेवाजे दटवओ अप्पदेसे से खेत्तओ जिप्पदेसे से दटवओ सिय अपदेसे सिय अपदेसे कालओ भयणाए भावओ भयणाए । जहा खेत्तओ कत्तजो अप्पदेसे से दटवओ सिय सपदेसे सिय अपदेसे कालओ भयणपए भावओ भयणाए । जहा खेत्तओ क्र	[:2
---	-----

 श्वाख्या प्रवं कालओ भाषओ। जे दच्वओ सपदेसे से खेत्ताओ सिय सपदेसे सिय अपदेसे, एवं कालओ भावओवि। जे खेत्ताओ सपदेसे से दव्वतो नियमा सपदेसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए, जहा दव्वओ तहा जे खेत्ताओ भावओवि॥ त्याखाद ते निग्नंथीपुत्र अनगारे नारदपुत्र अनगारने एम कहुं के, हे आर्य ! मारा धारवा प्रमाणे द्रव्यादेशवंडे पण सर्व पुत् तरा सपदेस पण छे, अने अप्रदेश पण छे, तेओ अनंत छे: क्षेत्रादेशवंडे पण एमज छे, कालादेश अने भावादेशवंडे पण सर्व पुत् गरो सप्रदेश पण छे, अने अप्रदेश पण छे, तेओ अनंत छे: क्षेत्रादेशवंडे पण एमज छे, कालादेश अने भावादेशवंडे पण ए प्रमाणेज छे, जे पुराल, द्रव्यथी अप्रदेश छे, ते. नियमे करी चोकस क्षेत्रथी अप्रदेश होय छे, कालाधी कदाचित् सप्रदेश अने कदाचित् अप्रदेश होय अने भावथी पण कदाचित् सप्रदेश होय अने कदाचित् अप्रदेश होय ते द्रव्यथी कदाच सप्र- देश होय अने कदाच अप्रदेश होय, कालधी तथा भावधी पण मजनाए जाणवुं, जेम क्षेत्रथी अप्रदेश होय ते द्रव्यथी कदाच सप्र- देश होय अने कदाच अप्रदेश होय ते क्षेत्रथी कदाच सप्रदेश होय अने कदाचित् व्या भावधी जाणी लेवुं. जे पुराल द्रव्यथी सप्रदेश होय ते क्षेत्रथी कदाच सप्रदेश होय अने कालधी तथा भावधी भजनावडे होय, जेम द्रव्यथी कहुं तेम कालधी अने भावधी पण जाणवुं. एएसि णं भंते ! पोग्गलाणं दव्वादेसेणं कित्तादेसेणं काला देसेणं भावादेसेणं अपदेसाकालादेसेणं अपदेसा जसं- केयरे २ जाव विसेमाहिया चा?, नारयपुत्ता! सव्वत्थोवा पोग्गला भावादेसेणं अपदेसाकालादेसेणं अपदेसा असं- खेज्जगुणा दव्वादेसेणं अपदेसा असंखेज्जगुणा खेत्तादेसेणं अपदेसा असंखेज्जगुणा खेत्तादेसेणं चे मपदेसा जर्भ-

म्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४०५॥	an thread an an an an an an an	खेझगुणा दव्वादेसेणं सपदेसा विसेसाहिया कालादेसेणं सपदेसा विसेसाहिया भावादेसेणं सपदेसा विसेसा- हिया। तए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियंठीपुत्तं अणगारं वंदइ नमंसइ नियंठिपुत्तं अणगारं वंदित्ताणमंसित्ता एयमट्टं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामेति २ त्ता संजमेणं सबसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ (सूत्रं २२०) ॥ [प्र0] हे भगवन् ! द्रव्यादेशथी, क्षेत्रादेशथी, कालादेशथी, अने भावादेशथी सप्रदेश अने अप्रदेश ए पुद्गलोमां क्या क्या पुद्गलो यावत्–थोडां छे, घणां छे, सरखां छे अने विशेषाधिक छे? [उ0] हे नारदपुत्र ! भावादेशवडे अप्रदेश पुद्गलोमां क्या क्या पुद्रालो यावत्–थोडां छे, घणां छे, सरखां छे अने विशेषाधिक छे? [उ0] हे नारदपुत्र ! भावादेशवडे अप्रदेश पुद्गलो सर्वथी थोडां छे, ते करतां कालादेशयी अप्रदेशो असंख्यगुण छे, ते करतां द्रव्यादेशथी अप्रदेशो असंख्यगुण छे, ते करतां क्षेत्रादेशयी अप्रदेशो असंख्यगुण छे, ते करतां क्षेत्रादेशथी सप्रदेशो असंख्यगुण छे, ते करतां द्रव्यादेशयी अप्रदेशो विशेषाधिक छे, ते करतां कालादेशथी सप्रदेशो विशेषाधिक छे अने ते करतां भावादेशथी सप्रदेशो विशेषाधिक छे. त्यारपछी ते नारदपुत्र अनगार निर्ध्रथी- पुत्र अनगारने वंदे छे, नमे छे; वंदी, नमी ए अर्थने पोते कहेल अर्थने माटे विनयपूर्वक वारंवार तेओनी पासे क्षमा मांगे छे, खमावी संयम अने तपवडे आत्माने भावता यावत् विहरे छे. ॥ २२० ॥ भन्तेत्ति भगवं गोयमे जाव एवं वयासी–जीवा णं भंते ! किं बङ्हंति हायंति अवट्टिया ?, गोयमा ! जीवा णो बङ्हंति, नो हायंति, अवट्टिया । नेरइया णं भंते ! किं बङ्हंति हायंति अवट्टिया ?, गोयमा ! जीवा	-304: F 304 304 - 30 4 304 - 30 4 - 30	५ शतके उद्देशः८ ॥४०५॥	
	6-3F-36-3F-9-	णो वड्ढंति, नो हायंति, अवहिया। नेरइया णं भंते ! किं वड्ढंति हायंति अवहिया ?, गोयमा ! नेरइया वड्ढंतिवि हायंतिवि अवहियावि, जहा नेरइया एवं जाव वेमाणिया। सिद्धा णं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! सिद्धा वड्ढंति, नो हायंति, अवहियावि॥ जीवा णं भंते ! केवतियं कालं अवहिया [वि] ?, सब्वद्धं। नेरइया णं	Î X		

		3
भंते ! केवतियं कालं वड्ढंति ?, गोयमा ! ज॰ एगं समयं उक्को॰ आवलियाए असंखेज्जतिभागं, एवं हायति, नेरहया णं भंते ! केवतियं कालं अवडिया ?, गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं उक्को॰ चउच्वीसं ग्रुहत्ता, एवं सत्तसुवि पुढवीसु वड्ढंति हायंति भाणियव्वं, नवरं अवडिएसु इमं नाणत्तं, तंजहा-रयणप्पभाए पुढवीए अडतालीसं मुहुत्ता सकर॰ चोदस रातिंदियाणं वालु॰ मासं पंक॰ दो मासा धूम॰ चत्तारि मासा तमाए अट मासा तमतमाए वारस मासा । [प॰] हे भगवन् ! एम कही भगवंत गौतमे श्रमण भगवंत महावीरने एम कह्युं के, हे भगवन् ! जीवो छं वधे छे, घटे छे के अवस्थित रहे छे ? [उ॰] हे गौतम ! जीवो वधता नथी, घटता नथी पण अवस्थित रहे छे. [प्र॰] हे भगवन् ! नैरयिको छं वधे छे, घटे छे के अवस्थित रहे छे ? [उ॰] हे गौतम ! नैरयिको वधे पण छे, घटे पण छे अने अवस्थित पण रहे छे, जेम नैर- माटे कह्युं एम यावत् वैमानिक छुधीना जीवो माटे जाणवुं. [प॰] हे भगवन् ! सिद्वोनो प्रघ्न करवो अर्थात् तेओ वधे छे, घटे छे के अतस्थित रहे छे ? [उ॰] हे गौतम ! सिद्धो वधे छे, घटे नहि अने अवस्थित पण रहे छे. [प्र॰] हे भगवन् ! कैटला काळ माटे कह्युं एम यावत् वैमानिक छुधीना जीवो माटे जाणवुं. [प॰] हे भगवन् ! सिद्धोनो प्रघ्न करवो अर्थात् तेओ वधे छे, घटे छे के अतस्थित रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! सिद्धो वधे छे, घटे नहि अने अवस्थित पण रहे छे. [प्र॰] हे भगवन् ! केटला काळ सुधी जीवो अवस्थित रहे ? [उ०] हे गौतम ! सिद्धो वधे छे, घटे नहि अने अवस्थित पण रहे छे. [प्र॰] हे भगवन् ! केटला काळ सुधी जीवो अवस्थित रहे ? [उ०] हे गौतम ! सिद्धो वधे छे, घटे नहि अने अवस्थित पण रहे छे. [प्र॰] हे भगवन् ! केटला काळ सुधी जीवो अवस्थित रहे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वकाळ सुधी. [प्र॰] हे भगवन् ! नैरयिको केटला काळ सुधी वधे छे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी एक समय सुधी अने उत्कष्टध्यी अने आवल्कित्तना असंख्य भाग सुधी नैरयिक जीवो वधे छे . ए प्रमाणे घटवानो काळ पण तेटलो जाणवो. [प्र॰] हे भगवन् ! नैरयिको केटला काळ सुधी अवस्थित रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्ये एक समय सुधी अने उत्कष्टिथी चोवीग्र हुर्हर्त सुधी नैरयिको अवस्थित रहे छे ए प्रमाणे साते पण पृथितीओमां वधे	x & x & x & x & x & x & x & x & x & x &	५ शतके उद्देशः८ ॥४०६॥

च्याख्या- म्याख्या- महति महति महति महति महति महति महत्वा महत्व महत्वा मत्वा मत् मत्वा मत्वा मत्वा मत्वा मत् मत्वा मत्वा मत्वा मत्वा मत् मत्वा मत्वा मत्वा मत्वा मत् म् मत्व मत्वा म् म् म् म् म् म् म् म् म् म् म्	6
---	---

जैम नैरंपिको माटे कह्यु एम असुरकुमारो पण वधे छे, घटे छे. अने जघन्ये, एक समय सुधी अने उत्कृष्टथी अडताळीस सुहूत सुधी अवस्थित रहे छे, ए प्रमाणे दसे प्रकारना पण भवनपति कहेवा. एकेन्द्रियो वधे पण छे, घटे पण छे अने अवस्थित पण रहे छे, ए त्रणे बडे पण जघन्ये एक समय अने उत्कृष्टे आवलिकानो असंरूय भाग, एटलो काळ जाणवो के इंद्रियो तेज प्रमाणे वधे छे, घटे छे; अने तेओनुं अवस्थान जघन्ये एक समय अने उत्कृष्टे आवलिकानो असंरूय भाग, एटलो काळ जाणवो के इंद्रियो तेज प्रमाणे वधे छे, घटे छे; अने तेओनुं अवस्थान जघन्ये एक समय अने उत्कृष्टे आवलिकानो असंरूय भाग, एटलो काळ जाणवो के इंद्रियो तेज प्रमाणे वधे छे, घटे छे; अने तेओनुं अवस्थान जघन्ये एक समय अने उत्कृष्टे वे अन्तर्भुहूर्त सुधीनुं जाणवुं. ए प्रमाणे यावत-चउरिंद्रिय सुधीना जीवो माटे जाणवुं. बाकीना बधा जीवो केटलो काळ वधे छे, केटलो काळ घटे छे, ए बधुं तथैव-पूर्वनी पेठे जाणवुं अने तेओना अवस्थान काळमां आ प्रमाणे नानात्व मेद छे; ते जेमके, सम्मूच्छिंमपंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिकोनो अवस्थान काळ अंतर्भुहूर्त छे, गर्भज पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिकोनो अवस्थान काळ चोवीश मुहूर्त छे, बानच्यंतर, ज्योतिषिक, सौधर्म अने ईशान देवलोकमां अवस्थान काळ अडतालीश मुहूर्त छे, गर्भज मुहूर्त छे, सनत्कुमार देवलोकमां अढार रात्रिदिवस अने चालीश मुहूर्त अवस्थान काळ छे, माहेंद्र देवलोकमां चोवीश रात्रिदिवस	रेशः८
--	-------

ગણાય: 10 ગયા&યા , ગાયમાં ! ગણું હક્ષ સમય હક્ષા છે જે તેવા ગળવા ગળવા ગળવા ગળવા ગળવા ગળવા ગળવા છે.	ा ! जीवा णो सोवचया नो सावचया णो सोवचयसावचया निरू- तेमा जीवा चउहिवि पदेहिवि भाणियव्वा, सिद्धा णं भंते ! पुच्छा, तेमा जीवा चउहिवि पदेहिवि भाणियव्वा, सिद्धा णं भंते ! केव- ता ! सव्वद्धं, नेरतिया णं भंते ! केवतियं कालं सोवचया ?, गोयमा ! असंखेज्जइभागं, केवतियं कालं सावचया ? एवं चेव, केवतियं कालं असंखेज्जइभागं, केवतियं कालं सावच्या ? एवं चेव, केवतियं कालं असंखेज्जइभागं, केवतियं कालं सावच्या ? एवं चेव, केवतियं कालं असंखेज्जइभागं, केवतियं कालं सावच्या ? एवं चेव, केवतियं कालं हे गौतम ! जीवो अवस्थित रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्ये एक समय अने उत्कृष्टे भगवन् ! जीवो उपचय सहित छे, अपचय सहित छे, सोपचय सापचय छे अने हे गौतम ! जीवो सोपचय उपचय सहित नथी, सापचय अपचय सहित नथी,
--	---

 भीवों चारे पदो वडे कहेवा. [प्र०] है भगवन् ! सिद्धो केवा छे ? (पूर्वनी पेठे सोचपयादिनो प्रश्न करवो.) [उ०] हे गौतम ! सिद्धो सेपचय ग्रंथी सोपचय छे, सापचय नथी, सोपचय ज्रंचे सावच ग्रंथी, निरुपचय छे, निरपचय छे. [प्र०] हे भगवन् ! जीवो केटला काळ सुधी निरुपचय अने निरपचय छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्व काळ सुधी जोवो निरुपचय थे निरपचय छे. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको केटला काळ सुधी सोपचय छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्व काळ सुधी जोवो निरुपचय थे निरपचय छे. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको केटला काळ सुधी सोपचय छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्व काळ सुधी आपचय छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्रवन्ये एक समय सुधी अने उत्कुटे आवलिकाना असंख्य भाग सुधी नैरयिको केटला काळ सुधी सोपचय छे ? [उ०] हे गौतम ! प्रमाणे पूर्वोक्त सोपचयना काळ जाणवो. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको केटला काळ सुधी आपचय छे ? [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे पूर्वोक्त सोपचयना काळ जाणवो. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको केटला काळ सुधी आपचय छे ? [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे पूर्वोक्त सोपचयना काळ जाणवो. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको केटला काळ सुधी आपचय छे ? [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे पूर्वोक्त सोपचयना काळ जाणवो. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको केटला काळ सुधी आपचय छे ? [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे पूर्वोक्त प्रमाणे जाणवु. केवतियं कालं निरुवचयानिरवचया?, गोयमा ! ज० एक्कं समयं उक्को० वारस मु० एगिंदिया सटवे सोवचयन सावचयाय सावचया सावचयाचि सावचयावि सावचयावि सावचयावि निरुवचयावि निरुवचयानिरवचयावि जहकोणं एगं प्रताले प्रात्य रे सावल्त्य अते तिरपच्य आते कालं सावचया सि निरुवचया ?, जह० एक्कं त्राल्य उक्को॰ अट्ट समया, केवतियं कालं निरुवचया निरवचया ?, जह० एक्कं उ० छम्मासा । सेवं भंते २ ॥ (सुर्व २२१) ॥ पंचमसए अट्टमो उद्सेते कालं निरुवचय निरवचया ?, जह० एक्कं उ० छम्मासा ! सेवं भंते २ ॥ (सुर्व २२१) ॥ पंचमसए अट्टमो उदसेतो संमत्त्रो लेग ॥ जन्वन्य एक समय अने तर्व प्रत्त रे शित्वच्य जी निरपचय छे ? [उ०] हे गौतम ! जन्न्ये एक समय अने उत्कुरे एक समय अने नेटला काळ सुधी निरपचय छे निर्रपच्य जे निरपचय छे ? [उ०] हे गौतम ! जन्न्ये एक समय अने उठला काळ सुधी निरपचय छे निरपचय छे हिरपचय जी निरपचय छे ? [उ०] हे गौतम ! जन्न्य एक समय अने उत्कुरे हरकुरे हर सुहर्त सुधी नैरयिको केटला काळ सुधी निरपचय थे तिरच्य जीवो सर्वकाळ सुधी सोपचय अने सापचय छे, हरके रे सापचय छे तिरपचय अने निरप	6
---	---

ब्याख्या- अ एक समय अन उत्कृष्ट आवालकाना असंख्य भाग छ, अवाख्यतामा व्युत्काान्तकाळ कहवा. [प्रण] ह नगपर गतिछा मण्ड प्रज्ञाप्तिः अ सुधी सोपचय छे. [उ०] हे गौतम! जघन्ये एक समय अने उत्कृष्टे आठ समय सुधी सिद्धो सोपचय छे. [प्र०] हे भगवन् ! तेओ २ उ	• गतके उद्देशः ९ ॥४१ १॥
---	--------------------------------------

४ भते ! कि उज्जोए अंधयारे ?, गोयमा ! नेरइयाणं नो उज्जोए, अंधारे, से केणढेणं०?, गोयमा! नेरइया णं असुहा १ पोग्गला असुभे पोग्गलपरिणामे,से तेणढेणं०। असुरकुमाराणं भंते! किं उज्जोए अंधयारे?, गोयमा! असुरकुमाराणं २ उज्जोए, नो अंधयारे । से केणढेणं ?, गोयमा ! असुरकुमाराणं सुभा पोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे, से तेणढेणं 🖌		जल कहेवाय, यावत वनस्पति जेम एजन उद्देशामां पंचेंद्रियतिर्यंचोना (परिग्रहनी) वक्तव्यता कही छे तेम कहेवुं अर्थात शुं राजग्रह नगर क्रट कहेनाय, शैल कहेवाय, यावत सचित्त, अचित्त अने मिश्रित द्रव्यो, राजग्रह नगर कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! पृथिवी पण राजग्रह नगर कहेवाय यावत सचित्त, अचित्त अने मिश्रित द्रव्यो राजग्रह नगर कहेवाय. [प्र०] हे भगवन् ! ते कया हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! पृथिवी ए जीवो छे, अजीवो छे माटे ते राजग्रह नगर कहेवाय छे यावत सचित्त, अचित्त अने मिश्र द्रव्यो पण जीवो छे, अजीवो छे माटे राजग्रह नगर कहेवाय छे, ते हेतुथी ते तेमज छे. ॥ २२२ ॥ से नूणं भंते ! दिया उज्जोए रातिं अंधयारे ?, हंता गोयमा ! जाव अंधयारे । से केणट्टेणं० ?, गोयमा ! दिया सुभा पोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे रातिं असुभा पोग्गला असुभे पोग्गलपरिणामे से तेणट्टेणं० । नेरइया ण	1181	ातके शः९ १२॥
--	--	--	------	--------------------

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४१३॥	एवं वुचइ, एवं जाव थणियकुमाराणं, पुढविकाइया जाब तेइंदिया जहा नेरइया। चउरिंदियाणं भंते ! किं उज्जोए अंधयारे ?. गोयमा ! उज्जोएवि अंधयारेवि, से केणट्टेणं०, गोयमा ! चउरिंदियाणं सुभासुभा पोग्गला सुभासुभे पोग्गलपरिणामे, से तेणट्टेणं एवं जाव मणुस्साणं। वाणमंतरजोतिसवेमाणिया जहा असुरकुमारा॥ (सूत्रं २२३)॥ [प्र०] हे भगवन् ! दिवसे उद्योत अने रात्रिमां अंधकार होय छे ? [उ०] हा, गौतम ! यावत् अंधकार होय छे. [प्र०] ते क्या हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! दिवसे सारां पुद्गलो होय छे अने सारो पुद्गल परिणाम होय छे, रात्रिमां अग्रुभ पुद्गलो होय छे अने अग्रुभ पुद्गल परिणाम होय छे ते हेतुथी एम छे. [प्र०] हे भगवन् ! ग्रु नैरयिकोने प्रकाश होय छे के अंधकार होय छे. [उ०] हे गौतम ! नैरयिकोने प्रकाश नथी पण अंधकार हो . [प्र०] ते क्या हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिकोने अग्रभ पदगल परिणाम छे. ते हेतथी तेम छे. [प्र०] हे भगवन ! यं अन्यक्रमारोने प्रकाश छे. के अंधकार	*****	५ शतके उद्देशः९ ॥४१३॥
the grow the grow the grow the grow the grow the	[प्र०] ते क्या हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! दिवसे सारां पुद्गलो होय छे अने सारो पुद्गल परिणाम होय छे, रात्रिमां अग्रुभ पुद्गलो होय छे अने अग्रुभ पुद्गल परिणाम होय छे ते हेतुथी एम छे. [प्र०] हे भगवन् ! ग्रुं नैरयिकोने प्रकाश होय छे के अंधकार होय छे. [उ०] हे गौतम ! नैरयिकोने प्रकाश नथी पण अंधकार छे. [प्र०] ते क्या हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिकोने अग्रुभ पुद्गल परिणाम छे, ते हेतुथी तेम छे. [प्र०] हे भगवन् ! ग्रुं असुरकुमारोने प्रकाश छे, के अंधकार छे ?, [उ०] हे गौतम ! असुरकुमारोन प्रकाश छे पण अंधकार नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ग्रुं असुरकुमारोने प्रकाश छे, के अंधकार छे ?, [उ०] हे गौतम ! असुरकुमारोन प्रकाश छे पण अंधकार नथी. [प्र०] ते क्या हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! असुरकुमारोने ग्रुभ पुद्गलो छे, ग्रुभ एुद्गल परिणाम छे माटे ते हेतुथी यावत्-तेओने प्रकाश छे एम कहेवाय छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो	constant of	· · ·

 होप छे. ते हेतुथी तेम छे. ए प्रमाणे यावत्-मनुष्यो माटे जाणी छेवुं. जेम असुरकुमारो कह्या तेम वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिक माटे जाणवुं. ॥ २२३ ॥ अतिथ णं भंते ! नेरइयाणं तत्थगयाणं एवं पद्मायति-समयाति वा आवल्यियाति वा जाव ओस- पिपणीति वा उस्सप्पिणीति वा, णो तिणट्वे समट्टे । से केणट्ठेणं जाव समयाति वा आवल्यियाति वा जाव ओस- पिपणीति वा उस्सप्पिणीति वा ?, गोयमा ! इहं तेसिं माणं इहं तेसिं पमाणं इहं तेसिं पण्णायति, तंजहा- समयाति वा जाव उस्सप्पिणीति वा, से तेणट्ठेणं जाव नो एवं पण्णायए, तंजहा-समयाति वा जाव उस्स- पिपणीति वा जाव उस्सप्पिणीति वा, से तेणट्ठेणं जाव नो एवं पण्णायए, तंजहा-समयाति वा जाव उस्स- समयाति वा जाव उस्सप्पिणीति वा ?, गोयमा ! इहं तेसिं माणं इहं तेसिं पमाणं इह तेसिं पण्णायति, तंजहा- समयाति वा जाव उस्सप्पिणीति वा ?, हंता ! अत्थि णं भंते ! मणुसाणं इहगयाणं एवं पद्मायति, तंजहा-समयाति वा जाव उस्सप्पिणीति वा ?, हंता ! अत्थि गं भंते ! मणुसाणं इहगयाणं एवं पद्मायति, तंजहा-समयाति वा जाव उस्सप्पिणीति वा ?, हंता ! अत्थि गं भंते ! मणुसाणं इह तेसिं माणं- इहं चेव तेसिं एवं पण्णायति, तंजहा-समयाति वा जाव उस्सप्पिणीति वा, से तेण०, वाणमंतरजोतिसबेमाणि- याणं जहा नेरहयाणं ॥ (सूत्रं २२४) ॥ [म०] हे मगवन् ! त्यां गएला निरयमां स्थित रहेला नैरयिको एम जाणे के, समयो, आवलिकाओ, जत्सार्पणीणो अने अव- सार्पणीओ ? [उ०] हे गोतम ! ते अर्थ समर्थ नथी अर्थात् ते नैरयिको समयादिने जाणाता नथी. [म०] हे भगवन् ! ते क्या हेतुश्री यावत् समयो, आवलिकाओ, जत्सार्पणीओ अने अवसार्पणीओ नथी जणातां ? [उ०] हे गौतम ! ते समयादिन्तं मा आह मनुष्यलोकमां छे, तेओनुं प्रमाण अहिं छे, अने तेओने अहिं ए प्रमाणे जणाय छे, ते जैमके, समयो यावत् अवसर्रिणीओ, ते 	९
--	---

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४१५॥	ું નુગુ તે મારુ, તે તેમને ગોગોલેતામ મેતમતે તે ગોખ શેખ સામરે મામતો, તેમાં ગોમતે મેનમ મામતે પરિવાર છે. તેમ ગોમ છે	25	ाके ९ ५॥
	्या के प्राप्त, त तमय आया के गयता जनता जनता जनता साथ साथर सायर पगरत, उपा जनत नगरत गहाना छ सा गय छ आ जाव छ आ जा आवी श्रमण भगवंत महावीरनी दूर सामे बेसी एम बोल्याः—हे भगवन ! असंख्य लोकमां अनंत रात्रि दिवस उत्पन्न थयां ? उत्पन्न थाय छे? के उत्पन्न थत्रो ? अने नष्ट थयां ? नष्ट थाय छे? के नष्ट थत्रो ? के नियत परिमाणवाळा रात्रिदिवज्ञी उत्पन्न	x	

	121	
से केणहेणं जाव विगच्छिस्संति वा ?, से नूणं भंते ! अज्जो ! पांसेणं अरहया पुरिसादाणीएणं सासए	होए 🗼	
व्याख्या- 👔 बुइए अणादीए अणवदग्गे परित्ते परिवुडे हेटा विच्छिण्णे मज्झे संखित्त उप्पि विसाले अहे पलिंयकसं	ठिए ४	५ शतके
प्रज्ञप्तिः 🕻 मज्झे वरवइरविग्गहिते उप्पि उद्धमुइंगाकारसंठिए तेंसिं च णं सासयंसि लोगंसि अणादियंसि अणवदग	गंसि 🕅	उदेशः९
18१६॥ 💃 परित्तंसि परिवुडंमि हेट्ठा विच्छिन्नंसि मज्झे संखित्तंसि उपिंग विसालंसि अहे पलियंकसंठियंसि मज्झे वर	वहर 🙏	1188811
विग्गहियंसि उपिप उद्धमुइंगाकारसंठियंसि अणंता जीवघणा उप्पज्जिना २ निलीयंति परित्ता जीवघणा उ	7 60- X	
्रिजित्ता २ निलीयंति से नूणं भूए उप्पन्ने विगए परिणए अजीवेहिं लोकति पलोकइ, जे लोकइ से लोए?,		1
भगवं [ते] !, सं तेणहेणं अज्ञो ! एवं बुचइ असंखेजे तं चेव। तप्पभितिं च णं ते पासावचिज्ञा थेरा अ		l I
ि भगवं महावीरं वंदति नमंसंति २ एवं वदासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पं	HUI \$	
४ वंतो समण भगवं महावीरं पद्यभिजाणंति सव्वन्न सव्वदरिसी [ग्रं० ३०००], तए णं ते थेरा भगवंतो स १ भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति २ एवं वदासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पं हव्वइयं सप्पडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेह, तए	वम- ४	
हे हव्वइयं सप्पडिकमणं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेह, तए	णत 💉	
🕺 पासावचिज्ञा थेरा भगवंतो जाव चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिद्धा जाव सव्वदुक्खप्पहीणा अत्थेगतिया	द्वा 👌	• •
्रिदेवालोएसु उववन्ना॥ (सूत्रं २२५)॥	R	
म् [प्र०] हे भगवन् ! ते क्या हेतुथी यावत् नष्ट थरो ? [उ०] हे आर्य ! ते निश्चयपूर्वक छे के, आपना (गुरूखरूप) पुरु में नीय पुरुषोमां प्राह्य पार्श्व अर्हते लोकने भाश्वत कह्यो छे, तेमज अनादि, अनवदग्र अनंत, परिमित, अलोकवडे परिवृत,	गादा- 📌	
🗴 नीय पुरुषोमा ग्राह्य पार्श्व अहेत लोकने भाश्वत कह्यों छे, तेमज अनादि, अनवदग्र अनंत, परिमित, अलोकवडे परिवृत,	नीचे 👔	

४ णमंतरजोतिसियवेमाणियभेदेण, भवणवासी दसविहा वाणमतरा अट्टावहा जाइसिया पंचावहा वमाणिया ८ दुविहा । गाहा-किमियं रायगिहंति य उज्जोए अंधयार समए य । पासंतिवासिपुच्छा रातिंदिय देवलोगा य	व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४१७॥	विस्तीर्ण. वच्च सांकडो. उपर, विशाल, नीचे पत्यंकना आकारनो, वच्चे उत्तम वज्रना आकारवाळो अने उपर, उंचा उभा मृदंगना आकार जेवो लोकने कह्यो छ तेवा प्रकारना शाश्वत, अनादि, अनंत, परित्त, परिवृत, नीचे विस्तीर्ण, मध्ये संक्षिप्त, उपर विशाल, नीचे पत्यंकाकारे स्थित, वच्च वर वज्रसमान शरीरवाळा अने उपर उभा मृदंगना आकारे संस्थित एवा लोकमां अनंता जीवघनो उपजी उपजीने नाश पामे छे अने परित्त नियत असंख्य जीवघनो पण उपजी उपजीने नाश पामे छे ते लोक, भूत छे, उत्पन्न छे, विगत छे, परिणत छे. कारण के, ते अजीवो द्वारा लोकाय छ निश्चित थाय छे, अधिक निश्चित थाय छे माटे जे, प्रमाणथी लोकाय जणाय ते लोक कहेवाय ? डा, भगवन ! ते हेतुथी हे आर्यो ! एम कहेवाय छे के, असंख्येय लोकमां तेज कहेवुं. त्यारथी मांडी ते पार्श्वजिनना शिष्य स्थविर भगवंती अमण भगवंत महावीरने 'सर्वज्ञ' ए प्रमाणे प्रत्यमि जाणे छे. त्यारवाद ने स्थविर भगवंतो अमण भगवंत महावीरने वंदे छे, नमे छे, वंदी, नमी एम बोल्या के. हे भगवन ! तमारी पासे, चातुर्याम धर्मने मूकी प्रतिकमण सहित पंचमहावतोने स्वीक्रारी विहरवा इच्छीए छीए, हे देवानुप्रिय ! जेम सुरू थाय तेम करो. त्यारे ने पार्श्वजिनना शिष्य स्थविर भगवंतो यावत् सर्वदुःखथी प्रहीण थया अने केटलाक देवलोकमां उत्पन्न थया. ॥ २२५ ॥ कतिविहा णं भंते ! देवल्लोगा पण्णत्ता ?, गोयमा ! चउच्चिहा देवलोगा पण्णत्ता, तंजहा-भवणवासीवा-	५ शतके उद्देशः९ ॥४१७॥
	2	🖉 णमंतरजोतिसियवेमाणियभेदेण. भवणवासी दसविहा वाणमंतरा अट्टविहा जोइसिया पंचविहा वेमाणिया 🦹	

पियाः प्रबाख्याः प्रबासिः प्रबासः प्रबासः प्रबासः प्रबारना छे, उपोतिषिको पांच प्रकारना छे, अने वैमानिको वे प्रकारना छे. हवे आ उद्देशकनी संग्रह गाथा कहे छे, राजगृह ए यो प्रवारना छे, ज्योतिषिको पांच प्रकारना छे, अने वैमानिको वे प्रकारना छे. हवे आ उद्देशकनी संग्रह गाथा कहे छे, राजगृह ए यो प्रवारना छे, ज्योतिषिको पांच प्रकारना छे, अने वैमानिको वे प्रकारना छे. हवे आ उद्देशकनी संग्रह गाथा कहे छे, राजगृह ए यो प्रवा अने रात्रीए अधकार केम ? समय विगेरे काळनी समजण कया जीवोने होय छे अने कया जीवोने नथी होती? यात्री अने दिवसना प्रमाण विषे श्रीपार्श्वजिनना शिष्योना प्रश्नो अने देवलोकने लगता प्रक्रनो आ उद्देशमां पटला विषयो आवेला छे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, ते ए प्रमाणे छे, एम कही यावत् विहरे छे. ॥ २२६ ॥ भगवत् सुधर्मासामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीद्वत्रना पांचमा शतकमां नवमा डदेशाने मुलार्थ संपूर्ण थयो. उद्देशक १०. अनंतर पासेना उद्देशामां छेवटे देने कहा, माटे देव विशेषरूप चन्द्रने उद्देशीने आ दशम उद्देशक कहे छे. तेणं काछेणं तेणं समएणं चंपानामं नयरी जहा पढमिछो उद्देसओ तहा ने वच्वो एसोवि, नवरं चंदिमा भाणियव्वा श (सूट्यं २२७) ॥ पंचमे सए दसमो उद्देशो स्वात्तो ॥ ५-१० ॥ पंचमं सयं समन्त ते काले, ते समये चंपा नामे नगरी हती, प्रथम उद्देशक् कबो तेम आ उद्देशक समजवो. विशेष ए के, चंद्रो कहेवा. ॥२२७॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीस्त्रना पांचमा शतकमां दशमा उद्देशाने यूल्या संपूर्ण थयो. ॥ इति श्रीमद् भगवतीस्त्रे पंचमं शतकमां दशमा इदेशाने समाप्तम् ॥	; ? a
--	-------

व्याख्या-	महावयणा १, इता महावयणा, त ण भत १ समणाहता निग्गथाहता महानिज्ञरतरा १, गायमा १ णा तणड	Karkarararararararararararararararararar	शतके
प्रज्ञप्तिः	समडे, से केणडेणं भंते ! एवं वुचइ जे महावेदणे जाव पसत्थनिज्जराए ?,		शः १
॥४१९॥	[प्र०] हे भगवन् ! हवे ए छे के, जे महावेदनावाळो होय ते महानिर्जरावाळो होय अने जे महानिर्जरावाळो होय ते महावेद-		}१९॥
	महावेदनावाळो छे, तेज ए प्रमाणेज जाणवुं. [प्र०] हें भगवन् ! छट्ठी अने सातमी पृथिवीमां नैरयिको मोटी वेदनावाळा छे?	34 3 V	

www.kobatirth.org

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च्याख्या-	ા ગુમાં ગુગરા ગુજરાતાઓ છે રુદ્ધ કે ગાલન રે અય લગય ગયા અયાલ લગ ગયા, મિંગુ દુનગવગુર લ હન શા દ્લુયા બદ્વા	प छे के, जे 🤌	६्शतके
प्रज्ञाप्तिः	🕼 महावेदनावाळो छे यावत् प्रशस्तनिर्जरावाळो छे ?	Š	उद्देशः१
ાા૪૨૦ા		त, एएसि 🍰 कयरे वा अ	1182011
	र्भ णं गोयमा ! दोण्हं वत्थाणं कयरे वत्थे दुधोयतराए चेव दुवामतराए चेव दुपरिकम्मतराए चेव ?		
	🦿 वत्थे सुधोयतराए चेव सुवामतराए चेव सुपरिकम्मतराए चेव १, जे वा से वत्थे कद्दमरागरत्ते जे व		
	🙀 खंजणरागरत्ते?, भगवं ! तत्थु णं जे से वत्थे कद्दमरागरत्ते से णं वत्थे दुधोयतराषु चेव दुवाम्तराषु		
	🕺 रिकम्मतराए चेव, एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइं चिक्कणीकयाइं (अ) सिति	N B (1/1	
	्रि खिलीभूयाई भवंति, संपगाढंपि य णं ते वेदणं वेदेमाणा णो महानिजरा णो महापजवसाणा भवंति		
	📲 वा केइ पुरिसे ओईगरणं आकोडेमाणे महया २) सद्देणं महया २ घोसेणं महया २ परंपराघाएणं णं		
	🎢 तीसे अहिगरणीए केई अहाबायरे पोग्गले परिसाडित्तए, एवामेव गोयमा! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं ग		
<i>4</i> .	र्भ तीसे अहिगरणीए केई अहाबायरे पोग्गले परिसाडित्तए, एवामेव गोयमा! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं ग है जाव नो महायज्ज वसाणाइं भवति, भगवं ! तत्थ जे से वत्थे खंजणरागरत्ते से णं वत्थे सुधोयतराए चे		
	🤺 तराए चेव सुपरिकम्मतराए चेव, एवामेव गोयमा ! रूमणाणं निग्गंथाणं अहाबायराइं कम्माइं सिरि	डलीकयाइं 🧚	
·	📲 निहियाइं कम्माइं विष्परिणामियाइं खिष्पामेव बिद्धत्थाइं भवंति, जावतियं तावतियंपि णं ते वेदण	डलीकयाइं 💏 i वेदेमाणे 🕺	
i			

For Private and Personal Use Only

प्रज्ञाप्तिः ही एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहाबायराइं कम्माइं जाव महापज्जवसाणा भवंति, से जहानामए	६ शतके उद्देशः१ ॥४२ १॥
--	-------------------------------------

हया- हया-
--

 मणकरणे वइकरणे कायकरणे कम्मकरणे, इचेएणं चडविवहेणं अखुभेणं करणेणं नेरइया करणओ असायं वेयणं वेयंति, नो अकरणओ. से तेणट्टेणं० । अखुरकुमारा णं किं करणओ० अकरणओ० ?, गोयमा ! कर- गओ, नो अकरणओ, से केणट्टेणं० ?, गोयमा ! असुरकुमाराणं चउटिवहे करणे पण्णत्ते, तंजहा— मणकरणे वयकरणे कायकरणे कम्मकरणे, इचेएणं सुभेणं करणेणं असुरकुमाराणं करणओ सायं वेयणं वेयंति, नो अकरणओ, एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढविकाइयाणं एवामेव पुच्छा, नवरं इचेएणं सुभासु- चेपंति, नो अकरणओ, एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढविकाइयाणं एवामेव पुच्छा, नवरं इचेएणं सुभासु- चेपंति, नो अकरणओ, एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढविकाइयाणं एवामेव पुच्छा, नवरं इचेएणं सुभासु- चेपंति, नो अकरणओ, एवं जाव थणियकुमाराणं ! पुढविकाइयाणं एवामेव पुच्छा, नवरं इचेएणं सुभासु- चेपंति, नो अकरणओ, एवं जाव थणियकुमाराणं ! पुढविकाइयाणं एवामेव पुच्छा, नवरं इचेएणं सुभासु- चेपंति, नो अकरणओ, एवं जाव थणियकुमाराणं ! पुढविकाइयाणं एवामेव पुच्छा, नवरं इचेएणं सुभासु- चेपंति, नो अकरणओ, एवं जाव थणियकुमाराणं ! पुढविकाइयाणं एवामेव पुच्छा, नवरं इचेएणं सुभासु- चुमेणं वेमायाए ! देवा सुभेणं सायं ॥ (यत्रं २२९) ॥ [प्र] हे भगवन् ! करणो केटळा प्रकारनां कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! करणो चार प्रकारनां कह्या छे, ते जेमके, मनकरण, वचनकरण, कायकरण, अने कर्भकरण. [प्र0] हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला प्रकारनां कर्घा छे ते जेमके, मनकरण, वचनकरण, कायकरण, अने कर्भकरण. [प्र0] हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला प्रकारग अने कर्भकरणः विकलेन्द्रियोने वचनकरण, कावकां करणो छे. एकेंद्रिय जीवोने वे जातनां करणा छे ते जेमके, एक कायकरण अनेबी क्रं कर्मण्या विकलेन्द्रियोने वचनकरण, कायकरण अने कर्मकरण ए त्रण करण होय छे. [प्र0] हे गगवन् ! छुं नैरयिको करणधी अग्रातावेदनाने वेदे छे के अरुरणधी अग्रातावेदनाने वेदे छे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिको करणधी अग्रातावेदनाने बेदे छे पण अरुराण्वी करण विना अग्राता दुःखरूप के वोताने नथी अनुमवता. [प्र0] हे मगवन् ! ते चा हेतुथी? [उ०] हे गौतम ! नैरयिकोने चार प्रकारतुं करण कह्यु छे, ते जेमके, 	तः १
---	------

च्याक्व्या- प्रज्ञप्तिः ॥४२४॥	, A A	मनकरण, वचनकरण, कायकरण अने कर्मकरण, ए चार प्रकारना अग्रुभ करणो होवाथी नैरथिको करणद्वारा अग्रातम्नेदनाने अनु- भवे छे पण करण दिना अग्रातावेदनाने अनुभव छे ? [उ०] हे गौतम ! करणथी, अकरणथी नहि. [प०] हे भगवन ! ते शा हेतुथी ? के अकरणथी ज्ञाता सुलरूप वेदनाने अनुभव छे ? [उ०] हे गौतम ! करणथी, अकरणथी नहि. [प०] हे भगवन ! ते शा हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! असुरकुमारोने चार प्रकारनां करण कह्यां छे, ते जेमके, मनकरण, वचनकरण, कायकरण अने कर्सकरणः ए शुभ करणो होवाथी असुरकुमारो करणद्वारा सुलरूप वेदनाने अनुभवे छे पण करण विना अनुभवता नथी ए प्रमाणे यावत स्तनितकुमार सुधीना सुवनपति माटे समजवुं. [प०] पृथिवीकायिक जीवो माटे ए प्रमाणेज प्रश्न करवो. [उ०] विशेष ए के ए शुभाशुभ करण होवाथी पृथिवीकायिक जीवो करणद्वारा विमात्रावडे विविध मकारे अर्थात्त कराव सुखरूप अने कदाच दुःखरूप वेदनाने अनुभवे छे पण करण विना अनुभवता नथी. औदारिक शरीरवाळा सर्व जीवो शुभाशुभ करणद्वारा विमात्राए वेदनाने अनुभवे छे पण करण विना अनुभवता नथी. औदारिक शरीरवाळा सर्व जीवो शुभाशुभ करणद्वारा विमात्राए वेदनाने अनुभवे छे पण करण विना अनुभवता नथी. औदारिक शरीरवाळा सर्व जीवो शुभाशुभ करणद्वारा विमात्राए वेदनाने अनुभवे छे पण करण विना अनुभवता नथी. औदारिक शरीरवाळा सर्व जीवो शुभाशुभ करणद्वारा विमात्राए वेदनाने अनुभवे छे पण करण विना अनुभवता नथी. औदारिक शरीरवाळा सर्व जीवो शुभाशुभ करणद्वारा विमात्राए वेदनाने अनुभवे छे, देवो शुभ करणद्वारा सुसरूप वेदनाने अनुभवे छे. ॥ २२९ ॥ जीवा णं भंते ! कि महावेयणा महानिज्जरा ? महावेदणा अप्यनिज्जरा ? अप्यवेदणा महानिज्जरा ३ अप्प- वेदणा अप्पनिज्जरा ४?, गोयमा ! अत्थेगतिया जीवा महाविद्याा महानिज्जरा ? अत्थेगतिया जीवा महावेयणा अप्पनिज्जरा २ अत्थेगतिया जीवा अप्यवेदणा महानिज्जरा ३ अत्थेगतिया जीवा अप्यवेदणा अप्यनिज्जरा ४ । से केणट्ठेणं० ?, गोयमा ! पडिमापडिवन्नए अणगारे महानिद्वरेणे महानिज्जरे,छट्टसत्तमासु पुढवीसु नेरइया महा- बेदणा अप्पनिज्जरा, सेस्टेर्सि पडिवन्नए अणगारे अप्यवेदणे महानिज्जरे, अणुत्तरोववाइया देवा अप्यवेदणा अप्य	いみのみのみのみのみのみのみのようとうことのものよう	६ शतके उद्देशः१ ॥४२४॥
-------------------------------------	-------------	---	----------------------------	-----------------------------

ब्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४२५॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ * *	निज्जरा, सेवं भंते २ त्ति ॥ महवेदपो य बत्थे कइमखंजणराए य अहिगरणी । तणहत्थे य कवछे करण महावे- दणा जीवा ॥३८॥ (सूत्रं २३०) ॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ छट्टसयस्स पढमो उद्दसो ममत्तो ॥ ६-१ ॥ [प्र0] हे भगवन ! शुं जीवो महावेदनावाळा अने महानिर्जरावाळा छे ! महावेदनावाळा अने अल्पनिर्जरावाळा छे ? अल्पवेद- दनावाळा अने महानिर्जरावाळा छे ? के अल्पवेदनावाळा अने अल्पनिर्जरावाळा छे ! [उ०] हे गौतम ! केटलाक जीवो महावेदना- वाळा अने महानिर्जरावाळा छे ? के अल्पवेदनावाळा अने अल्पनिर्जरावाळा छे ! [उ०] हे गौतम ! केटलाक जीवो महावेदना- वाळा अने महानिर्जरावाळा छे , केटलाक जीवो महावेदनावाळा अने अल्पनिर्जरावाळा छे . [प्र0] हे भगवन ! ते शा हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! जेणे भतिमाने प्राप्त करी छे एवो अर्थात् प्रतिमाधारी साधु महावेदनावाळा अने महानिर्जरावाळो छे. छटी अने सातमी पृथिवीमां रहेनारा नैरयिको मोटी वेदनावाळा अने अल्पनिर्जरावाळा छे . [प्र0] हे भगवन ! ते शा हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! जेणे भतिमाने प्राप्त करी छे एवो अर्थात् प्रतिमाधारी साधु महावेदनावाळो अने महानिर्जरावाळो छे. छट्टी अने सातमी पृथिवीमां रहेनारा नैरयिको मोटी वेदनावाळा अने अल्पनिर्जरावाळा छे . शैलेशी प्राप्त अन्यवेदनावाळो अने सोटी निर्जरा- वाळो छे अनुत्तरौपपातिक देवो अल्पवेदनावाळा अने अल्पनिर्जरावाळा छे . हे भगवन ! ते ए प्रमाणे छे. संग्रदगाया तहे छे महावेदना. कर्दमथी अने खंजनथी करेख रंगेछं वस्त, अधिकरणी परण, तणनो पूळो, लोढानो गोळो, करण अने महावेदनावाळा जीवो. हे भगवन ! ते ए प्रमाणे छे. हे भगवन ! ते ए प्रमाणे छे. एम कही यावत् विहरे छे. ॥ २३० ॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीस्त्रना छट्ठा शतकमां प्रथम उदेशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.	95	शतके देशः१ ४२५॥
--	---	----	------------------------------

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४२६॥	उद्देशक २. रायगिहं नगरं जाव एवं वयासी-आहारुद्देसो जो पन्नवणाए सो सब्बो निरवसेसो नेयव्वो । सेवं भंते सेवं भंते ! त्ति (सूत्रं २३१) छंढे सए बीओ उद्देसो संमत्तो ॥ ६-२ ॥ राजगृह नगर यावत् ए प्रमाणे बोल्या आहार उद्देशक, जे 'प्रज्ञापना' सूत्रमां कह्यो छे ते बधो अहिं जाणवो. हे भगवन् ! ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, एम कही यावत् विहरे छे. ॥ २३१ ॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना छट्टा शतकमां बीजा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.	5
	उद्देशक ३. आगळना डदेशकमां आहारने अपेक्षीने पुद्गलोनो विचार कर्यो छे अने अहीं तो बंधादिने अपेक्षीने पुद्गलो चिंतववानां ए प्रमाणेना संबंधवाळा आ त्रीजा उद्देशकमां, शरुआतमां बे अर्थसंग्रहगाथा छे. बहुकम्मवत्थपोग्गलपयोगसावीससा य सादीए । कम्मडितीत्थिसंजय सम्मदिष्टी य सन्नी य ॥ ३९ ॥ भविए दंसण पज्जत्त भासअपरित्त नाणजोगे य । उवओगाहारगसुहुमचरिमबंधी य अप्पबहुं ॥ ४० ॥ बहुकर्म, वस्त्रमां पुद्गलो प्रयोगथी अने खाभाविकरीते, आदिसहित, कर्मस्थिति, स्ती, संयत, सम्यग्दष्टि, संज्ञी, भव्य, दर्श पर्याप्त, भाषक, परित्त, ज्ञान, योग, उपयोग, आहारक, मुक्ष्म, चरम, वंध, अने अल्पबहुत्व; आटला विषयो आ उद्देशामां कहेवा	क्रु के के के कि न, कि

For Private and Personal Use Only

स्यास्या- प्रिवास्या- प्रवितिः प्रवितः प्रवितः प्रवितः प्रवितः प्रवितः प्रवितः सया समियं पोग्गला उवचिक्रंति सया समियं च णं पोग्गला बज्झंति सया समियं पोग्गला चिक्रंति स्या स्वित् स्या समियं पोग्गला उवचिक्रंति सया समियं च णं तस्स आया बुरूवत्ताए दुगंधत्ताए बुरसत्ताए दुफासत्ताए अणिहत्ताए अकंत० अप्पिय॰ असुभ॰ अमणुन्न॰ अमणामत्ताए अणिच्छियत्ताए अभिज्झिन् ताए अहत्ताए नो उङ्हत्ताए दुक्खत्ताए नो सुहत्ताए मुज्जो २ परिणमंति ?, हंता गोयमा ! महाकम्म्स्स तं चेव । से केणहेणं॰ ?, गोयमा ! से जहानामए-वत्थस्स अहयस्स वा घोयस्स वा तंतुगयस्स वा आणुपुर्व्वीए परिभुज्जनाणस्स सव्वओ पोग्गला वर्ड्सति सव्वओ पोग्गला चिक्रंति तजव परिणमंति से तेणहेणं॰ । से त्एां भंते ! अप्पासवस्स अप्पकम्मस्स अप्पकिरियस्स अप्पवेदणस्स सव्वओ पोग्गला भिज्जंति सव्वओ पोग्गला छिज्जंति सव्वओ पोग्गला विद्रस्तंति सत्या अपियं च णं तस्स आया सुरूवत्ताए प्रत्नं नेयव्वं जाव सुहत्ताए नो दुक्खत्ताए सुज्जो २ परिणमंति ?, हंता गोयमा ! जाव परिणमंति । से केणहेणं॰ ?, गोयमा ! सं जहानामए-वत्थस्स जस्तियस्स वा पंकियस्स वा मइलियस्स वा रहछियस्स वा आणुपुज्वीए परिकमिम्ज- माणस्स सुद्रेणं बारिणा धोवेमाणस्स पोग्गला भिज्जंति जाव परिणमंति से तेणहेणं॰ ?, गोयमा ! [प्र॰] हे भगवन् ! ते नक्षी छे के, महाकर्मवालने, महाक्रियावाळाने महाआश्रववाळाने अने महावेदनावाळाने सर्वथी सर्व	ł
--	---

	luia	www.kobalitit.org	rya Oni	Tranassagarsun O
	1 2 2	दिशाओथी सर्व प्रकारे पुद्गलोनो बंध थाय ? सर्वथी पुद्गलोनो चय थाय ? सर्वथी पुद्गलोनो डपचय थाय ? हमेशां निरंतर	كالم	
ब्याख्या-	X	पुद्गलोनो बंध थाय, हमेशां निरंतर पुद्गलोनो चय थाय के हमेशां निरंतर पुद्गलोनो उपचय थाय ? अने तेनो आत्मा, हमेशां	*	६ शतके
प्रज्ञप्तिः	۶ ۲	निरंतर दुरूपपणे, दुर्वर्णपणे, दुर्गंधपणे, दूरसपणे, दुःस्पर्शपणे, अनिष्टपणे, अकांतपणे, अमनोज्ञपणे, अमनामपणे−मनथी संभारी	X	उद्देश:३
1182611	X	पण न ज्ञकाय ए स्थितिए, अनीप्सितपणे-प्राप्त करवाने अनिच्छितपणे, अभिध्यितपणे- जे स्थितिने प्राप्त करवानो लोभ पण न	κ	1182011
	X	थाय ते स्थितिपणे, जघन्यपणे, अनूर्ध्वपणे, दुःखपणे अने असुखपणे वारंवार परिणमे छे? [उ०] हा. गौतम ! महाकर्मवाळा माटे	r N	
	22.36	तेज प्रमाणे छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते ज्ञा हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोइ अहत–अक्षत–अपरिभ्रक्त–नहि वापरेछं-अधोतुं.	Ś	
	R	धौत-धोतुं वापरीने पण घोएछं अने शाळ उपरथी हमणां ताजुंज उतरेछं वस्त्र होय, ते वस्त्र ज्यारे ऋमे ऋमे वपराशमां आवे त्यारे	×	
	***	तेने सर्व बाजुएथी पुद्गलो बंधाय छे लागे छै, सर्व बाजुएथी पुद्गलोनो चय थाय छे यावत् कालान्तरे ते वस्त्र, मसोता जेवुं मेर्छ	x	
	5	अने दुर्गेधी तरीके परिणमे छे, ते देतुथी महाकर्मवाळाने उपर प्रमाणे कह्युं छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते नकी छे के, अल्पआश्रव-	Š	
	X	वाळाने अल्पकर्मवाळाने, अल्पक्रियावाळाने अने अल्पवेदनावाळाने सर्वथी पुद्गलो भेदाय छे ? सर्वथी पुद्गलो छेदाय छे ? सर्वथी	¥	
	Ľ	पुदुगलो विध्वंस पामे छे ? सर्वथी पुद्गलो समस्तपणे नाभ पामे छे ? हमेशा निरंतर पुद्गलो मेदाय छे ? सर्वथी पुद्गलो छेदाय	3	
	R.S.	हे ? विध्वंस पामे छे ? समस्तपणे नाश पामे छे ? अने तेनो आत्मा हमेशां निरंतर सरूपपणे-पूर्वना सत्रमां जे अप्रशस्त कह्य हतुं,	Š	
	×	ते अहीं प्रशस्त जाणवुं यावत्-सुखपणे, दुःखपणे नहि-वारंवार परिणमे छे. [उ०] हा गौतम ! यावत् परिणमे छे ? [प्र०] हे भग- वन् ! ते शा हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोइ जछित-जछवाछं-पेछं, पंकसहित-मेलसहित अने रजसहित वस्त्र होय, अने	×	
	z	वन ! ते शा हेतथी ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोइ जछित-जछवाछं-पेछं, पंकसहित-मेलसहित अने रजसहित वस्न होय, अने	J.	
	8		G	I

∙याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४२९॥	अ अस्मित्रावाळा माट पूर्व प्रमाण कहु छ. ॥ २२२ ॥ ४ वत्थस्स णं भंते ! पोग्गलोवचए किं पयोगसा बीससा १, गोयमा ! पओगसाबि वीससावि । जहा णं	६ शतके उदेशः ३ ।।४२९।।
	त नया. [प्रण] इ मणवन् । त शा इत्तया : [उ०] इ गातम ! जावान त्रण प्रकारना प्रयागा कह्या छ, त जमक, सनप्रयाग, वचन- प्र	X

व्याख्या- प्रवांग अने कायप्रयोग, ए त्रण प्रकारना प्रयोगवडे जीवोने कर्मनो उपचय थाय छे, माटे जीवोने कर्मने डपचय प्रयोगथी थाय छे पण स्वाभाविक रीते थतो नथी; ए प्रमाणे वधा पंचेंद्रियोने त्रण प्रकारनो प्रयोग कहेवो, प्रधिवीकायिकोने एक प्रकारनो प्रयोग कहेवो, ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिको सुधी जाणवुं. विकलेंद्रिय जीवोने वे प्रकारनो प्रयोग कहो छे, ते जेमके, वचनप्रयोग अने कायप्रयोग, ए वे प्रकारना मयोगवडे तेओने कर्मनो डपचय थाय छे माटे तेओने प्रयोग कहो छे, ते जेमके, वचनप्रयोग अने कायप्रयोग, ए वे प्रकारना मयोगवडे तेओने कर्मनो उपचय थाय छे माटे तेओने प्रयोग कहो ए प्रमाणे जे जीवने जे प्रयोग होय ते कहेवो अने ते प्रमाणे यावत् वैमानिक सुधी कहेवुं. ॥ २३३ ॥ वत्थस्स णं भंते ! पोग्गलोवचए किं सादीए सपज्जवसिए १ सादीए अपज्जवसिते २ अणादीए सपज्ज० ३ भणा॰अप० ४ ?, गोयमा ! वत्थस्स णं पोग्गलोवचए सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए अप०, नो अणा० सप०, नो अणा० अप०। जहा णं भंते ! वत्थस्स पोग्गलोवचए पुच्छा, गोयमा ! अत्थेगतियाणं जीवाणं कम्मोवचए सादीए सपज्जवसिए, अत्थे० अणादीए सपज्जवसिए, अत्थे० अणादीए अपज्जवसिए, नो चेव णं जीवाणं कम्मोवचए सादीए अप० । से केण०?, गोयमा ! ईरियावहियावंधरस कम्मोवचए सादीए अपज्जवसिए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! वचए अणादीए सपज्जवसिए, अभवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणादीए अपज्जवसिए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं बुच्चति अत्थे० जीवाणं कम्मोवचए सादीए० नो चेव णं जीवाणं कम्मोवचए प्र
--

व्याख्या- प्रज्ञासिः प्रज्ञासिः ॥४३१॥ भंते ! किं सादीए सपज्जवसिए चउभंगो ?, गोयमा ! बत्थे सादीए सपज्जवसिए, अवसेसा तिन्निवि पडिसे- हेयव्वा । जहा णं भंते ! वत्थे सादीए सपज्जवसिए, ने सादीए अपज्ज०, नो अणादीए सप०, नो अनादीए अपज्जवसिए, तहा णं जीवाणं किं सादीया सपज्जवसिया ? चउभंगो पुच्छा, गोयमा ! अत्थेगतिया सादीया अपज्जवसिया चत्तारिवि भाणियव्वा । से केणद्वेणं० ?, गोयमा ! नेरतिया तिरिक्खजोणिया मणुस्मा देवा गतिरागति पहुच सादीश सपज्जवसिया,सिद्धी(सिद्धा)गति पहुच सादीया अपज्जवसिया,भवसिद्धिया लद्धि पहुच अणादीया मपज्जवसिया, अभवसिद्धिया संसारं पहुच अणादीया अपज्जवसिया, सेतेणट्ठेणं०॥ (सूत्रं २३४) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! बस्ने जे पुर्शलोनो उपचय थयो छे, ते शुं सादि सांत छे १ सादि अनंत छे ? अनादि सांत छे के अनादि अनंत छे ? [उ०] हे गौतम ! बस्ने जे पुर्शलोनो उपचय थयो छे, ते शुं सादि सांत छे १ णा सादि अपर्थवसित-अनंत नथी, तेमज अनादि सांत नथी धने अनादि अनंत नथी. [प्र०] हे भगवन् ! जेम वस्रनो पुर्शलोपचय मादि सांत छे १ण सादि अनंत, अनादि अनंत छे ? [उ०] हे गौतम ! बस्ने जे पुर्शलोनो उपचय थयो छे, ते सादि सांत छे १ण सादि अपर्यवसित-अनंत नथी, तेमज अनादि सांत के अनादि अनंत नथी [प्र०] हे भगवन् ! जेम वस्रनो पुर्शलोपचय मादि सांत छे १ण पा धुं सादि सांत छे ? सादि अनंत नथी त्ये जावीना कर्मोपचय माटे पण पृच्छा-प्रश्न करवी अर्थात् जीनोनो कर्मोपचय पाछि सांत छे, केटलाक जीवोनो कर्मोपचय आतदि सांत छे अने केटलाक जीवोनो कर्मोपचय आतदि अनंत छे. पण जोवोनो कर्मोपचय सादि अपर्यवसित-अनंत नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ते शा हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! केटलाक जीवोनो कर्मोपचय सादि सांत छे, अवर्यवसित-अनंत नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ते शा हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! केटलाक जीवोनो कर्मोपचय सादि सांत छे, भवसिद्धिक जीवनो कर्मोपचय अनादि सांत छे, अभवसिद्धिकनो कर्मोपचय अनादि अनंत छे ते हेतुथी हे गौतम ! तेम कह्युं छे.	तः३
---	-----

व्याख्या प्रबासिः प्रबासिः प्रबासिः प्रबासिः प्रबासिः प्रवासिः प्रवासिः प्रवासिः प्रवासिः प्रवासिः प्रवासि तथी अने अनादि अनंत नथी तेम गीवो शुं सादि सांत छे? अहिं पूर्वना चारे मांगा कही तेमां प्रश्न करवो. [30] हे गौतम ! केटलाक जीवो सादि सांत छे, प प्रमाणे चारे भांगा कहेवा. [प्र0] हे भगवन् ! ते का हेतुथी ? [30] हे गौतम ! केरावेको, तिर्थंचयोनिको, मनुष्यो, अने देवो गति आगतिने अपेक्षी सादि अने सांत छे, सिद्धगतिने अपेक्षी सिद्धे सादि अनंत छे, मवसिद्धिको लब्धिने अपेक्षी अनादि सांत छे अने सांग रे अपेक्षी अनादि अनंत छे, सिद्धगतिने अपेक्षी सिद्धे सादि अनंत छे, मवसिद्धिको लब्धिने अपेक्षी अनादि सांत छे अने अभवसिद्धिको संसारने अपेक्षी अनादि अनंत छे, ते हेतुथी तेम कछु छे. ॥ २२४॥ कति णं भंते ! कम्मप्रपाडीओ पण्णत्ताओ ?, गोयमा ! अट्ठ कम्मप्रयाडीओ पण्णत्ता, तंजहा-णाणावर- णिज्ञं दरिसणावरणिज्ञं जाव अंतराइयं । नाणावरणिज्ञस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतियं कारंठ बंधठिती पण्ण- त्ता ?, गोयमा ! जह० अंतोमुहत्तं उक्को० तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिग्नि य वाससहस्माइं अवाहा, अवाह्रविया कम्मटिती कम्मनिसेओ, एवं दरिसणावरणिज्ञंपि, वेदणिज्ञं जह० दो समया उक्को० जहा नाणा- यरणिज्ञं, मोहणिज्ञं जह० अंतोमुहत्तं उक्को० सत्तरि सागरोवमकोडाकोडीओ, सत्त य वाससहस्साणि अवाधा, अवाहूणिया कम्मटिर्ट कम्मनिसेगो, आउगं जहन्नेणं अंतोमुहत्तं उक्को० तेत्तीसं सागरोवमाणि, पुल्व- कोडितिभागमब्भहियाणि, (पुल्वकोडितिभागो अवाहा, अवाहृणिया) कम्मटिती कम्मनिसेओ, नामगो- याणं जह० अट्ठ मुहुत्ता उक्को० बीसं सागरोवमकोडाकोडिओ, दोण्णि य वाससहस्साणि अवाहा, अवाह्र-	ł
--	---

म्याख्या- प्रज्ञाहिः प्रव्र्र्र्र्यात्र्र्र्र्र्र्यात्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र	ર
---	---

Acharya Shri Kailassag

घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः	र पुरिसो बंधइ नपुंसओ बंधइ० ? पुच्छा, गोयमा ! इत्थी सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, एवं तिन्निवि भाणियव्वा, नोइत्थीनोपुरिसोनोनपुंसओ न बंधइ ॥ णाणावरणिज्ञं णं भंते ! कम्मं किं संजए वंधइ असंजए०, एवं र संजयासंजए बंधइ नोसंजयनोअसंजएनोसंजयासंजए बंधति ?, गोयमा ! संजए सिय बंधति सिय नो	र के ह शतके
1183811	🥻 संजयासंजए बंधइ नोसंजयनोअसंजएनोसंजयासंजए बंधति १, गोयमा ! संजए सिय बंधति सिय नो	🐧 उद्देश:३
	🎽 बंधति, असंजए बंधइ, संजयासंजएवि बंधइ, नोसंजएनोअसंजएनोसंजयासंजए न बंधति, एवं आउगवज्जाओ	1183811
	🖌 सत्तवि, आउगे हेडिल्ला तिन्नि भयणाए, उवरिल्ले ण बंधइ ॥	×
	🗶 [प्र॰] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीय शुं स्त्री बांधे ? पुरुष बांधे ? के नपुंसक बांधे ? वा नोस्त्री–नोपुरुष नोनपुंसक एटले जे स्त्री,	Č.
	🗚 पुरुष के नपुंसक न होय एवो जीव बांधे ? [उ०] हे गौतम ! स्त्री पण बांधे, पुरुष षण बांधे, अने नपुंसक पण बांधे. पण जे नोस्ती	
	🖒 नोपुरुष-नोनपुंसक होय ते कदाच बांधे अने कदाच न बांधे; ए प्रमाणे आयुष्यने वर्जीने साते कर्मप्रकृतिओ माटे जाणवुं. [प्र०]	S.
	🕵 हे भगवन ! आयुष्यकर्म शुं स्त्री बांधे ? पुरुष बांधे ? के नपुंसक बांधे ? ए प्रमाणे पूर्ववत् प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम ! स्त्री बांधे	
ļ	🗚 अने न पण बांधे. ए प्रमाणे त्रणे माटे बीजा बे माटे पण जाणवुं अने जे नो स्त्री नोपुरुष नोनपुंसक होय ते तो आयुष्यकर्म न	e) A
	🐒 बांधे [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म शुं संयत बांधे ? असंयत बांधे ? के संयतासंयत बांधे ? वा जे नो संयतनोअसंयत-नो-	S
	🕉 संयतासंयत होय ते बांधे ? [उ०] हे गौतम ! कदाच संयत बांधे, कदाच न बांधे; असंयत बांधे अने संयतासंयत पण बांधे पण	Č.
	🧍 जे नोसंयत-नोअसंयत-नोसंयतासयत होय ते तो न बांधे. ए प्रमाणे आयुष्यने वर्जीने साते कर्मप्रकृतिओ माटे जाणवु, आयुष्य-	*
	र्भुं जे नोसंयत∽नोअसंयत−नोसंयतासयत होय ते तो न बांधे. ए प्रमाणे आयुष्यने वर्जीने साते कर्मप्रकृतिओ माटे जाणवु, आयुष्य- कर्मना संबंधमां नीचेना त्रण संयत, असंयत अने संयतासंयत माटे भजनावडे जाणवुं बांधे अने न बांधे एम जाणवुं अने उपरनो र	3

•याख्या-प्रज्ञप्तिः

ાષ્ટર્લા

.

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

	nura	www.kobalitii.org	iya Oli	ii italia33agai3uii
	Ť.	नोसंयत-नोअसंयत-नोसंयतासंयत अर्थात् सिद्ध न बांधे.	*	
-	30 & 36 A B	णाणावरणित्तं णं भंते! कम्मं किं सम्मदिदी बंधइ मिन्छदिही बंधइ सम्मामिच्छदिही बंधइ?, गोयमा ! सम्मादहा	A A	६ शतके
	1 1 21	सिय बंधइ सिय नो बंधइ,मिच्छदिट्ठी बंधइ,सम्मामिच्छदिट्ठी बंधइ,एवं आउगवज्ञाओ सत्तवि, आऊए हेट्टिछा दो भयणाए, सम्मामिच्छदिट्ठी न बंधइ ॥ णाणावरणिज्ञं किं सण्णी बंधइ असन्नी बंधइ नोसण्ण्णीनोअसण्णी	\$	उद्देशः३
1	x & X & X & X & X & X	दा भयणाए, सम्मामच्छादटा न बंधइ ॥ णाणावराणजा के संगणा बंधइ जसमा बंधइ नासण्डणाना गराण्या बंधइ?, गोयमा! सन्नी सिय बंधइ सिय नो बंधइ, असन्नी बंधइ नोसन्नीनोअसन्नी न बंधइ, एवं वेदणिजाउगव-	8	।।४ ३५ ।।
	8	जाओ छ कम्मप्पगडीओ,वेदणिज्ञं हेडिछा दो बंधति, उवरिछे भयणाए, आउगं हेडिछा दो भयणाए, उवरिछो	Y.	
	A A	न बंधइ॥णाणावरणिजं कम्मं किं भवसिद्धीए बंधइ अभवसिद्धीए बंधइ नोभवसिद्धीएनोअभवसिद्धीए बंधति?,	S S	
	, A	गोयमा ! भवसिद्धीए भयणाए,अभवसिद्धीए बंधति,नोभवसिद्धीएनोअभवसिद्धीए न बंधइ, एवं आउगवज्ञाओ सत्तवि, आउगं हेट्टिला दो भयणाए, उवरिल्लो न बंधइ॥णाणावरणिज्ञं किं चक्खुदंमणी बंधति अचक्खुदंस॰	**	
	Se C	सतीव, जाउन हाइला पा पायनाड़ उपारिला में गर्म से संस्थित के बुर्व वेदणिज्जवज्जाओं सत्तवि, वेद- ओहिदंस॰ केवलदं॰?, गोयमा ! हेडिल्ला तिन्नि भयणाए, उवरिल्ले ण बंधइ, एवं वेदणिज्जवज्जाओं सत्तवि, वेद-	Ż	
	¥	किस्त होटका तिव बंधति, कवलद्रसणी संयणाए ।	Ś	
	X	[प्र॰] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म छुं सम्यग्दष्टि बांधे ? मिथ्याद्दष्टि बांधे के सम्यग्मिथ्याद्दष्टि बांवे? [उ०] हे गौतम ! सम्यग्दष्टि कदाच बांधे अने कदाच न बांधे, मिथ्याद्दष्टि बांधे अने सम्यग्मिथ्याद्दष्टि पण बांधे. ए प्रमाणे अयुष्य सिवायनी साते	K	
	A S A	सम्यग्हाष्ट कदाच बाघ अने कदाच न बाव, निय्याहार्ट बाव अने रिपाल ज्याहार्ट विव काम एक ता कि कु विदास ता ता ता ता कर्मप्रकृतिओ माटे जाणवुं, आयुष्यमां नीचेना बे सम्यग्हर्षि अने मिथ्याद्दष्टि भजनावडे कदाच न बांघे अने कदाच बांघे अने	a the	4
			2	

च्याख्या- प्रहासिः प्रहासिः ॥४३सिः ॥४३६॥ भ्यं कांवे वाये ? के नोसंज्ञी अने नोअसंज्ञी बांवे ? [उ०] हे गौतम ! संज्ञी कदाच बांवे अने कदाच न बांधे, असंज्ञी बांधे अने नोसं- ज्ञीन बांधे ? के नोसंज्ञी अने नोअसंज्ञी बांवे ? [उ०] हे गौतम ! संज्ञी कदाच बांवे अने कदाच न बांधे, असंज्ञी बांधे अने नोसं- ज्ञीन बांधे ? के नोसंज्ञी अने नोअसंज्ञी बांवे ? [उ०] हे गौतम ! संज्ञी कदाच बांधे अने कदाच न बांधे, असंज्ञी बांधे अने नोसंज्ञी अने असंज्ञी बांधे अने उपरनो नोसंज्ञीनोअसंज्ञी भजनावडे कदाच बांधे अने कदाच न बांधे अने आयुष्यने नीचेना वे संज्ञा अने असंज्ञी बांधे अने उपरनो नोसंज्ञीनोअसंज्ञी भजनावडे कदाच बांधे अने कदाच न बांधे अने आयुष्यने नीचेना वे मजनाए बांधे अने उपरनो न बांधे. [प०] हे भगवन् ! शुं भवसिद्धिक ज्ञानावरणीय कर्म बांधे ?, अभवसिद्धिक ज्ञानारणीय कर्म बांधे ?, के नोभवसिद्धिक अने नोअभवसिद्धिक ज्ञानावरण कर्म बांधे ? [उ०] हे गौतम ! भवसिद्धिक मजनाए बांधे एटले कदाच बांधे अने कदाच न बांधे, अभवसिद्धिक ज्ञानावरण कर्म बांधे अने नोभवसिद्धिक अने नोअभवसिद्धिक अभव्य, ते भजनाए बांधे कदाच वाधे अने न पण बांधे अने उपरनो नोभवसिद्धिक अने नोअभवसिद्धिक पटले भव्य नहि तेम अभव्य, ते भजनाए संख कराच वाधे ! प्र०] हे भगवन् ! शुं चछुर्द्यतीनी, अचछुर्द्यतीनी, अवछिर्द्यनी अने केवलदर्य्यनी झानावरण कर्म बांधे ? [उ०] हे गौतम ! हेठळना त्रण चछुर्द्यती जो क दाच वाधे अने कदाच न बांधे. णाणावरणिज्ञ कम्मं किं पज्जत्तओ बंधइ अपज्जत्तओ बंधइ नोपज्जत्तएनोअपज्जत्तए वंधइ?, गोयमा! पज्जत्तए	য:₹
---	-----

व्याख्या-	कमें बांधे अने नोपयोप्त तथा नोअपयोप्त एटले सिद्ध जीव ज्ञानावरणीय कमें न बांधे, एं प्रमाणे आयुष्यने वर्जनि सात कमेप्रक्र-	ع ج	६ शतके
प्रज्ञप्तिः	ते तिओ माटे जाणवुं अने आयुष्यने नीचेना बे पर्याप्त अने अपर्याप्त भजनाए बांधे अने उपरनो नोपर्याप्त तथा नो अपर्याप्त सिद्ध		उद्देशः३
॥४३७॥	कि जाने कि जाने कि जानक कि जानक की जानक की क्षेत्र के जानक कोने थे कि जानक कोने थे कि जीवन ! को जानक को जानक		॥४३७॥

घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४३८॥	अपरित्त जीव ज्ञानावरण कर्म बांधे ? के नोपरित्त तथा नोअपरित्त जीव इ अजनाए ज्ञानावरण कर्म बांधे, अपरित्त जीव ज्ञानावरण कर्म बांधे अने न प्रमाणे आयुष्यने वर्जोंने साते कर्मप्रकृतिओ माटे जाणवुं,अने परित्त तथा अप नोपरित्त तथा नोअपरीत्त बांधतो नथी. [प्र०] हे भगवन् ! शुं आभिनिबोधिक	ज्ञानावरण कर्म बांधे ? [उ०] हे गौतम ! परित्त जीव, नोपरित्त तथा नोअपरित्त एटऌे सिद्ध जीव न बांधे, ए परित्त ए बन्ने पण आयुष्य कर्मने भजनाए बांधे छे अने कज्ञानी, श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी के केव-	र् इ.स. इ. शतके उद्देशः ३
	🕻 भजनाए ज्ञानावरण कर्म बांधे, अपरित्त जीव ज्ञानावरण कर्म बांधे अने न 🔆 प्रमाणे आयुष्यने वर्जोंने साते कर्मप्रकृतिओ माटे जाणवुं,अने परित्त तथा अप	नोपरित्त तथा नोअपरित्त एटले सिद्ध जीव न बांधे, ए परित्त ए बन्ने पण आयुष्य कर्मने भजनाए बांधे छे अने कज्ञानी, श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी के केव- ती, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी अने मनःपर्यवज्ञानी ए चार ोने बाकीनी सात कर्मप्रकृतिओ माटे जाणी लेवुं अने मा ! (सव्वेवि) आउगवज्जाओ सत्तवि बंधंति, ाय॰ अजोगी बंधइ ?, गोयमा ! हेट्टिछा तिन्नि छा बंधति, अजोगी न बंधइ ॥ णाणावरणिज्ञं ाट्टसुवि भयणाए ॥ णाणावरणिज्ञं किं आहा- रुवं वेदणिज्ञआउगवज्जाणं छण्हं, वेदणिज्ञं	🐐 उद्देशः३

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४३९॥	किं सुहुमे बंधइ बायरे बंधइ नोस्टुहुमेनोबादरे बंधइ ?, गोयमा ! सुहुमे बंधइ, बायरे भयणाए, नोसुहुमेनोबायरे ण बंधइ म नोबादरे न बंधइ, एव आउगवज्जाओ सत्तवि, आउए सुहुमे बायरे भयणाए, नोसुहुमेनोबायरे ण बंधइ म णाणाबरणिज्ञं किं चरिमे अचरिमे बं० ?, गोयमा ! अट्टवि भयणाए ॥ (सूत्रं २३६) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! शु मतिअज्ञानी. श्रुतअज्ञानी अने विभंगज्ञानी ज्ञानावरणीय कर्म बांधे ? [उ०] हे गौतम ! आयुष्यने वर्जीने साते कर्मप्रकृतिओ बांधे अने आयुष्यने भजनाए बांधे. [प्र०] हे भगवन् ! शुं मनयोगी, वचनयोगी, काययोगी अने अयोगी ज्ञानावरणीय कर्म बांधे ? [उ०] हे गौतम ! हेठळना त्रण मनयोगी, वचनयोगी अने काययोगी, ए त्रण भजनाए ज्ञाना- वरण कर्म बांधे अने अयोगी ज्ञानावरणने न बांधे. ए प्रमाणे वेदनीय सिवायनी साते कर्मप्रकृतिओ माटे जाणवुं अने वेदनीय कर्मने हेठलना त्रण बांधे अने अयोगी न बांधे. [प्र० हे भगवन् ! शुं साकार उपयोगवाळो ज्ञानावरणीय कर्म बांधे ? [उ०] हे गौतम ! आठे कर्मप्रकृतिओ भजनाए बांधे. [प्र०] हे भगवन् ! शुं आहारक के अनाहारक जीव ज्ञानावरणीय कर्म बांधे ? [उ०] हे गौतम ! आठे कर्मप्रकृतिओ भजनाए बांधे. [प्र०] हे भगवन् ! शुं आहारक के अनाहारक जीव ज्ञानावरणीय कर्म बांधे ? [उ०] हे गौतम ! आठे कर्मप्रकृतिओ भजनाए बांधे. [प्र०] हे भगवन् ! शुं आहारक के अनाहारक जीव ज्ञानावरणीय कर्मने बांधे ? [उ०] हे गौतम ! बच्चे पण भजनाए बांधे. ए प्रमाणे बेदनीय अने आयुष्य सिवायनी छ कर्मप्रकृतिओ माटे जाणवुं, अने बेदनीय कर्म, आहारक जीव वांधे तथा अनाहारक जीव भजनाए बांधे अने आयुष्य कर्मने आहारक जीव भजनाए बांधे तथा अनाटारक जीव न बांधे. [प्र०] हे भगवन् ! शुं सक्ष्य जीत, बादर जीव के नोसूक्ष्म-नोबादर जीव ज्ञानावरणा कर्मने वांधे ? [उ०] हे गौतम ! सक्ष्म जीव बांधे, बादर जीव भजनाए वांधे अने नोसूक्ष्म-नोबादर जीव न वांधे, ए प्रमाणे आयुष्यने मूकीने साते कर्मप्रकृतिओ माटे पण जागवुं अने आयुष्यकर्मरेने सुक्ष्म जीव अने बादर जीव, ए बच्चे भजनाए बांधे ले तथा नेसिक्रन्म-नोबादर	ちまちまちまちまちまちまちょう	६
	ति कनत्रक्रांतजा माट गण जागद्व जम जादुल्वकमण घट्म जाव जन बादर जाव, ए बन मजनाए बीध छ, तथा नीस्रह्म-नीबोद्र क	n n	

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥४४०॥ 🔆 गोयमा ! सब्बत्थोवा जीवा पुरिसवेदगा, इत्थिवेदगा सं १ गुणा॥ एएसिं सब्वेसिं पदाणं अप्पबहुगाइं उच्चारेयव्वाइं सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति (सत्रं २३७) ॥ छट्टसए तइओ	ाणं नपुंसगवेदगाणं अवयगाण य कयर २ अप्पा वा ४:, खिज्जगुणा, अवेदगा अणंतगुणा, नपुंसगवेदगा अणंत- जाव सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा,चरिमा अणंतगुणा। उद्देसो संमत्तो ॥ ६-३ ॥ अवेदक, ए बधा जीवोमां क्या क्या जीव, कोना कोनाथी अल्प, पुरुषवेदक जीवो छे, तेनाथी संख्येयगुण स्त्रीवेदक छे, अवेदक बहुत्वो कहेवां यावत् सौथी थोडा अचरम जीवो छे अने चरम ए प्रमाणे छे. एम कही यावत् विचरे छे. ॥ २३७ ॥	६ शतके उद्देशः३ ॥४४०॥
---	--	-----------------------------

	उद्देशक ४.	r X	
व्याख्या-	उद्दराक ठ.	8	६ शतके
प्रज्ञप्तिः 🖌	(आगळना उद्देशकमां जीवनुं निरूपण कर्युं छे. अने हवे आ चोथा उद्देशकमां पण तेज जीवने बीजे प्रकारे निरूपता आ सत्र कहे छे.)	Ķ	उद्देशः४
1188611	जीवे णं भंते ! कालाएसेणं किं सपदेसे अपदेसे ?, गोयमा ! नियमा सपदेसे । नेरतिए णं भंते ! काला-	×	1188811
E S	देसेणं किं सपदेसे अपदेसे ?, गोयमा ! सिय सपदेसे सिय अपदेसे, एवं जाव सिद्धे । जीवा णं भंते ! काला-	Å.	
×	देसेणं किं सपदेसा अपदेसा ?, गोयमा ! नियमा सपदेसा । नेरइया णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसा	8	
(C	अपदेसा ?, गोयमा ! सब्वेवि ताव होजा सपदेसा १ अहवा सपएसा य अपदेसे य २ अहवा सपदेसा य	Ł	
S S S	अपदेमा य ३, एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढविकाइया णं भंते ! किं सपदेसा अपदेसा ?, गोयमा ! सपदेसावि	J.	
X	अपदेसावि, एवं जाव वणप्फइकाइया,	x	
A Star	[प्र०] हे भगवन् ! शुं जीव कालादेशवडे –कालनी अपेक्षाए सप्रदेश छे के अप्रदेश ? [उ०] हे गौतम ! जीव नियमा चोकस	Ċ	
	सप्रदेश छे. ए प्रमाणे यावत् सिद्ध सुधीना जीव माटे जाणवुं. [प्र०] हे भगवन ! नैरयिक जीव कालादेशथी सप्रदेश छे के अप्रदेश) X	
X	छे ? [उ०] हे गौतम ! ए कदाच सप्रदेश छे अने कदाच अप्रदेश छे. [प०] हे भगवन् ! शुं जीवो कालादेशथी सप्रदेश छे के अप्रदेश	R	
Ž.	छे ? [उ०] हे गौतम ! चोकस, जीवो सप्रदेश छे.[प्र०] हे भगवन् ! शुं नैरयिक जीवो कालादेशवडे सप्रदेश छे के अप्रदेश छे?[उ०]	Č.	
Ŕ	हे गौतम ! ए नैरयिकोमां १ बधाय सप्रदेश होय, २ केटलाक सप्रदेश अने एकाद अप्रदेश अने ३ केटलाक तथा सप्रदेश केटलाक	そうそうようみ	
X		R	

अग्रदेश; ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमार मुधीना जीवो माटे जाणवुं. [प॰] हे भगवन् ! छं पृथिवीकायिक जीवो सप्रदेश छे के अप्रदेश छे ? [उ॰] हे गौतम ! तेओ सप्रदेश पण छे अने अप्रदेश पण छे, ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिक मुधीना जीवो माटे जाणवुं. सेसा जहा नेरइया तहा जाव सिद्धा ॥ आहारगाणं जीवेगेंदियवज्जो तिय भंगो, अणाहारगाणं जीवेगिंदियवज्जा छ॰भंगा एवं भाणियव्वा-सपदेसा वा १ अपएसा वा २ अहवा सपदेसे य अप्पदेसे य ३ अहवा सपदेसे य अपदेसा य ४ अहवा सपदेसा य अपदेसे य ५ अहवा सपदेसा य अपदेसा य ६, सिढेहिं तियभंगो, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया [भवसिद्धिया] जहा ओहिया, नो भवसिद्धियनोअभवसि- दिया जीवसिद्धेहिं तियभंगो, सण्णीहिं जीवादिओ तियभंगो, असण्णीहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो, नेरइय- देवमणुएहिं छ॰भंगो, नोसन्नित्रे सार्थ अन्द्रे तियभंगो, असण्णीहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो, नेरहय- हएसु आउवणण्फतीसु छ॰भंगा, पम्हछेससुकछेस्साए जीवादिओहिओ तियभंगो, अरुसीहिं जीवसिद्धेहिं तियभंगो, सज्यासंजएहिं तियभंगो, सम्मदिद्वीहिं जीवाइतियभंगो, विगर्लविएसु छ॰भंगा, मिच्छदिटीहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो, संजयासंजएहिं तियभंगो जीवादिओ, नोसंजयनोअसंजयगेसिजयजीवसिद्धेहिं तिय- भंगो, सकसाईहिं जीवादिओ तियभंगो, एगिंदिएसु अभंगतं, कोइकसाईहिं जीवएगिंदियवज्जो तियभंगो,	त्रः ४
---	--------

देवेहिं छब्भंगा, माणकसाईमायाकसाई जीवेगिदियवज्जो तियभंगो, मेरतियदैवेहिं छब्भंगा, लोभकसाईहिं जीवे- गिंदियवज्जो तियभंगो, नेरतिएसु छब्भंगा, अकसाईजीवमणुएहिं सिद्धेहिं तियभंगो, ओहियनाणे आभिणियो- हियनाणे सुयनाणे जीवादिओ तियभंगो, विगलिंदिएहिं छब्भंगा, ओहिनाणे मण० केवल्रनाणे जीवादिओ तियभंगो, ओहिए अन्नाणे मतिअण्णाणे सुयअण्णाणे एगिंदियवज्जो तियभंगो, विभंगनाणे जीवादिओ तियभंगो, सजोगी जहा ओहिओ, मणजोगी वयजोगी काययोगी जीवादिओ तियभंगो, नवरं काय- जोगी एगिंदिया तेसु अभंगकं, अजोगी जहा अलेसा, सागारोवउत्ते अणागारोवउत्ते जीवएगिंदियवज्जो तिय भंगो, सवेयगा य जहा सकसाई, इत्थिवेयगपुरिसवेयगनपुंसगवेयगेसु जीवादिओ तियभंगो, नवरं नपुंमगवेदे एगिंदिएसु अभंगयं, अवेयगा जहा अकमाई, ससरीरी जहा ओहिओ, ओरालियवेउव्वियसरीराणं जीवए- गंगीदिएसु अभंगयं, अवेयगा जहा अकमाई, ससरीरी जहा ओहिओ, ओरालियवेउव्वियसरीराणं जीवए- गंगिदिएसु अभंगयं, आहारगसरीरे जीवमणुएसु छब्भंगा, तेयगकम्मगाणं जहा ओहिया, असरीरेहिं जीवसिद्धेहिं तियभंगो, आहारगसरीरे जीवमणुएसु छब्भंगा, तेयगकम्मगाणं जहा ओहिया, असरीरेहिं जीवसिद्धेहिं तियभंगो, आहाररासरीरे जीवमणुएसु छब्भंगा, तेयगकम्मगाणं जहा ओहिया, असरीरेहिं जीवसिद्धेहिं तियभंगो, आहाररासरीरे जीवमणुएसु छब्भंगा, तेयग्रजत्ततीए आणापाणुपज्जत्तीए जीवएगिंदिय- वज्जो तियभंगो, भासमणपज्जत्तीए जहा सण्णी, आहारअपज्जत्तीए जहा अणाहारगा, सरीरअपजत्तीए इंदियअपज्जत्तीए आणापाणअपज्जत्तीए जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, नेरइयदेवमणुएहिं छब्भंगा, भासामण- अपज्जत्तीए जीवादिओ तियभंगो, णेरइयदेवमणुएहिं छब्भंगा ॥ गाहा-सपदेसा आहारगभवियसन्निलेसमा	of the the the the	8
ि अपज्रताए जावादिआ तियमगा, णरइयदवमणुराह छङ्मगा ॥ गाहा-सपदसा आहारगमावयसाघ्र⊗स्मा दिट्टी संजयकसाए। णाणे जोगुवओगे वेदे य सरीरपज्रत्ती ॥ ४१ ॥ (सूत्रं २३८) ४	(C% 4) 5%	

व्याग्व्या- प्रज्ञप्तिः ॥४४४॥	जीवो माटे त्रण भांगा जाणवा, अने अनाहारक होय, २ केटलाक अप्रदेश होय, ३ अथवा कोइ होय, ५ केटलाक सप्रदेश होय अने कोइ अप्रदेश त्रण भांगा जाणवा जेम औधिक-सामान्य जीवो सिद्धिक तथा नोअभवसिद्धिक जीव, सिद्धोमां त्र यवर्जीने त्रण भांगा जाणवा. नैरयिक, देव अने त्रण भांगा जाणवा. जेम सामान्य जीवो कह्या, वाळा, नीलल्डेश्यावाला अने कापोतलेश्यावाला श्यामां जीवादिक त्रण भांगा जाणवा, विशेष ए पश्चल्डेश्यामां अने शुक्कलेश्यामां जीवादिक त्रण मनुष्योमां छ भांगा जाणवा. सम्यग्दष्टिओमां ज एकेन्द्रिय वर्जीने त्रण भांगा जाणवा. सम्यग्	सप्रदेश होय अने कोइ अप्रदेश होय, ४ कोइ सप्रदेश होय अने केटलाक अप्रदेश इ सप्रदेश होय अने के केइ अप्रदेश होय, ४ कोइ सप्रदेश होय अने केटलाक अप्रदेश को कह्या तेम भवसिद्धिक-भव्य अने अभवसिद्धिक-अभव्य जीवो जाणवा. नोभव- त्रण भांगा जाणवा. संज्ञिओमां जीवादिक त्रण भांगा जाणवा, असंज्ञिओमां एकेन्द्रि- त्रण भांगा जाणवा. संज्ञिओमां जीवादिक त्रण भांगा जाणवा, असंज्ञिओमां एकेन्द्रि- तेम सलेक्य-लेक्यावाळा जीवो जाणवा. जेम आहारक जीव कह्यो तेम कृष्णलेक्या- तेम सलेक्य-लेक्यावाळा जीवो जाणवा. जेम आहारक जीव कह्यो तेम कृष्णलेक्या- ा जीवो जाणवा, विशेष ए के, जेने जे लेक्या होय तेने ते लेक्या कहेवी. तेजोले- ए के, प्रधिवीकायिकोमां, अष्कायिकोमां अने वनस्पतिकायिकोमां छ भांगा जाणवा, भांगा जाणवा, अल्केक्योमां जीव अने सिद्धोमां त्रण भांगा जाणवा अने अलेक्य जीवादिक त्रण भांगा जाणवा. विकलेन्द्रियोमां छ भांगा जाणवा. मिथ्याद्यष्टिओमां गिमथ्याद्यष्टिओमां छ भांगा जाणवा. संयत जीवोमां जीवादिक त्रण भांगा जाणवा.	६ शतके उद्देशः४ ॥४४ ४॥
	असंयतोमां एकेन्द्रिय वर्जीने त्रण भांगा जाणवा,	ा, संयतासंयतोमां जीवादिक त्रण भांगा जाणवा. नोसंयत नोअसंयत अने नोसंयता	

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४४५॥	Barty the strate of the So	संयतोमां-जीव सिद्धोमां त्रण भांगा जाणवा. सकपायोमां-कपायवाळाओमां जीवादिक त्रण भांगा जाणवा. अने सकपाय एकेंन्द्रियोनां अभंगक-त्रण भांगा नथी पण एक भांगो छे, क्रोध कपायिओमां जीव अने एकेन्द्रिय वर्जी त्रण भांगा जाणवा. देवोमां छ भांगा, मानकपायवाळमां, मायाकपायवाळामां जीव अने एकेन्द्रिय वर्जीने त्रण भांगा जाणवा, नैरयिक अने देवोमां छ भांगा जाणवा. लोभकपायवाळाओमां जीव अने एकेन्द्रिय वर्जीने त्रण भांगा जाणवा. नैरयिकोमां छ भांगा जाणवा. अकषायिमां जीव, मनुज अने सिद्धोमां त्रण भांगा जाणवा. ओधिक ज्ञानमां, आभिनिवोधिक-ज्ञानमां, ध्रुतज्ञानमां, जीवादिक त्रण भांगा जाणवा. विकलेन्द्रियोमां छ भांगा जाणवा. अवधिज्ञानमां, मनःपर्यवज्ञानमां अने केवल्ज्जानमां जीवादिक त्रण भांगा जाणवा. औधिक अज्ञानमां, मतिअज्ञानमां अने श्रुवअज्ञानमां एकेंन्द्रिय वर्जीने त्रण भांगा जाणवा. विभंगज्ञानमां जीवादिक त्रण भांगा जाणवा, जेम औधिक कक्षो तेम संयोगी जाणवो. मनयोगी, वचनयोगी अने काययोगिमां जीवादिक त्रण भांगा जाणवा. विदेश् ए के, एकेन्द्रिय जीवो काययोगवाला छे अने तेओमां अमंगक जाजा भांगा नथी पण एक भांगो छे. जेम अलेक्यो कब्रा तेम अयोगि- जीवो जाणवा. साकार उपयोगवाळामां अने अनाकार उपयोगवाळामां जीव तथा एकेंन्द्रिय वर्जीने त्रण भांगा जाणवा. जेम सक- पायी-कपायवाळा कह्या तेम सबेदक-वेदवाळा जीवो जाणवा स्थीदेक, पुरुषवेदक अने नपुंसकवेदकोमां जीवादिक त्रण भांगा जाणवा, विशेष ए के, नपुसक वेदया एकेंन्द्रियो माटे अभंगक जाजा भांगा नथी पण एक भांगो छे. जेम अल्वायी कपायरहित जीवो कह्या तेम अवेदक-वेदवाना जीवो जाणवा जेम औधिक-सामान्य औदारिक अने वैक्रिय ग्ररीरवाळा माटे जीव तथा एक्नेंन्द्रिय वर्जीने त्रण भांगा जाणवर. आहारक ग्ररीरी-ग्ररीरवाळा जीवो जाणवा.	este at the state of	६ शतके उद्देशः४ ॥४४५॥
-----------------------------------	--	---	----------------------	-----------------------------

६ शतके

ब्याख्या-प्रज्ञप्तिः 1188ଣା | संयत, कषाय, ज्ञान, योग, उपयोग, वेद, श्ररीर अने पर्याप्ति ए द्वारो छे. ॥ २३८ ॥ ¥ いまいま

भांगा जाणवा, जेम औधिक कह्या तेम तैजस अने कार्मण (अरीरवाळा जीवो) जाणवा. अशरीरी-जीव अने सिद्ध माटे त्रण भांगा जाणवा. आहारपर्याप्तिमां, श्वरीरपर्याप्तिमां, इंन्द्रियपर्याप्तिमां अने आनप्राणपर्याप्तिमां जीव अने एकेंन्द्रिय वर्जी त्रण भांगा जाणवा. जेम संज्ञी जीवो कह्या तेम भाषा अने मनःपर्याप्ति संबंधे जाणवुं. जेम अनाहारक जीवो कह्या तेम आहार पर्याप्ति विनाना जीवो , उद्देशः४ विषे समजवुं. शरीरनी अपर्याप्तिमां, इंद्रियनी अपर्याप्तिमां अने आणप्राणनी अपर्याप्तिमां जीव अने एकेंद्रिय वर्जी त्रण भांगा जाणवा. नैरयिक, देव अने मनुष्योमां छ भांगा जाणवा. भाषानी अपर्याप्तिमां अने मननी अपर्याप्तिमां जीवादिक त्रण भांगा 1188811 जाणवा. नैरयिक, देव अने मनुष्योमां छ भांगा जाणवा. संग्रहगाथा आ प्रमाणे छेः-सप्रदेशो, आहारक, भव्य, संज्ञी, लेक्या, दृष्टि जीवा णं भंते ! किं पचक्खाणी अपचक्खाणी पचक्खाणापचक्खाणी ?, गोयमा ! जीवा पचक्खाणीवि अपचक्खाणीवि पचक्खाणापचक्खाणीवि । सव्वजीवाणं एवं पुच्छा, गोयमा ! नेरइया अपचक्खाणी जाव चउरिंदिया, सेसा दो पडिसेहेयव्वा, पंचेंदियतिरिक्खजोणिया नो पचक्खाणी अपचक्खाणीवि पचक्खाणा-पचक्खाणीवि, मणुस्सा तिन्निवि, सेसा जहा नेरतिया ॥ जीवा णं भंते ! किं पचक्खाणं जाणंति, अपच-क्खाणं जाणंति, पंचक्खाणापचक्खाणं जाणंति ?, गोयमा ! जे पंचेंदिया ते तिन्निवि जाणंति, अवसेसा पच-क्खाणं न जाणंति ३ ॥ जीवा णं भंते ! किं पचक्खाणं कुव्वंति अपचक्खाणं कुव्वंति पचक्खाणापचक्खाणं कुत्र्वंति ?, जहा ओहिया तहा कुव्वणा ॥ जीवा णं भते ! किं पचक्खाणनिब्वत्तियाउया

प्रज्ञप्तिः 🖇 य एमेए दंडगा चडरो ॥ ४२ ॥ (सूत्रं २३९) ॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति छट्ठे सए चउत्थो उद्देसो ॥ ६-४ ॥ 🖇 उद्दे	् शतके द्देशः४ ४४७॥
--	---------------------------

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४४८॥	आयुष्यवाळा छे, त्रणे पण छे अत्रत्याख्यानथी निवर्तित आयुष्यवाळा छे अने प्रत्याख्यानाप्रत्यास्त्यानथी निवर्तित आयुष्यवाळा छे अने बाकीना अत्रत्याख्यानथी निवर्तित आयुष्यवाळा छे. संग्रहगाथा कहे छेः-प्रत्याख्यान प्रत्याख्यानने जाणे, (प्रत्याख्यानने) करे, त्रणेने (जाणे अने करे) आयुष्यनी निर्वत्ति, सप्रदेश उद्देशकमां ए चार दंडको छे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे एम कही यावत् विहरे छे. ॥ २३९ ॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीम्रत्रना छट्टा शतकमां चोथा उद्देशानो मूरुार्थ संपूर्ण थयो.	क क क क क म क क क क क क क क क क क क क क
to be and to be the solar so the solar so the	कामय भत ! तमुकाएति पंचुचइ कि पुढवा तमुकाएति पंचुचति जोऊ तनुकाएति पंचुचात ! जायना ! नो पुढवी तमुकाएति पंचुचति, आऊ तमुकाएति पंचुचति । से केणट्ठेणं० ?, गोयमा ! पुढविकाए णं अत्थे- गतिए सुभे देसं पकासेति, अत्थेगइए देसं नो पकासेइ, से तेणट्ठेणं० । तमुकाए णं भंते ! कहिं समुट्ठिए कहिं चंकित्य १ जोगपा ! चंचतीनाम २ वर्तिमा विभिग्नमयंक्षेत्रे दीवममडे वीईवर्तिता अरुणवरस्म दीवस्म	CA 50 a 50 a 50 a 50 a 50

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४४९॥	पच्छा तिरियं पवित्यर नागे २ सोहम्मीसाणसणं कुमारमाहिंदे चत्तारिवि कप्पे आवरित्ताणं उड्डंपि य णं जाव वंभलोगे कप्पे रिट्ठविमाणपत्थडं संपत्ते एत्थ णं तसुकाए णं संनिद्धिए ॥ [प्र॰] हे भगवन ! आ तमस्काय ग्रुं कहेवाय ? ग्रुं पृथिवी तमस्काय ए प्रमाणे कहेवाय ? ग्रुं पाणी तमस्काय ए प्रमाणे कहेवाय ? [उ॰] हे गौतम ! पृथिवी, 'तमस्काय' ए प्रमाणे न कहेवाय, पण पाणी, 'तमस्काथ' ए प्रमाणे कहेवाय. [प्र॰] हे भगवन ! ते बा हेतुथी ? [उ॰] हे गौतम ! कटलोक प्रथित्रीकाय एवो छम छे, जे देवने भागने प्रकाशित करे छे अने केटलोक पृथिवीकाय एवो छे, जे देवने प्रकाशित नथी करतो, ते हेतुथी पूर्वोक्त प्रमाणे कहेवाय. [प्र॰] हे भगवन ! ते बा हेतुथी ? [उ॰] हे गौतम ! केटलोक प्रथित्रीकाय एवो छम छे, जे देवने भागने प्रकाशित करे छे अने केटलोक पृथिवीकाय एवो छे, जे देवने प्रकाशित नथी करतो, ते हेतुथी पूर्वोक्त प्रमाणे कहेवाय. [प्र॰] हे भगवन ! तमस्काय क्यां सष्ट- त्थित छे क्यांथी श्ररू छे अने क्यां संनिष्ठित छे क्यां तेनो अंत छे ? [उ॰] हे गौतम ! जंबुद्वीप नामना द्वीपनी बहार तिरछे असं- रूथ द्वीप सम्रुद्रोने चर्छाध्या पछी अरुणवर बहार आवे छे, ते द्वीपनी वहारनी वेदिकाना अतथी अरुणोदय सम्रुद्रेने ४२ हजार योजन अवगाहीए त्यारे उपरितन जलांत आवे छे, ते उपरितन जलांतथी एक प्रदेशनी श्रेणीए अहीं तमस्क य सम्रुत्थित छे, ते त्यांथी सम्रुत्थित थड् १७२१ योजन उंचो जड़ त्यांथी पाछो तिरछो विस्तार पामतो विस्तार पामतो सोधर्म, ईवान, मनत्कुमार अने माहेंद्र ए चारे कल्पोने पण आच्छादीने उंचे पण ब्रक्षलोककल्पमां रिष्टविमानना पाथडा सुधी संग्राप्त पहोंच्यो छे अने त्यां तमस्काय संनिधिष्ट छे. तमुक्काए णंभंते! किसंटिए पन्नत्ते?, गोयमा! अहे मछग्रम् त्रेण्ये द्यिप उर्ष्यि पण्यत्ते, तंजहा-संखेझवित्थडे य	******	६ शतके उद्देशः५ ॥४७९॥
-----------------------------------	--	--------	-----------------------------

व्याख्या-

प्रज्ञप्तिः

1184011

8

६ शतके

उद्देशः ५

1184011

Ħ

www.kobaurun.org Achar
जे से संखेजवित्थडें से णं संखेजाईं जोयणसहस्माइं विक्खंभेणं असंखेजाईं जीयण- तत्थ णं जे से असंखिजवित्थडे से णं असंखेजाईं जोयणमहस्साईं विक्खंभेणं असं- रिक्खेवेणं पण्णत्तो । तसुक्राए णं भंते! केमहाठए प०?, गोयमा! अयं णं जंबुदीवे २ तराए जाव परिक्खेबेणं पण्णत्ते ॥ देवे णं महिड्ढीए जाव महाणुभावे इणामेव २- २ तीहिं अच्छरानिवाएहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियद्तिाणं हव्वमागच्छिज्ञा, से णं
ाए जाब देवगईए वीईवयमाणे २ जाव एकाहं वा दुयाहं वा तीयाहं वा उक्रोसेणं

असंखेजवित्थडे थ.नत्थ णं सहस्साइं परिक्खेवेणं प॰ खेजाइं जोयणसहस्साइं प सब्वदीवसमुद्दाणं सब्वब्य त्तिकद्य केवलकप्पं जंत्रदीवं देवे ताए उक्तिहाए तुरिय छम्मासे वीतीवएजा अत्थेगतियं तमुकायं वीतीवएजा, अत्थेगतियं नो तमुकाय वीतीवएजा, एमहाठए णं गोयमा ! तमुकाए पन्नते । [प्र०] हे भगवन् ! तमस्काय किंसंस्थित छे एटले तमस्कायनुं संस्थान आकार जेवुं कह्युं छे. [उ०] हे गौतम ! तमस्काय,

नीचे, मछकमूल-कोडीआना नीचेना भागना आकारवाळी कहाो छे अने उपर, कुकडाना पांजराना जेवा आकारवाळी कहाो छे. [प्र>] हे भगवन् ! तमस्काय विष्कंभवडे कटलो कह्या छे अने परिक्षेपवडे केटलो कह्यो छे? [उ०] हे गौतम ! तमस्काय बे प्रकारनो कह्या छे; एक तो संख्येय विस्तृत अने बीजो असंख्येय विस्तृत, तेमां जे ते संख्येय विस्तृत छे ते विष्कंभवडे संख्येय योजन सहस्र कह्या छे अने परिक्षेपवडे असंख्येय योजन सहस्र कह्या छे अने तेमां जे ते असंख्येय विस्तृत छे ते असंख्येय योजन सदस विष्कंभ वडे कह्यो छे अने असंख्येय योजन सहस्र परिक्षेपवडे कह्यो छे. [प्र॰] हे भगवन् ! तमस्काय केटलो मोटो कह्यो छे ? [उ०] हे

www.kobatirth.org

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४५१॥	محاجر عاد الله عاد	गौतम ! सर्वद्वीप अने समुद्रोनी सर्वाभ्यंतर आ जंद्र्दीप नामनो द्वीप यावत् परिक्षेपवडे कह्यो छे कोइ मोटी ऋदिवाळो यावत् महानुभात देव 'आ चाल्यो' एम करीने त्रण चपटी वागतां एकवीशवार ते संपूर्ण जंद्र्यापने करीने जीघ्र आवे, ते देव तेनी उल्कुष्ट अने त्वरावाळी यावत् देवगतिवडे जतो जतो यावत् एक दिवस, वे दिवस या त्रण दिवस चाले अने वधारेमां वधारे छ महीना चाछे तो कोइ एक तमस्काय सुधी पहोंचे अने कोइ एक तमस्काय सुधी न पहोंचे, हे गौतम ! एटलो मोटो तमस्काय कह्यो छे. अत्थि णं भंते ! तमुझाए गेहाति वा गेहावणाति वा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, अत्थि णं भंते ! तमुझाए औराला बला- हया संसंयंति संमुच्छंति संवासंति वा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे । अत्थि णं भंते ! तमुझाए ओराला बला- हया संसंयंति संमुच्छंति संवासंति वा ?, हंता अत्थि, तं भंते ! किं देवो पकरेति असुरो पकरेति नागो पकरेति ?, गोयमा ! देवोचि पकरेति असुरोवि पकरेति नागोवि पकरेति । अत्थि णं भंते ! तमुझाए बादरे थणियसदे वायरे विज्जुए ?, हंता अत्थि, तं भंते ! किं देवो पकरेति । अत्थि णं भंते ! तमुझाए वादरे विम्रुझाए वायरे पुढविकाए बादरे अगणिकाए ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ विग्गहगतिसमावझएणं । अत्थि णं भंते ! तमुझाए चंदिमस्तूरियगहगणणक्खत्ततारास्वा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, पल्टियस्मतो पुण अत्थि । अत्थि णं भंते ! तमुझाए चंदामाति वा सूरामाति वा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, कादृसणिया पुण सा । तमुझाए णं भंते ! केरिमए वन्नेणं पण्णत्ते?, गोयमा!काले कालावभासे गंभीरलोमहरिसजणणे भीमे उत्तासणए परमकिण्हे वन्नेणं पण्णत्ते. देवेवि णं अत्थेगतिए जे णं तप्पडमयाए पासित्ता णं खभाएजा. अहे णं अभिसमागच्छेज्ञा तओ	そみとそうそうなうないなんなん	६ शतके उद्देशः५ ॥४५१॥	
	2 7 F	पण्णत्त, देवेवि णं अत्थेगतिए जे णं तप्पढमयाए पासित्ता णं खुभाएज्ञा, अहे णं अभिसमागच्छेज्ञा तओ			

≋याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४५२॥	प्रिं यमां गाम छे के याक्त संनिवेशो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते अर्थ समर्थ नथी. [प्र०] हे भगवन ! तमस्कायमां उदार मोटा मेघ संखेद पामे छे ? संमूर्छे छे ? अने वर्षण वरसे छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, तेम छे. [प्र०] हे भगवन ! शुं तेने देव करे छे ? असुर करे छे ? के नाग करे छे ? [उ०] हे गौतम ! देव पण करे छे ? असुर पण करे छे, अने नाग पण करे छे. [प्र०] हे भगवन ! तमस्कायमां बादर स्तनित्त्राब्द छे ? अने बादर विजळी छे ? [उ०] हा, छे. [प्र०] हे भगवन ! शुं तेने देव करे छे ? असुर तमस्कायमां बादर स्तनित्राब्द छे ? अने बादर विजळी छे ? [उ०] हा, छे. [प्र०] हे भगवन ! शुं तेने देव या असुर या नाग करे छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रणे पण करे छे. [प्र०] हे भगवन ! तमस्कायमां वादर पृथिवीकाय छे ? अने बादर अग्निकाय छे ? [उ०] हे गौतम ! ते अर्थ समर्थ नथी. अने आ जे निषेध छे ते विग्रहगतिसमापन्न सिवाय समजवो अर्थात् विग्रहगति समापन्न बादर पृथिवी अने अग्नि होइ शके छे. [प्र०] हे भगवन ! तमस्कायमां चंद्र, स्वर्थ, ग्रहगण, नक्षत्र अने तारारूपो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते अर्थ समर्थ नथी, पण ते चंद्रादि, तमस्कायनी पडखे छे. [प्र०] हे भगवन ! तमस्कायमां चंट्रनी प्रभा क सर्यनी प्रभा होय छे ? [उ०] हे गौतम ! ते अर्थ समर्थ नथी, कारण के, ते प्रभा तमस्कायमां छे पण काद्र्यणिका-पोताना आत्रमाने दूषित करनारी छे. [प्र०] हे भगवन ! तमस्काय वर्णथी केवो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! वर्णवडे तमस्काय काळो, काळी कांतिवाळो,	क क क उद्देशः ५ ॥४५२॥ ॥४५२॥
	अ करनारा छ. [प्रव] इ मगवर्षः तमस्काय पणया कवा कह्या छः [उठ] इ गातमः पणवड तमस्काय काळा, काळा कातवाळा, में गंभीर, रुवाटा उभा करनार, सीम, उत्कंपनी हेतु अने परमऋष्ण कह्या छे, अने ते तमस्कायने जोइने, जोतां वारज केटलाक देव पण अ क्षोभ पामे,अने कदाच कोइ देव तमस्कायमां प्रवेश करे तो पछी श्ररीरनी त्वराथी अने मननी त्वराथी जलदी ते तमस्कायने उछंघी जाय.	

अज्ञाप्तः 🖌 वा देवारन्नेति वा देवग्रहेति वा देवफलिहेति वा देवपडिकखोभेति वा अरुणोदएत्ति वा समुद्दे ॥ तमुकाए णं भंते ! 🕺 उग	शतके देशः५ ४५३॥
---	-----------------------

ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४५४॥	* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	कति णं भंते ! कण्हराईओ पण्णत्ताओ?, गोयमा ! अट्ट कण्हराईओ पण्णत्ताओ कहि णं भंते ! एयाओ अट्ट कण्हराईओ पण्णत्ताओ ?, गोयमा ! उपि सणंकुमारमाहिंदाणं कप्पाणं हिट्टं बंभलोए कप्पे रिट्टे विमाणे पत्थडे, एत्थ णं अक्खाडगसमचउरंससंठाणसंठियाओ अट्ट कण्हरातीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-पुरच्छिमेणं दो पचत्थिमेणं दो दाहिणेणं दो उत्तरेणं दो, पुरच्छिमब्भंतरा कण्हराई दाहिणं बाहिरं कण्हरातिं पुट्टा, दा- हिणब्भंतरा कण्हराती पचत्थिमवाहिरं कण्हराइं पुट्टा, पचत्थिमब्भंतरा कण्हराई दाहिणं बाहिरं कण्हरातिं पुट्टा, दा- हिणब्भंतरा कण्हराती पचत्थिमवाहिरं कण्हराईं पुट्टा, पचत्थिमब्भंतरा कण्हराई उत्तरवाहिरं कण्हरातिं पुट्टा, उत्तरमब्भंतरा कण्हराती पुरच्छिमवाहिरं कण्हरातिं पुट्टा, दो पुरच्छिमपचत्थिमाओ बाहिराओ कण्हरा- तीओ छलंसाओ, दो उत्तरदाहिणवाहिराओ कण्हरातिं पुट्टा, दो पुरच्छिमपचत्थिमाओ बाहिराओ कण्हरा- तीओ छलंसाओ, दो उत्तरदाहिणवाहिराओ कण्हरातीओ तंसाओ, दो पुरच्छिमपचत्थिमाओ अर्बिभतराओ कण्हरातीओ चउरंसाओ, दो उत्तरदाहिणाओ अर्बिभतराओ कण्हरातीओ नण्हरातीओ चउरंसाओ, 'पुव्वावरा छलंसा तंसा पुण दाहिंणुत्तरा वज्झा । अब्भंतर चडरंसा सब्वावि य कण्हरातीओ ॥ १४॥ '	cherter and the and the	६ शतके उद्देशः ५ ॥४५४॥
	x x x x x x x x x	[प्र॰] हे भगवन् ! ऋष्णराजिओ केटली कही छे ? [उ॰] हे गौतम ! आठ ऋष्णराजिओ कहेली छे. [प्र॰] हे भगवन् ! ए आठ ऋष्णराजिओ क्यां आवेली कही छे ? [उ॰] हे गौतम ! उपर सनत्कुमार माहेन्द्रकल्पमां अने नीचे ब्रह्मलोककल्पमां (अ)रिष्ट विमानना पाथडामां छे अर्थात् ए ठेकाणे अखाडानी पेठे समचतुरस्न-चोखंडे संस्थाने संस्थित एवी आठ ऋष्णराजिओ कहेली छे,	x & ex & ex & ex & ex	

 भ्याख्या- प्रबंशि छे, पश्चिमम्यंतर कृष्णराजि उत्तरवात कृष्णराजिने स्पर्धेली छे अने उत्तराभ्यंतर कृष्णराजि प्रविद्या कुष्णराजिने स्पर्धेली छे, पूर्वनी अने पश्चिमनी वे बाद्य कृष्णराजिओ पढंवा छ ख्णी छे, उत्तरनी अने दक्षिणनी वे वात्य कृष्णराजिमें स्पर्धेली छे, पूर्वनी अने पश्चिमनी वे वाद्य कृष्णराजिओ पढंवा छ ख्णी छे, उत्तरनी अने दक्षिणनी वे वात्य कृष्णराजि छ ख्णी छे, अने पृर्वनी अने पश्चिमनी वे अभ्यंतर कृष्णराजिओ चउरंस-चोरस चोखंडी छे अने उत्तरनी अने दक्षिणनी वे अभ्यंतर कृष्णराजि छ ख्णी छे, उद्देशः पृर्वनी अने पश्चिमनी वे अभ्यंतर कृष्णराजिओना आकारोने लगती आ गाथा कहे छे:—पूर्वनी अने पश्चिमनी कृष्णराजि छ ख्णी छे, कळी, पृर्वनी अने उत्तरनी बात्य कृष्णराजि त्रिख्णी छे, अने वीजी वधी पण अभ्यंतर कृष्णराजि चोरस छे. कण्हराईओ णं भंते ! केवतियं आयामेणं केवतियं विक्यंभेणं केवतियं परिकखेवेणं पण्णत्ता ?, गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयामेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्यंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिकखेवेणं पण्णत्ताओ । कण्हरातीओ णं भंते ! केमहालियाओ पण्णत्ता ?, गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दी २ जाव अद्धमासं वीतीवएज्जा अत्थेगतियं कण्हराती वीतीवएज्जा अत्थेगइयं कण्हरातीं णो वीतीवएज्जा, एमहालियाओ णं गोयमा ! कण्हरातीओ पण्णत्ताओ । अत्थि णं भंते ! कण्हरातीख गायाति चा गेहाति वा गेहावणाति वा ?, नो तिणट्ठे सत्मट्ठे । अत्थि णं भंते ! कण्हरातीखि गामाति वा० ?, णो तिणट्ठे समट्ठे । अत्थि णं भंते ! कण्डर औराला बलाइया संसुच्छंति २ ?, हंता आत्थि, [प्र॰] हे भगवच ! कृष्णराजिओनो आयामत्र असंख्ये योजन सहस्र छे, विष्कंभतं देवटली कही छे अने परिक्षेपत्र केटली कही हे ? 	:લ્
--	-----

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४५६॥	* 56. 74. 56. 76. 76. 76. 76. 76. 76. 76. 76. 76. 7	असंख्येय योजन सहस्र छे, [प्र०] हे भगवन ! कृष्णराजिओ केटली मोटी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! एक विषळ जेटला वखतमां पण कोई देव जंबूद्वीपने एकवीश वार फरी आवे अने एवीज श्रीघ्रतम गतिवडे जो लागलागट अडधो मास चाल्यामां आवे तोपण (ए देवथी) कोइ ऋष्णराजि सुधी पहोंचाय अने कोइ कृष्णराजि सुधी न पहोंचाय अर्थात् हे गौतम ! कृष्णराजि एटली कही छे. [प्र०] हे भगवन् ! ऋष्णराजिओमां शहो अने शहापणो छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी अर्थात् रहो विगेरे नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ऋष्णराजिओमां शहो अने शहापणो छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी अर्थात् रही विगेरे नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ऋष्णराजिओमां गामो वगेरे छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी अर्थात् नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ऋष्णराजिओमां मोटा मेघो संखे हे छे, संमूछे छे अने वरसाद वरसे छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, छे अर्थात् ए प्रमाणे प्रश्नमां कह्या प्रमाणे थाय छे. तं भंते ! किं देवो प० ३ ?, गो० देवो पकरेति, नो सुरो नो नागो य । अत्थि णं भंते ! कण्ह- राईसु वादरे थणियसदे जहा ओराला तहा । अत्थि णं भंते ! कण्हराईए बादरे आउकाए बादरे अगणिकाए बायरे वणष्फइकाए ?, णो तिणहे समहे, णण्णत्थ विग्गहमतिसमावन्नएणं । अत्थि णं० चंदिमस्तूरिय ४ प० ?, णो तिण० । अत्थि णं कण्ह० चंदाभाति चा २ ?, णो तिणहे समहे । कण्हरातीओ णं भंते ! केरिसयाओ वन्नेणं पन्नत्ताओ ?, गोयमा ! कालाओ जाव खिप्पामेव धीतीवएजा । कण्हरातीओ णं भंते ! कति नामधेजा पण्णत्ता ?, गोयमा ! आट्ठ नामधेज्ञा पण्णत्ता, तंजहा-कण्हरातित्ति चा मेहरातीति वा मघावती (घे)ति वा माघवतीति वा बायफलिहेति वा वायपलिक्खोभेइ वा देवफलिहेइ बा देवपलिक्खोभेति वा । कण्हरा-	a the set of the set of the set of the set	६ शतके उद्देशः ५ ॥४५६॥
	K	(य)ति वा मायवताति वा वायफालहाते वा वायपालकखाभइ वा द्वफालहइ वा द्वपालकखामति वा किण्हरा-	Ł	

न्याख्या- प्रज्ञाप्तिः प्राणा भ्रृया जीवा सत्ता उववन्नपुष्ठवा ? हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो, नो चेव णं वादरआउकाइय- पाणा भ्र्या जीवा सत्ता उववन्नपुष्ठवा ? हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो, नो चेव णं वादरआउकाइय- त्ताए वा वादरअगणिकाइयत्ताए वा वादरवणप्फतिकाइयत्ताए वा (सूत्रं २४१) [प्र॰] हे भगवन ! ग्रुं तेने देव, असुर के नाग करे छे? [उ॰] हे गौतम ! देव करे छे, असुर के नाग नथी करतो. [प्र॰] हे भगवन ! ऊष्णराजिओमां वादर स्तनित झब्दो छे? [उ॰] हे गौतम ! ते अर्थ समर्थ नथी अने आ निपेश, विग्रहगति अोमां वादर अप्तात्रा जीवो माटे जाणवो. [प्र॰] हे गौतम ! ते अर्थ समर्थ नथी अने आ निपेश, विग्रहगति अोमां वादर अप्ताय, वादर आग्निकाय अने वादरवनस्पतिकाय छे ? [उ॰] हे गौतम ! ते अर्थ समर्थ नथी अने आ निपेश, विग्रहगति समापन्न जीव सिवाय वीजा जीवो माटे जाणवो. [प्र॰] हे भगवन् ! ऊष्णराजिओमां चंद्र, सर्थ, ग्रहगण, नक्षत्र अने ताराओ छे ? [उ॰] हे गौतम ! ते अर्थ समर्थ नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ऊष्णराजिओमां चंद्रनी कांति छे ? स्वर्थनी कांति छे? [उ॰] हे गौतम ! ते अर्थ समर्थ नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ऊष्णराजिओ वर्णवंड केवी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! काळी यावत्त तमस्कायनी पेटे भयंकर होवाथी देव पण एने जलदी न डर्छची जाय. [प्र०] हे भगवन् ! ऊष्णराजि, २ मेघराजि, ३ मघा, ४ मध्वरती, ५ वातपरिघा, ६ वातपरिधोमा, ७ देवपरिघा अने ८ देवपरिक्षोमा. [प्र०] हे भगवन् ! छुष्णराजि पृथ्वीनो परिणाम छे ! जलनो परिणाम नथी. तथा जीवनो परिणाम छे ? के पुद्गलनो परिणाम छे ? [उ०] हे गौतम ! कुष्णराजि पृथ्वीनो परिणाम छे पण जलनो परिणाम नथी. तथा जीवनो परिणाम	وعد يد يد يد يد يو ير يد ير يد ير يد ير يد ي	६ शतके उद्देशः५ ॥४५७॥	
--	--	-----------------------------	--

ध्याख्या∙ प्रज्ञप्तिः ॥४५८॥	वनस्पतिकायिकपण उत्पन्न थया नथा. ॥ २४१ ॥ एतेसि णं अट्टण्हं कण्हराईणं अट्टसु उवासंतरेसु अट्ट लोगंतियविमाणा पण्णत्ता, तंजहा-१अची२अचिमाली श्वइरोयणे४पभकरे५चंदाभे६सूराभे७सुकाभे८सुपतिट्टाभे९मज्झे रिट्टाभे। कहि णं भते!अचीविमाणे प०?,गोयमा! उत्तरपुरच्छिमेणं, कहि णं भंते ! अचिमालीविमाणे प० ?, गोयमा ! पुरच्छिमेणं, एवं परिवाडीए नेयव्वं जाव जत्तरपुरच्छिमेणं, कहि णं भंते ! अचिमालीविमाणे प० ?, गोयमा ! पुरच्छिमेणं, एवं परिवाडीए नेयव्वं जाव कहि णं भंते ! रिट्ठे विमाणे पण्णत्ते ?, गोयमा ! बहुमज्झदेसभागे । एएमु णं अट्टसु लोगंतियविमाणेसु अट्ट- विहा लोगंतियदेवा परिवसंति, तंजहा-सारस्सयमाइचा वण्ही वरुणा य गदतोया य । तुसिया अव्ववावाहा अग्निचा चेव रिट्ठा य ॥४४॥ कहि णं भंते ! सारस्सया देवा परिवसंति ?, गोयमा ! अचिविमाणे परिवसंति, कहि णं भंते ! आदिचा देवा परिवसंति ?, गोयमा ! अचिमालिविमाणे, एवं नेयव्वं जहाणुपुब्वीए जाव कहि णं भंते ! रिट्ठा देवा परिवसंति ?, गोयमा ! अचिमालिविमाणे, एवं नेयव्वं जहाणुपुब्वीए जाव कहि णं भंते ! रिट्ठा देवा परिवसंति ?, गोयमा ! रिट्ठविमाणे ॥ ए आठ कृष्णराजिओना आठ अवकाशान्तरमां आठ लोकांतिक विमानो (आवेलां) कह्यां छे. ते जेमके; १ अर्ची, २ अर्चि- र्माली ३ बैगेचन, ४ प्रभंकर, ५ चन्द्राम, ६ स्वर्याम, ७ ग्रुकाभ, आठस्रं सुप्रतिष्ठाभ अने वचमां रिष्टाभ विमान छे. [प०] हे	६ शतके उद्देशः ५ ॥४५८॥
	भगवन् ! अचीं विमान क्यां कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! उत्तरनी अने पूर्वनी वचे अर्ची विमान कह्युं छे. [प०] हे भगवन !	

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४५९॥	A A	अर्चिमाली विमान क्यां कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वमां अर्चिमाली विमान कह्युं छे ? ए प्रमाणे कमथी वधां विमानो माटे जाणवुं यावत्~ [प०] हे भगवन् ! रिष्टविमान क्यां कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! बहुमध्यभागमां रिष्टविमान कह्युं छे, ए आठे लोकांतिक विमानोमां आठ जातना लोकांतिक देवो रहे छे, ते जेमके, १ सारस्वत, २ आदित्य, ३ वहि, ४ वरुण, ५ गर्दतीय, ७ तुषित, ७ अध्याबाध, अने ८ आग्नेय तथा वचमां रिष्ट देव छे. [प०] हे भगवन् ! सारस्वत देवो क्यां रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! मत्रस्वत देवो अर्ची विमानमां रहे छे. [प०] हे भगवन् ! आदित्य देवो क्यां रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! आदत्य देवो अर्चिमालि विमानमां रहे छे. ए प्रमाणे यथानुपूर्वीए यावत् रिष्टविमान सुधी जाणवुं. [प०] हे भगवन् ! रिष्ट देवो क्यां रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! रिष्ट देवो रिष्ट विमानमां रहे छे. [उ०] हे गौतम ! रिष्ट देवो रिष्ट विमानमां रहे छे. (उ०] हे गौतम ! रिष्ट देवो रिष्ट विमानमां रहे छे. (उ०] हे गौतम ! रिष्ट देवो रिष्ट विमानमां रहे छे. साररस्तयमाइचाणं भंते ! देवाणं कति देवा कतिदेवसया पण्णत्ता?,गोयमा! सत्त देवा सत्त देवमया परिवारो पण्णत्तो, वण्हीवरुणाणं देवाणं चउद्दस देवा चउद्दस देवसहस्सा परिवारो पण्णत्तो, गइनोयतुस्तियाणं देवाणं सत्त देवा सत्त देवसहस्सा पण्णत्ता,अवसेमाणं नव देवा नव देवसया पण्णत्ता, पढमज्जुगलम्हि सत्त उत्तयाणि वीर्यमि चोदससहस्सा। तहए सत्तसहस्सा नव चेव सथाणि सेसेखु॥४५॥लोगंतिगविमाणा णं भंते! किंपतिट्रिया पण्णत्ता?, गोयमा ! वाउपइट्टिया तदुभयपतिट्रिया पण्णत्ता, एवं नेयव्वं ॥ 'विमाणाणं पतिट्टाणं वाइल्ल्डचत्तमेव संटाणं।' बंभलोयवत्तव्वया नेयव्वा (जहा जीवाभिगमे देवुदेसए) जाव हंता गोयपा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो । नो चेव णं देवित्ताए । लोगंतियविमाणेसु णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?, गोयमा ! अट्ठ	いちまちまかやややちまちょう	६ शतके उद्देश:५ ॥४५९॥
-----------------------------------	-----	---	----------------	-----------------------------

घ्याख्या- प्रज्ञाप्तिः ॥४६०॥	सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता । लोगंतियविमाणेहिंतो णं भंते ! केवतियं अवाहाए लोगंते पण्णत्ते ?, गोयमा ! असंखेजाइं जोयणसहस्साइं अवाहाए लोगंते पण्णत्ते । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ६-५ ॥ (सूत्रं २४२) ॥ [प्र॰] हे भगवन् ! सारखत अने आदित्य, ए बे देवोनो केटला देवो अने केटला देवना सेंकडाओ परिवार कह्यो छे ? [उ॰] हे गौतम ! सात देवो अने देवना सात सेंकडाओ एटले सातसो देवो, सारखत अने आदित्य देवोनो परिवार छे, बहिन अने वरुण	ant wat wat wa	६ शतके उद्देशः ५ ॥४६०॥
Stor of the star of the star of the start of	प बे देवोनो चौद देव अने चौदहजार देव परिवार कह्यो छे, गर्दतीय अने तुषित ए बे देवोनो सात देव अने सात हजार देव परिवार कह्यो छे, अने बाकीना देवोनो नव देव अने नवसो देव परिवार कह्यो छे. परिवारनी (संख्याने सूचवनारी गाथा कहे छेः) प्रथम युगलमां सातसोनो परिवार छे. बीजामां चौदहजारनो परिवार छे. त्रीजामां सातहजारनो परिवार छे अने वाकीनामां नवसोनो परिवार छे. [प0] हे भगवन! लोकांतिक विमानो क्यां प्रतिष्ठित छे एटल्ने लोकांतिक विमानो कोने आधारे छे? [उ0] हे गौतम ! लोकांतिक विमानो वायुप्रतिष्ठित छे, ए प्रमाणे विमानचुं प्रतिष्ठान, विमानोचुं बाहुल्य, विमानोनी उंचाइ अने विमानोचुं संस्थान जेम 'जीवाभिगम' खत्रमां देव उद्देशकर्मा ब्रह्मलोकनी वक्तव्यता कही छे तेम अहिं जाणचुं यावत हा, गौतम ! अहिं अनंतवार पूर्वे जीवो उत्पन्न थया छे, पण लोकांतिक विमानोमां देवरणे अनंतवार नथी उत्पन्न थया. [प0] हे भगवन ! लोकांतिक विमानोमां केटला काळनी स्थिति कही छे?[उ0] हे गौतम ! लोकांतिक विमानोमां आठ सागरोपमनी स्थिति कही छे. [प0] हे भगवन ! लोकांतिक विमानोथी केटले अंतरे लोकांत कह्यो छे? [उ0] हे गौतम ! असंख्य हजार योजनने अंतरे लोकांतिक विमानोथी लोकांत कह्यो छे. हे भगवन ! ते ए प्रमाणे छे, ते ए प्रमाणे छे. एम कही यावत् विहरे छे. ॥ २४२ ॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवती स्रत्ना छटा शतकमां पांचमा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.	the attended of the solution	

	उद्देशक ६.	के क्रि. ६ शतके
व्याख्या-	र् पंचम उद्देशकमां विमान वगेरेने लगती हकीकत कही छे. हवे आ छट्टा उद्देशकमां पण एज आतनी हकीकत कहेवानी छे.	🖌 उद्देशः६
সন্নমি:		1186511
୪૬१	कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?, गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-रयणप्पभा जाव	S.
	तमतमा, रयणप्पभादीणं आवासा भाणियव्वा(जाव)अहेसत्तमाए, एवं जे जत्तिया आवासा ते भाणियव्वा जाव	×
	क्रि कति णं भंते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ?, गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता, तंजहा-विजए जाव	Ž
	🥻 सब्बद्घसिद्धे ॥ (सूत्रं २४३) ॥	Ç
	🗣 [प्र॰] हे भगवन् ! पृथ्वीओ केटली कही छे ? [उ॰] हे गौतम ! सात पृथ्वीओ कही छे, ते जेमके, रत्नप्रभा यावत् तमत-	×
	🌴 माप्रभा, रत्नप्रभा वगेरे पृथ्वीथी शरु करी यावत् अधःसप्तमी पृथ्वी सुधीना जे पृथ्वीना जेटला आवासो होय यावत् तेटला कहेवा	S.
	🖞 यावत्− [प्र॰] हे भगवन् ! अनुत्तरविमानो केटलां कढ्यां छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच अनुत्तर विमानो कढ्यां छे, ते जैमके,	S.
	🏄 विजय यावत् सर्वार्थसिद्ध. ॥ २४३ ॥	·
	की जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्धाएणं समोहए समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए	S
	🖗 तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अन्नयरंसि निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते !	K
	🖌 तत्थगते चेव आहारेज वा परिणामेज वा सरीरं वा बंधेजा?, गोयमा! अत्थेगतिए तत्थगए चेव	5
		S

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४६२॥	[प्र०] हे भगवन् ! जे जीव मारणांतिक सम्रुद्धातथी समवहत थयो अने समवहत थइ आ रत्नप्रभा पृथ्वीना त्रीग्नलाख निरया- वासमांना कोइपण एक निरयावासमां नैरयिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते जीव हे भगवन् ! त्यां जइने जे आहार करे ? ते आहारने परिणमावे अने शरीरने बांधे ? [उ०] हे गौतम ! केटलाक जीव त्यां जइनेज आहार करे, परिणमावे अने शरीरने वांधे अने केटलाक जीव त्यांथी पाछा वळे छे, पाछा वळीने अहिं आवे छे अने अहिं आवी फरीवार मारणांतिक सम्रुद्धातवडे समवहत थाय छे, समवहत थइ आ रत्नप्रभा पृथ्वीना त्रीशलाख निरयावासमाना कोइपण एक निरयावासमां नैरयिकपणे उत्पन्न थाय छे अने त्यारपछी आहार करे छे, परिणमावे छे अने शरीरने बांधे छे, ए प्रमाणे यावत् अधःसप्तमी पृथ्वी सुधी जाणवुं. जीवे णं भंते! मारणंतियसमुज्घाएणं समोहए २ जे भविए चउसट्ठीए अखरकुमारावाससयसहस्सेख अन्नयरंसि अखरकुमारावासंसि अखुरकुमारत्ताए उववज्जित्तए जहा नेरइया तहा भाणियव्वा जाव थणियकुमारा।जीवे णं भंते! मारणंतियसमुज्घाएणं समोहए २जे भविएअसंखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेख अण्णयरंसि पुढविकाइया-	५ ६ शतके उद्देशः६ ॥४६२॥ ॥४६२॥
	नारणतियसंखुण्यायणं समाहेयुः रणं भावयुजसंख्यातु युदावसाइयापासंसयसंहरसंखु जण्णपरासं युदावसाइयाः वासंसि पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! मंदरस्स पब्वयस्स पुरच्छिमेणं केवतियं गच्छेज्ञा केवतियं पाउ-	S.

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४६३॥	वा वंधेजा ?, गोयमा! अत्थेगतिए त पडिनियत्ततिर्त्ता इह हव्वमागच्छइ मेणं अंगुलस्स असंखेजभागमेत्तं वा अंगुलं जाव जोयणकोडिं वा जोयणव एगपदेसियं सेढिं मोत्तूण असंखेजेख काइयत्ताए उववज्जेत्ता तओ पच्छा रस्स पव्वयस्स आलावओ भणिओ एगिंदियाणं सव्वेसिं एक्केक्स्स छ अ [प्र॰] हे भगवन् ! मारणांतिक सम्रद असुरकुमारावासमां उत्पन्न थवाने योग्य छे बांघे ? [उ॰] जेम नेरयिको संबंधे कह्युं	र्घातथी समवहत थयेलो जे जीव असुरकुमारोना चोसठलाख आवासोमांना कोइपण एक डे ते जीव हे भगवन् ! त्यां जइनेज आहार करे ? ते आहारने परिणमावे ? अने झरीरने तेम असुरकुमारो माटे यावत् स्तनितकुमारो सुधी कहेवुं. [प्र०] हे भगवन् ! मारणांतिक ख्येय लाख पृथिवीकायना आवासमांना अन्यतर पृथिवीकायना आवासमां पृथिवीकायिक-	
	🗶 समुद्धातवड समवहत थइन ज जाव असर	ख्येय लाख पृथिवीकायना आवासमांना अन्यतर पृथिवीकायना आवासमां पृथिवीकायिक-	

ब्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४६४॥	सुधी जाय अने लोकांतने प्राप्त करे. [प्र॰] हे भगवन् ! ते त्यां जइनेज आद्दार करे ? परिणमावे ? अने शरीरने बांधे ? [उ॰] हे गौतम ! केटलाक त्यां जइनेज आहार करे, परिणमावे अने शरीरने बांधे-तैयार करे, अने केटलाक त्यांथी पाछा वळे छे अने पाछा वळी अहिं शीघ्र आवे छे अने फरीवार मारणांतिक सम्रुद्धातथी समवहत थाय छे, समवहत थइ मंदर पर्वतनी पूर्वे अंग्रलनो असंख्य भागमात्र, संख्येय भागमात्र, वालाग्र, वालाग्रएथक्त्व (वेथी न वालाग्र) ए प्रमाणे लिक्षा, यूका, यव, अंग्रल यावत् क्रोड- योजन, कोडाकोडी योजन, संख्येयहजार योजन अने असंख्येयहजार योजने अथवा लोकांतमां एक प्रदेशिकश्रेणिने मूकीने असं- ख्येयलाख पृथिवीकायिकना आवासमांना कोइ पृथिवीकायना आवासमां पृथिवीकायपणे उत्पन्न थाय अने पछी आहार करे, परिण- मावे अने शरीरने बांधे. जेम मंदर पर्वतनी पूर्व दिज्ञा परत्वे कह्युं आलापक कह्यो तेम ए प्रमाणे दक्षिणे, पश्चिमे, उत्तरे, ऊर्ध्व अने	€ शतके उद्देशः६ ॥४६४॥
	सुधी जाय अने लोकांतने प्राप्त करे. [प्र॰] हे भगवन् ! ते त्यां जइनेज आधार करे ? परिणमावे ? अने शरीरने बांघे ? [उ॰] हे गौतम ! केटलाक त्यां जइनेज आहार करे, परिणमावे अने शरीरने बांघे-तैयार करे, अने केटलाक त्यांथी पाछा वळे छे अने पाछा वळी अहिं शीघ आवे छे अने फरीवार मारणांतिक सम्रुद्धातथी समवहत थाय छे, समवहत थइ मंदर पर्वतनी पूर्वे अंग्रलनो असंख्य भागमात्र, संख्येय भागमात्र, वालाग्र, वालाग्र, थक्त्व (वेथी न वालाग्र) ए प्रमाणे लिक्षा, यूका, यव, अंगुल यावत् क्रोड- योजन, कोडाकोडी योगन, संख्येयहजार योजन अने असंख्येयहजार योजने अथवा लोकांतमां एक प्रदेशिकश्रेणिने मूकीने असं- ख्येयलाख पृथिवीकायिकना आवासमांना कोइ पृथिवीकायना आवासमां पृथिवीकायपणे उत्पन्न थाय अने पछी आहार करे, परिण- मावे अने शरीरने बांधे. जेम मंदर पर्वतनी पूर्व दिशा परत्वे कछुं आलापक कह्यो तेम ए प्रमाणे दक्षिणे, पश्चिमे, उत्तरे, ऊर्श्व अने अधोदिशा माटे पण जाणवुं जेम ध्थिवीकायिको माटे कछुं तेम सर्व एकेंद्रियो माटे एक एकना छ आलापक कहेवा. जीवेणं भंते ! मारणंतियससुग्घाएणं समोहए९त्ता जे भविए असंखेज्जेसु वेंदियावाससयसहस्सेसु अण्ण- यरंसि बेंदियावासंसि बेइंदियत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! तस्थगए चेव जहा नेरइया, एवं जाव अणुत्तरोववाइया । जीवे णं भंते ! मारणंतियससुग्धाएणं समोहए २ जे भविए एवं पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महाविमाणेसु अन्नयरंसि अणुत्तरविमाणंसि अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! तत्थगए चेव जाव आहारेज्ज वा परिणामेज्ज वा सरीरं वा बंधेज्ज १० । सेवं भंते ! सेवं भंते ! संते ! तत्थगए चेव जाव आहारेज्ज वा परिणामेज्ज वा सरीरं वा बंधेज्ज १० । सेवं भंते ! सेवं भंते !	***********

च्याच्च्या- प्रज्ञप्तिः ॥४६५॥	- 454 - 45 - 45 - 45 - 45 - 45 - 45 - 4	[प्र॰] हे भगवन् ! मारणांतिक समुद्धातथी समवहत थइ जे जीव असंख्येयलाख बेइंद्रियोना आवासमांना कोइ एक बेइंद्रि- यावासमां बेइंद्रियपणे उत्पन्न थवाने योग्य छ ते जीव, हे भगवन् ! त्यां जइनेज आहार करे ? तेने परिणमावे ? अने शरीरने तैयार करे ? [उ॰] हे गौतम ! जेम नैरयिको कह्या तेम वेइंद्रियथी मांडी अनुत्तरोपपातिक विमान सुधीना सर्व जीवो कहेवा. [प्र॰] हे भगवन् ! मारणांतिक सम्रुद्धातथी समवहत थइ जे जीव मोटामां मोटा महाविमानरूप पांच अनुत्तरविभागोमांना कोइ एक अनु- त्तर विमानमां अनुत्तरोपपातिक देवपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे, ते जीव हे भगवन् ! त्यां जइनेज आहार करे ? परिणमावे शरीरने तैयार करे ? [उ॰] हे गौतम ! तेज कहेवुं यावत् आहार करे, परिणमावे अने शरीरने तैयार करे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे. ॥ २४४ ॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीम्हत्रना छट्टा शतकमां छट्टा उद्तेजानो मूल्यर्थ संपूर्ण थयो.	あってきましたよう	६ ञनके ऽद्देशः७ ।४६५॥
	X	उद्देशक ७.	z	
	A C	छट्टा उद्देशकमां जीवनी वक्तव्यता कही छे, सातमा उद्देशकमां तो एक प्रकारना जीवनी योनिने लगती वक्तव्यता कहेवानी छे.	S.	
	x x x x x x x y	अह णं भंते ! सालीणं वीहीणं गोधूमाणं जवाणं जवजवाणं एएसि णं धन्नाणं कोट्टाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं उल्लित्ताणं लित्ताणं पिहियाणं मुद्दियाणं लंछियाणं केवतियं कालं जोणी संचिट्टइ?, गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं तिन्नि संवच्छराई, तेण परं जोणी पमिलायह, तेण परं जोणी प- विद्धंसह, तेण परं बीए अबीए भवति, तेण परं जोणीवोच्छेदे पन्नत्ते समणाउसो !। अह भंते ! कलायमसूर-		

व्याख्या-	म्लान थाय छे, प्रविध्वंस पामे छे, पछी ते बीज अबीज थाय छे अने त्यारबाद हे श्रमणायुष्मन् ! ते योनिनो व्युच्छेद थयो कहे-	*******	६ शतके
प्रज्ञप्तिः	बाय छे. [प्र०] हे भगवन् ! कलाय, मस्रर, तल, मग, अडद, बाल, कळथी, एक जातना चोळा, तुवेर अने गोळ चणा एओ वधां		उद्देशः७
॥४६६॥	धान्यो पूर्वोक्त विशेषणवाळां होय तो ते धान्योनी योनि केटला काळ सुधी कायम रहे ? [उ०] हे गौतम ! जेम शालीओ माटे		॥४६६॥
the set of the set of the	बाय छे. [प्र॰] हे भगवन् ! कलाय, मसर, तल, मग, अडद, बाल, कळथी, एक जातना चोंडा, तुवेर अने गोळ चणा एओ वधां धान्यो पूर्वोक्त विशेषणवाळां होय तो ते धान्योनी योनि केटला काळ सुधी कायम रहे ? [उ॰] हे गौतम ! जेम शालीओ माटे कह्युं तेम ए धान्योने माटे पण जाणवुं, विशेष ए के, पांच वरस जाणवां, बाकीनुं तेज प्रमाणे जाणवुं. [प्र॰] हवे हे भगवन् ! अलसी, कुसुंभ, कोद्रवा, कांग, वरट-बंटी, एक प्रकारनी कांग, एक प्रकारना कोद्रवा, शण, सरसव अने एक जातनां शाकनां बीआं	それょうそうちょう	

प्रज्ञाप्तिः प्रज्ञाप्तिः ॥४६७॥ ॥४६७॥ भूत्त पाण्णि से थोवे, सत्त थोवाइं से लवे। लवाणं सत्तहत्तरिए, एस मुहुत्ते वियाहिए॥ ४७॥ तिन्नि सहस्सा मत्त पाण्णि से थोवे, सत्त थोवाइं से लवे। लवाणं सत्तहत्तरिए, एस मुहुत्ते वियाहिए॥ ४७॥ तिन्नि सहस्सा मत्त पाण्णि से थोवे, सत्त थोवाइं से लवे। लवाणं सत्तहत्तरिए, एस मुहुत्ते वियाहिए॥ ४७॥ तिन्नि सहस्सा मत्त प सयाइं तेवत्तरिं च ऊसासा। एस मुहुत्तो दिट्ठो सव्वेहिं अणंतनाणीहिं॥ ४८॥ एएणं मुहुत्तपमा- णेणं तीसमुहुत्तो अहोरत्तो, पन्नरस अहोरत्ता पक्त्वो, दो पक्त्वा मासे, दो मासा उऊ, तिन्नि उउए अयणे, दो अयणे संवच्छरे, पंचसंवच्छरिए जुगे, वीसं जुगाइं वाससयं, दस वाससयाइं वाससहस्सं, सयं वाससहस्साइं वाससयसहस्सं, चउरासीति वाससयसहस्साणि से एगे पुव्वंगे, चउरासीती पुव्वंगसयसहस्साइं से एगे पुव्वे, पत्न पत्न्वे। २ तहिए २ अडढे २ अववे २ हहए २ उपप्ले २ पउमे२ नलिणे२ अच्छणित्रने २ अउप २ एउए य २	तके
॥४६७॥ ॥४६७॥ सत्त पाणूणि से थोवे, सत्त थोवाइं से ल्वे। लवाणं सत्तहत्तरिए, एस मुहुत्ते वियाहिए ॥ ४७ ॥ तिन्नि सहस्सा मत्त य सयाइं तेवत्तरिं च ऊसासा। एस मुहुत्तो दिटो सब्वेहिं अणंतनाणीहिं ॥ ४८ ॥ एएणं मुहुत्तपमा- णेणं तीसमुहुत्तो अहोरत्तो, पन्नरस अहोरत्ता पक्खो, दो पक्खा मासे, दो मासा उऊ, तिन्नि उउए अयणे, दो प् अयणे संवच्छरे, पंचसंवच्छरिए जुगे, वीसं जुगाइं वाससयं, दस वाससयाइं वाससहस्सं, सयं वाससहस्साइं वाससयसहस्सं, चउरासीति वाससयसहस्साणि से एगे पुट्वंगे, चउरासीती पुट्वंगसयसहस्साइं से एगे पुट्वे, पित्व पह्वो २ तहिए २ अडडे २ अववे २ हहए २ उपप्छे २ पउमे२ नलिणे२ अच्छणिउने २ अउप २ प्रस्त म २	
मत्त य सयाइं तेवत्तरिं च ऊसासा । एस मुहुत्तो दिद्वो सव्वेहिं अणंतनाणीहिं ॥ ४८ ॥ एएणं मुहुत्तपमा- भे णेणं तीसमुहुत्तो अहोरत्तो, पन्नरस अहोरत्ता पक्खो, दो पक्खा मासे, दो मासा उऊ, तिन्नि उउए अयणे, दो भे अयणे संवच्छरे, पंचसंवच्छरिए जुगे, वीसं जुगाइं वाससयं, दस वाससयाइं वाससहस्सं, सयं वाससहस्साइं वाससयसहस्सं, चउरासीति वाससयसहस्साणि से एगे पुट्वंगे, चउरासीती पुट्वंगसयसहस्साइं से एगे पुट्वे, भे ित्व पह्वो २ तदिए २ अडडे २ अववे २ हहए २ उपपछे २ पउमे२ नलिणे२ अच्छणिउने २ अउप २ प्रस्त य २	
र्भ णेणं तीसमुहुत्तो अहोरत्तो, पन्नरस अहोरत्ता पक्खो, दो पक्खा मासे, दो मासा उऊ, तिन्नि उउए अयणे, दो अयणे संवच्छरे, पंचसंवच्छरिए जुगे, वीसं जुगाइं वाससयं, दस वाससयाइं वाससहस्सं, सयं वाससहस्साइं वाससयसहस्सं, चउरासीति वाससयसहस्साणि से एगे पुव्वंगे, चउरासीती पुव्वंगसयसहस्साइं से एगे पुच्वे, [एवं प्रव्वे] २ तडिए २ अडडे २ अववे २ हहए २ उप्पले २ पउमे२ नलिणे२ अच्छणिउने २ अउप २ प्रस्म म	ાણ
() अयणे संवच्छरे, पंचसंवच्छरिए जुगे, वीसं जुगाइं वाससयं, दस वाससयाइं वाससहस्सं, सयं वाससहस्साइं () वाससयसहस्सं, चउरासीति वाससयसहस्साणि से एगे पुव्वंगे, चउरासीती पुव्वंगसयसहस्साइं से एगे पुव्वे, ि एवं प्रव्वे २ तदिए २ अडडे २ अववे २ हहुए २ उप्पले २ प्रजमे२ नलिणे२ अच्छणिएजे २ अज्य २ प्रजप स २	
र्भे वाससयसहरसं, चउरासीति वाससयसहस्साणि से एगे पुव्वंगे, चउरासीती पुव्वंगसयसहस्साइं से एगे पुव्वे, 🦗	
ित्वं पहवे ? तदिए २ अददे २ अववे २ हहए २ उप्पले २ पउमे? नलिणे? अच्छणिउरे २ अउग २ परम म २	
ित्वं पहवे ? तदिए २ अददे २ अववे २ हहए २ उप्पले २ पउमे? नलिणे? अच्छणिउरे २ अउग २ परम म २	
ू नउए य २ चुलिया २ सीसपहेलिया २ एताव ताव गणिए एताव ताव गणियस्स विसए,तेण परं ओवमिए।	
🌾 👘 🖌 🖌 प्रिक हे भगवन र एक एक मुहूतेना केटला उच्छवासाद्धा कह्या छ 🖓 उक्ते हे गौतम र असंख्येय समयना समुदायनी समि- 🚱	
😧 एक निःश्वास, 'तुष्ट' अनवकल्य–घडपण विनाना अने व्याधिरहित एक जंतुनो एक उच्छ्वास अने निःश्वास ते एक प्राण कहेवाय 🕵	
तिना समागमथी जेटलो काळ थाय ते एक आवलिका कहेवाय छे अने संख्येय आवलिकानो एक उच्छ्वास, संख्येय आवलिकानो एक निःश्वास, 'तुष्ट' अनवकल्य-घडपण विनाना अने व्याधिरहित एक जंतुनो एक उच्छ्वास अने निःश्वास ते एक प्राण कहेवाय हे.' 'सात प्राण ते स्तोक कहेवाय छे, सात स्तोक ते लव कहेवाय छे, सत्योतेर (७७) लव, ते एक ग्रहूर्त कहेवाय छे,' ३७७३	

प्रज्ञप्तिः 🗶 एक संवत्सर थाय छे, पांच संवत्सरनुं एक युग थाय छे, वीग्न युगमां १०० वरस थाय छे दग्नसो वरसनां एकहजार वर्ष थाय छे, 🦿 उ	् शतके देशः७ ४६८॥
---	-------------------------

		5
ु ज्झाओं से एगे अंगुले, एएणं अंगुलगमाणेणं छ अंगुलाणि पादो बारस अंगुलाई बिहत्थी चउच्वीसं अंगुलंह	R.	६ बानके उद्देशः७ ॥४६९॥

म्याख्या- प्रचतिः प्रचतिः प्रचतिः प्रचतिः प्रचत्कनां मनुष्यने एक वालाग्र धाय छे. ए प्रमाणे देवकुरुना अने उत्तररेणु अने आठ स्थरेणु मळे त्यारे ते देवकुरुना अने उत्तरकुरुना मनुष्यने एक वालाग्र धाय छे. ए प्रमाणे देवकुरुना अने उत्तररेणु अने आठ स्थरेणु मळे त्यारे ते देवकुरुना अने उत्तरकुरुना मनुष्यने एक वालाग्र धाय छे. ए प्रमाणे देवकुरुना अने उत्तरकुरुना मनुष्यनां आठ वालाग्र ते हरिवर्षना अने उत्तरकुरुना मनुष्यने एक वालाग्र धाय छे. ए प्रमाणे देवकुरुना आजे उत्तरकुरुना मनुष्यनां आठ वालाग्र ते हरिवर्षना अने उत्तरकुरुना मनुष्यने एक वालाग्र, हरिवर्षना अने स्म्यकना मनुष्यनां आठ वालाग्र ते हरिवर्षना अने एक वालाग्र अने हैमवतना अने ऐरवतना मनुष्यनां आठ वालाग्र ते प्रवत्तना मनुष्यनों एक वालाग्र ते हैमवतना अने ऐरवतना मनुष्यने एक वालाग्र अने हैमवतना अने ऐरवतना मनुष्यनां आठ वालाग्र ते प्रवित्तरना मनुष्यनों एक राता, पूर्वावदेहना मनुष्योनां आठ कलाग्र ते एक लिक्षा, आठ लिखा ते एक युवा, आट युवा ते एक यवमध्य आठ यवमध्य ते एक अंगुल्ता एक गुएलना प्रमाणे छ अंगुलनो एक पर, बार अंगुलनी एक वितित्ति-बंत चोवीस अंगुलनी एक रत्ति-हाथ अडवालीग्र अंगुल्ता एक गाउ धाय, चार गाउनुं एक पोलन थाय, प योजनना प्रमाणे जे पल्य, आयामवडे अने विष्कंमवडे एक योजन होय, उंचाइमां एक योजन होय अने तेनो परिधि सविशेष त्रिग्रण-त्रण योजन होय, ते पल्यमां एक दिवसना उगेला, बे दिवसना उगेला, त्रण दिवसना उगेल अने बधारेमां वधारे सात रातना उगेला कोडो वालाग्रो, कांठा सुधी भर्या होय, संनिचित कर्या होय, खूब भर्या होय अने ते वालाग्ने एवी रीते भर्या होय के जेने आग्न वाळे, वाधु न हरे, जेओ कोहाइ न जाय, नाझ न पामे अने जेओ कोइ दिवस सडे नहिं, ते पत्थय द्वीण थाय, निरंज थाय, निर्धित थाय, निष्ठित थाय, निर्हेप थाय, अपहृत थाय अने विग्रुद्ध थाय त्यारे ते काळ पल्योपम	9
---	---

🐔 उत्सांपणीमां एकवीशहजार वरस काळ ते दुःषमदुःषमा कहवाय, एकवीशहजार वरस यावत् चार कोडाकोडी सागरोपम काल ते 💉	व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४७१॥	काळ कहेवाय. सागरोपमतुं प्रमाण दर्शाववा गाथा कहे छे. गाहा-एएमिं पछाणं कोडाकोडी हवेज्ञ दसगुणिया । तं सागरोव मस्स उ एक्कस्स भवे परीमाणं ॥ ५० ॥ एएणं सागरोवमण्माणेणं चत्तारि मागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम सुसमा १ तिन्नि मागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुममा२ दो मागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम दूसमा ३ एगा मागरोवमकोडाकोडीओ वायालीसाए वासमहस्सेहिं ऊणिया कालो दूसमसुममा४ एक्कवीसं वामसहस्साइं कालो दुममा ५ एक्कवीसं वाससहस्माइं कालो दूसमदूसमा ६ । पुणरवि उस्सप्पिणीए एक्कवीसं वामसहस्साइं कालो दुममनू समा १ एक्कवीसं वाससहस्माइं कालो दूसमदूसमा ६ । पुणरवि उस्सप्पिणीए एक्कवीसं वामसहस्साइं कालो दूममनू समा १ एक्कवीसं वाससहस्साइं जाव चत्तारि मागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमसुम्मा, दम मागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओस- प्पिणी, दस सागरोपमकोडाकोडीओ कालो उस्सपिशणी, वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओस- प्पिणी, दस सागरोपमकोडाकोडीओ कालो उस्सपिशणी, वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओस- पिपणी, दस सागरोपमकोडाकोडीओ कालो उस्सपिशणी, वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओस- पिपणी य ॥ (सूत्रं २४६) ॥ एवा कोटाकोटी पल्योपमने ज्यारे दसगणा करीए त्यारे ते कालत्रं प्रमाण. एक सागरोपम थाय छे.' ए सागरोपम प्रमाणे चार कोडाकोडि सागरोपम काल ने एक सुपमग्रुपमा कहेवाय, त्रण कोडाकोडि सागरोपम काल ते एक युपमा कहेवाय, कोडाकोडि सागरोपम काल ते एक सुपमदुः पमा कटेवाय, जेमां बेताळी इनार वरम ऊणां छे एवो एक कोडाकोडि सागरोपम काल ने एक दुपमसुपमा कहेवाय, एकवीशव्हजार वरस काल ते दुः पमदुः पमा कहेवाय, एकवीशव्हजार वरस यावत् चार कोडाकोडी सागरोपम काल ते उत्सर्पिणीमां एकवीशव्हजार वरस काल ते दुः पमदुः पमा कहेवाय, वळी पण	at start at start at start	६ जनके उद्देशः७ ॥४७१॥
--	-----------------------------------	--	----------------------------	-----------------------------

म्याख्या- कोडाकोडी सागरोपम काळ ते अवसर्पिणी अने उत्सर्पिणीकाळ, दस कोडाकोडी सागरोपम काळ ते उत्सर्पिणी काळ अने वीश कोडाकोडी सागरोपम काळ ते अवसर्पिणी अने उत्सर्पिणी काळ. ॥ २४६ ॥	६ँ शतकें
प्रज्ञप्तिः 🚺 जबहीवेणं भंते! दीवे रजीमे असिरिएणीए समयसमाए समाए उत्तमकटएताए भरहरस वासस्स केरिसए 🥄	उद्देश:७
॥४७२॥ अगगारभावपडोयारे होत्था ?, गोयमा ! बहुसमरमणिजे भूमिमागे होत्था, से जहाणामए-आलिंगपुक्खरेति वा प्रे	ા૪૭૨૫
🗶 एव उत्तरक्रहवत्तव्वया नेयव्वा जाव आसयति मयति, तसि णं समाए भारहे वासे तत्थ २ देसे २ तहिश्वहव	
🗚 ओराला कुद्दाला जाव कुसविकुसविसुद्धस्क्खमृला जाव छव्विहा मणुस्सा अणुमज्जित्था पण्णत्ता,तं०-पम्हंगंधा १ 🤾	
🐒 मियगंघा २ अममा ३ तेयली ४ सिंहा ५ मणिंचारि ६। सेवं भंते ! सेवं भंते ! (सूत्रं २४७) ॥ ६ – ७ ॥ 👔	
🗶 [प्र॰] हे भगवन् ! जंबूद्वीप नामना द्वीपमां उत्तमार्थ प्राप्त आ अवसर्षिणीमां–सुपमसुपमा कोळमां भारत वर्षना केब आकार 💃	
🗚 भावप्रत्यवतार-आकारोना अने पदार्थोना आविर्मावो हता ? [उ०] हे गौतम ! भूमिभाग बहुसम होवाथी रमणीय हतो. ते जेमके, 🟄	
🐒 आलिंगपुष्कर्–ग्ररजना ग्रुखतुं पुट होय तेवो भारतवर्षनो भूमिभाग हतो,ए प्रमाणे अहिं भारतवर्ष परत्वे उत्तरकुरुनी वक्तव्यता जाणवी 🛐	
🏈 यावत् बेंसे छे, मुवे छे, ते काळमां भारतवर्षमां ते ते देशोमां त्यां त्यां स्थळे घणा मोटा उद्दालक यावत् क्वश अने विकुशथी विशुद्ध 🟌	
🇚 वृक्षमूलो यावत् छ प्रकारना माणसो हता, ते जैमके, १ पद्म समान गंधवाळा, २ कस्तूरी समान गंधवाळा, ३ ममत्व विनाना, ४ 🖡	
यावत बेसे छे, मुवे छे, ते काळमां भारतवर्षमां ते ते देशोमां त्यां त्यां त्यां स्थळे घणा मोटा उद्दालक यावत् कुश अने विकुशथी विशुद्ध बुश्चमूलो यावत् छ प्रकारना माणसो हता, ते जेमके, १ पद्म समान गंधवाळा, २ कस्तूरी समान गंधवाळा, ३ ममत्व विनाना, ४ तेजस्वी अने रूपाळा, ५ सहनशील तथा ६ शनश्वारी-उतावळ विनाना ए प्रमाणे छ प्रकारना मनुष्यो हता. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे एम कही यावत् विहरे छे. ॥ २४७ ॥	
🐧 प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे एम कही यादत् विहरे छे. ॥ २४७ ॥	
🗚 भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसूत्रना छट्टा शतकमां सातमा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.	

	र्दु टू	1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1
च्याख्या-	ू अगळ आवेला सातमा उद्देशकमां भारत वर्षनुं खरूप जणावेलुं छे, हवे आ शरु थता आठमा उद्देशकमां प्रथिवीओनुं खरूप कहेवावानुं छे.	🛧 ६ शनके
प्रज्ञप्तिः	कइ णं भंते ! पुढवीओ पन्नताओ ?, गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पण्णताओ, तंजहा-रयणप्पभा जाव ईमी-	र्ट्टे उद्देशः८
୲୲ଃଡ଼ୡ୲୲	्री पब्भारा। अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे गेहाति वा गेहावणाति वा ?, गोयमा ! णो तिणहे	3 1180311
:	र समदे। अत्थि णं भंते ! इमीसे रवणप्प भाए अहे गामाति वा जाव संनिवेसाति वा ?, नो तिणडे समडे।	S.
	े अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणपपभाए पुढवीए अहे उराला बलाहया संसेयंति संमुच्छंति वासं वासंति?,	Č
	हेता अत्थि, तिन्निवि पकरेति, देवोवि पकरेति असुरोवि प॰ नागोवि प॰। अत्थि णं भंते ! इमीसे रयण॰	0
	र बादरे थणियसदे ?, हंता अत्थि, तिन्निवि पकरेति । अत्थि णं भंते ! इमीसे रयण० अहे बादरे अगणिकाए ?,	3
	री गोयमा ! नो तिणहे समहे, नन्नत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं । अत्थि णं भंते ! इमीसे रयण॰ अहे चंदिम	S.
. •	र जाव तारारूवा ?, नो तिणहे समहे। अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए० चंदाभाति वा २ ?,	
	ू णो इणहे समहे, एवं दोचाणवि पुढवीए भाणियव्वं, एवं तचाएवि भाणियव्वं, नवरंदेवोवि पकरेति अखरोवि	5
	र् पकरेति, णो णागो पकरेति. चउत्थाएवि एवं, नवरं देवो एको पकरेति, नो असुरो॰ नो नागो पकरेति, एवं	5
	हेहिछासु सव्वासु देवो एक्को पकरेति । ४	Ť X

च्याख्या-	12 32 34 36 36 36 36 36 36 36 36 36 36 36 36 36	त्रीजीमां पण कहेबुं, विशेष ए के, त्रीजी पृथिवीमां देव पण करे, असुर पण करे अने नाग न करे. चोथी पृथिवीमां पण एमज		शतके
प्रज्ञसिः		कहेबुं. विशेप ए के, त्यां एकलो देव करे पण असुरकुमार के नागकुमार कोइ न करे, ए प्रमाणे बधी नीचेनी पृथिवी-	जन्म	शः८
॥४७४॥		ओमां एकलो देव करे छे.	118	७४॥
	ð Þ	बलाहया?, हंता अत्थि, देवो पकरेति, असुरोवि पक्तरेइ, नो नाओ पकरेइ, एवं थणियसदेवि । अत्थि णं भंते !	3 *	

ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४७५॥ २२ २२ २२ २२ २२ २२ २२ २२ २२ २२ २२ २२ २२	परे पुढविकाए वादरे अगणिकाए ?, णो इणडे समट्टे, नण्णस्थ विग्गहगतिसमावझएणं । अत्थि णं भंते ! दिम०?, णो तिणडे समट्टे । अत्थि णं भंते ! गामाइ वा?, णो तिणट्टे स० । अत्थि णं भंते ! चंदाभाति वा ?, एयमा ! णो तिणडे समट्टे । एवं सणंकुमारमाहिंदेसु, नवरं देवो एगो पकरेति । एवं वंभल्ठोएवि । एवं वंभल्ठो- स्स उवरिं, सव्वहिं देवो पकरेति, पुच्छियव्वो य, बायरे आउकाए बायरे अगणिकाए बायरे वणस्सइकाए स्तं तं चेव ॥ गाहा—तमुकाए कप्पपणए अगणी पुढवी य अगणि पुढवीसु । आऊतेऊवणस्सइ कप्पुवरि- कण्हराईसु ॥ ५१ ॥ (सूत्रं २४८) ॥ [प०] हे भगवन् ! सौधर्मकल्पनी जने ईशानकल्पनी नीचे गृहो, गृहापणो छे ? [उ०]हे गौतम ! ते अर्थ समर्थ नथी. [प्र०] भगवन् ! सौधर्मकल्पनी अने ईशानकल्पनी नीचे मोघा मेघो छे ? [उ०] हा, गौतम ! मोटा मेघो छे, अने ते मेघोने देव करे, पुर पण करे, पण नाम न करे, ए प्रमाणे स्तनित शब्द पत्त्वे पण जाणवुं. [प्र०] हे भगवन् ! त्यां वादर पृथिवीकाय तथा बादर प्रिकाय छे? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी अने आ निषेध विग्रहगतिसमापन्न सिवायना बीजा माटे जाणवो. [प्र०] प्रवन् ! त्यां चंद्र वगेरे छे ? [उ०] हे गौतम ! प्रधा ही. प्रावन् ! त्यां वादर पृथिवीकाय तथा बादर प्रिकाय छे? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी अने आ निषेध विग्रहगतिसमापन्न सिवायना बीजा माटे जाणवो. [प्र०] हे प्रवन् ! त्यां चंद्र वगेरे छे ? [उ०] हे गौतम ! प्राप्रापि सन्त्कुमार अर्थ समर्थ नथी. [प्र०] भगवन् ! त्यां चद्रनी प्रकाश वगेरे छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी, ए प्रमाणे सनत्कुमार ने माहंद देवलोकमां जाणवुं, विशेष ए के, त्यां एकलो देव करे छे, ए प्रमाणे ब्रह्यलेकमां पण जाणवुं, ए प्रमाणे त्रह्रलोकनी तर सर्वस्थळे देव करे छे तथा बधा ठेकाणे बादर अप्काय, बादर अग्रिकाय अने बादर वनस्पतिकाय संबंधे प्रश्न करवो. बीछं तेज	este at a the at a the at
---	--	---------------------------

च्याख्या-प्रज्ञंप्तिः

प्रमाणे छे पूर्व प्रमाणे छे. गाथाः-तमस्कायमां अने पांच कल्पमां अग्नि अने पृथिवी संबंधे प्रश्न, पृथिवीओमां अग्नि संबंधे प्रश्न अने पांच कल्पनी उपर रहेलां खानोमां तथा कृष्णराजिमां अप्काय, तेजस्काय अने वनस्पतिकाय संबंधे प्रश्न करवो. ॥ २४८ ॥ कतिविहे णं भंते ! आउयवंधए पन्नत्ते ?, गोयमा ! छव्विहा आउयवंधा पन्नत्ता, तंजहा-जातिनामनिह्- त्ताउए १ गतिनामनिहत्ताउए २ ठितिनामनिहत्ताउए ३ ओगाहणानामनिहत्ताउए ४ पएसनामनिहत्ताउए ५ अणुभागनामनिहत्ताउए ६ दंडओ जाव वेमाणियाणं ॥ जीवा णं भंते ! किं जाइनामनिहत्ता जाव अणु- भागनिहत्ता ?, गोयमा ! जातिनामनिहत्तावि जाव अणुभागनामनिहत्तावि, दंडओ जाव वेमाणियाणं । जीवा णं भंते ! किं जाइनामनिहत्ताउया जाव अणुभागनामनिहत्ताउया ?, गोयमा ! जाइनामनिहत्ताउ- यावि जाव अणुभागनामनिहत्ताउयावि, दंडओ जाव वेमाणियाणं । एवं एए दुवालस दंडगा भाणियव्वा । जीवा णं भंते ! किं जातिनामनिहत्ता १ जाइनामनिहत्ताउया २?, १२ । जीवा णं भंते ! किं जाइनामनिइत्ता ३ जातिनामनिउत्ताउया ४ जाइगोयनिहत्ता ५ जाइगोयनिहत्ताउया १० जाइणामगोयनिउत्ता १९ ? जीवा णं भंते ! किं जाहनामगोयनिहत्ता १ जाइणामगोयनिहत्ताउया १० जाइणामगोयनिउत्ता ११? जीवा णं भंते ! किं जाहनामगोयनिहत्ता २ जाइणामगोयनिइत्ताउया १० जाइणामगोयनिउत्ता ११ ? जीवा णं भंते ! किं जाहनामगोयनिहत्ता उपा १२ जाव अणुभागनामगोयनिउत्ताउया ?, गोयमा ! जाइनामनाये- निउत्ताउयावि जाव अणुभागनामगोयनिउत्ताउयादि, दंडओ जाव वेमाणियाणं ॥ (सूत्रं २४९) ॥ [प्र0] हे भगवन् ! आयुष्यनो वंध केटल प्रकारनो कक्षो छे ? [उ०] हे गौतम ! आयुष्यनो वंध छ प्रकारनो कक्षो छे, ते	J:2
---	-----

प्रइप्तिः र नामनिधत्त छे ? [उ०] हे गौतम ! जातिनामनिधत्त पण छे यावत् अनुभागनामनिधत्त पण छे, आ दंडक यावत् वमानिक सुधी र उ	६ शतके इदेशः८ ।४७७॥
---	----------------------------------

ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४७८॥	एवतिया णं दीवसमुद्दा नामधेज्ञेहिं पन्नत्ता, एवं नेयव्वा सुभा नामा उद्धारो परिणामो सव्वजीवा णं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! (सूत्रं २५०) ॥ ६-८ ॥ छट्टसयस्स अट्टमो उद्देसो संमत्तो ॥ [प्र॰] हे भगवन् ! शुं लवणसमुद्र उच्छळता पाणीवाळो छे, समजळवाळो छे, क्षुव्धपाणीवाळो छे के अक्षुब्धपाणीवाळो छे ? [उ०] हे गौतम ! लवणसमुद्र उच्छळता पाणीवाळो छे पण समजळवाळो नथी अने क्षुव्धपाणिवाळो छे पण अक्षुब्ध पाणीवाळो नथी, अहिंथी शरु करी जेम जीवाभिगम सूत्रमां कह्युं छे तेम जाणवुं यावत् ते हेतुथी हे गौतम ! बहारना समुद्रो पूर्ण, पूर्णप्रमाण-		्यतके देशः८ ४७८॥
-----------------------------------	--	--	------------------------

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra	www.kobatirth.org	Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir
le l	उद्देशक ९.	7
ध्याख्या-	जीवो जे जुदे जुदे रूपे भिन्न भिन्न गतिमां उपज्या करे छे तेनुं कारण तो तेओए करेलो कर्मबंध छे, माटे हवे आ नवमा	ा 🕺 ६
प्रज्ञप्तिः 😪	उद्देशकमां ए कर्मबंध संबंधे निरूपण करवानुं छे.	🖌 उद्देशः९
1189911	जीवे णं भंते ! णाणावरणिज़ं कम्मं बंधमाणे कति कम्मप्पगडीओ बंधति ?, गोयमा ! सत्तविहबंधए	वा 🧏 ॥४७९॥
R	अट्टविहवंधए वा छव्विहबंधए वा, बंधुदेसो पन्नवणाए नेयव्वो ॥ (सूत्रं २५१) ॥	
a la	[प्र०] हे भगवर् ! ज्ञानावरणीय कर्मने बांधतो जीव केटली कर्मप्रकृतिओने बांधे ? [उ०] हे गौतम ! सात प्रकारे बांधे	छे, ४
(C)	आठ प्रकारे वांधे छे अने छ प्रकारे पण बांधे छे, अहिं 'प्रज्ञापना' उपांगमां कहेलो बंध उद्देशक जाणवो. ॥ २५१ ॥	Č.
×	देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महाणुभाए बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगवन्नं एगरूवं विउब्	व- 🗚
S.	तए ?, गोयमा ! नो तिणहे० । देवे णं भंते ! बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू ?, इंता पभू, से णं भंते	
a contraction of the second se	किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वति अन्नत्थगए पोग्गले परियाइन	
2 A	विउव्वति ? गोयमा ! नो इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वति,	नो 🛃
S.	अन्नत्थगए पोग्गस्टे परियाइत्ता विउव्वति, एवं एएणं गमेणं जाव एगवन्नं 📙 🦉 👘 🧞	3
(z	अन्नत्थगए पाग्गल पारयाइता विउव्वात, एव एएण गमण जाव एगवन्न हु के कि	2
A CONTRACTOR	रूवं ४ चउभंगो। देवे णं भंते ! महिड्दीए जाव महाणुभागे बाहिरए 📑 * 🛒 🖉 🖉 🖉 🖉 🖉 🖉	<u>z </u>
		X

	8		Č,	
	ŕ	पोग्गले अपरियाइत्ता पभू कालयं पोग्गलं नीलगपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए नीलगं पोग्गलं वा कालगपो-		_
ब्याख्या-	S	ग्गलत्ताए परिणामेत्तए ?, गोयमा ! नो तिणहे समहे, परियाइत्ता पभू। से णं भंते ! किं इहगए	%	६ शतके
प्रज्ञप्तिः	2	पोग्गले तं चेव नवरं परिणामेतित्ति भाणियव्वं, एवं कालगपोग्गलं लोहियपोग्गलत्ताए, एवं कालएणं		उद्देशः९
1189011	X	जाव सुक्तिछं, एवं णीलएणं जाव सुक्तिछं, एवं लोहियपोग्गलं जाव सुक्ति छत्ताए, एवं हालिइएणं जाव सुक्तिछं,	X	1186011
	S	तंजहा-एवं एयाए परिवाडीए गंधरसफास॰ कक्खडफासपोग्गलं मउयफासपोग्गलत्ताए २ एवं दो दो	S	
	A S	गरुयऌहुय २ सीयउसिण २ णिद्धऌक्ख २, वन्नाइ सव्वत्थ परिणामेइ, आलावगा य दो दो पोग्गले	Ś	
	¥	अपरियाइत्ता परियाइत्ता ॥ (सूत्रं २५२) ॥	5	
	z	[प्र॰] हे भगवन् ! महर्धिक यावत् महानुभागवाओ देव बहारनां पुद्गलोने ग्रहण कर्या सिवाय एकवर्णवाळा अने एक आकार-	X	
	AL A	वाळा खञरीर वगेरेनुं विक्रुर्वण करवा समर्थ छे ? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ समर्थ नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ते देव बहारनां पुदु-	Ť	
	¥	गलोने ग्रहण करीने तेम करवा समर्थ छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, समर्थ छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते देव शुं इहगत-अहिं रहेलां-	5	
	S	पुद्गलोनुं प्रहण करीने विक्रुर्वण करे छे ? तत्रगत−त्यां देवलोकमां रहेलां पुद्गलोनुं ग्रहण करीने विक्रुर्वण करे छे ? के अन्यत्रगत−	s	
	**	कोइ बीजे ठेकाणे रहेलां पुद्गलोनुं ग्रहण करीने विकुर्वण करे छे ? [उ०] हे गौतम ! अहिं रहेलां पुद्गलोनुं ग्रहण करीने विकुर्वण	E	
	J.		J.	
	S	विकुर्वण करे छे. ए प्रमाणे ए गमवडे यावत् १ एकवर्णबाळा एक आकारने, २ एकवर्णवाळा अनेक आकारने, ३ अनेकवर्णवाळा	to the second	
1	1		4	

ष्याच्या प्रज्ञप्तिः प्रक आकारने अने ४ अनेकवर्णवाळा अनेक आकारने विकुविंत करवा वक्त छे ए प्रमाणे चार भांगा जाणवा. [प्र०] हे भगवन् ! महधिंक यावत् महानुभागवाळो देव बहारनां पुद्रालोने ग्रहण कर्या सिवाय काळा पुद्रालते नीलपुद्रालरणो परिणमाववा अने नीळ- पुद्रालने काळापुद्रालराणे परिणमाववा समर्थ छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी, पण पुद्रालोन्तुं ग्रहण करीने तेम करवा समर्थ छे. [प०] हे भगवन् ! ग्रुं ते देव इहगतादिपुद्रालोने ग्रहण करीने तेम करवा समर्थ छे ? [उ०] हे गौतम ! पूर्व प्रमाणे तेज समज छुं, विशेष ए के 'विकुवें छे' ने बदले 'परिणमावे छे' एम कहेवुं, ए प्रमाणे काळा पुद्रालतेने लालपुद्रालराणे, ए प्रमाणे काळा- पुद्रालत्नी साथे यावत् शुक्क, ते पत्रमाणे नीलनी साथे यावत् शुक्क, ए प्रमाणे लालपुद्रालत्ने लालपुद्रालराणे, ए प्रमाणे काळा- पुद्रालत्नी साथे यावत् शुक्क, ते पत्रमाणे जीलनी साथे यावत् शुक्क, ए प्रमाणे लालपुद्रालत्ककेश स्पर्शवाळा, कोमळ स्पर्शवाळा पुद्रालराणे साथे यावत् शुक्क, ते ए प्रमाणे ए कमवडे गंध रस अने स्पर्श संबंघे समजवुं यावत् कर्कश स्पर्शवाळा, कोमळ स्पर्शवाळा पुद्रालराणे परिणमावे. ए प्रमाणे वे वे विरुद्ध गुणोने गुरुक अने लघुक, शीत अने उष्ण, सित्रध अने रुक्ष वर्णादिने सर्वत्र 'परिणमावे' छे. परिणमावे छे ए कियाना अर्ही ववे आलापक कहेवा; एक तो पुद्राणेतुं ग्रहण करीने परिणमावे छे, अने बीजो पुद्रालोजे ग्रहण नहि करीने नथी परिणमावतो. ॥ २५२ ॥ आवसियुद्धलेसेणं भंते ! देवे असमोहएणं अप्पाणएणं अविसुद्धलेसं देवं देविं अन्नयरं जाणति पामति १ ? णो तिणडे समहे, एवं अविसुद्धलेसे असमोहएणं अप्पाणिएणं अविसुद्धलेसं देवं ३, २ । अविसुद्धलेसे समोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं ३, ३ । अविसुद्धलेसे देवे मम्मोहएणां अप्राणोणं विसुद्धलेसं समोहत्या० विसुद्धलेसं देवं ३, ४ । अविसुद्धले देवं ३, ४ । अविसुद्धलेसं देवं ३, ४ ।	९
---	---

ष्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४८२॥	पा मते ! देवे समाहएण आवखुद्ध से पर सामरण , एसा सामर , प्रमुद्ध के दु द सामरण के कु जाणइ ?, हंता जाणइ ४ । विसुद्ध लेसे ममोहयासमोहएणं अविसुद्ध लेसं देवं ३, ५ । बिसुद्ध लेसे समोहयासमो- हएणं विसुद्ध लेसं देवं ३, ६ । एवं हेट्रिछएहिं अट्टहिं न जाणइ न पासइ, उवरिछएहिं चउहिं जाणइ पासइ । सेवं भंते ! सेवं भंते ! ॥ (सूत्रं २५३) छट्टसए नवमा उद्देसो संमत्तो ॥ ६-९ ॥ [प्र०] हे भगवन् ! अविशुद्ध लेक्यावाळो देव अनुपयुक्त आत्मावडे अविशुद्ध लेक्यावाळा देवने, वा देवीने, वा अन्यतरने ते बेमांना एकने जाणे छे ? जूए छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. ए प्रमाणे २ अशुद्ध लेक्यावाळो देव अनुपयुक्त आत्मा- वडे विशुद्ध लेक्यावाळा देवने, देवीने, वा अन्यतरने जाणे, जूए ? ३ अविशुद्ध लेक्यावाळो देव उपर्युक्त आत्मावडे अविशुद्ध लेक्यान वाळा देवने इत्यादि, ४ अविशुद्ध लेक्यावाळो देव उपयुक्त आत्मावडे विशुद्ध लेक्यावाळा देवने इत्यादि, ५ अविशुद्ध लेक्यावाळो देव उपयुक्तानुपयुक्त आत्मावडे अविशुद्ध लेक्यावाळो देव उपयुक्त आत्मावडे विशुद्ध लेक्यावाळा देवने इत्यादि, ५ अविशुद्ध लेक्यावाळो देव उपयुक्तानुपयुक्त आत्मावडे अविशुद्ध लेक्यावाळो देवने इत्यादि, ६ अविशुद्ध लेक्यावाळो डेवने इत्यादि, ८ विशुद्ध लेक्यावाळो केक्यावाळा देवने इत्यादि, ७ विशुद्ध लेक्यावाळो अनुपयुक्त आत्मावडे अविशुद्ध लेक्यावाळो देवने इत्यादि, ८ विशुद्ध लेक्यावाळो किक्यावाळा देवने इत्यादि, ७ विशुद्ध लेक्यावाळो अनुपयुक्त आत्मावडे अविशुद्ध लेक्यावाळा देवने इत्यादि, ८ विशुद्ध लेक्यावाळो किक्त्यावाळा देवने इत्यादि, ७ विशुद्ध लेक्यावाळो अनुपयुक्त आत्मावडे अविशुद्ध लेक्यावाळो देव उपयुक्त आत्मावडे अविशुद्ध	いまたい いってい いってい いっちょう しょうしょう いってい いってい いってい いってい いってい いってい いってい いって	९
	ે લે ગાય તે આ પ્રાથમ પ્રાથમિક સાથે છે. તે પ્રાથમિક મુદ્ધ મુખ્ય પ્રાથમિક વિશેષ પ્રાથમિક પ્રાથમિક સાથે છે. આ પ્રાયક સાથે સ્થિતિ છે. આ પ્રાયક સાથે સાથે સાથે સાથે સાથે સાથે સાથે સાથે	5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4	

ध्याग्व्या- प्रज्ञप्तिः ॥४८३॥	युक्त आत्मावडे अविशुद्ध लेक्यावाळा देव विगेरेने इत्यादि, तथा १२ विशुद्ध छेक्यावाळो देव उपयुक्तानुपयुक्त आत्मावडे विशुद्ध लेक्यावाळा देव वगेरेने जाणे ? जूए ? [उ०] ए प्रमाणे नीचला आठ एटले श्ररुआतना आठ भांगावडे जाणे नहि, अने जूए नहि अने उपरना चार एटले पाछळना चार भांगावडे जाणे अने जूए. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे एम कही यावत् विहरे छे. ॥ २५३ ॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीस्त्रना छट्ठा शतकमां नवमा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.	अ के दि शतके उद्देशः १० के ॥४८३॥
or the state of the state of the state of	उद्देशक १०. आगळना नगमा उद्देशकमां अविशुद्ध छेक्यावाळाने ज्ञाननो अभाव कह्यो छे, हवे आ दशम उद्देशकमां पण तेज ज्ञानना अभा- वने लगती वातने दर्शावता आ सत्र कहे छे. अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति जावतिया रायगिहे नयरे जीवा एवइयाणं जीवाणं नो चक्किया केइ सुहं वा दुहं वा जाव कोल्ठट्टिगमायमवि निष्फावमायमवि कल्पमायमवि मासमायमपि मुग्गमायमवि जूयामायमवि लिक्स्वामायमवि अभिनिवट्टेत्ता उव्वदसित्तए, से कहमेयं भंते ! एवं ?, गोयमा ! जन्नं ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्स्वामि जाव परू- वेमि-सब्वलोएऽबि य णं सब्वजीवाणं णो चक्किया कोई सुहं वा तं चेव जाव उवदंसित्तए। से केणट्टेणं ?, गोयमा !	やまやままやまや

www.kobatirth.org

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६ शतके

उद्देशः१०

	nura	www.kobaliti.org	iai ya Oi	
ब्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४८४॥	* 92 4- 92 the 92 the 92 the 92 the	अयन्नं जंबुद्दीवे २ जाव विसेसाहिए परिक्खेवेणं पन्नते, देवे णं महिडढीए जाव महाणुभागे एगं महं सविले वणं गंधसमुग्गगं गहाय तं अवदालेति तं अवदालेत्ता जाव इणामेव कट्ठ केवलकप्पं जंबुद्दीवं २ तीहिं अच्छ- रानिवाएहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियहित्ताणं हव्वमागच्छेज्ञा, से तूणं गोयमा ! से केवलकप्पे जंबुद्दीवे २ तेहिं घाणपोग्गलेहिं फुडे ?, हंता फुडे, चक्तिया णं गोयमा ! केति तेसिं घाणपोग्गलाणं कोलट्ठियामायमवि जाव उवदंसित्तए ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, से तेणट्ठेणं जाव उवदंसेत्तए ॥ (सूत्रं २५४) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! अन्यतीर्थिको ए प्रमाणे कहे छे यावत् प्ररूपे छे, के राजग्रह नगरमां जेटला जीवो छे, एटला जीवोने कोई बोरना ठळीया जेटलुं पण, वाळ जेटलुं पण, कलाय के चोला जेटलुं पण, अडद जेटलुं पण, मग जेटलुं पण, जू जेटलुं पण अने लीख जेटलुं पण सुख या दुःख काढीने देखाडवा समर्थ नथी, हे भगवन् ! ए ते केवी रीते एम होइ इक्ते ? [उ०] हे गौतम !	まであるなかえたなななみ	
	ちょうちょう ちょうちょうちょうちょう	ते अन्यतीर्थिको जे ए प्रमाणे कहे छे, यावत प्ररूपे छे ते ए प्रमाणे मिथ्या, खोटुं कहे छे, हे गौतम ! हुं वळी आ प्रमाणे कहुं छुं यावत प्ररूपुं छुं के सर्व लोकमां पण सर्व जीवोने कोइ छख वा दुःख तेज यावत काढीने दर्शाववा समर्थ नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ते शा हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! आ जंबूद्वीप नामनो द्वीप यावत् परिक्षेपवडे विशेषाधिक कह्यो छे, महर्धिक यावत् महानुभाव- वाळो देव, एक, मोटो, विलेपनवाळो गंधवाळा द्रव्यनो डाबडो लइने डघाडे अने तेने डघाडी यावत् 'आ जाउं छुं' एम कही संपूर्ण जंबूद्वीपने त्रण चपटीवडे २१ वार फरी पाछो शीघ्र पाछो आवे, हे गौतम ! ते संपूर्ण जंबूद्वीप नामनो द्वीप, (ते देवनी आवी श्रीघ्रगतिथी ऊडेलां) ते गंध पुद्गलोना स्पर्शवाळो थयो के नहि? हा, स्पर्शवाळो थयो, हे गौतम ! कोइ ते गंधपुद्गलोने बोरना	- 25 - 25 - C	

घ्यारूया- प्रज्ञप्तिः	ठळीया जेटलां पण यावत् दर्जाववा समर्थ छे ? ए अर्थ समर्थ नथी. ते हेतुथी सुखादिने पण यावत् दर्जाववा समर्थ नथी. ॥२५४ जीवे णं भंते ! जीवे २ जीवे ?, गोयमा ! जीचे ताव नियमा जीवे, जीवेबि नियमा जीवे । जीवे णं भंते ! नेरइए नेरइए जीवे ?, गोयमा ! नेरइए ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय नेरइए सिय अनेरइए, जीवे णं भंते !	र्भ भूषि इतके क्रिउदेशः१०
18૮૬૫	🗚 असरकमारे असरकमारे जीवे ?, गोयमा ! असुरकुमारे ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय असुरकुमारे सिय	1186411
	र्णे णो असुरकुमारे, एवं दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियाणं। जीवति भंते ! जीवे जीवे जीवति ?, गोयमा ! र जीवति ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय जीवति सिय नो जीवति, जीवति भंते ! नेरइए २ जीवति ?,	
	प्र जावात ताव नियमा जाव, जाव पुण सिंय जावात सिंय ना जावात, जावात भत ! नरइए र जावात ?, गोयमा ! नेरइए ताव नियमा जीवति २ पुण सिंय नेरइए सिंय अनेरइए, एवं दंडओ नेयव्वो जाव वेमाणि- याणं । भवसिद्धीए णं भंते ! नेरइए २ भवसिद्धीए ?. गोयमा ! भवसिद्धीए सिंय नेरइए सिंय अनेरइए, नेरइए- रविय सिंय भवसिद्धीए सिंय अभवसिद्धीए, एवं दंडओ जाव वेमाणियाणं ॥ (सूत्रं २५५) ॥ [प्र॰] हे भगवन् ! शुं जीव जीव (चैतन्य) छे ? के चैतन्य जीव छे ? [उ॰] हे गौतम ! जीव नियमे चैतन्य जीव छे अने जीव चैतन्य पण नियमे जीव छे. [प्र॰] हे भगवन् ! जीव नैरयिक छे ? के चैरयिक जीव छे ?[उ॰] हे गौतम ! नैरयिक तो नियमे जीव छे अने जीव तो नैरयिक पण होय तथा अनैरयिक पण होय. [प्र॰] हे भगवन् ! जीव असुरकुमार छे ? के असुरकुमार जीव	*
	याणं । भवसिद्धीए णं भंते ! नेरइए २ भवसिद्धीए ?, गोयमा ! भवसिद्धीए सिय नेरइए सिय अनेरइए, नेरइए-	Č.
	४ डावय सिंघ भवसिद्धाए सिंघ अभवसिद्धाए, एव दडआ जाव वमाणियाणे ॥ (सूत्र २९९) ॥ १ [प्र॰] हे भगवन ! शं जीव जीव (चैतन्य) छे ? के चैतन्य जीव छे ? [उ०] हे गौतम ! जीव नियमे चैतन्य जीव छे अने	
	🖌 जीव चैतन्य पण नियमे जीव छे. [प्र॰] हे भगवन् ! जीव नैरयिक छे ? के नैरयिक जीव छे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिक तो नियमे	e a construction of the co
	ी जीव छे अने जीव तो नैरयिक पण होय तथा अनैरयिक पण होय. [प०] हे भगवन् ! जीव असुरकुमार छे ? के असुरकुमार जीव	*
	४ जीव छे अने जीव तो नैरयिक पण होय तथा अनैरयिक पण होय. [प्र०] हे भगवन् ! जीव असुरक्रुमार छे ? के असुरक्रुमार जीव ४ छे [उ०] हे गौतम ! असुरक्रुमार तो नियमे जीव छे अने जीव तो असुरक्रुमार पण होय तथा असुरक्रुमार न पण होय. ए प्रमाणे ४ यावत् वैमानिक सुधी दंडक कहेवो. [प्र०] हे भगवन् ! जीवे प्राणधारण करे ते जीव कहेवाय ? के जीव होय ते प्राणधारण करे ? ४	the set
		3

	[उ०] हे गौतम ! प्राणधारण ते नियमे जीव कहेवाय अने जे जीव होय ते प्राणधारण करे पण खरो अने न पण करे. [प्र०] हे भगवन् ! प्राणधारण करे ते नैरयिक कहेवाय ? के नैरयिक होय ते प्राणधारण करे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिक तो नियमे प्राण धारण करे अने प्राण धारण करनार तो नैरयिक पण होय अने अनैरयिक पण होय, ए प्रमाणे यावत् वैमानिक सुधी दंडक कहेवो. [प्र०] हे भगवन् ! भवसिद्धिक नैरयिक होय ? के नैरयिक भवसिद्धिक होय ? [उ०] हे गौतम ! भवसिद्धिक नैरयिक पण होय अने अनैरयिक पण होय तथा नैरयिक भवसिद्धिक पण होय अने अनैरयिक पण होय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिक सुधी दंडक कहेवो. [प्र०] हे भगवन् ! भवसिद्धिक नैरयिक होय ? के नैरयिक भवसिद्धिक होय ? [उ०] हे गौतम ! भवसिद्धिक नैरयिक पण होय अने अनैरयिक पण होय तथा नैरयिक भवसिद्धिक पण होय अने अभवसिद्धिक पण होय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिक सुधी दंडक कहेवो. ॥ २५५ ॥ अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव पर्रूवेंति एवं खल्ड सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता एगंतदुक्खं वेयणं वेयंति, से कहमेयं भंते ! एवं ?, गोयमा ! जन्नं ते अन्नउत्थिया जाव मिच्छं ते एवमाहंसु, आहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगंतदुक्खं वेयणं वेयंति, आह्च		
for some of the source of the	मागं अत्थेगतिया पाणा भग जीवा सत्ता एगंतमागं वेगणं वेगंति आदज्ञ अस्मागं वेगणं वेगंति अत्थे.	うまうまうまうま	

 म्वाख्या- प्रवाहि म्वाहिंग प्रवहिंग प्रवित्तं सुंग्ले स्वर्च ! अन्यतीथिंको ए प्रमाणे कहे छे यादत् प्ररूपे छे के, ए प्रमाणे निश्चित छे के, सर्व, प्राणो, भूतो, जीवो अने सच्चो, एकांत दुःखरूप वेदनाने वेदे छे, हे भगवन् ! ते ए एवी रीते केम होय ? [उ०] हे गौतम ! ते अन्यतीथिंको जे कांइ यावत् कहे छे ते ए प्रमाणे मिथ्या कहे छे, हे गौतम ! वळी, हुं आ प्रमाणे कर्हु छुं यावत् प्ररूपुं छुं के, केटलाक प्राणो, भूतो, जीवो यावत् कहे छे ते ए प्रमाणे मिथ्या कहे छे, हे गौतम ! वळी, हुं आ प्रमाणे कर्हु छुं यावत् प्ररूपुं छुं के, केटलाक प्राणो, भूतो, जीवो अने सच्चो एकांत दुःखरूप वेदनाने वेदे छे अने कदाचित् सुखने वेदे छे, तथा केटलाक प्राणो, भूतो, जीवो अने सच्चो एकांत सुखरूप वेदनाने वेदे छे अने कदाचित् दुःखने वेदे छे, वळी, केटलाक प्राणो, भूतो, जीवो अने सच्चो विविध प्रकारे वेद- नाने वेदे छे एटले छे कदाचित् सुखने अने कदाचित् दुःखने वेदे छे. [प्र0] हे भगवन् ! ते या हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! नैस्- यिको एकांत दुःखरूप वेदनाने वेदे छे, अने कदाचित् सुखने वेदे छे. [प्र0] हे भगवन् ! ते या हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! नैस्- यिको एकांत दुःखरूप वेदनाने वेदे छे, अने कदाचित् सुखने वेदे छे. प्रिथिकायर्था मांडी यावत् मनुष्यो सुधीना जीवो विविध प्रकारे वेदनाने सुखरूप वेदनाने वेदे छे अते कदाचित् दुःखने वेदे छे. पि हेतुथी पूर्व प्रमाणे कहां छे. ॥ २५६ ॥ नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले अत्तमायाए आहारोंति ते किं आयसरीररखत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारोंति अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारोंति ते किं आयसरीररखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारोंति, नो परंपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारोंति ते किं आयसतीररखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारोंति, नो परंपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारोंति, नो अणंतरखेत्तोगाढ पोग्गले अत्तमायाए आहारोंति, नो परंपरखेत्तोगाढे जान्महारा ग्रहण करी जे पुद्रगलेने आहरे छे ते हो हुं आत्महारी क्षेत्रावगाढ पुद्रगलेने आत्मद्वारा (प्र)
--

घ्यारूया- प्रज्ञप्तिः ॥¥८८॥	***************************************	प्रहण करी आहरे छे १ के अनंतरक्षेत्रावगाढ पुद्गलोने आत्मद्वारा ग्रहण करी आहरे छे ? के परंपर क्षेत्रावगाढ पुद्गलोने आत्मद्वारा प्रहण करी आहरे छे ? [उ०] हे गौतम ! आत्मशरीर क्षेत्रावगाढ पुद्गलोने आत्मद्वारा ग्रहण करी आहरे छे अने अनंतरक्षेत्रावगाढ पुद्गलोने आत्मद्वारा ग्रहण करी आहरता नथी, तेमज परंपर क्षेत्रावगाढ पुद्गलोने आत्मद्वारा ग्रहण करी आहरे छे अने अनंतरक्षेत्रावगाढ पुद्गलोने आत्मद्वारा ग्रहण करी आहरता नथी, तेमज परंपर क्षेत्रावगाढ पुद्गलोने आत्मद्वारा ग्रहण करी आहरे छे अने अनंतरक्षेत्रावगाढ पुद्गलोने आत्मद्वारा ग्रहण करी आहरता नथी, तेमज परंपर क्षेत्रावगाढ पुद्गलोने आत्मद्वारा ग्रहण करी आहरता नथी. जेम 'नैर- यिको पत्वे कछुं यावत् वैमानिको सुधी दंडक कहेवो. ॥ २५७ ॥ केवली णं भंते! आयाणेहिं जाणति पासति?, गोयमा! नो तिणट्ठे०। से केणट्ठेणं?, गोयमा! केवली णं पुरच्छि- मेणं मियंपि जाणइ अमियंपि जाणइ जाव निव्चुडे दंसणे केवलिस्स,से तेणट्ठेणं० गाहा-जीवाण सुष्टं दुक्खं जीवे जीवति तहेव भविया य । एगंतदुक्सववेयण अत्तमाया य केवली ॥ ५२ ॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! (सृझं २५८)॥ [प०] हे भगवन् ! केवलिओ इंद्रियद्वारा जाणे ? जूए ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. [प०] हे भगवन् ! ते शा हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! केवली पूर्वमां मितने पण जाणे अने अमितने पण जाणे यावत् केवलित्रुं दर्शन निष्टत छे, ते हेतुथी एम छे. गाथा:-जीवोनुं सुख दुःख, जीव, जीवनुं प्राणधारण. तेमज भव्यो, एकांत दु खवेदना, आत्मद्वारा पुद्गलोन्रे ग्रहण अने केवली (आटला विषय संबंघे आ दशम उद्देशामां विचार कर्यो छे.) हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे. एम कही यावत् विहरे छे. ॥ २५८ ॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीस्त्रना छट्ठा शतकमां दग्रमा डद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो. इति श्रीमद् भगवतीस्तूत्रे षष्ठ दातं समासम्	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	1189911
-----------------------------------	---	---	---	---------

∙याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४८९॥	॥ अथ सप्तम शतकम् ॥ उद्देशक १. आहार १ विरति २ थावर ३ जीवा ४ पक्खी ५ य आउ ६ अणगारे ७। छउमत्थ ८ असंवुड ९ अन्नउत्थि १० दस सत्तमंमि सए ॥ ५३ ॥ १ आहार, २ विरति, ३ खावर, ४ जीव, ५ पक्षी, ६ आयुष, ७ अनगार, ८ छन्नख, ९ असंवृत, अने १० अन्यतीर्थिक ए संबन्धे सातमा शतकमां दश उद्देशको छे. तेणं काछेणं तेणं समएणं जाव एवं वदासी-जीवे णं भंते ! कं समयमणाहारए भवइ ?, गोयमा ! पढमे समए सिय आहारए सिय अणाहारए बितिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए ततिए समए सिय आहारए सिय आहारए, चउत्थे समए नियमा आहारए, एवं दंडओ, जीवा य एगिंदिया य चउत्थे समए, सेसा ततिए समए ॥ जीवे णं भंते ! कं समयं सब्वप्पाहारए भवति ?, गोयमा ! पढमसमयोववन्नए वा चरम- समए भवत्थे वा एत्थ णं जीवे णं सब्वण्पाहारए भवइ, दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियाणं ॥ (सञ्च २५९) ॥ [प०] ने काले ते समये (गौतम इन्द्रभूति) अनगार ए प्रमाणे बोल्या हे भगवन ! जीव (प्रभवमां जतां) कये समये अनग-		शतके (ग्रः १ ३८९॥
	ूरि समए भवत्थं वा एत्थ ण जीवे ण सब्वप्पाहारए भवइ, दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियाणं ॥ (स्त्रं २५९) ॥ [प्र०] ते काले ते समये (गौतम इन्द्रभूति) अनगार ए प्रमाणे बोल्या हे भगवन् ! जीव (परभवमां जतां) कये समये अना- हारक (आहार नहि करनार) होय ? [उ०] हे गौतम ! (परभवमां) प्रथम समये जीव कदाच आहारक होय अने कदाच अनाहारक रू	- 96 Jr 95 - 35 - 95 - 95 - 95 - 95 - 95 - 95 -	

 श्वाख्या- प्रवृ चीथे समये अदराच आहारक होय अने कदाच अनाहारक होय, त्रीजे समये कदाच आहारक होय अने कदाच अनाहारक होय, परन्तु चीथे समये अवरुय आहारक होय, ए प्रमाणे (नारक इत्यादि चीवीस) दंडक (पाठ) कहेवा. सामान्य जीवो अने एकेन्द्रियो परन्तु चीथे समये आवरारक होय छे, अने (एकेन्द्रिय शिवाय) वाकीना जीवो त्रीजे समये आहारक होय छे. [प्र॰] हे भगवन ! जीव कये चोथे समये सौधी अल्प आहारवाळो होय छे ? [उ॰] हे गौतम ! उत्पन्न थतां प्रथम समये अने भवने (जीवितने) छेछे समये; आ समये जीव सोथी अल्प आहारवाळो होय छे. ए प्रमाणे वैमानिक सुधी दंडक कहेवो. ॥ २५९ ॥ किसंठिए णं भंते! लोए पन्नत्ते?, गोयमा! सुपइटटगसंठिए लोए पत्रत्ते, हेट्ठा विच्छिन्ने जाव उप्पि उड्ढंसुइंगागारसंठियंसि उप्पन्न- नाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली जीवेवि जाणइ पासइ अजीवेवि जाणइ पासइ तओ पच्छा सिउझति जाव अंतं करेइ ॥ (सूत्रं २६०) ॥ [प्र॰] हे भगवन ! लोकतुं संख्यान (आकार) केवा प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! लोक सुप्रतिष्ठक करावना आकार जेवो कहेले छे. ते नीचे विस्तीर्ण-पहोलो यावत् उपर र्ज्व (उभा) प्रदंगना आकारे संक्षित छे. नीचे विस्तीर्ण यावत् उपर र्ज्व प्रदंगना आकारे रहेला ते शाक्षत लोकमां उत्पन्न थयेला ज्ञान अने दर्शनने धारण करनार अहितं जिन केवल्ज्ञानी जीवोने पण जाणे छे अने जूए छे, अजीवोने पण जाणे छे अने जूए छे, त्यारपछी सिद्ध थाय छे, यावत् (सर्व दुःखोने) अंत करे छे. ॥२६०॥ समणोवासगरस णं भंते ! सामाइयकडस्स समणोचासए अच्छमाणरस तरस णं भंते ! किं ईरियावहिया 	१
--	---

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४९्१॥	किरिया कज़इ? संपराइया किरिया कज़ई ?, गोयमा ! समणोवासयस्स णं सामाइयकडस्स समणोवासए अच्छमाणस्म आया अहिंगरणीभवइ, आयाहिंगरणवत्तियं च णं तस्म नो ईरियावहिया किरिया कज़इ, संपराइया किरिया कज़इ, से तेणट्ठेणं जाव संपराइया ॥ (स्ट्रंत्र २६१) [प्र0] हे भगवन् ! अमणना उपाश्रयमां रहीने सामायिक करनार श्रमणोपासकने (आवकने) शुं ऐर्यापथिकी किया लागे के सांपरायिकी किया लागे ? [उ0] हे गौतम ! ऐर्यापधिकी क्रिया न लागे, पण साम्परायिकी क्रिया लागे. [प्र0] हे भगवन् ! आ हेतुथी यावत् सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ0] हे गौतम ! श्रमणना उपाश्रयमां रही सामायिक करनार श्रावकनो आत्मा अधिकरण (कषायना साधनो) युक्त छे, तेथी तेने आत्माना (पोताना) अधिकरण निमित्ते ऐर्यापथिकी क्रिया न लागे, पण सांपरायिकी क्रिया न लागे, पण सामपरायिकी क्रिया न लागे, पण सांपरायिकी क्रिया न लागे, ते हेतुथी यावत् सांपरायिकी क्रिया लागे छे. ॥ २६१ ॥ समणोवासगस्स णं भंते ! पुठ्वामेव तसपाणसमारभे पच्चक्खाए भवति, पुढविसमारभे अपचक्त्वाए भवइ,से य पुढविं खणमाणे अण्णयरं तसं पाणं विहिंसेज्ञा से णं भंते ! तं वयं अतिचरति?, णो तिणहे समहे, नो खल्ड से तस्स अतिवायाए आउट्टति । समणोवासयस्स णं भंते ! जं वयं अतिचरति?, णो तिणहे समहे, से य पुढविं खणमाणे अन्नयरस्स स्क्खस्स मूलं छिंदेज्ञा से णं भंते ! तं वयं अतिचरति !, णो तिणहे समहे, नो खल्ड नस्स अइवायाए आउट्टति ॥ (सूत्रं २६२) ॥ [प्र0] हे भगवन् ! जे श्रमणोपासकने पूर्वे त्रसजीवोना वधनुं प्रत्याज्यान होय अने पृथ्वीकायना वधनुं प्रत्याख्यान न होय,	ちょうちょうちょうちょうちょうちょうちょうちょうちょう	७ शतके उद्देशः १ ॥४९१॥
	ि नो खऌ नस्स अइवायाए आउद्दति ॥ (सूत्रं २६२) ॥ [प्र॰] हे भगवन् ! जे अमणोपासकने पूर्वे त्रसजीवोना वपतुं प्रत्याय्यान होय अने पृथ्वीकायना वधतुं प्रत्याख्यान न होय,	- 4CH - 4CH	

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४९२॥	भगाः भारत के ते (आवक) तना वय करवा अद्वात करता नया. [प्रण] ह मगवन् 1 अभणापासक पूच वनस्पातना वयतु प्रधाखपान कर्युं होय, ते प्रथिवीने खोदता कोई एक वृक्षना मूळने छेदी नांखे तो तेने ते वतनो अतिचार लागे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. कारण के ते तेना (वनस्पतिना) वध माटे प्रवृति करतो नथी. ॥ २६२ ॥ समणोवासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेमाणे किं लब्भइ ?, गोधमा ! समणोवासए णं तहारूवं समणं वा जाव पडिलाभेमाणे तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा समाहिं उप्पापति, समाहिकारए णं तमेव समाहिं पडिलभइ । समणोवासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा जाव पडिलाभेमाणे किं चयति ?, गोयमा ! जीवियं चयति दुचयं चयति दुक्करं करेति दुछहं लह ^इ बोहिं वुज्झइ तओ पच्छा सिज्झति जाव अंतं करेति (सूत्रं २६३) [प्र०] हे भगवन ! तेवा प्रकारना (उत्तम) अमण या बाह्यणने प्राप्तक (अचित्र–निर्जीव) अने एषणीय (दोपरहित उच्छवा	ولله فالله فالله فالله فالله فالله فالله فالله	७ शतके उदेशः १ ॥४९२॥
-----------------------------------	--	--	----------------------------

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४९३॥	पुठवप्पओगेणं अकम्मस्स गती पन्नायति ?, से जहानामए-केइ पुरिसे सुक्कं तुंबं निच्छिड्ढं निरुवहयंति आणुपुठ्वीए परिकम्मेमाणे २ दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ २ अट्टहिं महियालेवेहिं लिंपइ २ उण्हे दलयति भूतिं २ सुक्कं समाणं अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि पक्खिबेज्ञा, से नूणं गोयमा ! से तुंबे तेसिं अट्टण्हं महियालेवाणं गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुसंभारियत्ताए सलिलतलमतिवइत्ता अहे धर- णितलपइट्टाणे भवइ ?, हंता भवइ, अहे णं से तुंबे अट्टण्हं महियालेवाणं परिक्खएणं धरणितलमति- बइत्ता उप्पि सलिलतलपइट्टाणे भवइ ?, हंता भवइ, एवं खल्ठ गोयमा ! निस्संगयाए निरंगणयाए गइपरि- णामेणं अकम्मस्स गई पन्नायति । [प्र॰] हे भगवन् ! कर्मरहित जीवनी गति स्वीकाराय ? [उ॰] हे गौतम ! हा, स्वीकाराय. [प्र॰] हे भगवन् ! कर्मरहित कीवनी गति केवी रीते स्वीकाराय ? [उ॰] हे गौतम ! निःसंगपणाथी, नीरागणणाथी, गतिना परिणामथी, बंधननो छेद थवाथी,	🖇 उद्दे	शतके शः १ ९३॥
	्र जावना गात कवा रात खाकाराय १ [उ०] ह गातम । निःसगपणाथा, नारागपणाथा, गातना पारणामथा, बधनना छद थवाथा, ﴿ निरिधन थवाथी-कर्मरूप इन्धनथीमुक्त थवाथी अने पूर्वप्रयोगथी कर्मरहित जीवनी गति खीकाराय छे. [प्र०] हे भगवन् ! निःसं- र	36 4 X	

ब्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४९४॥	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	गपणाथी, नीरागपणाथी अने गतिना परिणामथी कर्मरहित जीवनी गति शी रीते स्वीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोई एक पुरुष छिद्र विनाना, नहि भांगेला सुका तुंबडाने ऋमपूर्वक अत्यंत संस्कार करीने डाम अने कुश बडे वींटे, त्यारपछी तेने माटीन। आठ लेपथी लींपे, लींपीने तापमां सुकवे, ज्यारे ते तुंबई अत्यंत सुकाय त्यारे ताग विनाना अने न तरी शकाय तेवा पुरुषप्रमाणथी अधिक (उंडा) पाणीमां तेने नांसे, हे गौतम ! खरेखर ते तुंबई माटीना आठ लेप वडे गुरु थयेछं होवाथी, भारे थवाथी अने अधिक बजनवाळं होवाथी पाणीना खरना तळीआने छोडी नीचे पृथिवीने तळीए जह वेसे ? हा वेसे. हवे ते माटीना आठ लेपनो क्षय थाय त्यारे ते तुंबई पृथिवीना तळने छोडी पाणीना तळ उपर आवीने रहे ? हा रहे. ए प्रमाणे हे गौतम ! निःसंगपणाथी, नीरागपणाथी अने गतिना परिणामथी कर्मरहित जीवनी गति स्वीकाराय छे. कहन्नं भंते ! बंधणछेदणयाए अकम्मस्स गई पन्नत्ता ?, गोयमा ! से जहानामए-कलसिंबलियाइ वा सुग्गसिंबलियाइ वा माससिंबलियाइ वा सिंबलिसिंबलियाइ वा एरंडमिंजियाइ वा उण्हे दिन्ना सुका समाणी फुडित्ता णं एगंतमंतं गच्छइ, एवं खलु गोयमा ! ० । कहन्नं भंते ! निरंघणयाए अकम्मस्स गती ?, गोयमा ! से जहानामए-धूमस्स इंधणविप्पमुक्कस्स उद्हं वीससाए निव्वाघाएणं, गती पचत्तति, एवं खलु गोयमा ! ० । कहन्नं भंते ! पुञ्वप्रओगेणं अकम्मस्स गती पत्रत्ता ?, गोयमा ! का त्वता ?, गोयमा ! से जहानामए-कंडस्स कोदंडविप्पमुक्कस्स लक्ष्याभिमुही निव्वाघाएणं गती पवत्तइ, एवं खलु गोयमा ! नीसंंगया- ए निरंगणयाए जाव पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णत्ता ॥ (सुत्रं २६४) ॥	والمع والمع والمع والمراج والمراج والمراج	७ शतके उद्देशः १ ॥४९ २ ॥
-----------------------------------	---	---	---	---------------------------------------

.

, , ,	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	[मण] र पगपप : पयपना छद् पपाया पनपहित जापना पति सा सरिताराप : [60] र पातप : जन पत् प् णानी शिंग, मगनी शिंग, अडदनी शिंग, सिंबलीनी (शेमळानी) शिंग अने एरंडानुं फल तडके मूक्या होय अने सुकाय त्यारे ते फुटीने (तेमांना बीज) पृथिवीनी एक बाजुए जाय; ए प्रमाणे हे गौतम! बंधननो छेद थवाथी कर्मरहित जीवनी गति स्वीकाराय छे. [प०] हे भगवन् ! निरिंधन (कर्मरूप इन्धनथी मुक्त) थवाथी कर्मरहित जीवनी गति शी रीते स्वीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! इन्धनथी छटेला धूमनी गति स्वाभाविक रीते प्रतिबन्ध शिवाय उंचे प्रवर्ते छे. ए प्रमाणे हे गौतम ! [निरिंधनपणाथी-कर्मरूप इन्धनथी मुक्त थवाथी कर्मरहित जीवनी गति प्रवर्ते छे.] [प०] हे भगवन् ! पूर्वना प्रयोगथी कर्मरहित जीवनी गति शी रीते	36 \$ 36 \$ 36	७ शतके उद्देशः १ ॥४९५॥
	8		2	

अवस्थि। के दुःखो जाव दुःखथा व्याप्त होय, पण दुःखराहत जाव दुःखथा व्याप्त न होय. [प्रव] इ मगवन् ! दुःखा नारक दुःखया जात के प्र प्रज्ञप्तिः 🚺 होय के अदुःखी नारक दुःखथी व्याप्त होय ? [उव] हे गौतम! दुःखी नारक दुःखथी व्याप्त होय, पण दुःखरहित नारक दुःखयी 💢 उद्देव	शतके शः १ ९६॥
---	---------------------

ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४९७॥	रायिकी किया लागे छे, ते उपयोगरहित साधु सत्र विरुद्ध वर्ते छे ते माटे हे गौतम ! तेने सांपरायिकी क्रिया लागे छे. ॥२६६॥ अह भंते! सइंगालस्स सधूमस्स संजोयणादोसदुहस्स पाणभोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते?, गोयमा! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासुएसणिज़ं असणपाण ४ पडिगाहित्ता मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने आहारं आहारेति एस णं गोयमा ! सइंगाले पाणभोयणे, जे णं निग्गंथे वा निगंथी वा फासुएसणिज़ं अमणपाण ४ पडिगाहित्ता महया २ अप्पत्तियकोहकिलामं करेमाणे आहारमाहारेइ एस णं गोयमा ! सधूमे पाणभोयणे, जे णं नि- गंथे वा २ जाव पडिगाहेत्ता गुणुप्पायणहेउं अन्नदव्वेण सद्धिं संजोएत्ता आहारमाहारेइ एस णं गोयमा ! सं जोयणादोसदुट्ठे पाणभोयणे, एस णं गोयमा ! सइंगालस्स सधूमस्स संजोयणादोसदुट्टस्स पाणभोयणस्स	के उद्देशः १ के ॥४९७॥ के के के के के के के के के के के क
		ちゃちゃち

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४९८॥	गौतम ! कोइ निर्धन्थ-साधु या साध्वी प्रासुक अने एषणीय अज्ञन, पान, खादिम अने खादिम आहारने ग्रहण करी मूर्च्छित, गृद्ध, ग्रथित अने आसक थइने आहार करे तो हे गौतम ! ए अंगारदोषसहित पानभोजन कहेवाय. वळी जे जे कोइ साधु या साध्वी पासुक एषणीय अज्ञन, पान, खादिम अने खादिम आहारने ग्रहण करी अत्यंत अप्रीतिर्ध्वक क्रोधथी खिन्न थइने आहार करे तो हे गौतम ! ए ध्रमदोषसहित पानभोजन कहेवाय. कोइ साधु या साध्वी यावत् [आहारने] ग्रहण करीने ग्रुण (स्वाद) उत्पन्न करवा माटे बीजा पदार्थ साथे संयोग करीने आहार करे तो हे गौतम ! ए संयोजनादोषवडे दुष्ट पानभोजन कहेवाय. हे गौतम ! ए प्रकारे अंगारदोष, धूमदोष अने संयोजनादोषथी दुष्ट पानभोजननो अर्थ कह्यो. [प्र०] हे भगवन् ! हवे अंगारदोषरहित, धूमदोषरहित अने संयोजनादोषरहित पानभोजननो ज्ञो अर्थ कह्यो छे? [उ०] हे गौतम ? जे कोई निर्ग्रन्थ (के निर्धन्थी) यावत् (आहारने) ग्रहण करीने मर्च्छारहित यावत आहार करे. तो हे गौतम ! अंगारदोषरहित पानभोजन कहेवाय. वळी जे कोइ निर्ग्रन्थ के निर्धन्थी यावत् ग्रहण करीने	
	करीने अत्यन्त अप्रीतिपूर्वक यावत् आहार न करे, हे गौतम ! ए धूमदोषरहित पानभोजन कहेवाय. जे कोइ निर्प्रन्थ के निर्प्रन्थी यावत् ग्रहण करीने जेवो प्राप्त थाय तेवोज आहार करे (परन्तु खाद माटे बीजा साथे संयोग न करे,) हे मौतम ! ए संयोजनादोष-	**

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥४९९॥	दरिए बत्तीसं कुक्कुडिअंड्गमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे पमाणप्पत्ते, एत्तो एकेणवि गासेणं ऊणगं आहार-	अन्द्र अन्द्र उद्देशः १ ॥४९९॥
	दारए बत्तास कुक्कु।डअडगमत्त कवल आहारमाहारमाण पमाणपत्त, एता एकणाव गासण ऊणग आहार- माद्दारेमाणे समणे निग्गंथे नो पकामरसभोई इति वत्तव्वं सिया, एस णं गोयमा! खेत्तातिकंतस्स कालातिकं- तस्स मग्गातिकंतस्स पमाणातिकंतस्स पाणभोयणस्स अट्ठे पन्नत्ते ॥ (मूत्रं २६८) ॥	27 2 2 4 2 4 4 0 4 4 0 4 4 0 4 4 0 4 4 0 4 4 0 4 1 4 1

७ शतके

उद्देशः १

पिन्धाः प्रश्नाः प्रश्नासिः ॥भ००॥ भित्रभा महाप्ते कोई साधु या साध्वी प्रायुक अने एषणीय अञ्चन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारने सूर्य उग्या पहेला ग्रहण करी स्वर्थ उग्या पछी खाय, हे गौतम ! ए क्षेत्रातिकान्त पानभोजन कहेवाय. कोह साधु या साध्वी यावत् स्वादिम आहारने पहेला प्रहोर्सा ग्रहण करी छेछा पहोर मुधी रास्तीने पछी तेनो आहार करे, हे गौतम ! आ कालतिकान्त पानभोजन कहेवाय. कोह साधु पा साध्वी यावत् स्वादिम आहारने ग्रहण करीने अर्धयोजननी मर्यादाने ओळंगी पछी खाय, हे गौतम ! ए मार्गातिकान्त पानभोजन कहेवाय. कोह साधु के साध्वी प्रायुक अने एषणीय यावत् स्वादिम आहारने ग्रहण करीने कुंकडीना इंडा प्रमाण वत्रीभ्यी अधिक कवल खाय, हे गौतम ! ए प्रमाणातिकान्त पानभोजन कहेवाय, कुंकडीना इंडाप्रमाण मात्र आठ कवलनो आहार करनार साधु अल्पाहारी कहेवाय. कुंकडीना इंडाग्रमाण मात्र वार कवलनो आहार करनार साधुने कांहक न्यून अर्थ उन्तोदरिका कहेवाय. कुंक डीना इंडाप्रमाण मात्र सोल कोळीआनो आहार करनार साधु दिभागप्राप्त—अर्थाहारी कहेवाय. कुंकडीना इंडाप्रमाण मात्र चोवीस कवलना आहार करनार साधुने उन्नोदरिका कहेवाय. कुंकडीना इंडाप्रमाण मात्र वत्रीक्ष कवलनो आहार करनार साधु भाषासर भोजन करनार कहेवाय. तेथी एक पण कवल ओछो आहार करनार साधु 'प्रकामरसमोजी-अत्यन्त मधुरादि रसनो मोक्ता' ए प्रमाणे न कही शकाय. हे गौतम ! ए प्रमाणो क्षेत्रातिकान्त, कालातिकान्त, मार्गातिकान्त अने प्रमाणातिकान्त पानभोजननो अर्थ कह्यो छे. ॥ २६८ ॥ अह भंते ! सत्थातीयस्स सत्थपरिणामियस्स एसियस्स वेसियस्स समुदाणियस्स पाणभोयणस्स के अट्टे

घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५०१॥	पन्नत्ते ?, गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा निक्षित्तसत्थमुसले ववगयमालावन्नगविलेवणे ववगयचुः यचइयचत्तदेहं जीवविष्पजढं अकयमकारियमसंकष्पियमणाहूयमकीयकडमणुद्दिह नवकोडीपरिसुद्धं दसदो- सविष्पमुक्तं उग्गमुप्पायणेसणासुपरिसुद्धं वीतिंगालं बीतधूमं संजोयणादोसविष्पमुक्तं असुरसुरं अचवचवं अ- दुयमविलंबियं अपरिसाडीं अक्खोवंजणवणाणुल्ठेवणभूयं संयमजायामायावत्तिय संजमभारवहणहयाए विलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं आहारमाहारेति एस णं गोयमा ! सत्थातीयस्स सत्थपरिणामियस्स जाव पाणभोयणस्म अयमट्टे पन्नत्ते । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ (सूत्रं २६९) ॥ सत्तमसए पढमो उद्देसो संमत्तो ७-१ ॥ [प्र॰] हे भगवन् ! श्रह्यातीत (अग्न वगेरे शस्त्रथी उतरेले) शस्तपरिणमित (अग्न वगेरे शस्त्रथी परिणाम पामेलो-अचित्त करायले), एपित (एषणा दोपथी रहित), च्येपित (विविध या विशेषतः एषणादोपथी रहित) साम्रुदायिक-मिक्षारूप पानभोजनने यो अर्थ कह्यो छे ? [उ॰] हे गौतम ! कोइ साधु या साध्वी जे शस्त्र अने मुजलादिरहित छे, तेम पुष्पमाला अने चन्दनना विलेपन रहित छे तेओ क्रम्यादि जन्तु रहित, निर्जीव, (साधुने माटे) नहि करेल, नहि करावेल, नहि संकल्पेल, अनाहूत-आमःत्रण रहित, नहि खरीदेल, औदेशिक रहित, नवकोटि विश्रद्ध, शंकितादि दश्वदोप रहित, उद्गम अने उत्पादनैपणाना दोपथी विश्रद्ध, अंगारदो- पराहत, धृमदोपरहित, संयोजनादोपरहित, सुरसुरके चपचप शब्द रहितपणे, बहु उतावल्यी नहि तेम बहु धीमेथी नहि, (आहारना)	なたちまで、 の 和市市 ? の 和市市 ? 1140?11
	ू पराहत, धुमदापराहत, संयोजनादापराहत, सुरसुरक चपचप शब्द राहतपण, बहु उतावळ्या नाह तम बहु यामया माह, (जाहारमा) ते कोइ भागने छोडचा शिवाय, गाडानी धरीना मेलनी पेठे के व्रण उपरना लेपनी पेठे, केवळ संयमना निर्वाहने माटे, संयमना र	5°

घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५०२॥	भारने वहन करवा अर्थे जेम साप बिलमां पैसे तेम पोते आहार करे, हे गौतम ! ए शस्तातीत, शस्वपरिणामित यावत् पानभोजननो अर्थ कळो छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे, एम कही गौतम ! यावत् विचरे छे. ॥ २६८ ॥ भगवत् सुधर्मस्तामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीस्त्रना सातना शतकमां प्रथम उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो. उद्देशक २. से नूणं भंते ! सब्बपाणेहिं सब्बभूएहिं सब्बजीवेहिं सब्बसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच- क्खायं भवति ? दुपचक्खायं भवति ?, गोयमा ! सब्बपाणेहिं जाव सब्बसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच- क्खायं भवति ? दुपचक्खायं भवति ?, गोयमा ! सब्बपाणेहिं जाव सब्बसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमा- णस्स सिय सुपचक्खायं भवति ?, गोयमा ! सब्वपाणेहिं जाव सब्बसत्तेहिं पचक्खायमिति वदमा- णस्स सिय सुपचक्खायं भवति ?, गोयमा ! जस्स णं सब्वपाणेहिं जाव सब्बसत्तेहिं पचक्खायमिति वदमा- णस्स णो एवं अभिसमज्ञागयं भवति इमे जीवा इमे अजीवा इमे तसा इमे थावरा तस्स णं सब्वपाणेहिं जाव सब्बसत्तेहिं पचक्खायमिति वदमाणस्स नो सुपचक्खायं भवति, दुपचक्खायं भवति, एवं खल्छ से दु- पचक्खाई सब्वपाणेहिं जाव सब्बसत्तेहिं पचक्खायमिति वदमाणो नो सर्च भासं भासइ, मोसं भास एवं खल्ढ से मुसावाई सब्बपाणेहिं जाब सब्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं असंजगविरयपडिहयपचक्खाय- पावकम्मे सकिरिए असंबुडे एगंतदंडे एगंतवाछे यावि भवति, जस्स णं सब्वपाणेहिं जाव सब्यसत्तेहिं पच	८०२८ उदेशः २ उदेशः २ ॥५०२॥	
		<u>S</u>	

ब्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५०३॥	0 46 96 46 96 46 96 96 96 96 96 96 96 96 96 96 96 96 96	क्खायमिति वदमाणस्स एवं अभिसमन्नागयं भवइइमे जीवा इमें अजीवा इमे तसा इमे थावरा, तस्स णं सब्वपाणेहिं जाव सब्वसत्तेहिं पचक्खायमिति वदमाणस्स खुपचक्खायं भवति, नो दुपचक्खायं भवति, एवं खलु से सुपचचाई सब्वपाणेहिं जाव सब्वसत्तेहिं पचक्खायमिति वयमाणे सचं भासं भासइ, नो मोसं भासं भासइ, एवं खलु से सचचादी सब्वपाणेहिं जाव सब्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं संजयविरयपडिहयपचक्खा-	र्भ ७ ७ शतके ४ उद्देशः २ ४ ॥५०३॥
	Charles and a service and and and and	यपावर्कम्मे अकिरिए संबुडे एगंतपंडिए यावि भवति, से तेणहेणं गोममा ! एवं बुचइ जाव सिघ दुपचक्खायं भवति ॥ (सूत्रं २७०) ॥ [प्र0] हे भगवन् ! सर्व प्राणोमां, सर्व भूतोमां जीवोमां अने सर्व सच्वोमां में (हिंसानुं) प्रत्याख्यान कर्युं छे' ए प्रमाणे बोल- नारने सुप्रत्याख्यान थाय के दुष्प्रत्याख्यान थाय ? [उ०] हे गौतम ! सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सच्वोमां प्रत्याख्यान कर्युं छे' ए प्रमाणे बोलनारने कदाच सुप्रत्याख्यान थाय अने कदाच दुष्प्रत्यख्यान थाय. [प्र0] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के-सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्वोमां थावत् कदाच दुष्प्रत्याख्यान थाय ? [उ०] हे गौतम ! सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्युं छे ए प्रमाणे बोलनार जेने आवा प्रकारनुं ज्ञान न होय के "आ जीवो छे, आ अजीवो छे, आ त्रसो छे, आ स्थावरो छे'' तेने- 'सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्युं छे' ए प्रमाणे कहेनारने-सुप्रत्याख्यान न थाय, पण दुष्प्रत्याख्यान थाय. ए रीते खरेखर ते दुष्प्रत्याख्यानी 'सर्व प्राणिओमां यावत् सर्व सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्युं छे' ए प्रमाणे बोलतो नथी, असत्य भाषा बोले छे. ए प्रमाणे ते मुषावादी सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां प्रत्वाक्त्य भाषा बोलतो नथी, असत्य भाषा बोले छे. ए प्रमाणे ते मुषावादी सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां प्रत्योक्त्यान कर्युं छे असंयत-संयमरहित, अविरत-	トシャ ちたちをひたちをや

घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५०४॥	* *	विरतिरहित, जेणे थापकर्मनो त्याग के प्रत्याख्यान कर्यु नथी एवो, सक्रिय कर्मबन्धसहित, संवररहित, एकान्त दण्ड एटले हिंसा करनार अने एकान्त अज्ञ छे. सर्व प्राणोमां यावत 'सर्व सत्वोमां प्रत्याख्यान कर्यु छे' ए प्रमाणे बोलनार जेने आवुं ज्ञान थयुं होय के ''आ जीवो छे, आ अजीवो छे, आ त्रसो छे, आ स्थावरो छे,''-तेने 'सर्व प्राणोमां यावत सर्व सत्वोमां प्रत्याख्यान कर्यु छे' ए प्रमाणे बोलनारने-सुप्रत्याख्यान थाय, दुष्प्रत्याख्यान न थाय. ए प्रमाणे खरेखर ते सुप्रत्याख्यानी 'सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्वोमां प्रत्याख्यान कर्यु छे' एम बोलतो सत्य भाषा बोले छे, मुषा भाषा बोलतो नथी. ए रीते ते सुप्रत्याख्यानी, सत्यभाषी, सर्व प्राणोमां प्रत्याख्यान कर्यु छे' एम बोलतो सत्य भाषा बोले छे, मुषा भाषा बोलतो नथी. ए रीते ते सुप्रत्याख्यानी, सत्यभाषी, सर्व प्राणोमां पावत् सर्व सत्वोमां त्रिविधे त्रिविधे संयत, विरति युक्त, जेणे पापकर्मनो धात ने प्रत्याख्यान कर्यु छे एवो, अकिय-कर्मबंधरहित, संवरयुक्त एकान्त पंडित पण छे. हे गौतम ! ते हेतुथी एम कहेवाय छे के यावत् कदाच दुष्प्रत्याख्यान थाय. ॥ २७० ॥ कतिविहि णं भंते ! पच्चकखाणे पत्रत्ते ?, गोयमा ! दुविहे पच्चक्खाणे पन्नत्ते, तंजहा-मूलगुणपच्चक्खाणे य उत्तरगुणपच्चक्खाणे य । मूलगुणपच्चक्खाणे पत्र संते ! कतिविहे पन्नत्ते ?, गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा-म्यूलगुणपच्चक्खाणे य उत्तरगुणपच्चक्खाणे य देसमूलगुणपच्चक्खाणे य, सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते, तंजहा–सच्व मूलगुणपच्चक्खाणे य देसमूलगुणपच्चक्खाणे य, सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे पां भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ?, गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा–सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं जाव सव्वाओ परिग्गहाओ चेरमणं । देसमूलगुण- पचक्खाणे णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ?, गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा–थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं जाव थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणां । उत्तरगुणपचक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ?, गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा–सव्युत्तरगुणपचखाणे य देसुत्तरगुणपचकखाणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ?, गोयमा ! कुविहे पन्नते, तंजहा–सव्युत्तरगुणपच खाणे य देसुत्तरगुणपचक्खाणे य, सत्व्युत्तरगुणपचक्खाणे णं भंते ! कतिविहे		७ शतके उदेशः २ ॥५०४॥	
-----------------------------------	-----	--	--	----------------------------	--

पन्नत्ते ?, गोयमा ! दसविहे पन्नत्ते, तंजहा-अणागय १ मइकंतं २ कोडीसहियं ३ नियंटियं ४ चेव । सागार ५ मणागारं ६ परिमाणकडं ७ निरवसेसं ८ ॥५४॥ साकेयं ९ चेव अद्धाए १० पचकखाणं भवे दसहा । देसुत्तरगुणपचखाणे णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ?, गोयमा ! रुत्तविहे पन्नत्ते, तंजहा-दिसिव्वयं १ उवभोगप- रीभोगपरिमाणं २ अनत्यदंडवेरमणं ३ सामाइयं ४ देसावगासियं ५ पोसहोववासो ६ अतिहिसंविभागो ७ अपच्छिममारणंतियसंछेहणाध्र्सणाराहणता (सूत्रं २७१) ॥ [भ०] हे भगवन् ! केटला प्रकारे पचक्खाण कद्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारे पचक्खाण कढ्युं छे. ते आ प्रकारे-मूल- गुणपचक्खाण अने उत्तरग्रुणयक्खाण. [भ०] हे भगवन् ! स्लग्रुणपचक्खाण केटला प्रकारत्तुं कढ्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! मूलग्रुण प्रत्याख्यान वे प्रकारत्तुं कढ्युं छे, ते आ प्रकारे-मर्वमूलग्रुणप्रत्याख्यान अने देशमूलग्रुणप्रत्याख्यान. [भ०] हे भगवन् ! सर्वमूलग्रुण प्रत्याख्यान वे प्रकार कढ्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वमूलग्रुणप्रत्याख्यान पांच प्रकारे कढ्युं छे ? ते आ प्रमाणे-सर्व प्राणति- पातथी विराम पामवो, यावत् सर्व मुपावादथी विराम पामवो. [भ०] हे भगवन् ! देशमूलग्रुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कढ्युं छे? [उ०] हे गौतम ! सर्वमूलग्रुण विरमण. [भ०] हे भगवन् ! उत्तरग्रुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कर्यु छे? [उ०] हे गौतम ! चत्रकरा कर्युं छे? विरमण. [भ०] हे भगवन् ! उत्तरग्रुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कर्युं छे? (उ०] हे गौतम ! चत्तरग्रुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कर्युं छे? विरमण. [भ०] हे भगवन् ! उत्तरग्रुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारेकर्युं छे? [उ०] हे गौतम ! डत्तरग्रुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कर्युं छे? व आ प्रमाणे-सर्वोत्तरग्रुणप्रत्याख्यान अने देशोत्तरग्रुणप्रत्याख्यान. [भ०] हे भगवन् ! सर्वोत्तरग्रुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कर्यु छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वोत्तरग्रुणप्रत्याख्यान दन्न प्रकारे कर्खु छे? ते आ प्रमाणे-१ अनागत, २ अतिकान्त, ३ कोटिसहित, ४		२
ા છે: Lુઝુષ્] દુગાલન • લવા પરસુપત્ર ત્યા પ્લાન પ્ય ત્ર આરં વૃદ્ધુ છે; લ આ ત્રમાથ−૬ અના ગલ, ૬ આલંગોન્લ, ૨ બોટિસાદ્લ, ૪ તે	S.	

≈याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥ ५ ०६॥	÷ \$	नियश्वित, ५ साकारं, ६ अनाकारं, ७ कृतपरिमाण, ८ निरवशेप, ९ संकेत, १० अद्धा प्रत्याख्यान. ए रीते प्रत्याख्यान दश प्रकारं कह्युं छे. [प्र०] हे भगवन् ! देशोत्तरगुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! देशोत्तरगुणप्रत्याख्यान सात प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे-१ दिग्वत, २ उपभोगपरिभोगपरिमाण, ३ अनर्थदंडविरमण, ४ साम।यिक, ५ देशावकाशिक, ६ पोपधोप- वास, ७ अतिथिसंविभाग अने अपश्चिममारणान्तिक-संलेखणाजोपणाऽऽराधना. ॥ २७१ ॥ जीवा णं भंते ! किं मूल्रगुणपत्त्वक्खाणी उत्तरगुणपत्त्वक्खाणी अपत्तक्खाणी ?, गोयमा ! जीवा मूल्रगुणपत्त्व- कखाणीवि उत्तरगुणपत्त्वक्खाणीवि अपत्वक्खाणी उत्तरगुणपत्त्वक्खाणी अपत्तक्खाणी ?, गोयमा ! जीवा मूल्रगुणपत्त्व- क्खाणीवि उत्तरगुणपत्त्वक्खाणी व जत्तरगुणपत्त्वक्खाणी, अपत्तक्खाणी, एवं जाव चउरिंदिया, पंचिंदिय- तिरिक्खजोणिया मणुस्सा घ जहा जीवा, वाणमंहरजोहसियवेमाणिया जहा नेरहया ॥ एएसि णं भंते ! मूलगुणपत्त्वक्खाणी उत्तरगुणपत्त्वक्खाणी, जो उत्तरगुणपत्त्वक्खाणी, अपत्त्वक्खाणी, एवं जाव चउरिंदिया, पंचिंदिय- तिरिक्खजोणिया मणुस्सा घ जहा जीवा, वाणमंहरजोहसियवेमाणिया जहा नेरहया ॥ एएसि णं भंते ! मूलगुणपत्त्वक्खाणी उत्तरगुणपत्त्वक्खाणी अपत्तक्खाणी भसंखेज्जगुणा, अपत्तक्खाणी अनंतगुणा । [प्र०] हे भगवन् ! जीवो ग्रं मूलगुणपत्त्वक्खाणी, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी के अप्रत्याख्यानी छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो मूलगुणप्रत्याख्यानी पण छे, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी के अप्रत्याख्यानी छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो मूलगुणप्रत्याख्यानी पण छे, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी नथी, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी के श्वत्याख्यानी पण छे, उत्तरगुणप्रिण्याक्ते मूलगुणप्रत्याख्यानी नथी, उत्तराण्यात्याख्यानी नथी, पण अप्रत्याख्यानी छे, ए प्रमाणे यावत् चउरिन्द्रिय जीवो जाणवा. पंत्रेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्यो जेम जीवो कह्या तेम जाणवा. वानमंतर, ज्योतिष्क	みのみ ちょう ちょう ひょう ちょう ちょう	७ शतके उद्देशः २ ॥५०६॥
---	---------	--	-------------------------	------------------------------

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५०७॥	अने वैमानिक देवो जेम नारको कह्या तेम जाणवा. [प्र॰] हे भगवन् ! मूलगुणप्रत्याख्यानी, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी, जेतरगुणप्रत्या ख्यानी अने अप्रत्याख्यानी जीवोमां कोण कोनाथी यावत् विशेषाधिक छे ? [उ॰] हे गौतम ! मूलगुणप्रत्याख्यानी जीवो सौथी थोडा छे, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे, अने अप्रत्याख्यानी अनंतगुण छे. एएसि णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा, गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा पंचेंदियतिरिक्खजोणिया मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी असंखेजजुणा, अपचक्खाणी असंखिज्जगुणा। एएसि णं भंते! मणुस्सार्ण मुलगुणपच्चक्खाणीणं॰पुच्छा, गोयमा! सव्वत्थोवा मणुस्सा मूलगुणपचक्खाणी, उत्तरगुणपचक्खाणी संखेज्जगुणा, अपचक्खाणी असंखेजगुणा। जीवा णं भंते ! किं सव्वमूलगुणपचक्खाणी देसमूलगुणपचक्खाणी संखेज्जगुणा, अपचक्खाणी असंखेजगुणा। जीवा णं भंते ! किं सव्वमूलगुणपचक्खाणी देसमूलगुणपचक्खाखी अपचक्खाणी?, गोयमा ! जीवा सव्वमूलगुणपचक्खाणी देसमूलगुणपचक्खाणी, अपचक्खाणीवि । नेरइयाणं पुच्छा, गोयमा ! नेरइया नो सव्वमूलगुणपचक्खाणी, नो देसमूलगुणपचक्खाणी, अपचक्खाणीति । नेरइयाणं पुच्छा, गोयमा ! नेरइया नो सव्वमूलगुणपचक्खाणी, नो देसमूलगुणपचक्खाणी, अपचक्खाणी, एवं जाव चउरिंदिया । पंचिंदि- यतिरिक्खपुच्छा, गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्ख॰ नो सव्वमूलगुणपचक्खाणी, देसमूलगुणपचक्खाणी अपचक्खाणी अपचक्खाणी (प्र॰] हे भगवन् ! ए (पूर्वे कहेल) जीवोमां पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोनो प्रक्ष. [उ॰] हे गौतम ! मूलगुणप्रत्याख्यानी पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवो संवीथो थोडा छे, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे, अने अप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे. [प्र॰] हे भगवन् ! ए जीवोमां मूलगुप्रप्रत्याख्यानी वगेरे मनुष्योगेया प्रक्ष. [उ॰] हे गौतम ! मूलगुणे सर्वर्या थेडा छे, उत्तरगुणम-	x & x & c & c & c & c & c & c & c & c &	७ शतके उद्देशः २ ॥५०७॥	
		S)		

ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५०८॥	به ورجه و به و به و به و به و به و به به به به به و به و	त्याख्यानी छे, अने अप्रत्याख्यानी पण छे. [प्र०] नारकोनो प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! नारको सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी नथी, देश- मूलगुणप्रत्याख्यानी नथी, पण अप्रत्याख्यानी छे. [प्र०] पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोनो प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पंचेन्द्रियतिर्यंचो सर्व- मूलगुणप्रत्यानी नथी, पण देशमूलगुणप्रत्याख्यानी छे अने अप्रत्याख्यानी छे. जेम जीवो कह्या तेम मनुष्यो जाणवा. जेम नारको कह्या तेम वानमंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिको जाणवा.	ちんものな ちんち ちんな かん ちんに ちん ちん ちん	७ शतके उद्देशः २ ॥५०८॥
		जया ?, गोयमा ! जीवा संजयावि असंजयावि संजयासंजयावि तिन्निवि, एवं जहेव पन्नवणाए तहेव भाणि-	ž	

घ्याख्या-	[म॰] हे भगवन् ! सर्वमूलगुणप्रत्याख्याती, देशमुलगुणप्रत्याख्यानी अने अप्रत्याख्यानी जीवोमां कोण कोनार्था यावत् विशे-	いきょうち まちま ひまち ひまう ちょうちょう ちょうちょう	७ शतके
प्रज्ञप्तिः	षाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! सांमुलगुणप्रत्याख्यानी जीवो सर्वथी थोडा छे, देशमुलगुणप्रत्याख्यानी जीवो असंख्यगुण छे, अने		उद्देशः २
॥५०९॥	अप्रत्याख्यानी अनंतगुण छे. ए प्रमाणे त्रणे (जीव, पंचेन्द्रिय तिर्यंच अने मनप्यना) अल्यबह वो प्रथम दंडकमां (स० ११, १२,		॥५०९॥

प्रज्ञप्तिः 💡 एएसि णं भंते! जीवाणं पच्चकखाणीणं जाव विसेसाहिया वा?,गोयमा! सट्वत्थोवा जीवा पच्चकखाणी,पचकखाणा- 💃 उदेव	शतके शः २ १०॥
--	---------------------

ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५११॥	छे एम कही गौतम यावत् विचरे छे. ॥ २७३ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसत्रना सातमा शतकमां बीजा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो. अस्टिः अस्टिः अस्टिः अस्टिः स्ट उद्देशक ३. बणस्सइकाइया णं भंते ! किंकालं सव्वप्पाहारगा वा मव्वमहाहारगा वा भवंति १, गोयमा ! पाउसवरि- सारत्तेसु णं एत्थ णं वणस्सइकाइया सव्वमहाहारगा भवंति, तदाणंतरं च णं सरए तयाणंतरं हेमंते तदा-	क उद्देशः ३ 1.4११॥ क क क क क क क क क क क क क क
-----------------------------------	---	---

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५१२॥	ママーキャーシューマート アンドアンドアンドアンテレーテレー	छु ज पहुंच डासजजाणिया जावा च पार्णला व पंगरसंइमाइपतार पत्ति पाठकपति पंपल पंपति उपपतात, एवं खलु गोयमा ! गिम्हासु बहवे वणस्सइकाइया पत्तिया पुष्किया जाव चिंठति ॥ (सूत्रं २७४) ॥ [प०] हे भगवन् ! वनस्पतिकायिको कया काले सौथी अल्पआहारवाळा होय छे अने कया काले सौथी महाआहारवाळा होय छे ? [उ०] हे गौतम ! प्राव्टड् ऋतुमां-श्रावण भादरवा मासमां, अने वर्षा ऋतुमां-आसो कारतक मासमां वनस्पतिकायिक जीवो सौथी महाआहारवाळा होय छे, त्यारषळी शरद् ऋतुमां, त्यारपछी हेमंत ऋतुमां, त्यारपछी वसंत ऋतुमां अने त्यारबाद श्रीष्म ऋतुमां (अनुक्रमे) अल्प आहारवाळा होय छे. ग्रीष्म ऋतुमां सर्वथी अल्पआहारवाळा होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! जो ग्रीष्म ऋतुमां	لاسط حارمه جارية حارمة حارجة حارجة حارية	
-----------------------------------	--------------------------------	--	--	--

द्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५१३॥	आहारेंति तम्हा परिणामेंति,कंदा कंदजीवफुडा मूलजीवपडिवंद्धा तम्हा आहारेन्ति तम्हा परिणामेन्ति,एवं जाव बीया बीयजीवफुडा फलजीवपडिवद्धा तम्हा आहारेन्ति तम्हा परिणामेन्ति ॥ (सूत्रं २७५) ॥ [प्र0] हे भगवन् ! ग्रुं मूले मूलना जीवर्थी व्याप्त छे, कंदो कन्दना जीवर्थी व्याप्त छे, यावत् बीजो बीजना जीवर्थी व्याप्त [उ0] हे गौतम ! मूलो मूलना जीवर्थी व्याप्त छे, यावत् बीजो बीजना जीवर्थी व्याप्त छे, यावत् बीजो बीजना जीवर्थी व्याप्त [उ0] हे गौतम ! मूलो मूलना जीवर्थी व्याप्त छे, यावत् बीजो बीजना जीवर्थी व्याप्त छे, यावत् बीजो बीजना जीवर्थी व्याप्त [उ0] हे गौतम ! मूलो मूलना जीवर्थी व्याप्त छे, यावत् बीजो बीजना जीवर्थी व्याप्त छे, यावत् बीजो बीजना जीवर्थी मूलना जीवर्थी व्याप्त छे, यावत् बीजो बीजना जीवर्थी व्याप्त छे, तो वनस्पतिकायिक जीवो केवी रीते आहार करे. अने केवी रीते परिण- मावे ? [उ0] हे गौतम ! मूलो मूलना जीवर्थी व्याप्त छे, अने ते पृथिवीना जीव साथे संबद्ध (जोडायेल्य) छे, माटे वनस्पतिकायिक जीवो आहार करे छे, ए ममाणे यावत् बीजो बीजना जीवर्थी व्याप्त छे, अने ते फलना जीव साथे संबद्ध छे, माटे वे आहार करे छे, अने तेने परिणमावे छे. ॥ २७५ ॥ अह भंते ! आऌए मूलए सिंगचेरे हिरिली सिरिली सिस्सिरिली किट्टिया छीरिया छीरिचिरालिया कण्हकंदे वज्जकंदे सरणकंदे खेऌडे अदए भद्दमुत्था पिंडहल्डिदा लोही णीह थीहू थिरूगा मुग्गकज्ञी अस्सकन्नी माहंडी मुसंटुंहीजे यावके तहण्पगारा सच्चे ते अणंतजीवा विविहमत्ता ?, इंता गोयमा ! आऌए मूलए जाव अणंतजीवा विविहसत्ता ॥ (सूत्रं २७६) ॥ [प्र0] हे भगवन् ! आछ (वटाटा) मूल, आदु, हिरिली, सिरिलि, सिस्सिरिलि, किट्टिका, छिरिया, छीरविदारिका, वज्जकंद, सरणकंद, खेलुडा, आर्ट्रभद्रमोथ, पिंडहरिद्रा, रोहिणी, हुथीहू, थिरुगा, धुद्रगपर्णी, अथकर्णी, सिंहकर्णी, सीहंढी, सुसुंढी अने तेवा	そうちょう ちょうちょう ちょうちょうちょう	७ शतके उद्देशः ३ ॥५१३॥
-----------------------------------	--	------------------------	------------------------------

प्रज्ञप्तिः सिया भंते ! कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए नील्छेसे नेरइए महाकम्मतराए ?, हंता सिया, से केणहेणं 💃 उदेः	शतके शः ३ ∖१४॥
--	----------------------

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५१५॥	हा. गौतम ! कदाच होय. [प्र॰] हे भगवन् ! बा हेतुथी ए प्रमाणे कहो छो के नीललेक्ष्यावाळो नारक अल्पकर्मवाळी अने कापोत- छेक्यावाळो नारक महाकर्मवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! स्थितिनी अपेक्षाए, ते हेतुथी हे गौतम ! ते यावत् महाकर्मवाळो होय. ए प्रमाणे असुरक्कमारोने विपे पण जाणवुं, परन्तु तेओने एक तेजोलेक्ष्या अधिभ होय छे. ए प्रमाणे वैमानिक देवो पर्यन्त जाणवुं. जेने जेटली लेक्ष्याओ होय तेने तेटली कहेवी, पण ज्योतिष्क देवोने न कहेवुं, यावत् [प्र०] हे भगवन् ! कदाच पक्षलेक्यावाळो वैमानिक अल्पकर्मवाळो अने शुक्कलेक्ष्यावाळो वैमानिक महाकर्मवाळो होय? [उ०] हे गौनम ! हा, कदाच होय. [प्र०] ते शा हेतुथी ? [उ०] बाकीवुं जेम नारकने कह्युं तेम जाणवुं, यावत् महाकर्मवाळो होय? [उ०] हे गौनम ! हा, कदाच होय. [प्र०] ते शा हेतुथी? [उ०] बाकीवुं जेम नारकने कह्युं तेम जाणवुं, यावत् महाकर्मवाळो होय. ॥ २७७ ॥ से नृणं भंते ! जा बेदणा सा निज्जरा जा निज्जरा सा बेदणा ?, गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं युच्चइ जा बेयणा न सा निज्जरा जा निज्जरा सा बेदणा ?, गोयमा ! कम्म बेर्गा णोकम्म निज्जरा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव न सा बेदणा । नेरइया णं भंते ! जा बेदणा सा निज्जरा जा निज्जरा सा बेयणा ?, गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ नेरइयाणं जा बेयणा न सा निज्जरा जा निज्जरा न सा बेयणा ?, गोयमा ! नेरइयाणं कम्म बेदणा णोकम्म निज्जरा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव न सा बेयणा, एवं जाव बेमाणियाणं । से नूणं भंते ! ज बेदेसु तं निज्जरिंसु जं निज्जरिंसु तं बेदेसु ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ जं बेदेंसु नो तं निज्जरेंसु जं निज्जरिंसु नो तं बेदेसु ?, गो तमा ! कम्म बेदेंसु नो- कम्म निज्जरिंसु, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो तं वेदेसु, नेरइया णं भंते ! जं बेदेसु तं निज्जरिंसु ? एवं	* * * * * * * * * * * * * * * *	७ शतके उद्देशः २ ॥५१५॥
-----------------------------------	---	---------------------------------	------------------------------

कहेवाय, अने जे निर्जरा छे ते वेदना कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन् ! एम झा हेतुथी कहो को के नारकोने जे वेदना ते निर्जरा न कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! नारकोने वेदना छे ते कर्म छे, अने निर्जरा छे ते नो कर्म छे, ते हेतुथी एम कहुं छुं के हे गौतम ! यावत् निर्जरा ते वेदना न कहेवाय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको जाणवा. [प्र०] हे भगवन् ! छुं खरेखर जे वेद्युं ते निर्जर्धुं, अने जे निर्जर्धु ते वेद्युं ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी [प्र०] हे भगवन् ! एम भावन् ! छुं खरेखर जे वेद्युं ते निर्जर्धुं, अने जे निर्जर्धु ते वेद्युं ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी [प्र०] हे भगवन् ! एम भावन् ! छुं खरेखर जे वेद्युं ते निर्जर्धुं नथी, जे निर्जर्धु ते वेद्युं ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी [प्र०] हे भगवन् ! एम भा हेतुथी कहेवाय छे के जे वेद्युं ते निर्जर्धुं नथी, जे निर्जर्धु ते वेद्युं नथी ? [उ०] हे गौतम ! कर्म वेयुं अने नोकर्म निर्जर्धुं; ते हेतुथी हे गौतम ! यावत् वेद्युं नथी. [प्र०] हे भगवन् ! नारकोए जे वेद्युं नथी ? [उ०] हे गौतम ! कर्म वेयुं अने नोकर्म निर्जर्धुं; ते हेतुथी हे गौतम ! यावत् वेद्युं नथी. [प्र०] हे भगवन् ! नारकोए जे वेद्युं ते निर्जर्धुं ? [उ०] पूर्वे कहा प्रमाणे नारको पण जाणवा, यावत् के नैमानिको पण जाणवा. [प्र०] हे भगवन् ! छुं खरेखर जेने वेदे छे तेने निर्जर्र छे, अने जेने निर्जर छे तेने वेदे छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहेवाय छे के यावत् जेने वेदे छे तेने निर्जरतो नथी, जेने निर्जर	घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५१६॥	से तेणहेणं गोयमा ! जाव नो तं वेदेंति, एवं नेरइयावि जाव वेमाणिया । [प्र॰] हे भगवन् ! खरेखर जे वेदना ते निर्जरा, अने जे मिर्जरा ते वेदना कहेवाय ? [उ॰] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र॰] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के-जे वेदना ते निर्जरा अने जे निर्जरा ते वेदना न कहेवाय ? [उ॰] हे गौतम ! वेदना थे कर्म छे. अने निर्जरा नोकर्म छे ते देवथी यावत ते वेदना त कहेवाय [प्र॰] हे भगवन ! ठां नारकोने जे वेदना छे ते निर्जरा	७ शतके उद्देशः ३ ।५१६।।
--	-----------------------------------	--	-------------------------------

•याख्या- प्रचनित्र के तेने वेदतो नथी. [30] हे गौतम ! कर्मने वेदे के अने नोकर्मने निर्जरे के; ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहेवाय के के यावत (निर्जरे के) तेने वेदतो नथी. ए प्रमाणे नारको पण जाणवा, यावत् वैमानिको जाणवा. से नूणां भंते ! जं वेदिस्संति तं निजारिस्संति जं निजारिस्संति तं वेदिस्संति ?, गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे. से केणट्रेणं जाव णो तं वेदेस्संति ?, गोयमा ! कम्मं वेदिस्संति नोकम्मं निजारिस्संति, से तेणट्ठेणं जाव नो तं से केणट्रेणं जाव णो तं वेदेस्संति ?, गोयमा ! कम्मं वेदिस्संति नोकम्मं निजारिस्संति, से तेणट्ठेणं जाव नो तं से केणट्रेणं जाव णो तं वेदेस्संति ?, गोयमा ! कम्मं वेदिस्संति नोकम्मं निजारिस्संति, से तेणट्ठेणं जाव नो तं से केणट्रेणं जाव णो तं वेदेस्संति ?, गोयमा ! कम्मं वेदिस्संति नोकम्मं निजारासमए जे निजारासमए से निजारासमए?, नो तिणट्ठे समट्ठे. से केणट्रेणं भंते! एवं वुच्चइ जे वेयणासमए न से निजारासमए जे निजारासमए न से वेदणासमए ?, गोयमा ! जं समयं वेदेंति नो तं समयं निजारेति, जं ममयं निजारेति नो तं समयं वेदेंति, अन्नमिस समए वेदेंति अन्नमि समए निजारेति, अन्ने से वदणासमए अन्ने से निजारासमए जे निजारासमए न से वेदणासमए न से निजारासमए । नेरइयाणं भंते ! जे वेदणासमए से निजारासमए जे निजारासमए से वेदणासमए जे निजारासमए । गेतणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नेरइयाणं जे वेदणासमए न से निजारासमए जे निजारासमए न से वेदणासमए ?, गोयमा ! नेरइया णं जं समयं वेदेति ा त समयं निजारेति जं समयं निजारासमए जे निजारासमए न से वेदणासमए वेदेति अन्नमिस माप्र विद्रिति जन्नमिम समए निजारेति अन्ने से वेदणासमए अन्ने से निजारासमए, से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणासमए एवं जाव वेमाणिया ॥ (सूत्रं २७८) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! श्रु जेने वेदरे तेने निर्जरो, अने जेने निर्जररो तेने देररे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०]	: ३
--	-----

रेपाल्या- प्रवासिः प्रवहारिः प्रवहारिः प्रवहारिः प्रवहारिः प्रवहारिः प्रवहारिः प्रवहारिः प्रवहारां समय छे? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प०] हे मगवन् ! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के जे वेदनानो समय छे ते वेदनानो समय छे? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प०] हे मगवन् ! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के जे वेदनानो समय छे ते वेदनानो समय नथी, अने जे निर्जरानो समय छे ते वेदनानो समय नथी ? [उ०] हे गौतम ! जे समये वेदे छे ते समय छे ते निर्जरानो समय नथी, अने जे निर्जरानो समय छे ते वेदनानो समय नथी ? [उ०] हे गौतम ! जे समये वेदे छे ते समय मिन्न छे अने निर्जरानो समय नथी, जे समये निर्जरा करे छे ते देत्वानो समय मिन्न छे अने निर्जरानो समय भिन्न छे; ते हेतुथी यावत् वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय चथी. [प०] हे भगवन् ! शुं समय मिन्न छे अने निर्जरानो समय भिन्न छे; ते हेतुथी यावत् वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय नथी. [प०] हे भगवन् ! शुं योग्य नथी. [प०] हे भगवन् ! एम शा कारणथी कहो छो के नारकोने जे वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय नथी, अने जे समये निर्जरानो समय छे ते वेदनानो समय नथी ![उ०] हे गौतम ! नारको जे समये वेदे छे ते सगये निर्जरा करता नथी, अने जे समये निर्जरानो समय छ ते वेदतानो समय नथी ![उ०] हे गौतम ! नारको जे समये वेदे छे ते सगये निर्जरा करता नथी, अने जे समये निर्जरानो समय ज्दो छे; ते हेतुथी यावत् निर्जरानो समय ते वेदनानो समय नथी. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं. ॥२०८॥ नरइया णं भंते ! कि सासया आसासया ?, गोयमा ! सिय सासया सिय असासया, से केणट्रेणां भंते ! एवं युच्चए नरइया सिय सासया सिय असासया ?, गोयमा ! अच्वोच्छित्तिणयट्टयाए सासया बोच्छित्तिणयट्ट याए असासया, से तेणट्रेणं जाव सिय सासया सिय असासया, एवं जाव बेमाणिया जाव सिय असा-	: ३
--	-----

www.kobatirth.org

I.	1		S.	
	¥	सया। सेवं भंते ! सेवं भंतेत्ति ॥ (सूत्रं २७९) ॥ ७-३ ॥	$\overline{\tau}$	
ब्याख्या-	5	सया । सेवं भंते ! सेवं भंतेत्ति ॥ (सूत्रं २७९) ॥ ७–३ ॥ [प्र॰] हे भगवन् ! ग्रुं नारको शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? [उ०] हे गौतम ! कथंचित् शाश्वत छे, अने कथंचित् अशाश्वत	₽ ₽	७्शतके
प्रज्ञप्तिः	G	पण छे ? [प्र०] हे भगवन ! शा कारणथी एम कहो छो के नारको कथंचित शाश्वत छे अने कथंचित अशाश्वत छे ? [उ०] हे	X	उद्देशः ४
ાપ્દુશ્ા	R	मौनम् । अत्याहिलनियम् (ट्रन्यार्थक्रेयम्) नी अपेक्षाएँ शाक्षत् छे अने व्यहिलनियनी (पूर्यायनयनी) अपेक्षाएँ अग्राश्वत् छेः ते	*	11५१९11
	S	नेतिम र अञ्चुर छोरानय (प्रजनायकान) ना जनसार सायत छे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको यावत् कथंचित् अशाश्वत छे. हे भगवन् !	A	
	Ç	ते ए प्रमाणे छे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे एम कही गौतम यावत् विचरे छे. ॥ २३९ ॥	X	
	¥	भगवत सुधर्मखमीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसत्रना सातमा शतकमां त्रीजा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.	Ł	
	R		j)	
	Ç	उद्देशक ४.	S.	
	¥	रायगिहे नगरे जाव एवं वदासी-कतिविहा णं भेते ! संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता?, गोयमा! छव्विहा	ţ	
	Ś	संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता, तंजहा-पुढविकाइया एवं जहा जीवाभिगमे जाव सम्मत्तकिरियं वा	¥	
	G	मिच्छत्तकिरियं वा ॥ सेवं भंते सेवं भंतेत्ति । जीवा छव्विह पुढवी जीवाण ठिती भवट्टिती काए । निह्नेवण	X	
	×~*~	अणगारे किरिया सम्मत्तमिच्छता ॥ ५५ ॥ (सूत्रं २८०)॥ ७ ७ ॥	Ľ	
	8	अणगार कारया सम्मतामच्छता ॥ २२ ॥ (रहे २००७ ॥ ० ० ॥	5	
	F	[प्र॰] राजगृह नगरमां (गौतम) यावत् ए प्रमाणे बोल्या-हे भगवन् ! संसारी जीवो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०]	S	
		-	=	

 इयाख्या- प्रचप्ताः प्रचतिः प्	.સઃ પ
---	-------

ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५२१॥	योनिसंग्रह, २ लेक्ष्या; ३ दृष्टि-सम्यक्, मिश्र अने मिथ्यात्वदृष्टि, ४ ज्ञान, ५ योग, ६ उपयोग, ७ उपपात-उत्पन्न थवुं, ८ स्थिति-आयुष, ९ सम्रुद्धात, १० च्यवन, ११ जातिकुल्कोटी. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, एम कही गौतम यावत् विचरे छे. ॥ २८१ ॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीस्त्रना सातमा शतकमां पांचमा उद्देशानी मूलार्थ संपूर्ण थयो. अगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीस्त्रना सातमा शतकमां पांचमा उद्देशानी मूलार्थ संपूर्ण थयो. उद्देशक ६.	125 - 25 - 25 - 25 - 25 - 25 - 25 - 25 -	७ शतके उद्देशः ६ ॥५२१॥
	रायगिहे जाव एवं वदासीजीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववजित्तए से णं भंते! किं इहगए नेरइया- उयं पकरेति उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ उववन्ने नेरइयाउयं पकरेइ ?, गोयमा ! इहगए नेरइयाउयं पक- रेइ, नो उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववन्ने नेरइयाउयं पकरेइ, एवं असुरकुमारेसुवि एवं जाव वेमाणि- एसु । जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते! किं इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेति उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेति उववन्ने नेरइयाउयं पडिसंवेदेति ?, गोयमा ! णेरइए णो इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेति उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेति उववन्ने नेरइयाउयं पडिसंवेदेति ?, गोयमा ! णेरइए णो इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेति उववज्जमाणे अंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! किं इहगए महावेदणे उववज्जमाणे महावेदणे उववण्णे	うちょうちょうちょうちょう	

	***********************	महावैयणे ?, गोयमा ! इहगए सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे उववज्जमाणे सिय महावेयणे सिय अप्पवे- दणे, अहे णं उववन्ने भवति तओ पच्छा एगंतदुक्सं वेयणं वेयति, आहच सायं । [प०] राजयह नगरमां गौतम यावत् ए प्रमाणे बील्या-हे भगवन् !जे जीव नारकने विषे उत्पन्न थवाने योग्य छे, हे भगवन् ! ते जीव छुं आ भवमां रहीने नारकतुं आयुष बांधे ? त्यां-नारकमां उत्पन्न थतो नारकतुं आयुप बांधे ? के त्यां उत्पन्न थइने नारकतुं आयुप बांधे ? [उ०] हे गौतम ! आ भवमां रहीने नारकतुं आयुप वांधे, पण त्यां उत्पन्न थता नारकतुं आयुप न बांधे, अने उत्पन्न थइने पण नारकतुं आयुप न बांधे, ए भमाणे असुरकुमारोमां अने यावत् वैमानिकोमां जाणतुं. [प०] हे भगवन् ! जे जीव नारकते विषे उत्पन्न थवाने योग्य छे, हे भगवन् ! ते जीव छुं आ भवमां रही नारकतुं आयुप वेदे, त्यां उत्पन्न थता नारकतुं आयुप वेदे, के त्यां उत्पन्न थइने नारकतुं आयुप वेदे ? [उ०] हे गौतम ! आ भवमां रही नारकतुं आयुप वेदे, त्यां उत्पन्न थता नारकतुं अद्यने वारकतुं आयुप न बांधे, ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोमां रही नारकतुं आयुप वेदे, त्यां उत्पन्न थता नारकत्रुं आयुप वेदे, के त्यां उत्पन्न थहने नारकतुं आयुप वेदे ? [उ०] हे गौतम ! आ भवमां रही नारकतुं आयुप न वेदे, पण उत्पन्न थता अने उत्पन्न थइने नारकतुं आयुप वेदे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोमां पण जाणतुं. [प०] हे भगवन् ! जे जीव नारकमां उत्पन्न थता के उत्पन्न थहो नारकतुं आयुप वेदे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोमां पण जाणतुं. [प०] हे भगवन् ! जे जीव नारकमां उत्पन्न थता के उत्पन्न थहा नारकतुं आयुप वेदे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोमां पण जाणतुं. महावेदनावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाच ते आ भवमां रहेलो महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; कदाच उत्पन्न थता महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय, पण ज्यारे ते उत्पन्न थाय छे, त्यारपछी एकान्त दुःखरूष वेदनाने वेदे छे, अने क्वचित् सुखने वेदे छे. जीवे णं भंते ! जे भविए अस्ररकुमारेस्र उववज्जित्तए पुच्छा, गोयमा ! इहगए सिय महावेदणे सिय अप्प-	あのものもられらものものものないとうたいまま	७ शतके उद्देशः ६ ॥५२२॥
--	-------------------------	--	------------------------	------------------------------

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५२३॥	 वेदणे उववज्जमाणे सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, अहे णं उववन्ने भवइ तओ पच्छा एगंतसायं वेयणं वेदेति, आहच असायं, एवं जाव थणियकुमारेसु। जीवे णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए पुच्छा, गोयमा ! इहगए सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे, एवं उववज्जमाणेवि, अहे णं उववन्ने भवति तओ पच्छा वेमायाए वेयणं वेयति एवं जाव मणुस्सेसु, वाणमंतरजोइसियवेमाणिएसु जहा असुरकुमारेसु ॥ (सूत्रं २८२) ॥ विपति एवं जाव मणुस्सेसु, वाणमंतरजोइसियवेमाणिएसु जहा असुरकुमारेसु ॥ (सूत्रं २८२) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! जे जीव असुरकुमारमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते संबन्धी प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते कदाच आ भवमां रहेलो महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; उत्पन्न थता कदाच महावेदनावाळो होय के कदाच आ भवमां रहेलो महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; उत्पन्न थता कदाच महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; उत्पन्न थता कदाच महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; उत्पन्न थता कदाच महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; उत्पन्न थता नेद छे, अने कदाच दुःखने वेदे छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनि- के तकुमारने विषे जाणवुं. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीव प्रथिवीकायमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते संबन्धी प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! आ 	म् कर्म कर्म कर में के कि जिस्ते के जिस्ते के कि जिस्ते के ज	तः ६
··· ú . ·	भि भवमां रहेलो ते कदाच महावेदनाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; ए प्रमाणे उत्पन्न थतां पण महावेदनावाळो होय के अल्पवेदनावाळो होय, पण ज्यारे ते उत्पन्न थाय छे त्यारपछी ते विविध प्रकारे वेदनाने वेदे छे. ए प्रमाणे यावत् मनुष्योमां जाणवुं. अल्पवेदनावाळो होय, पण ज्यारे ते उत्पन्न थाय छे त्यारपछी ते विविध प्रकारे वेदनाने वेदे छे. ए प्रमाणे यावत् मनुष्योमां जाणवुं. जेम असुरकुमारोने विषे (मृ. ४) कधुं तेम वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवो विषे जाणवुं. ॥ २८२ ॥ जीवा णं भंते ! किं आभोगनिव्वत्तियाउया अणाभोगनिव्वत्तियाउया ?, गोयमा ! नो आभोगनिव्वत्ति- याउया अणाभोगनिव्वत्तियःउया, एवं नेरइयावि, एवं जाव वेमाणिया ॥ (सूत्रं २८३) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! छुं जीवो आभोगथी-जाणपणे आयुषनो बंध करे के अनाभोगथी-अजाणपणे आयुपनो बंध करे ? [उ०]	×-+ ×-+ ×-+ × *	· ·

www.kobatirth.org

	Q.		G	
	*	हे गौतम ! जीवो आभोगथी आयुषनो बन्ध न करे, पण अनाभोगथी आयुषनो बन्ध करे. ए प्रमाणे नारको पण जाणवा, यावत्	3	
व्याख्या-	Ľ	वैमानिको जाणवा. ॥ २८३ ॥	S	७ शतके
সল্পমিঃ	1	अत्थि णं भंते ! जीवा णं कक्कसवेयणिज्ञा कम्मा कज्जंति १, [गोयमा !] इंता अत्थि, कहन्नं भंते ! जीवा	Ť	उद्देशः ६
114૨૪))	*	णं कक्कसवेयणिज्ञा कम्मा कज्जंति ?, गोयमा ! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसह्वेणं, एवं खऌ गोयमा !	<i>L</i>	ાલરકા
	8	जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्ञंति । अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्ञंति, एवं	S	••••
	F	चेव] एवं जाव वेमाणियाणं । अत्थि णं भंते ! जीवा णं अककसवेयणिज्ञा कम्मा कज्ञंति?, हन्ता अत्थि,	×	
	$\mathbf{\hat{x}}$	कहन्नं भंते ! अककसवेयणिज्ञा कम्मा कज्जंति ?, गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव परिग्गहवेरमणेणं कोहवि-	Š	
	8	वेगेणं जाव मिच्छादंसणसछविवेगेणं, एवं खलु गोयमा ! जीवाणं अकक्कसवेयणिज्ञा कम्मा कर्ज्ञाति । अत्थि	S	
	9494 H	णं भंते ! नेरइए (याणं) अककसवेयणिज्ञा कम्मा कज्जंति ?, गोयमा ! णो तिणहे समहे, एवं जाव वेमाणिया,	۶¢	
	$\mathbf{\hat{x}}$	नवरं मणुस्साणं जहा जीवाणं ॥ (सूत्रं २८४) ॥	2	
		[प्र०] हे भगवन ! छं एम छे के जीवोने कर्कशवेदनीय -दुःखपूर्वक भोगवत्रा योग्य कर्मो बंधाय छे ? [उ०] हा, गौतम !	Ş	
	****	एम छे. [प्र॰] हे भगवन् ! जीवोने कर्कश्वेननीय कर्म केम बंधाय ? [उ॰] हे गौतम ! प्राणातिपात-जीवहिंसाथी, यावत् मिथ्या-	¥	
	Ŷ	$z_1 = z_1 $	۲ ۲	
	G	दर्शनशल्यथी. ए प्रमाणे हे गौतम ! जीवोने कर्कशवेदनीय कमों बंधाय छे. [प्र॰] हे भगवन् ! शुं एम छे के नारकोने कर्कशवेद- नीय कमों बंधाय ? [उ॰] हे गौतम ! पूर्वे कह्या प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं. [प्र॰] हे भगवन् ! शुं एम छे के जीवोने	Ç	
	¥	नाथ कमा बयायः [७०] ह गातमः पूर्व कह्या प्रमाण यावत् वमानिकान जाणवु. [प्र०] ह भगवन् ! शु एम छ के जीवोने	¥	
1	l (à l			

 अकर्कशवेदनीय-सुखपूर्धक भोगववा योग्य कमों बंधाय ? [उ०] हा, गौतम ! एम छे. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोने अकर्कशवेदनीय कमों केम बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! प्राणातिपातविरमणथी, यावत् परिग्रहविरमणथी; क्रोधनो त्याग करवाथी. यावत् मिध्याद- प्रज्ञप्तिः भ्रज्ञप्तिः योग करवाधी. ए प्रमाणे हे गौतम ! प्राणातिपातविरमणथी, यावत् परिग्रहविरमणथी; क्रोधनो त्याग करवाथी. यावत् मिध्याद- धेनशल्यनो त्याग करवाधी. ए प्रमाणे हे गौतम ! जीवोने अकर्कशवेदनीय कमों बंधाय. [प्र०] हे भगवन् ! ग्रुं नारकोने अकर्कश्वदेत्तीय धेनशल्यनो त्याग करवाधी. ए प्रमाणे हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं. परंतु मनुष्योने जेम जीवोने धेनशल्यनो त्याग करवाधी. ए प्रमाणे हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं. परंतु मनुष्योने जेम जीवोने पेदशः थेदनीय कर्मो बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं. परंतु मनुष्योने जेम जीवोने पेत्रिय णं भंते! जीवाणं सायावेयणिज्ञा कम्मा कज्जंति?, हंता अत्थि,कहन्नं भंते! जीवाणं सातावेयणिज्ञा कम्मा कज्जंति?, गोयमा! पाणाणुर्कपाए भूयाणुर्कपाए जीवाणुर्कपाए सत्ताणुर्कपाए बहुणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदु- नग्वणयाए असोयणयाए अन्न्रणयाए अतिपणयाए अपिदणयाए अपरियावणयाए ए वं खलु गोयमा ! जीवाणं सायावेयणिज्ञा कम्मा कर्ज्ञति,एवं नेरइयाणवि,एवं जाव वेमाणियाणां। अत्थि जं भंते! जीवाणं अस्सायवेयणिज्ञा कम्मा कर्ज्जति?, हंता अत्थि । कहन्नं भंते! जीवाणं अस्सायावेयणिज्ञा कम्मा कर्ज्जति?, गोयमा! परदुक्खणयाए परसोयणयाए परजूरणयाए परतिप्पणयाए परपिष्टणयाए परपरियावणयाए बहुणं पाणाणं जाव सत्ताणं दुक्ख- णयाए सोयणयाए जाव परियावणयाए एवं खलु गोयमा ! जीवाणं अस्सायावेयणिज्ञा कम्मा कर्ज्जति, एवं नेरइयाणबि, एवं जाव वेमाणियाणं (स्तूत्र २८५)॥ [प्र०] हे भगवन् ! छं एम छे के जीवोने सातावेदनीय कर्म वंधाय ? [उ०] हा, गौतम ! एम छे. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोने 	: ٩
--	-----

 ⁶र ६।	न करवाथी, नहि मारवाथी तेम परिताप नहि उपजाववाथी. ए प्रमाणे हे गौतम ! जीवो सातावेदनीय कमों बांधे छे. ए प्रमाणे नारकोने पण जाणवुं; यावत वैमानिकोने जाणवुं. [प्र0] हे भगवन् ! छुं एम छे के जीवोने असातावेदनीय कमों बंधाय ? [उ0] हा, गौतम ! एम छे. [प्र0] हे भगवन् ! जीवोने असातावेदनीय कर्म केम बंधाय ? [उ0] हे गौतम ! वीजाने दुःख देवाथी, बीजाने शोक उपजाववाथी, बीजाने खेद उत्पन्न करवाथी, बीजाने पीडा करवाथी, बीजाने मारवाथी, बीजाने परिताप उत्पन्न करवाथी, तेम घणां प्राणोने यावत् सत्त्वोने दुःख देवाथी, शोक उपजाववाथी, यावत् परिताप उत्पन्न करवाथी, बीजाने परिताप उत्पन्न करवाथी, तेम घणां प्राणोने यावत् सत्त्वोने दुःख देवाथी, शोक उपजाववाथी, यावत् परिताप उत्पन्न करवाथी, ए प्रमाणे हे गौतम ! जीवोने असातावेदनीय कर्म बंधाय छे. ए प्रमाणे नारकोने, यावत् वैमानिकोने जाणवुं. ॥ २८५ ॥ जंशुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसण्पिणीए दूसमदूसमाए समाए उत्तमकट्टपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिमए आगारभावपडोयारे भविस्सति ?, गोयमा ! कालो भविस्सइ हाहाभूए भंभाभूए कोला- हलब्भूए, समयाणुभावेण य णं खरफरुसधूलिमइला दुव्विसहा वाउला भयंकरा वाया संवद्दगा य वाइंति, इह अभिक्तं धूमाइंति य दिसा समंता रउस्सला रेणुकलुसतमपडलनिरालोगा समयऌवक्ष्याए य णं अहियं चंदा	
---------------------------	---	--

ध्या क्त्या- प्रज्ञप्तिः ॥५२७॥	समीकरेहिंनि॥ तीसे णं भंते! समाए भरहवासस्स भूमीए केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सति?, गोयमा ! भूमी भविस्सति इंगालब्भूया मुम्मुरभूया छारियभूया तत्तकवेछयभूया तत्तसमजोतिभूया धृलिबहुला रेणु- बहुला पंकबहुला पणगबहुला चलणिबहुला बहुणं धरणिगोयराणं मत्ताण दोनिकमा य भविस्मति॥ (सूत्रं २८६) [प्र0] हे भगवन ! जंबूदीप नामे धीपमां भारतवर्षने विषे आ अवसर्पिणीमां दुःषमादुःषमा काल छहो आरो ज्यारे अस्यंत इत्कट अवस्थाने प्राप्त थत्रे त्यारे भारतवर्षनो आकारभावप्रत्यवतार (आकार अने भावोनो आविर्भाव) केवा प्रकारे थशे ? [उ0] हे गौत्म ! हाहाभूत (जे काळे दुःखी लोको 'हा हा' शब्द करशे) भंभाभूत (जे काळे दुःखात पश्चओ 'भां मां' शब्द करशे) अने कोलाहलभूत (ज्यारे दुःखपीडीत पक्षीओ कोलाहल करशे) एवो काल थशे. कालना प्रभावथी घणा कठोर, धूलथी मेला, भू अने कोलाहलभूत (ज्यारे दुःखपीडीत पक्षीओ कोलाहल करशे) आकाल्य वारे बाल थशे. कालना प्रभावथी घणा कठोर, धूलथी मेला,	२ २ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
	्री असह्य, अनुचित अने भयंकर वायु, तेमज संवतक वायु वाशे. आ काळे वारंवार चारे बाजूए घूळ उडती होवाथी रजथी मलिन अने अंधकारवडे प्रकाशरहित दिशाओ धूमाडा जेवी झांखी देखाशे. कालनी रुक्षताथी चन्द्रो अधिक शीतना आपशे अने स्रयों अत्यंत ते तपुरो. वळी वारंवार यणा खराब रसवाळा, विरुद्ध रसवाळा खारा, खातरसमान पाणिवाळा, (खाटा पाणिवाळा) अ प्रनी पेठे दाहक क	- Ar a a the a

5

• 50

0 •

৩ হার্বকাঁ

उदेशः ६

1199211

Ś

Х

A. T

х ж

•

8यांख्या प्रज्ञप्तिः

1147811

	पोणिवाळा, विजळी युक्त, अशनिमध-करा वगरेने पाडनार (पर्वतने भेदनारा) विषमेघो-झेरी पाणिवाळानहि पीवालायक पाणिवाळा,
8	(निर्वाह न थइ झके तेवा पाणिवाळा) ब्याधि,रोग अने वेदना उत्पन्न करनार पाणिवाळा,मनने न रुचे तेवा पाणिवाळा मेघो तीक्ष्ण
Ť S	धाराना पडवा ढेव पुष्कळ वरसरो, जेथी भारत वर्षमां ग्राम, आकर, नगर, खेट, कर्बट, मडंव, द्रोणप्रुख, पद्धन अने आश्रममां रहेल मनुष्यो, चोपगा–गायो घेटा अने आकाशमां गमन करता पक्षिओना टोळाओ; तेमज गाम अने अरण्यमां चालता त्रस जीवो तथा
	मनुष्यो, चोपगा–गायो घेटा अने आकाशमां गमन करता पक्षिओना टोळाओ; तेमज गाम अने अरण्यमां चालता त्रस जीवो तथा
S	बहु प्रकारना वृक्षो, गुल्मो, लताओ, वेलडीओ, घास, पर्वगो–शेरडी वगेरे, घरो वगेरे, ओषधी–ज्ञालि वगेरे, प्रवालो अने अंकुरादि
Р S	बहु प्रकारना वृक्षो, गुल्मो, लताओ, वेलडीओ, घास, पर्वगो-शेरडी वगेरे, घरो वगेरे, ओषधी-शालि वगेरे, प्रवालो अने अंकुरादि तृणवनस्पतिओ नाग्न पामग्ने. वैताट्य शिवाय पर्वतो, गिरिओ डुंगरो, धूळना उंचा खलो, रज विनानी भूमिओ नाग्न पामग्ने. गगा अने सिन्धु नदी सिवाय पाणीना झराओ, खाडाओ, दुर्गम अने विषम भूमिमां रहेला उंचा अने नीचा खले। सरखा थशे.
₽	गगा अने सिन्धु नदी सिवाय पाणीना झराओ, खाडाओ, दुर्गम अने विषम भूमिमां रहेला उंचा अने नीचा स्थले सरखा थरो.
S	[प्र॰] हे भगवन् ! (ते काले) भारतवर्षनी भूमिनों केवो आकारभावेप्रत्यवतार थत्ते ? [उ॰] हे गौतम ! ते काळे अंगार जेवी, मुर्मुर–छाणानां अग्नि जेबी, भसीभृत, तपी गयेळा कटाह (कटाया) जेवी, तापवडे अग्निना सरखी, बहुधूळवाळी बहु रजवाळी, बहु कीचडवाळी, बहु सेवाळवाळी, घणा कादववाळी, अने पृथ्वी उपर रहेला घणा प्राणिओने चाळ्दूं मुक्केल
9 2	अंगार जेवी, मुर्म्रुर-छाणानां अग्नि जेबी, भसीभृत, तपी गयेळा कटाह (कटाया) जेवी, तापवडे अग्निना सरखी, बहुधूळवाळी
*	बहु रजवाळी, बहु कीचडवाळी, बहु सेवाळवाळी, घणा कादववाळी, अने पृथ्वी उपर रहेला घणा प्राणिओने चाळ्ढ्युं ग्रुक्केल
5	पडे एवी भूमि थरो. ॥ २४६ ॥
*	तीसे णं भंते ! समाए भारहे वासे मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सति ?, गोयमा ! मणु-
¥	या भविस्संति दुरूवा दुवन्ना दुगंधा दुरसा दुफासा अणिट्ठा अकंता जाव अमणामा हीणस्सरा दीणस्सरा
۲ ۲	पडेँ एवी भूमि थर्गे. ॥ २४६ ॥ तीसे णं भंते ! समाए भारहे वासे मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सति ?, गोयमा ! मणु- या भविस्संति दुरूवा दुवन्ना दुगंधा दुरसा दुफासा अणिट्ठा अकंता जाव अमणामा हीणस्सरा दीणस्सरा अणिट्ठस्सरा जाव अमणामस्सरा अणादेज्जवयणपचायाया निछज्जा कूडकवडकऌहवर्षधवेरनिरया मज्जा-

ब्याख्या- प्रबन्धिः प्रतिक्षमप्पहाणा अकज्जनिच्चुज्जता गुरुनियोयविणयरहिया य विकलरूवा परूढनहकेसमंसुरोमा काला खर प्रबन्धिः प्ररुसझामवन्ना फुटसिरा कविलपलियकेसा बहुण्हारु(णी)संपिनद्वदुद्दंसणिज्ञरूवा संकुडियवलीतरंगपरिवेदि	z-	७्शतके
	1- X	उद्देशः ६
" २२९ 🕼 विगयभेसणमुहा कंच्छ्रकसराभिभूया खरतिकखनखकंड्इयबिक्खयतणू दद्दूकिडिभसिंझफुडियफरुसच्घ	3- Š	।।५२९॥
🎉 वी चित्तलंगा टोलागतिविसमसंधिबंधणउक्कुडुअडिगविभत्तदुब्बलकुसंघयणकुप्पमाणकुसंठिया कुरूवा कुठ	ſ- ∦	
🖇 णासणकुसेज्जकुभोइणो असुइणो अणेगवाहिपरिपीलियंगमंगा खलतवेज्झलगती निरुच्छाहा सत्तपरिव	1 - 3	
🕻 जिया विगयचिट्ठा नट्ठतेया अभिक्खणं सीयउण्हखरफरुसवायविज्झडिया मलिणपंसुरयगुंडियंगमंगा बहु	₹- Ç	
🗚 कोहमाणमाया बहुलोभा असुहदुक्खभागी ओसन्नं धम्मसण्णसम्मत्तपरिब्भट्टा उक्कोसेणं रयणिप्पमाण	r- 🗲	
🕺 मेत्ता सोलसवीसतिवासपरमाउसो पुत्तनतुपरियालपणयबहुला गंगासिंघूओ महानदीओ वेयड्ढं च पव्व	यं 🕺	
🖟 निस्साए बावत्तरिं निओदा बीयं बीयमेत्ता बिलवासिणो भविस्संति ॥	S.	
🛧 [प्र०] हे भगवन् ! ते काळे भारतवर्षमां मनुष्योनो केवो आकारभावप्रत्यवतार थशे ? [उ०] हे गौतम ! खराव रूपवाळ	л, А	
🖞 खराब वर्णवाळा, दुर्गधवाळा, दुष्ट रसवाळा, खराब स्पर्शवाळा, अनिष्ट, अमनोज्ञ, मनने न गमे तेवा, हीनखरवाळा, दीनखरवाळ	i 1 , D	
🕱 अनिष्टखरवाळा, यावत मनने न गमे तेवा खरवाळा, जेना वचन अने जन्म अग्राह्य छे एवा, निर्लज्ज, कूड कपट कलह वध ब		
अने बेरमां आसक्त, मर्यादानुं डह्वंघन करवामां मुख्य, अकार्य करबामां नित्य तत्पर, मातपितानी अवदय करवा योग्य विनयरहि	त. 🖈	
	Y X	

घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५३०॥	16 3 - 26 24 - 26 24 26 26 26 26 26 26 26 26 26 26 26 26 26	बेडोळ रूपवाळा, जेना नख, केग्न, डाढी, मूछ अने रोम वधेला छे एवा,काळा, अस्पंत कठोर,झ्यामवर्णवाळा,छ्टा केझवाळा,धोळा केशवाळा, बहु स्नायुथी बांधेल होवाने लीधे दुर्दर्शनीय रूपवाळा, जेओना प्रत्येक अंग वांका अने वलीतरंगोथी-करचलीओथी व्याप्त छे एवा, जरापरिणत (वृद्धावस्थायुक्त) वृद्धपुरुष जेवा, छुटा अने सडी गयेला दांतनी श्रेणिवाळा, घटना जेवा भयंकर मुखवाळा भयंकर छे घाटा (डोकनी पाळळनो भाग) अने मुख जेओना एवा विषम नेत्रवाळा, वांकी नासिकावाळा, वांका अने बलीलरंगोथी-करचलीओथी व्याप्त भयंकर छे घाटा (डोकनी पाळळनो भाग) अने मुख जेओना एवा विषम नेत्रवाळा, वांकी नासिकावाळा, वांका अने बलिओथी विकृत थयेला, भयंकर मुखवाळा, खस अने खरजथी व्याप्त, कठण अने तीक्ष्ण नखोवडे खजवाळवाथी विकृत थयेला, दद्घ (दराज) किडिभ (एक जातनो कोढ) अने सिध्म (कुष्ट विशेष, करोळीआ) वाळा, फाटी गयेल अने कठोर चामडीवाळा, विचित्रअंगवाळा, उष्ट्रादिना जेवी गतिवाळा, (खराब आकृतिवाळा)सांधाना विषम बंधनवाळा, योग्यस्थाने नहि गोठवायेला छटा देखाता हाडकावाळा, दुर्घल, खरावसंघयणवाळा, खराव प्रमाणवाळा. खराव संस्थानवाळा, सराव रूपवाला, खराब स्थान अने आसनवाळा, उरसाहरहित सच्तरहित, विकृतचेष्टावाळा, तेजरहित, वारंवार शीत, उष्ण तीक्ष्ण अने कठोर पवनवडे व्याप्त, जेओना अंग, घूळवडे मलिन अने रजवडे व्याप्त छे एवा, बहु कोध, मान अने मायावाळा, बहु लोभवाळा, अश्चभ दुःखना भागी, प्रायः धर्मसंच्रा अने सम्यक्त्वथी अष्ट, उत्कुष्ट एक हाथ प्रमाण शरीरवाळा, सोळ अने वीश वरसना परम आयुषवाळा, पुत्र पौत्रादि परिवारमां अत्यंत स्नेहवाळा (घणा पुत्रपौत्रादिन्नं पालल करनारा) वीजना जेवा, बीजमात्र एवा (मनुष्योना) वहोंतर कुटुंबो गंगा, सिन्धु महानदीओ अने वैताढ्य पर्वतनो आश्रय करीने विलमां रहेनारा थरे.	- 00 - 40 - 40 - 00 - 40 - 00 - 40 - 00 - 40 - 00 - 10 - 00 - 10 - 00 - 10 - 00 - 10 - 00 - 10 - 00 - 10 - 00 -	७ शतके उद्देशः ६ ॥५३०॥
-----------------------------------	---	--	---	------------------------------

For Private and Personal Use Only

व्याख्या- प्रबहिः ॥५३१॥ ते णं भंते मणुया किमाहारमाहारेंति ?, गोयमा ! ते णं काछे णं ते णं समए णं गंगासिंधूओ महा- नदीओ रहपद्दित्यराओ अञ्चल्सोयप्पयाणमेत्तं जरुं वोझहिंति, सेवि य णं जछे बहुमच्छकच्छभाइक्रे, णो चेव णं आउयबहुछे भविस्सति, तए णं ते मणुया सुरुग्गमिज्णमुहुत्तंसि य सुरत्थमणमुहुत्तंसिय बिछेहिंनो चेव णं आउयबहुछे भविस्सति, तए णं ते मणुया सुरुग्गमिज्णमुहुत्तंसि य सुरत्थमणमुहुत्तंसिय बिछेहिंनो २ निद्धाइत्ता मच्छकच्छभे थलाइं गाहेहिंति सीयायवतत्तएहिं मच्छकच्छणहें एकक्वीसं वाससहस्साइं वित्तिं कप्पेमाणा विहरिस्संति ॥ [प्र•] हे भगवन् ! ते ममुख्यो केवा प्रकारनो आहार करशे ? [उ०] हे गौतम ! ने काछे अने ते समये रथना मार्गप्रमाण विस्तारवाळी गंगा अने सिन्धु ए महानदीओ रथनी धरीने पेसवाना छिद्र जेटला भागमां पाणिने वहेशे, ते पाणि घणां माछलां अने काचवा वगेरेथी भरेलुं, पण तेमां घणुं पाणी नहिहोय. त्यारे ते मनुष्यो धर्य उपया पछी एक मुह्ती अंदर अने सूर्य आधम्या पछी एक मुह्तीमां पोतपोताना विलोगी वाहेर नीकळशे अने माछलां काचवा वगेरेने जमीनमां टाटशे, टाट अने तटकावडे बकाह गयेलां माछलां अने काचवा कगेरेथी एकवीशहजार वर्ष सुपी आजीविका करता नेआ (मनुष्या) त्यां रहेशे. ते णं भंते ! मणुया निस्सीला निग्गुणा निम्मेरा निष्टपच्चकरवाणपोसाहोववामा ओसण्णं मंमाहारा मच्छा- हारा खोदाहारा कुणिमाहारा कालमासे कालं किचा कहिं गच्छिहिंति? कहिं उववजिहिंति?, गोयमा ! ओसझं नर्गतरिरिक्खजोणिएसु उववज्जति, ते णं भंते ! सीहा वग्घा वगा दीविया अच्छा तरच्छा परस्सरा निस्सीला नहेव जाव उववज्जिहिंति ?, गोयमा ! ओसन्नं नरगतिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति, ते णं भंते ! हंका	Ę
--	---

प्रज्ञाप्ति (सूत्र २८७) ॥ सरामस्स संयरसं छटा उद्दर्सजा सम्मर्ता ॥ ७-५ ॥ प्रज्ञाप्तिः (प्रू [प्र०] हे भगवन् ! शीलरहित, निर्गुण, मर्यादारहित, प्रत्याख्यान अने पोषधोपवासरहित, प्रायः मांसाहारी, मत्स्याहारी,	शतके शः ७ ∖३२॥
---	----------------------

ष्याख्या- प्रबाहिः प्रबहिः प्रबहिः प्रबहिः । परदेश। पर्या के क्षां रे, गोयमा ! जस्स णं कोहमाणमायालोभा वोच्छिन्ना भवंति तस्म णं ईरियावहिया किरिया कज्जह, तहेव जाव उत्स्युत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जह, से णं अहास्युत्तमेव रीयइ, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव नो संपराईया किरिया कज्जह ॥ (सूत्रं २८८) ॥ [प्र॰] हे भगवन ! उपयोग (सावधानता) पूर्वक गमन करता, यावत् उपयोगपूर्वक सूता-आळोटता के डपयोगपूर्वक वस्त, पात्र, कंवल् अने पादग्रींछनक (रजोहरण) ने ग्रहण करता अने म्कता संइत-संवरयुक्त साधुने छुं ऐर्यापथिकी किया लागे के सांपरायिकी किया लागे? [उ॰] हे गौतम ! संवरयुक्त यावत् ते अनगारने ऐर्यापथिकी किया लागे, सांपरायिकी किया लागे के सांपरायिकी किया लागे? [उ॰] हे गौतम ! संवरयुक्त साधुने यःवत् सांपायिकी किया लागे, सांपरायिकी किया न लागे. [प्र॰] हे भगवन् ! एप वा हेतुथी कहो छो के संवरयुक्त साधुने यःवत् सांपायिकी किया न लागे ! [उ॰] हे गौतम ! जेना कोघ, मान, माया अने लोभ नष्ट थया होय तेने ऐर्यापथिकी किया लागे, तेमज यावत् स्वत्रविरुद्ध च:लनारने सांपरायिकी कियालगे; ने संवरयुक्त अनगार सूत्र प्रमाणे वर्ते छे, ते हेतुथी हे गौतम ! तेने यावत् सांपरायिकी किया न लागे. ॥२८८॥ स्वरी भंते! कामा अरूवी कासा?. गोयमा! रूवी कामा समणाउसो!.नो अरूवी कामा । सचित्ता भंते! कामा अचित्ता काना?, गोयमा ! सचित्तावि कामा, अचित्तावि कामा । जीवा भंते! कामा अजीवा कामा?, गोयमा! जीवाबि कामा,अजीवावि कामा । जीवाणं भंते! कामा अजीवाणं कामा?,गोयमा! जीवाणं कामा, नो अजीवाणं कामा, कति विहा णं भंते ! कामा पन्नत्ता ?, गोयमा ! दुविहा कामा पन्नत्ता, तंजहा-सद्दा य रूवा य । रूवी	છ
--	---

ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५३४॥	٥ - ٢٠ - ٢٠ مر م م محد الم محمد الم محمد محمد مع ما م محد محمد مع محمد محمد محمد محمد محمد	भंते ! भोगा अरूवी भोगा?, गोयमा! रूवी भोगा, नो अरूवी भोगा, सचित्ता भंते ! भोगा अचित्ता भोगा ?, गोयमा ! सचित्तावि भोगा, अचित्तावि भोगा, जीवा णं भंते ! भोगा० ? पुच्छा, गोयमा ! जीवावि भोगा, अजीवावि भोगा, जीवाणं भंते ! भोगा अजीवाणं भोगा ?, गोयमा ! जीवाणं भोगा, नो अजीवाणं भोगा, कतिविहा णं भंते ! भोगा पन्नत्ता ?, गोयमा ! तिविहा भोगा पन्नत्ता, तंजहागंधा रसा फासा । कतिविहा णं भंते ! कामभोगा पन्नत्ता ?, गोयमा ! तिविहा भोगा पन्नत्ता, तंजहागंधा रसा फासा । कतिविहा णं भंते ! कामभोगा पन्नत्ता ?, गोयमा ! पंचविहा कामभोगा पन्नत्ता, तंजहासंदा रूवा गंधा रसा फासा । [प्र0] हे भगवन् ! कामो रूपी छे के अरूपी छे? [उ0] हे गौतम ! कामो रूपी छे, पण हे आयुषमान अमण ! कामो अरूपी नथी. [प्र0] हे भगवन् ! कामो सचित्त छे के अचित्त छे ? [उ0] हे गौतम ! कामो सचित्त पण छे अने अचित्त पण छे. [प्र0] हे भगवन् ! कामो सचित्त छे के अचित्त छे ? [उ0] हे गौतम ! कामो सचित्त पण छे अने अचित्त पण छे. [प्र0] हे भगवन् ! कामो सचित्त छे के अचित्त छे ? [उ0] हे गौतम ! कामो सचित्त पण छे अने अचित्त पण छे. [प्र0] हे भगवन् ! कामो त्राव छे के अजीव छे ? [उ0] हे गौतम ! कामो सचित्त पण छे अने अचित्त पण छे. [प्र0] हे भगवन् ! कामो जीव छे के अजीव छे ? [उ0] हे गौतम ! कामो जीवत्त पण छे अने अजीव पण छे. [प्र0] हे भगवन् ! कामो जीव छे के अजीव छे ? [उ0] हे गौतम ! कामो जीव पण छे अने अजीव पण छे. [प्र0] हे भगवन् ! कामो जीवोने होय छे के अजीवोने होय छे ? [उ0] हे गौतम ! कामो जीवोने होय छे, पण अजीवोने कामो होता नथी. [प्र0] हे भगवन् ! कामो केटला प्रकारे कह्या छे ?[उ0] हे गौतम !कामो चे प्रकारे कह्या छे, जेमके झब्दो अने रूपो. [प्र0] हे भगवन ! भोगो रूपी छे के अरूपी छे ? [उ0] हे गौतम !भोगो रूपी छे पण अरूपी नथी. [प्र0] हे भगवन् ! भोगो सचित्त छे के अचित्त	そうちまちまち	७ शतके उद्देशः ७ ॥५३४॥	
	- 35 The Start Start Start	कामो जीवोने होय छं के अजीवोने होय छे ? [उ०] हे गौतम ! कामो जीवोने होय छ, पण अजीवोन कामो होता नथा. [प्र०] हे भगवन् ! कामो केटला प्रकारे कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! कामो बे प्रकारे कह्या छे, जेमके शब्दो अने रूपो. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो रूपी छे के अरूपी छे ? [उ०] हे गौतम ! भोगो रूपी छे पण अरूपी नथी. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो सचित्त छे के अचित्त छे ? [उ०] हे गौतम ! भोगो सचित्त पग छे अने अचित्त पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो जीवखरूप छे के अजीवखरूप छे ? [उ०] हे गौतम ! भोगो तविखरूप पण छे अने अचित्त पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो जीवखरूप छे के अजीवखरूप छे ? [उ०] हे गौतम ! भोगो जीवखरूप पण छे अने अजीवखरूप पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो जीवखरूप छे के अजीवखरूप छे ? [उ०] हे गौतम ! भोगो जीवखरूप पण छे अने अजीवखरूप पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो जीवोने होय के अजीवोने होप ? [उ०] हे गौतम ! भोगो जीवोने होय छे, पण अजीवोने भोगो होता नथी. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो केटला प्रकारना कह्या छे ?	the set		

प्रदापिः कथा छ [30] इ गातम काम अने मान (बेझ मळा) पांच प्रकारना कथा छ, न आ प्रमाण- रूप, एस, एस, पर पर क्ये कि प् प्रद्यप्तिः क्ये जीवा णं भंते ! किं कामी भोगी ?, गोयमा ! जीवा कामीवि भोगीवि, से केणहेणं भंते ! एवं के उद्दे	शतके ज़ः ७ ३५॥
--	----------------------

व्याख्या- प्रज्ञाप्तिः ॥५३६॥	भगवन् ! शा हेतुथी एम कहो छो के जीवो कामी पण छे अने भोगी पण छे ? [उ०] हे गौतम ! थोत्रंद्रिय अने चक्षुने आश्रयी जीवो कामी कहेवाय छे, तेम घाणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शेन्द्रियनी अपेक्षाए जीवो भोगी कहेवाय छे; ते हेतुथी हे गौतम ! जीवो यावत् भोगी पण छे. [प०] हे भगवन् ! शुं नारको कामी छे के मोगी छे ? [उ०] एवें कह्या प्रमाणे जाणवुं, ए प्रमाणे स्तनितकुभारोने जाणवुं. [प०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिकनो मक्ष. [उ०] हे गौतम ! प्रथिवीकायिको कामी नर्था, पण भोगी छे. [प०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहो छो के पृथिवीकायिकनो मक्ष. [उ०] हे गौतम ! प्रथिवीकायिको कामी नर्था, पण भोगी छे. [प०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहो छो के पृथिवीकायिको मोगी छे ? हे गौतम ! प्रथिवीकायिको कामी नर्था, पण भोगी छे. [प०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहो छो के पृथिवीकायिको मोगी छे ? हे गौतम ! स्पर्शेन्द्रियने आश्रयी; ते हेतुथी तेओ यावत् भोगी छे. ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिको जाणवा, बेइन्द्रिय जीवो ए प्रमाणे जाणवा, परन्तु तेओ जिहा अने स्पर्शेन्द्रियनी अपे- क्षाए भोगी छे. तेइन्द्रिय जीवो पण ए प्रमाणे जाणवा, पण घाण, जिहा अने स्पर्शेन्द्रियनी अपेक्षाए तेओ भोगी छे. [प०] च उ- रिन्द्रिय जीवोनो प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! चउरिन्द्रिय जीवो कामी पण छे अने भोगी पण छे. [प०] हे भगवन् ! शा हेतुथी यावत् भोगी पण छे ? [उ०] ते चडरिन्द्रिय जीवो चक्षुनी अपेक्षाए कामी; घाण, जिहा अने स्पर्शेन्द्रियनी अपेक्षाए भोगी छे; ते हेतुथी यावत् भोगी समजवा. बाकीना यावत् वैमानिक सुधीना जीवो जेम सामान्य जीवो कहा तेम जाणवा. [प्र०] हे भगवन् ! कामभोगी, नोकामी नोभोगी अने भोगी जीवोमां कया जीवो कया जीवोथी यावत् विशेषाधिक छे? [उ०] हे गौतम ! कामभोगी जीवी सौथी थोहा छे, नोकामी नोभोगी जीवो अनन्तरण छे, अने भोगी जीवो अनन्तरण छे. ॥ २८९ ॥ छउमत्थे णं भंते ! मणूसे जे भविए अन्नयरेसु देवलोएस देवत्ताए उवबजित्तिए, से नूणं भंते ! से स्वीणभोगी नो च पस् उद्घाणेणं कम्मेणं बल्छेणं बीरिएणं पुरिसकारएपरक्रमेणं विउलाइं भोगभोगाजे।	उद्देशः ७ ॥५३६॥
	े से खीणभोगी नो पभू उट्टाणेण कम्मेण बरुण वीरिएण पुरिसकारपरकर्मण विउलाइ भागभागाइ 🌖	

∙याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५३७॥		खंजमाणे विहरित्तए ?, से नूणं भंते ! एयमई एवं वयह ?, गोयमा ! णो इणढे समढे, पभूणं उट्टाणेणवि कम्मेणवि बळेणवि वीरिपणवि पुरिसकारपरकमेणवि अन्नयराइं विउलाइं भोगभोगाइं मुंजमाणे विहरित्तए, तेम्हा भोगी भोगे परिचयमाणे महानिज़रे महापज्जवसाणे भवह ? । आहोहिए णं भंते ! मणुस्से जे भविए क्षन्नयरेसु देवलोएसु एवं चैव जहा छउमत्थे जाव महापज्जवसाणे भवति २ । परमाहोहिए णं भंते ! मणुस्से जे भविए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झित्तए जाव अंतं करेत्तए ?, से नूणं भंते ! से खीणभोगी सेसं जहा छउ- मत्थस्सवि ३ । केवली णं भंते ! मणुस्से जे भविए तेणेव भवग्गहणेणं एवं जहा परमाहोहिए जाव महापज्ज- बसाणे भवइ ४ ॥ (सूत्रं २९०) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! छत्रस्थ मनुष्य जे कोइपण देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते क्षीगभोगी-दुर्बल शरीरवाजो उत्थानवडे, कर्मवडे, बलवडे, वीर्यवडे अने पुष्पाकार पराक्रमवडे विपुल एवा भोग्य मोगोने मोगववा समर्थ छे ? हे भगवन् ! खरे- खर आ अर्थने आ प्रमाणे कहो छो? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ योग्य नथी. ते उत्थानवडे पण, कर्मवडे पग, वलवडे पण, वीर्यवडे पण अने पुरुषाकार पराक्रमवडे पण कोइपण विपुल एवा भोग्य भोगोने मोगववा समर्थ छे ? हे भगवन् ! खरे- खर आ अर्थने आ प्रमाणे कहो छो? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ योग्य नथी. ते उत्थानवडे पण, कर्मवडे पग, वलवडे पण, वीर्यवडे पण अने पुरुषाकार पराक्रमवडे पण कोइपण विपुल एवा भोग्य भोगोने भोगववा समर्थ छे, ते मार्ड ते भोगी भोगोनो त्यान करतो महानिर्जरावळो अने महापर्यवसान-महाफल्लवळो थाय छे. [प्र0] हे भगवन् ! अवोऽवधिक-नियतक्षेत्रना अवधिज्ञानवाळो- मनुष्य जे कोइपण देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते क्षीणभोगी पुरुषाकार पराक्रमवडे विपुठ भोगोने भोगववा समर्थ छे ? [उ०] ए प्रमाणे छब्रस्थनी पेठे यावत् ते महापर्यवसान-महाफलवाळो थाय छे. [प्र0] हे भगतन् ! परान्नमवु ! परावधिज्ञानी मनुष्य	र र र र र र र र र र र र र र र र र र र	
	** % ** % ** % ** %	खर आ अर्थने आ प्रमाणे कहो छो? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ योग्य नथी. ते उत्थानवडे पण, कर्मगडे पग, बलवडे पण, वीर्यवडे पण अने पुरुषाकार पराक्रमवडे पण कोइपण विपुल एवा भोग्य भोगोने भोगववा समर्थ छे, ते माटे ते भोगी भोगोनो त्याग करतो महानिर्जरावाळो अने महापर्यवसान-महाफलवाळो थाय छे. [प्र०] हे भगवन् ! ! अवोऽवधिक-नियतक्षेत्रना अवधिज्ञानवाळो- मनुष्य जे कोइपण देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते क्षीणभोगी पुरुषाकार पराक्रमवडे विपुत्र भोगोने भोगववा समर्थ	ちょ ちんして ち ち ちょ	

णं अंधा मूढा तमंपविद्वा तमपडलमोहजालपडिच्छण्णा अकामनिकरणं वेदणं वेदंतीति वत्तव्वं सिया ?, हंता गोयमा ! जे इमे असन्निणो पाणा जाव पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया छट्ठा य जाव वेदणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया ॥ अस्थि णं भंते ! पभूवि अकामनिकरणं वेदणं वेदंति ?, हंता गोयमा ! अस्थि, कहन्नं भंते ! पभूवि अकामनिकरणं वेदणं वेदेंति ?, गोयमा ! जे णं णो पभू विणा दीवेणं अंधकारंसि रूवाइं पासित्तए, जे णं नो पभू पुरओ रूवाइं अणिज्झाइत्ताणं पासित्तए, जे णं नो पभू मग्गओ रूवाइं अणवयक्षित्ताणं पासित्तए, जे णं नो पभू पासओ रूवाइं अणालोइत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू उड्ढं रूवाइं अणालोए- त्ताणं पासित्तए, जे णं नो पभू अहे रूवाइं अणालोदत्ता णं पासित्तए, एस णं गोयमा ! पभूवि अकामनि- करणं वेदणं वेदेंति ॥ अस्थि णं भंते ! पभूवि पकामनिकरणं वेदणं वेदेंति ?, हंता अस्थि, कहन्नं भंते ! पभूवि पकामनिकरणं वेदणं वेदंति ?, गोयमा ! जे णं नो पभू समुद्दस्स पारं गमित्तए, जे णं नो पभू समु-	
--	--

 इसस पारगयाई रूवाई पासित्तए, जै णं ने पस देवलोगं गमित्तए, जे णं नो पभू देवलोगगयाई रूवाई पासि- तए, एस णं गोयमा ! पभ्वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेति । सेवं भंते ! सिवं भंते ! ति ॥ (सूत्रं २९१) ॥ पत्र एस, एस णं गोयमा ! पभ्वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेति । सेवं भंते ! सिवं भंते ! ति ॥ (सूत्रं २९१) ॥ सत्तमस्स सत्तमो उद्देसओ संमत्ती ॥ ७–७ ॥ [प०] हे भगवन् ! जे आ असंज्ञी मनरहित प्राणीओ छे, जेमके, ष्टथिवीकायिको यावत् वनस्पतिकायिको अने छट्ठा केटला- एक (संमूर्छिम) त्रस जीवो, जेओ अंध-अज्ञानी, वृद, अज्ञानात्पकारमां प्रवेश करेला, अज्ञानरूप आवरण अने मोहजालवडे ढंकायेला एक (संमूर्छिम) त्रस जीवो, जेओ अंध-अज्ञानी, वृद, अज्ञानात्पकारमां प्रवेश करेला, अज्ञानरूप आवरण अने मोहजालवडे ढंकायेला एक (संमूर्छिम) त्रस जीवो, जेओ अंध-अज्ञानी, वृद, अज्ञानात्पकारमां प्रवेश करेला, अज्ञानरूप आवरण अने मोहजालवडे ढंकायेला एक (संमूर्छिम) त्रस जीवो, जेओ अंध-अज्ञानी, वृद, अज्ञानात्पकारमां प्रवेश करेला, अज्ञानरूप आवरण अने मोहजालवडे ढंकायेला एक (संमूर्छिम) त्रस जीवो, जेओ अंध-अज्ञानी, वृद, अज्ञानात्पकारमां प्रवेश करेला, अज्ञानरूप आवरण अने मोहजालवडे ढंकायेला एक (संमूर्छिम) त्रस जीवो, जेओ अंध-अज्ञानी, वृद, अज्ञानात्पकारमां प्रवेश करेला, अज्ञानरूप आवरण अने मोहजालवडे ढंकायेला एक (संमूर्छिम) त्रस जीवो, जेओ अंध-अज्ञानी, वृद एस कहेवाय ! [उ०] हा, गौतम ! जे आ असंज्ञी प्राणीओ प्रथिवीकायिको यावत् वनरपतिकायिको अने छट्ठा (संमूर्छिम त्रसो) अनिच्छापूर्वक वेदना वेदे ? हे गौतम ! हा एम छे. [प०] हे भगवन् ! समर्थ छतां पण जीव अनिच्छापूर्वक वेदनाने केम चेदे ? [उ०] हे गौतम ! जोवाने समर्थ नथी, जे आतेशचन कर्या शिवाय रूपो (पदायों) जोवाने समर्थ नथी, जे आलोचन कर्या शिवाय अगण्ण रहेला रुपो जोवाने समर्थ नथी, जे आलोचन कर्या शिवाय नीचेना रूपो जोवाने समर्थ नथी; हे गौतम ! ते आ अर्थ समर्थ छतां पण अनिच्छापूर्वक वेदनाने वेदे छ. [प०] हे भगवन् ! एम छे के समर्थ पण प्रकामनिकरण- तीवेच्छापूर्वक वेदनाने वेदे ! [उ०] हे गौतम ! हा वेदे. [प०] हे भगवन् ! समर्थ छतां पण तीवेच्छापूर्वक वेदनाने केम वेदे ? [उ०] हे गौतम ! जे सम्रुदनो पार पामवा समर्थ नथी जे सम्रुदने पार रहेलां रुपो जोवा समर्थ नथी, जे देवलोकमां जवा समर्थ

घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५४∙॥	नथी, अने जे देवलोकमां रहेला रूपोने जोवा समर्थ नथी हे गौतम! ते समर्थ छतां पण तीव्रेच्छापूर्वक वेदनाने वेदे. हे मगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, एम कही यावत् विचरे छे. ॥ २९१ ॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीस्वत्रना सातमा	र्ते २ २ २ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
Č	छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तीयमणंतं सासयं समयं केवलेणं संजमेणं एवं जहा पढमसए चउत्थे उद्देसए तहा भाणियव्वं जाव अलमत्थु ॥ (सुर्च २९२) ॥ [प॰] हे भगवन् ! छबस्थ मनुष्य अनंत अने शाश्वत अतीत काले केवल संयमवडे (यावत् सिद्ध थयो ? [उ०] ए प्रमाणे जेम मथम शतकना चोथा उद्देशकमां कढुं छे तेम यावत् 'अल्पस्तु' पाठ छुधी कहेवुं. ॥ २९२ ॥ से णूणं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे ज़ेव जीवे ?, हंता गोयमा ! हत्थिस्स कुंथुस्स य, एवं जहा रायप्पसेणइज़े जाव खुड्डियं वा महालियं वा से तेणढ़ेणं गोयमा ! जाव समे चेव जीवे (सूत्रं २९३) ॥ [प्रं०] हे भगवन ! खरेखर इस्ती अने कुंथुनो जीव समान छे ? [उ०] हा, गौतम ! इस्ती अने कुंथुनो जीव समान छे. जेम 'रायपसेणीय' सूत्रमां कढुं छे ते प्रमाणे यावत् 'खुड्डियं वा महालियं वा' ए पाठ सुधी जाणवुं. ॥ २९३ ॥	あるなからなる

पि [प्र॰] हे भगवन् ! संज्ञाओ केटली कहेली छे ? [उ॰] दन्न संज्ञाओ कही छे. जेम, १ आहारसंज्ञा, २ भयसंज्ञा, ३ मैथुनसंज्ञा, १ परिग्रहसंज्ञा, ५ कोधसंज्ञा, ६ मानसंज्ञा, ७ मायासंज्ञा, ८ लोभसंज्ञा, ९ लोकसंज्ञा, अने १० ओधसंज्ञा. ए प्रमाणे यावत् वैमा- २ निकोने जाणवुं. [प्र॰] नारको दत्र प्रकारनी वेदनानो अनुभव करता होय छे; ते आ प्रमाणे-१ ज्ञीत, २ उष्ण, ३ क्षुधा, ४ २ पिपासा-तरस, ५ कंडू-खरज, ६ परतन्त्रता, ७ ज्वर, ८ दाह, ९ भय, १० ज्ञोक. ॥ २९५ ॥ से नूणं भंते ! हत्थिस्स य कुंधुस्स य समा चेव अपचक्खाणकिरिया कज्जति ?, हंता गोयमा ! हत्थिस्स य

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

www.kobatirth.org

व्याख्या- प्रज्ञासिः ॥५४२॥ ॥५४२॥ ॥५४२॥ ॥५४२॥ ॥५४२॥ ॥२७२॥ ॥५४२॥ ॥५४२॥ ॥५४२॥ ॥५४२॥ ॥५४२॥ ॥५४२॥ ॥५४२॥ ॥५४२॥ ॥५४२॥ ॥५४२॥ ॥२०] हे भगवन् ! अदिरतिने आश्रयी, ते हेतुथी यावत् हाथी अने क्वंध्युने समान अप्रत्याख्यान किया होय ! [उ०] हे गौतम ! अविरतिने आश्रयी, ते हेतुथी यावत् हाथी अने क्वंध्युने समान अप्रत्याख्यान किया होय ? [उ०] हे गौतम ! अविरतिने आश्रयी, ते हेतुथी यावत् हाथी अने क्वंध्युने समान अप्रत्याख्यान किया होय ? [उ०] हे गौतम ! अविरतिने आश्रयी, ते हेतुथी यावत् हाथी अने क्वंध्युने समान अप्रत्याख्यान किया होय. ॥ २९६ ॥ आहाकम्मं णं भंते ! भुंजमाणे किं बंधह? किं पकरेह ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं जहा पढमे सए नवमे डदेसए तहा भाणियव्वंजाव सासए पंडिए, पंडियत्तं असासयं, सेवं भंते ! सेवं भंतेत्ति ॥ (खूत्रं २९७) सत्तमसयस्स अट्टमो उद्देसो संमत्तो ॥ ७–८ ॥ [प्र०] हे मगवन् ! आधाकर्म आहारने खानार (साधु) ग्रं बांधे, ग्रं करे, रोनो चय करे अने रोनो उपचय करे ? [उ०] जेम प्रथम यतकना नवमां डदेशकमां कख्रुं छे ए प्रमाणे यावत् पंडित शाश्वत छे, पण पंडितपणुं अज्ञाश्वत छे' त्यांसुधी कहेवुं. हे मग- वन्न् ! ते ए प्रमाणे छे, भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे एम कही यावत् विचरे छे. ॥ २९७ ॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसव्रना सातमा यतकमां आठमा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण ययो.	******	७ शतकें उद्देशः ८ ॥ ५ ४२॥
--	--------	---

व्याक्त्या- प्रज्ञमिः ॥५४३॥	उद्देशक ९. असंबुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गछे अपरियाइत्ता पभू एगवन्नं एगरूवं विउव्वित्तए ?, णो तिण- डे समट्टे । असंबुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गछे परियाइत्ता पभू एगवन्नं एगरूवं जाव हंता पभू । से भंते ! किं इहगए पोग्गछे परियाइत्ता विउव्वइ,तत्थगए पोग्गछे परियाइत्ता विउव्वति,अन्नत्थगए पोग्गछे परिया इत्ता विकुव्वइ?, गोयमा ! इहगए पोग्गछे परियाइत्ता विकुव्वइ, नो तस्थगए पोग्गछे परियाइत्ता विकुव्वइ, नो अन्नत्थगए पोग्गछे जावविकुव्वति, एवं एगवन्नं अणेगरूवं चउभंगो जहा छट्टसए नवमे उद्देसए तहा इहावि भाणियव्वं, नवरं अणगारे इहगयं इहगए चेव पोग्गछे परियाइत्ता विकुव्वइ, सेसं तं चेव जाव ऌक्खपोग्गछं तिद्ध पोग्गछत्ताए परिणामेत्तए ?, हंता पभू, से भंते ! किं इहगए पोग्गछे परियाइत्ता जाव नो अन्नत्थगए पोग्गछे परियाइत्ता विकुव्वइ ॥ (सूत्रं २९८) ॥ [प्र॰] हे भगवन् ! असंवत-प्रमत्त साधु बहारना पुद्रगछोने ग्रहण कर्या शिवाय एकवर्णवाळं एक रूप विकुर्ववा समर्थ छे ? [उ॰] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र॰] हे भगवन् ! असंवत्त साधु बहारना पुद्रगछोने ग्रहण करी पकवर्णवाळुं एक रूप यावत् [विकुर्ववा समर्थ छे ?] [उ॰] हा, समर्थ छे. [प्र॰] हे भगवन् ! ते साधु शु अहीं-मनुष्यलोकमां रहेला-पुर्व्रालोने ग्रहण करीने विकुर्वे, त्यां रहेला पुद्रगलोने ग्रहण करीनि विकुर्वे के अन्य स्थठे रहेला पुद्रालोने ग्रहण करीते विकुर्वे ! [उ॰] हे गौतम ! आहा वर्क्वरे, त्यां रहेला पुद्रगलोने ग्रहण करीनि विकुर्वे के अन्य स्थठे रहेला पुद्रालोने ग्रहण करीने विकुर्वे ? [उ॰] हे गौतम ! अर्हा वर्क्वरे, त्यां रहेला पुद्रगलोने ग्रहण करीनि विकुर्वे के अन्य स्थठे रहेला पुद्रालोने ग्रहण करी नाक्क्वर्रे हिक्त यहला नहा रहेला पुद्रालोने ग्रहण करी विकुर्वे, पण त्यां रहेला पुद्रालोने ग्रहण करी न विकुर्वे, तेम अन्यत्र रहेला पुद्रालोने ग्रहण करी यावत्त	and some some some some some some some some	७ शतके उद्देशः ९ ॥५४३॥
-----------------------------------	--	---	------------------------------

च्याख्या- प्रज्ञाक्षिः प्रज्ञाक्षिः प्रज्ञा एटलो विशेष छे के अहीं रहेलो माधु अहीं रहेला पुद्गलोने प्रहण करी विक्वेर्ने, बाकीतुं ते प्रमाणे यावत् 'रुक्षपुद्गलोने स्निग्धपुद्गलोपेणे परिणमाववा समर्थ छे? हा, समर्थ छे; हे भगवत् ! छुं अहीं रहेला पुद्गलोने प्रहण करी, यावत् अन्यत्र रहेला सिग्धपुद्गलोने ग्रहण कर्या शिवाय विक्वेर्वे छे'त्यांसुधी जाणवुं. ॥ २९८ ॥ णायमेयं अरहया सुयमेयं अरहया विन्नायमेयं अरहया महासिलाकंटए संगामे २ ॥ महासिलाकंटए णं भंते ! संगामे वट्टमाणे के जहत्था के पराजइत्था ?, गोयमा ! वज्जी विदेहपुत्ते जहत्था, नवमछई नवछेच्छई कासीकोससगा अट्टारसवि गणरायाणो पराजइत्था ॥ तए णं से कोणिए राया महासिलाकंटकं संगामं उबट्टियं जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सहावेह २ एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उदाइं हत्थिरायं पडिकप्पेह हयगयरहजोहकलियं चाउरांगिणिं सेणं सन्नाहेह २ ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पचपिणह । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा कोणिएणं रन्ना एवं युत्ता समाणा हटतुट्ट जाव अंजलिं कटु एवं सामी ! तहत्ति आणाए बिणएणं वयणं पडिसुणंति २ खिप्पामेव छेयायरियोवएसमतिकप्पणाविकप्पेहिं सुनिउणेहिं एवं जहा उबवाइए जाव भीमं संगामियं अउज्झं उदाइं हत्थिरायं पडिकप्पेति हयगय जाव सन्नाहेंति २ जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छइत्ता करयल॰ कूणियस्स रन्नो तमाणत्तियं पचप्पिणति, तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्या म्हण्यादिष्य रन्नो नज्ञणघरं अणुपविसइ मज्जणघरं अणु	७ शतके उद्देशः ९ ॥५४४॥
---	------------------------------

पविसित्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कयको उपमंगलपायच्छित्ते सञ्वालंकारविभूसिए सन्नद्धबद्धवम्मियकवए उप्पी- लियसरासणपदिए पिणद्धगेवेके विमलवरबद्धविंधपटे गहियाउइण्पहरणे सकोरिंटमछदामेणं छत्तेणं धरि- लियसरासणपदिए पिणद्धगेवेके विमलवरबद्धविंधपटे गहियाउइण्पहरणे सकोरिंटमछदामेणं छत्तेणं धरि- जन्माणेणं वडचामरवाल्वीतीयंगे मंगलजपसदकयालोए एवं जहा उववाइए जाव उवागच्छित्ता उदाहं हत्थिरायं दुरूढे, तए णं से कूणिए राया हारोत्थयसुकयरइयवच्छे जहा उववाइए जाव सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं उद्धुव्वमाणीहिं हयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सदिं संपरिवुडे महया भडवडगरविंदपरिक्ष्वित्ते जेणेव महासिलाए कंटए संगामे तेणेव उवागच्छित्त तेणेव उवागच्छित्ता महासि- लाकंटयं संगामं ओयाए, पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एगं महं अभेक्रकवयं वहरपडिरूबगं विउक्तिलाणं चिट्ठति, एवं खल्ठ दो इंदा संगामं संगामेति, तंजहा-देविंदे य मणुइंदे य, एगहत्थिणाबि णं पभ् कूणिए राया पराजिणित्तए, तए णं से कूणिए राया महासिलाकंटकं संगामं संगामेमाणे नव मछई नव छेच्छई कासीकोसलगा अट्टारसवि गणरायाणो हयमहियपवरवीरघाइयविघडियचिंधद्धयपडागे किच्छपाणगए दिसो दिसिं पडिसेहित्या ॥ [प-] अर्हते जाण्युं छे, अर्हते प्रत्यक्ष कर्यु छे. अर्हते विशेषतः जाण्युं छे के महाशिलाकंटक नामे संग्राम छे. हे मगवन् ! महाशिलाकंटक संग्राम थतो हतो त्यारे कोण जीत्या अने कोण हार्या ? [उ०] हे गौटम ! वज्जी (इन्द्र) अने विदेरपुत्र (कूणिक) जीत्या, नव मछक्की जेने नव लेच्छक्की जेओ काशी अने कोशखदेश्वना अटार गणराजाओ हता तेओ पराजय पाम्या. त्यारपछी	९
--	---

प्रहासिः प्रहासिः ॥५४६॥ क उ क द र क द र क र क र क र क र क र क र क र		*~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	७ शतके उद्देशः ९ ।५४६॥
---	--	---------------------------------------	------------------------------

व्याख्या- प्रबासिः प्रबासिः प्रकासिः ॥५४७॥ भे सरखं अमेध कराच (वस्वरर) विक्वांनि उमो छे. ए प्रमाणे वे इन्द्रो संग्राम करे छे, जेमके एक देवेन्द्र अने बीजो मनुजेन्द्र. हवे ते सरखं अमेध कराच (वस्वर) विक्वांनि उमो छे. ए प्रमाणे वे इन्द्रो संग्राम करे छे, जेमके एक देवेन्द्र अने बीजो मनुजेन्द्र. हवे ते सरखं अमेध कराच (वस्वर) विक्वांनि उमो छे. ए प्रमाणे वे इन्द्रो संग्राम करे छे, जेमके एक देवेन्द्र अने बीजो मनुजेन्द्र. हवे ते कृणिकराजा एक हाधीवडे पण श्रन्नुपक्षनो पराजय करवा समर्थ छे. त्यारबाद ते कृणिके महाशिलाकंटक संग्रामने करता नवमह्नकि अने नवलेच्छकि जेओ काधी अने कोधलाना अढार गणराजाओ हता, तेओना महान् योद्वाओने हण्या, घायल कर्या अने मारी नांख्या, तेओनी चिन्हयुक्त ध्वजा अने पताकाओ पाडी नांखी, अने जेओना प्राण मुक्तेलीमां छे एवा तेओने [युद्धमांथी] से केणट्रेणं भंते ! एवं बुच्चइ महासिलाकंटए संगामे ?, गोवमा ! महासिलाकंटए णं संगामे वष्टमाणे जे तत्थ आसे वा हत्थी वा जोहे वा सारही वा तणेण वा पत्तेण वा कट्ठेण वा सक्कराए वा अभि- स् केणट्रेणं भंते ! एवं बुच्चइ महासिलाकंटए स० २, से तेणट्ठेणं गोयमा ! महासिलाकंटए संगामे । महासिलाकंटए णं भंते ! संगामे वद्दमाणे कति जणसयसाहस्सीओ बहियाओ ?, गोयमा ! चउरासीइं जण सयसाहस्सीओ बहियाओ । ते णं भंते ! मणुया निस्सील जाव निपचक्खाणपोसहोववासा रुद्धा परि- कुविया समरबहिया अणुवसंता कालमासे कालं किचा कहिं गया कहिं उववन्ना ?, गोयमा ! ओसन्नं नरग- तिरिक्खजोणिएस्नु उववन्ना ॥ (सूत्र २९९) ॥	1: 5
--	------

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

	Š	
	¥	[प्र०] हे भगवन् ! ज्ञा कारणथी एम कहेवाय छे के ते महाज्ञिलाकंटक संग्राम छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्यारे महाज्ञिलाकंटक
च्याख्या-	Š	संग्राम थतो हतो त्यारे ते संग्राममां जे घोडा, हाथी, योधा अने सारथीओ तृण, काष्ट, पांदडा के कांकरावती हणाय त्यारे तेओ
प्रज्ञप्तिः	G	सघळा एम जाणे के हुं महाशिलाथी हणायो, ते हेतुथी हे गौतम! ते महाशिलाकंटक संग्राम कहेवाय छे. [प्र०] हे भगवन्!
1148211	¥	ज्यारे महाशिलाकंटक संग्राम थतो हतो त्यारे तेमां केटलालाख माणसो हणाया ? [उ०] हे गौतम ! चोरासीलाख माणसो हणाया.
	X	[म॰] हे भगवन् ! निःशील, यावत् प्रत्याख्यान अने पोषधोपवासरहित, रोषे भरायेला, गुस्से थयेला, युद्धमां घायल थयेला, अनु-
	F	पशांत एवा ते मनुष्यो कालसमये मरण पामीने क्यां गया, क्यां उत्पन्न थया ? [उ०] हे गौतम ! घणे भागे तेओ नारक अने
	$\mathbf{\hat{z}}$	
	C	तिर्यचयोनिमां उत्पन्न थया छे. ॥ २९९ ॥
	-	णायमेयं अरहया सुयमेयं अरहया विन्नायमेयं अरहया रहमुसछे संगामे, रहमुसछे णं भंते ! संगामे
	S.	णायमय अरहया सुयमय अरहया वित्रायमय अरहया वित्रायमय अरहया रहमुसल सगाम, रहमुसल ण भत । सगाम वहमाणे के जइस्था के पराजहत्था ?, गोयमा ! वज्जी विदेहपुत्ते चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया जहत्था, नव मल्लई नब छेच्छइ पराजहत्था, तए णं से कूणिए राया रहमुसलं संगामं उवट्टियं सेसं जहा महासिलाकंटए नवरं भूयानंदे हत्थिराया जाव रहमुलसंगामं ओयाए, पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया, एवं तहेव जावचिट्टंति, मग्गओ य से चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया एगं महं आयासं किढिगपडिरूवगं विउच्वित्ताणं चिट्टइ, एवं खलु तओ इंदा संगामं संगामेंति, तंजहा-देविंदे य मणुइंदे य असुरिंदे य, एगहत्थिणावि णं पभू कूणिए राया जइत्तए, तहेव जाव दिसोदिसिं पडिसेहित्था। से केणट्टेणं भंते! एवं बुचइ रहमुसले संगामे २ ?, गोयमा !
	¥	मल्लई नब छेच्छइ पराजइत्था, तए णं से कुणिए राया रहमुसलं संगामं उवट्वियं सेसं जहा महासिलाकंटए
	¥.	तवरं भयानंदे हत्थिराया जाव रहमलसंगामं ओयाए. परओ य से सक्के देविंदे देवराया. एवं तहेव जावचिहंति.
	Ç	मगाओं म में समरे असरिंदे असरकमारराया एगं महं आयासं कितिगपडिरूवगं विउठिवनाणं चिटर एवं
	J.	
	G	खलु तआ इदा सगाम सगामात, तजहा-दावद य मणुइद य असुरिद य, एगहात्यणावि ण पेमू कूणिए राया
	$\mathbf{\tilde{z}}$	जइत्तए, तहेव जाव दिसोदिसिं पडिसेहित्था। से केणहेणं भंते! एवं बुचइ रहमुसले संगामे २ १, गोयमा !
1	1.1.4.18	

७ शतके उद्देशः ९ 1148611

X

**

७ शतके

उद्देशः ९

1198811

21

Ť

2 *

¥ 5 ¥,

¥ 2

¥

₩ X

ć

म्हाप्तिः 🙀 लोहिना कीचडने करतो चारे तरफ चारे बाजुए दोडे छे; ते कारणथी यावत् ते रथम्रुशलसंग्राम कहेवाय छे. [प्र०] हे भगवन् ! 💢 उरे	9 शतके देशः ९ ५५०॥
---	--------------------------

र्ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५५१॥	अाइक्खति जाव उववत्तारों भवंति जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइ- क्खामि जाव परूवेमि-एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वेमाली नामं नगरी होत्था, वण्णओ, तत्थ णं वेसालीए णगरीए वरुणे नामं णागनतुए परिवमइ अट्ढे जाव अपरिभूए समणोवासए अभिगयजीवा- जीवे जाव पडिलाभेमाणे छट्टंछट्टेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे बिहरति, तए णं से वरुणे णागनतुए अन्नया कयाइ रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभियोगेणं रहमुसले संगामे आणत्ते समाणे छट्टभत्तिए अट्टमभत्तं अणुवद्देति अट्टमभत्तं अणुवद्देत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वदासी-खि- पामेव भो देवाणुपिया ! चाउग्घंट आसरहं जुत्तामेव उवटावेह हयगयरहपवर जाव सन्नाहेत्ता मम एयमाण-	के उद्दे	शतके काः ९ २५१॥
		うまち まいち たいち そうち	

For Private and Personal Use Only

avii Jaili Alaulialia N	www.kobalililoig	Acriarya	Silli Kallassayarsuli G
घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५५२॥	पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवटाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छह चाउग्घंटं आसरहं दुरूहह २ हयगयरह जाव संपरिवुढे महया भडचडगर॰ जाव परिक्खित्ते जेणेव रह सछे संगामे तेणेव उवागच्छह २ त्ता रहमुसलं संगामं ओयाए, तए णं से वरुणे णागणत्तुए रहमुसलं संग ओयाए समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिणिण्हइ-कप्पति मे रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स जे पुरि पहणह से पडिहणित्तए, अवसेसे ने कप्पतीति, अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हह अभिगेण्हहता रहमुस् संगामं संगामेति, तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स एगे पुरिसे सरिस् संपानमं संगामेति, तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स एगे पुरिसे सरिस् संपिसत्तए सरिसव्वए सरिसभंडमत्तोवगरणे रहेणं पडिरहं हव्वमागए, तए णं से पुरिसे वरुणं णागणत्तु एवं वयासी-पहण भो वरुणा ! णागणत्तुया ! प० २, तए णं से वरुणे णागणत्तुए तं पुरिसं एवं वदासी नो खलु मे कष्पइ देवाणुप्पिया ! पुर्वि अहयस्स पहणित्तए, तुमं चेव णं पुत्र्वं पहणाहि, तए णं से पुरिसे वर णागणत्तुएणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे घणुं परामुसह २ उसुं परामुसइ उखुं परा हारी करेइ, तए णं से वरुणे णागनत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेम धणुं परामुसइ घणुं परामुसित्ता उसुं परामुसइ उसुं परामुसत्ता आययकन्नाययं उसुं करेइ आययकन्नाय २ तं पुरिसं एगाहचं कूडाइचं जीवियाओ ववरोवेइ, तए णं से वरुणे णागणत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहा	म म म ज ल म म म म म ज ल क	७ शतके उद्देशः ९ ॥५५२॥

Ŷ	कुए समाणे अत्थामे अबखे अवीरिए अपुरिसकारपरक्षमे अधारणिज्ञमितिकट्ठ तुरए निगिण्हइ तुरए निगि-	
ब्याख्या-	ण्हित्ता रहं परावत्तेइ रहं परावत्तित्ता रहमुसलाओं संगामाओं पडिनिक्खमतिश्एगंतमंतं अवक्कमइ एगंतमंतं	2 ७ शतके
प्रज्ञप्तिः 🎗	अवकमित्ता तुरए निगिण्हइ २त्ता रहं ठवेइ २ त्ता रहाओ पचोरुहइ रहाओ २ रहाओ तूरए मोएइ तुरए मोएत्ता	४ उरेशः ९
ાયલરા 🕻	तुरए विसज्जेइ २ त्ता (ग्रन्थ ४०००) २ दब्भसंथारगं संथरई २ (पुरच्छाभिमुहे दुरूहइ दब्भसं० २)	(। (144 र ।।
*	पुरच्छाभिमुहे संपलियकनिसन्ने करयल जाव कद्द एवं वयासी∽नमोत्थु णं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं,	A
3	नमोत्थु णं समणस्म भगवओ महावीरस्स आइगरस्स जाव संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्म धम्मो-	3
(F)	वदेसगस्स, वंदामि णं भगवन्तं तत्थगयं इहगए, पासउ मे से भगवं तत्थगए जाव वंदति नमंसति २ एवं व-	*
	यासी-पुटिंवपि मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूऌए पाणातिवाए पच्चऋखाए जावजीवाए एवं	*
X	जाब धूलए परिग्गहे पचत्रखाए जावज्जीवाए, इपाणिंपि णं अरिहंतस्सेव भगवओ महावीरस्स अंतियं सब्वं पाणा-	S.
AT LE	तिवायं पच्चक्ष्लामि जावज्जीवाए एवं जहा खंदओ जाव एयंपि णं चरमेहिं ऊसासनीसासेहिं वोसिरिस्सा-	Č.
¥	मित्तिकट्टु सन्नाहपटं मुयइ सन्नाहपटं मुइत्ता मल्लुद्धरणं करेति सल्लुद्धरणं करेत्ता आलोइयपडिक्वंते समाहि-	*
X	पत्ते आणुपुव्वीए कालगए । तए णं तस्स वरुणस्स णागनत्तुयस्स एगे पियबालवयंसए रहमुसलं संगामं	3
¥	संगामेमाणे एगेणे पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे अबले जाव अधारणिज्जमितिकडू वरुणं णागन-	*
*	चुचं रहमुसलाओ संगामाओ पडिनिक्खममाणं पासइ पासइत्ता तुरए निगिण्हइ तुरए निगिण्हित्ता जहा	*
X		5

ध्याख्या- प्रज्ञ्तिः ॥५५४॥	प्राच्या गर्भ जार जा मता गम्म पिथवालवयरसरसं पर्ययरसं मागमनुप्रयस्सं सालाइ वयाइ गुणाइ वरमणाइ प्राचकखाणपोसहोववासाइं ताइं णं ममंपि भवंतुत्तिकट्ठु सन्नाहपद्टं मुयह २ सल्लुद्धरणं करेति सल्लुद्धरणं करेत्ता	そう やう です です い い い い い い い い い い い い い
----------------------------------	--	---

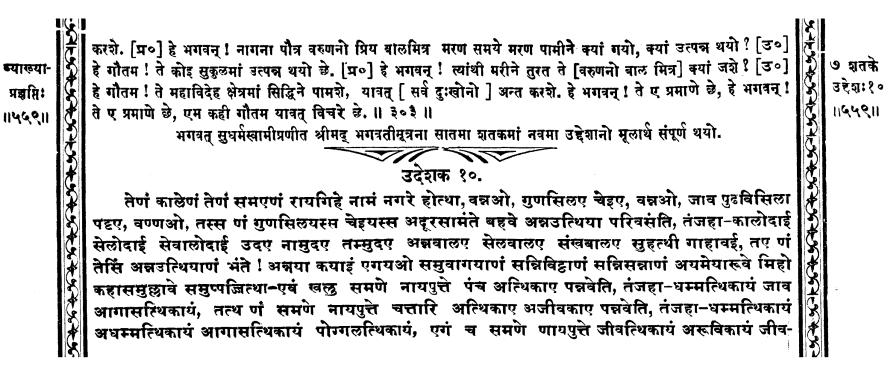
•याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५५५॥	*****	प्रतिलाभतो-सत्कार करतो-निरन्तर छट्ट छट्टना तप करवावडे आत्माने वासित करतो विचरे छे. त्यारबाद ज्यारे ते नागना पौत्र वरुणने राजाना अभियोगथी (आदेशथी) गणना अभियोगथी,बलना अभियोगथी रथग्रुशल संग्राममां जवा माटे आज्ञा थइ त्यारे षष्ठभक्त करनार ते(वरूण) अष्टमभक्तने वधारे छे, अने अष्टमभक्तने वधारीने कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे. बोलावीने तेणे ए प्रमाणे कशुं के हे देवा तुप्रियो! चारघंटावाळा अश्वरथने सामग्रीसहित हाजर करो;अने घोडा, हाथी, रथ अने प्रवर-[योद्धाओथी युक्त चतुरंग सेनाने तैयार करो] यावत् तैयार करीने ए मारी आज्ञा पाछी आपो. त्यारपछी ते कौटुम्बिक पुरुषो यावत् तेनो स्वीकार करीने छ्त्रसहित,ध्वजा- सहित [रथने] शीघ हाजर करेछे; घोडा, हाथी, रथ-[अने प्रतर योद्धाओ सहित सेनाने] यावत् तैयार करे छे; तैयार करी ज्यां	موجد موحد مو	७ शतके उद्देशः ९ ॥५५५॥
	X	सहित [रथने] शीघ्र हाजर करेड़े; घोडा, हाथी, रथ-[अने प्रतर योदाओ सहित सेनाने] यावत् तैयार करे छे; तैयार करी ज्यां	Con sol	
	8		5	
	a the	कूणिकनी पेठे यावत् कौतुक (मषीतिलकादि) अने मंगलरूप प्रायश्चित करीने सर्वालंकारथी विभूषित थयेलो कवचने पहेरी बांधी, कोरंटनी माळायुक्त घारण कराता छत्रवडे सहित अनेक गणनायको यावत् दूत अने संघिपालनी साथे परिवरेलो स्नानगृढथी बहार	× ×	
	5 4 3	कारटना माळायुक्त यारण कराता छत्रवड साहत अनक गणनायका यावत् दूत अन साधपालना साथ पारवरला सानगृध्या बहार नीकळे छे. बहार नीकळीने, ज्यां बहारनी उपस्थानग्राला छे, ज्यां चारघंटावाळो अश्वरथ छे, त्यां आवीने चारघंटावाळा अश्वरथ उपर	,	
	2		ð) F	
	the set at the	संग्राम छे त्यां आवे छे, अने त्यां आवी ते रथम्रुगल संग्राममां उतयों. ज्यारे नागनो पौत्र बरुण रथम्रुसेल संग्राममां उतयों त्यारे	3	
	G	ते आवा प्रकारना आ आभिग्रहने ग्रहण करे छे-'रथम्रुवल संग्राममां युद्ध करता मने जे पहेला मारे तेने मारवो कल्पे, बीजाने मारवा		
	\$ X	कल्पे नहिं.' आवा प्रकारना आ अभिग्रहने धारण करी ते रथमुपल संग्राम करे छे. त्यारबाद रथमुसल संग्राम करता नागना पौत्र	***	

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

		,	
घ्याख्या-	पर्यरना इफडा याप तन जावितया जूदा कर छ. इव ते पुरुपया संरत ववापल ते नागना पात्र वरुण शाकराहत, निवल, वाप-	そうちょうちょう ちょうちょうちょう	७ शतके
प्रज्ञप्तिः	रहित, पुरुषार्थ अने पराक्रमरहित थयेलो पोते 'टकी नहि शके' एम समजी घोडाओने थोभावे छे, थोभावीने रथने पाछो फेरवे		उद्देशः ९
॥५५६॥	छे. रथने पाछो फरवीने रथम्रजल संग्रामथी बहार नीकळे छे. बहार नीकळी एकान्त भागमां आवे छे. एकान्त भागमां आवी		॥५५६॥

	S		A Same
	T	आदि करनारा छे, यावत् [सिद्धिने] प्राप्त करवानी इच्छावाळा छे; जे मारा धर्माचार्य अने धर्मना उपदेशक छे. त्यां रहेला भग-	Ŝ
ध्याख्या-	Å	वानने अहीं रहेलो हुं वांदुं छुं. त्यां रहेला भगवान् मने जुओ. यावत् वंदन नमस्कार करे छे. वंदन नमस्कार करीने ते [वरुण] आ	¥
प्रज्ञप्तिः	8	प्रमाणे बोल्यो–पहेलां में श्रमण भगवान् महावीरनी पासे स्थूलप्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान कर्युं हतुं, ए प्रमाणे यावत् स्थूल परिग्रहनुं	S
ાષ્દ્રણા	A	प्रत्याख्यान जीवनपर्यंत कर्युं हतुं, अत्यारे अरिहंत भगवान् महावीरनी पासे सर्व प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान यावज्जीव करूं छुं. ए	Ś
•••	3	प्रमाणे स्कन्दनी पेठे सर्व जाणवुं. आ शरीरनो पण छेछा श्वासोच्छ्वासनी साथे त्याग करीश, एम धारी सन्नाहपट्ट-वख्तरने छोडे	X
	Ş	छे. बख्तरने होडीने (बाणादिना) शल्यने बहार काढे छे. बहार काढीने आलोचना लड प्रतिक्रान्त-पडिकमी समाधिने प्राप्त थयेले	S
;	*	ते कालधर्म पांची. हवे ते नागना पौत्र वरुणनो एक प्रिय बालमित्र रथम्रुशल संग्राम करतो हतो, ज्यारे ते एक पुरुषथी सख्त	S.
	1	घायल थयो, त्यारे ते इक्तिरहित, बलरहित यावत् पोते 'टकी नहि इको' एम समजी नागना पौत्र वरुणने रथम्रुझल संग्रामथी बढार	e for
	X	नीकळता जुए छे, जोइने ते घोडाओने थोभावे छे, थोभावीने वरुणनी पेठे यावत् घोडाओने वीसर्जित करे छे, अने पटना (वस्त्रना)	S
	*	संथारा उपर देने छे. संथारा उपर पूर्वदिशा सन्मुख बेसीने यावत् अंजली करीने आ प्रमाणे बोल्यो हे भगवन् ! मारा प्रिय बालमित्र	Ċ
	X	नागना पौत्र दुज्जना जे झीलवतो, गुणवतो, चिरमणवतो, प्रत्याख्यान अने पोषधोपवास होय ते मने पण हो, एम कही बख्तरने	Y
	3	छोडे छे, छोर्दाने शल्यने काढे छे, शल्यने काढीने ते अनुक्रमे कालधर्म पाम्यो. इवे ते नागना पौत्र वरुणने मरण पामेलो जाणीने	S
	¢	णासे रहेला वानव्यंतर देवोए तेना उपर दिव्य अने छगंधी गंधोदकनी दृष्टि करी, पांच वर्णना फुलो तेना उपर नांख्या, तथा	ずみ
	2	पास रहली बानम्बतर देवाएँ तना उपर दिवर जाने छनेपा नेपरिफता होट परी, पार्य प्रती छुला जा जार पार्ट पार्ट तम दिवय दिव्य गीत गान्धर्वनो ज्ञब्द पण कया. त्यारबाद ते नागना पौत्र वरुणनी दिव्य देवर्द्धि दिव्य देवद्युति अने दिव्य देवप्रभाव	5
	4	ાલુલ્ય માત માન્યવમાં રાજ્ય પંચ મત્માં પ્લાપ્યાર પંચાયતઘા માત્ર પંચ્યામાં પિત્મ પંચાબ્ધ પિત્મ સમજાય ગયા પિત્મ સમતમાં મ	Ŕ

ष्याख्या- प्रहासिः ॥५५८॥ भहांसिः ॥५५८॥ संभळीने अने जोइने घणा माणसो परस्पर एम कहे छे, यावत् प्ररूपणा करे छे के-हे देवानुप्रिय ! ए ममाणे घणा मनुष्यो यावत् देवलोकमां उत्पन्न थाय छे. ॥ २७२ ॥ वरुणे णं भंते ! नागनत्तुए कालमासे कालं किचा कहिं गए कहिं उववन्ने?, गोयमा ! सोइम्मे कप्पे अरुणामे विमाणे देवत्ताए उववन्ने, तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाणि ठिती पन्नत्तः, तत्थ णं वरुणस्सवि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता । से ७ं भंते ! वरुणे देवे ताओ देव- लेगाओ आउक्खएणं भवकखएणं ठिइक्खएणं जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं करेहिति । सुकुले पचायाते । से णं भंते ! लाओहिंतो अणंतरं उच्वदित्ता कहिं गए ! कहिं उववन्ने?, गोयमा ! सुकुले पचायाते । से णं भंते ! ताओहिंतो अणंतरं उच्वदित्ता कहिं गण्णि हिती कहिं उववज्जि?, गोयमा ! सुकुले पचायाते । से णं भंते ! ताओहिंतो अणंतरं उच्वदित्ता कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जि?, गोयमा ! सुकुले पचायाते । से णं भंते ! ताओहिंतो अणंतरं उच्वदित्ता कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जिहिति?, महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं करेहिति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति ॥ (सृन्न ३०३) सत्तमस्स सयस्स णवमो उद्देसो सम्मत्ती ॥ ७ । ९ ॥ [प्र0] हे भगवन् ! नागनो पौत्र वरुण परण समये मरीने क्यां गयो, क्यां उत्पन्न थयो ? [उ०] हे गौतम ! सौधर्म देव- लेकने विषे अरुणाम नामे विमानमां देवपणे उत्पन्न थयो छे. त्यां केटलक देवोनी आयुग्ती स्थिति चार पत्योपमनी कही छे. स्यां वरुणदेवनी पण चार पत्योपमनी स्थिति कही छे. [प्र0] हे भगवन् ! ते वरुणदेव देवलोकवी आयुग्त सिय थवाथी, सव चार्थ, सन्तो क्षय थवाथी, स्थितिनो क्षय थवार्थी-क्यां जरे ! [उ०] यावत् महाविदेह क्षेत्रने विपे सिद्धिने पामगे, यावत् [सर्व दुःखोनो] अन्त	र
--	---



www.kobatirth.org

घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५६०॥	कायं पन्नवेति, तत्थ णं समणे णाण्पुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूविकाए पन्नवेति, तंजहा-धम्मत्थिकायं अधम्मत्थिकायं आगासत्थिकायं जीवन्धिकायं, एगं च णं समणे णायपुत्ते पोग्गलत्थिकायं रूविकायं अजी- वकायं पन्नवेति, से कहमेयं मन्ने एवं ?, तेणं काल्ठेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरें जाव गुणसिलए चेहए समोमढे जाव परिसा पडिगया, ते काल्ठे ते समये राजगृह नामे नगर हतुं. वर्णन. गुणग्नील चैत्य हतुं. वर्णन. यावत् पृथिवीशिलापट्ट हतो. ते गुणग्नील चैत्यनी पासे थोडे दूर घणा अन्यतीथिको रहे छे. ते आ प्रमाणे-कालोदायी, शैलोदायी, सेवालोदायी, उदय, नामोदय, नमोंदय, अन्यपा- लक, शैल्यालक, श्रंखपालक अने सुहस्ती गृहपति. त्यारपछी अन्य कोइ समये एकत्र आवेला, बेठेला, सुखपूर्वक वेठेला ते अन्य- तीर्थिकोनो आवा प्रकारनो आ वार्तालाप थयो-'अमण ज्ञातपुत्र (महावीर) पांच अस्तिकायोने प्ररूपे छे. जेमके, घर्मास्तिकाय, यावत् तीर्थिकोनो आवा प्रकारनो आ वार्तालाप थयो-'अमण ज्ञातपुत्र (महावीर) पांच अस्तिकायोने प्ररूपे डे. जेमके, घर्मास्तिकाय, यावत् तीर्थिकोनो आवा प्रकारनो आ वार्तालाप थयो-'अमण ज्ञातपुत्र (महावीर) पांच अस्तिकायोने प्ररूपे छे. जेमके, घर्मास्तिकाय, यावत् तार्थिकायने अक्षपिकाय जणावे छे. जेम, घर्मास्तिकाय अजीवकाय छे एम जणावे छे. जेम, घर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशा- स्तिकाय अने पुद्गलास्तिकाय. एक जीवास्तिकायने अमण ज्ञातपुत्र अरुपी जीवकाय जणावे छे. ते पांच अस्तिकायमा अमण ज्ञातपुत्र चार अस्तिकायने अमण ज्ञातपुत्र रूपिकाय जने अजीवकाय जणावे छे.' ए प्रमाणे आ केम मानी शकाय ? ते काले अन्ते ते समये अमण भगवान महावीर यावत् ग्राणिल चैत्यमां समोसर्या. यावत् परिषत् (वंदन करीने) पाछी गइ. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणसस्त भगवओ महावीरस्स जेडे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे	र्गे अन्तरे उद्देशः १ - अन्तरे ।।५६०॥
		₹.

ब्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५६१॥	गोयमसगोत्तेणं एवं जहा बिनियसए नियंदुद्देसए जाव भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्ञत्तं भत्तपाणं पडिग्गहेइ पडिग्गहित्ता रायगिहाओ जाव अतुरियमचवल्ठमसंभंतं जाव रियं सोहेमाण सोहेमाणे तेसिं अन्नउत्थियाणं अदूरसामंतेणं बीइवयति, तए णं ते अन्नउत्थिया भगवं गोयमं अदूरसामंतेण बीइवयमाणं पासंति पासेत्ता अन्नमन्नं सदावेंति अन्नमन्नं सदावेत्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमा कहा अविप्प- कडा अयं च णं गोयमे अम्हं अदूरसामंतेणं वीइवयह तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं गोयमं एयमटं पुच्छि- त्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति तेणेव उवागच्छित्ता ते भगवं गोयमं एवं वयासी वएसु-एवं खलु गोयमा ! तब धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे	र्दे उ	शतके देशः१० ५६१॥
	णायपुत्ते पंच अत्थिकाए पन्नवेति, तंजहा-धम्मत्थिकायं जाव आगासत्थिकायं, तंचेव जाव रूविकायं अजीव- कायं पन्नवेति से कहमेयं भंते! गोयमा! एवं?, तए णं से भगवं गोयमे ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-नो खलु वयं देवाणुप्पिया ! अत्थिभावं नत्थित्ति वदामो, नत्थिभावं अत्थिति वदामो, अम्हे णं देवाणुप्पिया ! सव्वं अत्थिभावं अत्थीति वदामो, सव्वं नत्थिभावं नत्थीति वयामो, तं चेतसा खलु तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं अत्थिभावं अत्थीति वदामो, सव्वं नत्थिभावं नत्थीति वयामो, तं चेतसा खलु तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं सयमेव पच्चुवेक्खह मयमेव० त्तिकट्ठु ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-एवं २, जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे एवं जहा नियंटुदेसए जाव भत्तपाणं पडिदंसेति भन्तपाणं पडिदंसेत्ता समणं भगवं महावीरं बंदइ नमंसइ २ नचासन्ने जाव पज्जुवासति ।	くちょう ちょう ちょう ちょう ちょう	

७ शतके उद्देश:१०

1148211

	S S
ध्याख्या-	X
प्रज्ञप्तिः	Ť.

ાષ્ક્રા

ते काले अने ते समये अमण भगवान महाबीरना मोटा शिष्य गौतमगोत्री इन्द्रभूति अनगार बीजा शतकना निर्गन्थोदेशकमां कह्या प्रमाणे भिक्षाचर्याए भमता यथापर्याप्त भक्त पानने ग्रहण करीने राजगृह नगर थकी यात्रत् त्वरारहितपणे, अचलपणे, असआन न्तपणे ईर्या समितिने वारंवार शोधता ते अन्यतीथिकोनी थोडे दूर जाय छे. त्यारे ते अन्यतीथिको भगवान् गौतमने थोडे दूर जतां जुए छे, जोइने एक बीजाने बोलावे छे; एक बीजाने बोलावीने तेओए आ प्रमाणे कह्युं-हे देवानुप्रियो ! आपणने आ कथा (पंचास्तिकायनी वात) अप्रकट-अज्ञात छे; अने आ गौतम आपणाथी थोडे दूर जाय छे, माटे हे देवानुप्रियो ! आपण जा अर्थ गौतमने पुछवो श्रेयस्कर छे. एम कही तेओ एक बीजानी पासे ए वातने स्वीकार करे छे; स्वीकार करीने ज्यां भगवान् गौतम छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने तेओए भगवान् गौतमने आ प्रमाणे कह्युं-हे गौतम ! तमारा धर्माचार्य, धर्मोप- देशक श्रमण ज्ञातपुत्र पांच अस्तिकाय प्ररूपे छे, ते आ प्रमाणे–धर्मास्तिकाय, यावत् आकाशास्तिकाय, यावत् रूपिकाय अजीवकायने जणावे छे. हे पूच्य गौतम ! ए प्रमाणे श्री रीते होय ? त्यारे ते भगवान् गौतमने ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे कह्युं-हे देवानुप्रियो ! अप अमे अस्तिमावने नास्ति (अविद्यमान) कहेता वधी, तेम नास्तिभावने अस्ति (विद्यमान) कहेता नथी. हे देवानुप्रियो ! सर्व अस्तिमावने असि कहीए छीए, अने नास्तिभावने नास्ति कहीए छीए. माटे हे देवानुप्रियो ! ज्ञानवहे तमे स्वयमेव ए अर्थनो विचार करो. एम कहीने [गौतमे] ने अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे कह्युं के ए प्रमाणे छे. हवे भगवान् गौतम ज्ञा ग्रान् के, ज्यां श्रमण भग- वान् महावीर छे–[त्यां आवीने] निर्धन्योदेशकमां वद्या प्रमाणे यावत् भक्त पानने देखाहे छे. भक्त–पानने देखाहीने अमण भगवान् महावीर बंदन करे छे, नमस्कार करे छे, वांदी, नमस्कार करी बहु दूर नहि तेम बहु पासे नहि ए प्रमाणे उपासना करे छे.
--

		3
8याख्या-	र्ते तेणं कालेणं तेणं समण्णं समणे भगवं महावीरे महाकहापडिवन्ने यावि होत्था, कालोदाई य तं देसं हव्वनागए, कालोदईति समणे भगवं महावीरे कालोदाई एवं वयासी-से नूणं [भते !]	्रु ७ शतके
प्रज्ञप्तिः	🗶 कालोदाई अन्नया कयाई एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सन्निविद्वाणं तहेव जाव से कहमेयं मन्ने	🔆 उत्ते शः १०
ાષવરા	Ҟ एवं ?, से णूणं कालोदाई अत्थे समट्ठे ?, इंता अत्थि तं०, सचे णं एसमट्ठे, कालोदाई ! अहं पंचत्थिकायं	हैं। 14 ६ ३॥
	🔮 पन्नवेमि, तंजहा-धम्मत्थिकायं जाव पोग्गलत्थिकायं, तत्थ णं अहं चत्तारि अत्थिकाए अजीवत्थिकाए	2
	🗙 अजीवतया पन्नवेमि तहेव जाव एगं च णं अहं पोग्गलत्थिकायं रूविकायं पन्नवेमि, तए णं से कालोदाई	X
	🕇 समणं भगवं महावीरं एवं वदासि-एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकायंसि अधम्मत्कायंसि आगासत्थिकायंसि	A.
	🎉 अरूविकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केइ आसइत्तए वा १ मइत्तए वा २ चिट्ठइत्तए वा २ निसीइत्तए	2) 55
	🐔 वा ४ तुयद्वित्तए वा ५ ?, णो तिणहे०, कालोदाई एगंसि णं पोग्गतियकायंसि रूविकायंसि अजीवकायंसि	S
	🐐 चक्किया केइ आसइत्तए वा सइत्तए वा जाव तुयहित्तए वा,	Ċ
	ते काले, ते समये अमण भगवान् महावीर महाकथा प्रतिपत्र-(घणा माणसोने धर्मोपदेश करतामां प्रवृत) इता. कालोदायी	
	Қ ते स्थळे क्षीघ्र आव्यो. हे कालोदायि ! ए प्रमाणे [बोलावीने] अमण भगवान् महावीरे कालोदायीने आ प्रमाणे कढुं−हे कालोदायि !	5
	了 अन्यदा कोई दिवसे एकत्र एकठा थयेला, आवेला, बेठेला एवा तमने पूर्वे कह्या प्रमाणे [पंचास्तिकाय संबन्धे विचार थयो हतो ?]	*
	🗚 यावत ए वात ए प्रमाणे केम मानी शकाय ? [एवो विचार थयो इतो ?] हे कालोदायि ! खरेखर आ वात यथार्थ छे. हा, यथार्थ	
		×

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५६४॥	छे. हे कालोदायि ! ए बात सत्य छे. हुं पांच अस्तिकायनी प्ररूपणा करूं छुं; जेमके, धर्मास्तिकाय, यावत् पुद्गलास्तिकाय. तेमां चार अस्तिकाय अजीवास्तिकायने अजीवरूपे कहुं छुं. पूर्वे कह्या ममाणे यावत् एक पुद्गलास्तिकायने रूपिकाय जणावुं छुं. त्यारे ते कालोदायिए श्रमण भगवान् महावीरने आ प्रमाणे कहुं-[प्र०] हे भगवन् ! ए अरूपी अजीवकाय धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाज्ञास्तिकायमां बेसवाने, सुवाने डभो रहेवाने, नीचे बेसवाने, आळोटवाने कोइपण बक्तिमान छे ? [उ०] आ अर्थ योग्य नथी. परन्तु हे कालोदायि ! एक रूपी अजीवकाय पुद्गलास्तिकायमां बेसवाने, सुवाने, यावत् आळोटवाने कोइपण बक्तिमान छे	3: F 3C & 3C & 3C &	७ शतके उद्देशः१० ।।५६४।।
	एयंसि णं भंते ! पोग्गलत्थिकायंसि रूविकायंसि अजीवकायंसि जीवाणं पावा कम्मा पावकम्मफलविवा- गसंजुता कज्ञंति !, णो इणढे समढे कालोदाई !, एयंसि णं जीवत्थिकायंसि अरूविकायंसि जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति?, हंता कज्जंति, एत्थ णं से कालोदाई संवुद्धे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतियं धम्मं निसामेत्तए, एवं जहा खंदए	****	
	तहेव पच्वइए तहेव एकारस अंगाइं जाव विहरइ ॥ (सूत्रं ३०४) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! ए रूपी अजीवकाय पुद्गलास्तिकायने विषे जीवोना पाप-अशुभ फल-विपाकसहित पापकर्मो लागे ? [उ०] हे कालोदायि ! ए अर्थ योग्य नथी. परन्तु ए अरूपी जीवकायने विषे पाप फल-विपाकसहित पापकर्मो लागे छे. अहीं कालोदायी बोध पाम्यो, ते श्रमण भगवान् महावीरने वंदन करे छे, नमस्कार करे छे; वांदीने, नमस्कार करीने तेणे आ प्रमाणे कह्यं-हे भगवन् ! हुं तमारी पासे धर्म सांभळवा इच्छुं छुं. ए प्रमाणे स्कन्दकनी पेठे तेणे प्रव्रज्या अंगीकार करी, अने ते प्रमाणे अगीयार अंगने [भणीने] यावत् विचरे छे. ॥ ३०४ ॥		an a

■याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५६५॥	2 3 4 2 4 3 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5	तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ रायगिहाओ णयराओ गुणसिलए(या) चेइए(या) पडिनिक्खमति बहिया जणवयविहारं विहरइ,तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे गुणसिल्ठे णामं चेइए होत्था, तए णं समणे भगवं महाबीरे अन्नया कयाइ जाव समोसढे परिसा पडिगया, तए णं से कालोदाई अणगारे अन्नया कयाइ जेणेव समणे भगवं महाबीरे तेणेव उवागच्छड २ समणं भगवं महावीर बंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-अत्थि णं भंते! जीवाणं पावा कम्मा पायफलविवागसंजुत्ता कर्ज्ञति?, हंता अत्थि। कहण्णं भंते! जीवाणं पावा कम्मा पायफलविवागसंजुत्ता कर्ज्ञति?, कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं विससंमिस्सं भोयणं सुंजेजा तस्स णं भोयणस्म आवाए भइए भवति, तओ पच्छा परिणममाणे परि॰ दुरूवत्ताए ढुगंधत्ताए जहा महासवए जाव मुज्जो २ परिणमति, एवामेव कालोदाई जी- वत्ताए जाव मुज्जो २ परिणमति, एवं खलु कालोदाई जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवाग् स्ह वत्ताए जाव मुज्जो २ परिणमति, एवं खलु कालोदाई जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवाग् .	3	७ शतके उद्देश:१० ॥५६५॥
	* * * * * * * * * * * * * * * * * *	पांग पांगाइयार जाव मिण्झोदस गंसछ, तरस जे आवार मदर मवइ, तला पच्छा विपारणममाल र खुरू बत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति, एवं खऌु कालोदाई जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवाग० जाव कर्ज्जति। त्यारपछी अन्यदा कोइ दिवसे श्रमण भगवान महावीर राजग्रहनगरथी अने गुणग्निल चैत्यथी नीकळी बहार देशोमां विधार करे छे. ते काळे ते समये राजग्रह नामना नगरमां गुणशिल नामनुं चैत्य हतुं. त्यां अन्यदा कोई दिवस श्रमण भगवान महावीर यावद् समोसर्या. यावत् परिषद् पाछी गई. त्यारपछी ते कालोदायी अनगार अन्य कोइ दिवसे ज्यां भगवान् महावीर आवे छे, त्यां आवीने श्रमण नगवान् महावीरने वंदन करे छे-नमरकार करे छे. वंदन नमस्कार वरी तेणे आ प्रमाणे कहुं-[प्र॰]	ようなかったまである	

व्या ख्या- प्रज्ञसिः ॥५६६॥	۲۰۰۰ : ۲۰ کاری - ۲۰ مارد - ۲۰ مارد کاری که کاری که کاری که کار	हे भगवन् ! जीवोने पापकमों पाप-अशुभ फल्ल-विपाक सहित होय ? [उ०] हा होय. [प्र०] हे भगवन् ! पापकमों पाप-अशुभ फल्लविपाकसहित केम होय ? [उ०] हे कालोदायि ! जेम कोइ एक पुरुष सुन्दर, स्थालीमां संघवावडे शुद्ध (परिपक) अढार प्रकारना दाल शाकादि व्यंजनोथी युक्त, विपमिश्रित मोजन करे, ते भोजन करुआतमां सारूं लागे, पण त्यारपछी ते परिणाम पामतां खराव रूपपणे, दुर्गंधपणे 'महासव उद्देशकमां कड़ा प्रमाणे वारंवार परिणाम पामे छे. ए प्रमाणे हे कालोदायि ! जीवोने पापकर्मो अशुभ्फलविपाक संयुक्त होय छे. अत्थि णं भंते ! जीवाणं कछाणा कम्मा कछाणफलविवागसंजुत्ता कर्ज्ञति ?, हंता अत्थि, कहन्नं भंते ! जीवाणं कछाणा कम्मा जाय कर्ज्ञति ?, कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवं- जणाकुलं ओसहमिस्सं भोयणं मुंजेज्जा, तस्स णं भोयणस्स आवाए नो भइए भवइ, तओ पच्छा परिण- ममाणे २ य सुरूवत्ताए सुवन्नत्ताए जाव सुहत्ताए नो दुव्खत्ताए मुज्जो २ परिणमति, एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसछविवेगे, तस्स णं आवाए नो भइए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे २य सुरूवत्ताए जाव मो हुत्रखत्ताए मुज्जो २ परिणमति, एवामेव कालोदाई ! जालोर्थ ई ! जीवाणं कछाणा कम्मा जाव कर्ज्जति ॥ (सूत्रं ३०५) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! जीवोना कल्याण (शुभ) कर्भो कल्याणफलविपाक संयुक्त होय ? [उ०] हा, कालोदायि ! होय. [प्र0] हे भगवन् ! जीवोना कल्याण कर्मो कल्याणफलविपाक संयुक्त होय ? [उ०] हा, कालोदायि ! होय. [प्र0] हे भगवन् ! जीवोना कल्याणक कर्यो कल्याणकर्शविपाक्षति केम होय ? [उ०] हे कालोदायि ! होय. [प्र0] हे भगवन् ! जीवोना कल्याणकर्मो कल्याणकर्शविपाक्षमहित केम होय ? [उ०] हे कालोदायि ! जेन कोइ एक पुरुष सुन्दर, स्थालीमां	3	७ शतके उद्देशः १० ॥५६६॥	
	G		\$		

	रांधवावडे शुद्ध-परिपक, अढार प्रकारना [दाळ झाकादि] व्यंजनीथी युक्त औषधमिश्रित भोजन करे, ते भोजन प्रारंभमां सारूं न	2 4 7
ब्याख्या-	लागे, त्यार पछी ज्यारे ने अत्यंत परिणाम पामे त्यारे ते सुरूपपणे, सुवर्णपणे, यावत् सुखपणे वारंवार परिणमे छे, दुखपणे	🐧 ७ शतके
प्रज्ञप्तिः ह	परिणाम पामतं नथी, ए प्रमाणे हे कालोदायि ! जीवोने प्राणातिपातविरमण, यावत परिग्रहविरमण, क्रोधनो त्याग यावत् मिथ्या-	🔆 उद्देशः१०
1148911	दर्शनशल्यनो त्याग प्रारंभमां मारो न लगे. पण पछी ज्यारे ते परिणाम पामे त्यारे ते सुरूपपणे यावत वारंवगर परिणमे छे, पण	િ ાલ્દગા
3	दुःखरूपे परिणत थतो नथी. ए प्रमा मे हे कालोदायि ! जीवोना कल्याण कर्मी कल्याण फलविपाकसंयुक्त होय छे. ॥ ३०५ ॥	
	दो भंते ! पुरिसा मरिसया जाव सरिस भंडम तोवगरणा अन्नमन्नेणं सद्धि अगणिकायं समारं भंति, तत्थ	3
* 8 %	णं एगे पुरिसे अगणिकायं उजालेति एगे पुरिसे अगणिकायं निव्वावेति, एएसि णं भंते ! दोण्हं पुरिसाणं	3
R	कयरे २ पुरिसे महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव महासवतराए चेव महावेयणतराए चेव कयरे	Č.
	वा पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्रवेयणतराए चेव १, जे से पुरिसे अगणिकायं उजालेइ जे वा से	₩ ₩
A S	पुरिसे अगणिकायं निच्वावेति ?, कालोदाई ! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ से णं पुरिसे महा-	S
×**	कम्मतराए चेव जाव महावेयणतराए देव, तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ से णं पुरिसे अप्पकम्म-	م در
X	तराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव। से केणहेणं भंते ! एवं बुचइ-तत्थ् णं जे से पुरिसे जाव अप्पवेयणतराए	L.
	चेव ?, कालोदाई ! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उजालेह से णं पुरिसे बहुतरागं पुढविकायं समारंभति	5
t and the second s	बहुतरागं आउकायं समारंभति अपतरायं तेऊकायं समारंभति बहुतरागं वाऊकायं समारंभति बहुतरायं	Ç
	1	

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

 श्वाख्या- प्रक्राप्तिः श्वणस्सइकायं समारंभति बहुतरागं तसकायं समारंभति, तत्य णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेति से णं पुरिसे अप्पतरायं पुढविक्कायं समारंभइ अप्पतरागं आउकायं समारंभति बहुतरागं तेउकायं समारंभति अप्पतरागं वाउक्कायं समारंभइ अप्पतरागं वणस्सइकायं समारंभह अप्पतरागं तसकायं समारंभति से अप्पतरागं वाउक्कायं समारंभइ अप्पतरागं वणस्सइकायं समारंभइ अप्पतरागं तसकायं समारंभति से अप्पतरागं वाउक्कायं समारंभइ अप्पतरागं वणस्सइकायं समारंभइ अप्पतरागं तसकायं समारंभति से अप्पतरागं वाउक्कायं समारंभइ अप्पतरागं वणस्सइकायं सारारंभइ अप्पतरागं तसकायं समारंभति से अप्पतरागं वाउक्कायं समारंभइ अप्पतरागं वणस्सइकायं सारारंभइ अप्पतरागं तसकायं समारंभति से अप्पतरागं वाउक्कायं समारंभइ अप्पतरागं वणस्सइकायं सारारंभइ अप्पतरागं तसकायं समारंभति से अप्पतरागं वाउक्कायं समारंभइ अप्पतरागं वणस्सइकायं सारारंभइ अप्पतरागं तसकायं समारंभति से तेणहेणं कालोदाई ! जाव अप्पवेयणतराए चेव ॥ (सूर्च ३०६) ॥ [भ०] हे भगवन् ! सरखा वे पुरुषो यावत् समान भांड-पात्रादिउपकरणताळा होय, तेशे परगर साथे श्रगिकायनो समारंभ- हिंसा करे, तेमां एक पुरुष अग्निकायने प्रकट करे, अने एक पुरुष तेने ओल्वे, हे भगवन् ! आ वे पुरुषोमां कयो पुरुष महाकर्मताळो पुरुष अग्निकायने प्रकटावे छे ते के जे पुरुष अग्निकायने बोलवे ते ! [उ०] हे कालोदायि ! ते वे पुरुष अग्नि- कर्मवाळो यावत् अल्पवेदनावाळो यावत् महावेदनावाळो होय, अने जे पुरुष अग्निकायने ओलवी नांखे छे ते पुरुष अग्नि- कर्मवाळो यावत् अल्पवेदनावाळो होय. [भ०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे याथी कहो छो के ते वे पुरुषोमां जे पुरुष अग्निकायने प्रदीप्त करे छे ते पुरुष घणा पृथिवीकायनो समारंभ करे छे. योडा अगिनकायनो समारंभ करे छे, घणा वायकायनो समारंभ करे छे, घणा वनस्पतिकायनो समारंभ करे छे अने घणा त्रसकायनो समारंभ करे छे. तेमां जे पुरुष अग्निकायने प्रदीप्त करे छे. ते दुरुथ घणा पृथिवीकायनो, थोडा वायुकायनो, थोडा वनस्पतिकायनो, थोडा त्रसकायनो अने वाले छे ते पुष्प थोडा प्रथितीकायनो, थोडा अप्कायनो, थोडा वायुकायनो, थोडा वनस्पतिकायनो, थोडा त्रसकायनो अने वर्घारे अग्निकायनो समारंभ करे छे. ते हेतुथी हे कालोदायि ! यावत् अत्पतेदनावाठो होय. ॥ ३०६ ॥
--

ļ		₹ S
	अत्थिणं भंते ! अचित्तावि पोग्गला ओभामंति उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति ?, हंता अत्थि । कयरे णं	
ड्याख्या-	र्भु भंते ! ते अचित्तावि पोग्गला ओभासंति जाव पभासेति ?, कालोदाई ! कुद्रस्स अणगारस्स तेयलेस्सा	2 ७ शतके
प्रज्ञप्तिः	🎗 निमटा समाणी दूरं गंता दूरं निपतइ, देसं गंता देसं निपतइ, जहिं जहिं च णं मा निपतइ तहिं तहिं च णं	😪 उद्देशः १०
114६९॥	🖗 ते अचित्तानि पोग्गला ओभासंति जाव पभामंति, एएणं कालोदाई ! ते अचित्तावि पोग्गला ओभासंति	1148911
	र्ज जाव पभासेति, तए णं से कालोदाई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंमति २ बहूहिं चउत्थछ्ट्रहम	N. A.
ļ	🐧 जाव अप्पाणं भावेमाणे जहा पढमसए कालासवेसियपुत्ते जाव सव्वदुकखप्पहीणे । सेवं भंते ! सेवं भंते! त्ति ।	Č.
	🖌 (सुत्रं ३०७) ७-१० ॥ सत्तमं सुत्रं ममत्तं ॥ ७ ॥	
	🗶 👘 [प्र०] हे भगवन् ! एम छे के अचित्त पण पुद्गलो अवभास करे, उद्योत करे, तपे, प्रकाश करे ? [उ०] हे कालोदायि !	3
	४ [प०] हे भगवन् ! एम छे के अचित्त पण पुद्गली अवभास करें, उद्यात करें, तपें, प्रकाश करें ४ [उ०] हे कालोदााय ! १ हा एम छे. [प०] हे भगवन् ! अचित्त छतां पण कया पुद्गलो अवभास करें, यावत् मकाश करें ४ [उ०] हे कालोदायि !	Č
į	ガ कोधायमान थयेला साधुनी तेजोलेक्या नीकळीने दुर जड्ने दुर पडे छ. दशमां (जवा योग्य स्थान) जड्ने त दशमां-स्थानमां	2
	🕼 पडे छे. ज्यां ज्यां ते पडे छे त्यां त्यां अचित्त पदगलो पण अवभास करे छे, यावतप्रकाश करे छे. ते कारणथी हे कालोदायि ! ए	5
	🖈 अचित्त पुद्गलो पण अवभास करे छे, यावत् प्रकांश करे छे. त्यार बाद ते कालोदायी अनगार श्रमण भगवान् महावीरने वंदन	*
	करे छे. नमस्कार करे छे अने घणा चतर्थ (उपवाम), षष्ठ (बे उपवास), अष्ठम (त्रण उपवास) (इत्यादि तप बडे) यावत	3
	ीं श्रेष्ट्रपने नामित काना ने प्रथम जनकमां कान्यमंत्रीमेगपूचनी प्रेरे यावट सर्नेहरखशी रहित शया हे भगवन ! ते प्र प्रमाणे ले	Q.
	ू अत्मान भारत करता ते प्रयम गतकना कालावनारत दुवनी २० नगर् तेनुइत्यम तहत नगर हे प्राप्त हे । १९ प्रमाय ७, 🗶 हे भगवन ! ते ए प्रमाणे छे [एम कही गौतम यावत विचरे छे] ॥ ३०७ ॥ दशमा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.	*

